शिव रचना—त्रय 2

नागाओं का रहस्य

20 लाख प्रतियों से अधिक बिक चुकी

'अमीश भारत के पहले साहित्यिक पॉपस्टार हैं।'
—शेखर कपूर

'अमीश भारत के टॉल्केन हैं।'
—बिज़नेस स्टेंडर्ड

अमीश

यात्रा

शिव रचना त्रय की प्रशंसा में...

'अमीश की पौराणिक कल्पना अतीत को खोदते हुए भविष्य की संभावनाओं में छलांग लगाती है। उनकी किताबों की श्रृंखला, इतिहास की परतें खोलते हुए हमारी चेतना को झकझोर देती है।'

—दीपक चोपड़ा, जाने-माने आध्यात्मिक गुरु और सफल लेखक

'अमीश भारतीय लेखन की नई आवाज हैं--इतिहास और पुराण में छलांग लगाकर, पारखी नजर से देखते हुए अपने लेखन को प्रभावशाली बना देते हैं।'

--शशि थरूर, भारत सरकार के राज्य मंत्री और लेखक

'पन्ना दर पन्ना जबरदस्त एक्शन।'

—अनिल धारकर, प्रसिद्ध पत्रकार और लेखक

'त्रिपाठी की शिव रचना त्रय की तुलना टॉल्किन की *लॉर्ड ऑफ द रिंग* से की जा रही है।'

--*हिंदुस्तान टाइम्स*

'...अमीश ने भारत के बहुत से मिथकों, लोककथाओं और पौराणिक कथाओं को इकट्ठा कर ऐसे दिलचस्प अंदाज में पेश किया है कि उसने भगवान, संस्कृति, इतिहास, दानव और देवताओं के प्रति हमारे नजरिए को हमेशा के लिए बदल दिया है।'

—*हाई ब्लिट्ज*

'अमीश की शिव रचना त्रय की कहानी ताजगी भरी है... उनके कहने का अंदाज पाठक को पन्ने पलटकर *नीलकंठ* का रहस्य जानने के लिए मजबूर करता है।'

—द टेलीग्राफ

'यह प्यार की परिणिति है... चरित्रों का मानवीकरण करने में अमीश ने भारत के बहुत से लोकप्रिय लेखकों को भी मात दे दी है।'

--मिंट

'उदारता की धारणा, धर्म की समझ और शिव के प्रति दीवानगी ही अमीश की सफलता का सार है।'

--वर्व

'त्रिपाठी उन उभरते लेखकों में से हैं जो इतिहास और मिथक को खंगालकर उसे रोचक रूप में प्रस्तुत करते हैं।'

--द न्यू इंडियन एक्सप्रेस

'(अमीश) इतिहास, धारणा और मिथक के प्रति अपने प्यार को काल्पनिक रूप से एक तिब्बती कबीले के नेता *शिव* के रूप में प्रस्तुत करते हैं।'

--द पायनियर

'समकालीन और शहरी कहानी को मिलाने की त्रिपाठी की सोच ही उनकी किताबों की सफलता का राज है। हालांकि कहानी काल्पनिक है, लेकिन उसके चरित्र और ऐतिहासिक वर्णन आधारभूत हैं...'

--हार्पर'स बाजार

'(अमीश) शिव की शख्सियत को एक मानवीय इंसान में तब्दील करने का अद्भुत प्रयत्न।'

—द सेंटिनल

'शिव रचना त्रय का रोमांच मानो *अमर चित्र कथा* के मसाले में तड़का लगाने जैसा है।'

—रश्मि बंसल, स्टे हंगरी स्टे फुलिश की सफल लेखिका

'मेलूहा के मृत्युंजय' की प्रशंसा में...

'मैं मेलूहा के संसार में पूरी तरह से बहकर, अमीश की इस अद्भुत रचना का कायल हो गया।'

—जाने-माने फिल्मकार, करन जौहर

'शिवा रॉक्स। *मेलूहा के मृत्युंजय* में शिव का एक अलग ही रूप देखने को मिलता है... एक कूल डूड से महादेव बनने तक का शिव का सफर पाठकों के लिए बेहद रोमांचकारी है, इससे पाठक किताब के हर पल से जुड़ सा जाता है।'

—द टाइम्स ऑफ इंडिया

'*मेलूहा के मृत्युंजय*... भगवान शिव और उनकी पहेलीनुमा जिंदगी को एक अलग ही नजरिए से देखता है। ...खूबसूरती से लिखी गई रचना। ...भारतीय इतिहास और पुराण में रुचि रखने वाला पाठक इसे बिना पढ़े नहीं छोड़ सकता।'

—सोसाइटी

'(*मेलूहा के मृत्युंजय*) की कहानी जबरदस्त पकड़ बनाए हुए, सुनियोजित गति से आगे बढ़ती है। एक पौराणिक गाथा को आधुनिक पद्धति से लिखकर, उपन्यास पाठक के मन में जिज्ञासा जगाए रखकर उसे और आगे पढ़ने को विवश करता है।'

—बिजनेस वर्ल्ड

'ब्रंच द्वारा सुझाई गई 5 शीर्ष किताबों में (*मेलूहा के मृत्युंजय*)... गजब की कहानी।'

—हिंदुस्तान टाइम्स

'भले ही किताब (*मेलूहा के मृत्युंजय*) का विषय दर्शन हो लेकिन इसमें पाठकों के लिए ढेर सारा एडवेंचर भी है।'

—द हिंदू

'(*मेलूहा के मृत्युंजय*) एक्शन, प्यार और एडवेंचर से भरी आश्चर्यजनक किताब... लेखक ने सफलतापूर्वक कई पौराणिक चरित्रों को साधारण हाड़-मांस के इंसान में तब्दील किया है... यही इसकी सबसे बड़ी कामयाबी है।'

—द आफ्टरनून

'लेखक मिथक को समकालीन बनाते हुए, हमारे सत्य को लेकर प्रश्न उठाता है। धर्म, लोककथा और पौराणिक तथ्यों से बनी यह काल्पनिक कथा एक असाधारण प्रयास है।'

—पीपल

'...*मेलूहा के मृत्युंजय* विश्व के लिए एक राजनीतिक व्याख्या है,जिसे खुद महादेव ने स्वीकार किया है। शिव के युद्ध की विवेचना के तहत—हर पुरुष और सती समान स्त्री, जो अपने हक की लड़ाई लड़ते हैं, महादेव हैं। इसके हर पन्ने में ऐसे रहस्य हैं, जो आपकी अपनी समझ से परत दर परत खुलने लगते हैं। यही इस पुस्तक की ताकत है।'

—इंडियारीड्स.कॉम

'किताब की अप्रतिम सफलता को देखते हुए, मानना पड़ेगा कि अमीश ने लोकप्रियता की नब्ज पकड़ रखी है...'

--डेक्कन क्रॉनिकल

'नागाओं का रहस्य' की प्रशंसा में...

'शिव रचना त्रय का दूसरा भाग, *नागाओं का रहस्य,* से लगता है अमीश ने सफलता का नया कीर्तिमान रच दिया है।'

--हिंदुस्तान टाइम्स

'*नागाओं का रहस्य* में लेखक ने सुनियोजित ढंग से कहानी का बखान करता है, तथा अंत तक पटकथा पर अपनी पकड़ बनाए रखता है।'

--द संडे गार्जियन

'...एक मनोहर कहानी, जिसमें एक्शन के साथ साथ गहरी और सहज धारणा भी है। अमीश निराश नहीं करते। ...*नागाओं का रहस्य* पाठकों के लिए जिज्ञासा और उत्साह से लबरेज है।'

--आउटलुक

'...किताब अपने आप में दर्शन, आध्यात्मिक संदेश, राज, युद्ध और रहस्य समेटे हुए है।'

--द इंडियन एक्सप्रेस

'यह साफ है कि (*नागाओं का रहस्य*) भारतीय पाठकों के मन के तार झकझोर देती है।'

--द हिंदू

'*नागाओं का रहस्य* के जरिए भी अमीश त्रिपाठी अपना जादू बरकरार रखते हैं।'

--डेक्कन हेराल्ड

'*नागाओं का रहस्य* की पटकथा प्रभावशाली है... त्रिपाठी अव्वल दर्जे के कहानीकार हैं।'

--डीएनए

'जिस पल आप (*नागाओं का रहस्य*) पढ़ना शुरू करते हैं, तभी से आप एक रोलर कोस्टर राइड पर सवार हो जाते हैं... जो बीच-बीच में आपको ऐसी जगहों पर उतारती है, जो रहस्यों से भरी पड़ी है।'

--अलाइव

'इतिहास और पुराण पर लिखी गई ऐसी कम ही किताबें हैं, जो आपको छपे शब्दों से परे सोचने के लिए विवश करती हैं। शिव रचना त्रय पर अमीश की दूसरी किताब *नागाओं का रहस्य,* ऐसी ही एक कृति है।'

—हेराल्ड, गोआ

नागाओं का रहस्य

शिव रचना त्रय की द्वितीय पुस्तक

अमीश

अनुवाद
विश्वजीत 'सपन'

Westland Ltd

प्रीति और मील के लिए...

दुर्भाग्यशाली हैं वो
जो स्वर्ग को जीवन के बाद प्राप्त करते हैं
सौभाग्यशाली हैं वो जो इस वास्तविक
स्वर्ग का अनुभव करते हैं,
यह स्वर्ग जो हमारे अपनों के साथ निवास करता है
मैं सच में भाग्यशाली हूँ

सत्यम् शिवम् सुंदरम्

शिव सत्य है। शिव सुंदर है
शिव पुरुष है। शिव स्त्री है
शिव सूर्यवंशी है। शिव चंद्रवंशी है

आभार

शिव रचना त्रय की प्रथम पुस्तक, *मेलूहा के मृत्युंजय* लोगों को बहुत पसंद आई। सच कहूं तो दूसरी पुस्तक *नागाओं का रहस्य* लिखते समय मुझे इस दबाव का सामना करना पड़ा कि दूसरी पुस्तक भी पहली पुस्तक के समान हो। मुझे नहीं पता कि मैं इसमें सफल हो पाया हूं या नहीं। लेकिन शिव के अप्रतिम साहसिक कार्यों के दूसरे अध्याय को आपके समक्ष लाने में मुझे बहुत ही आनंद का अनुभव हो रहा है। साथ ही, मैं उन सब का आभार व्यक्त करना चाहता हूं जिन्होंने मेरी इस यात्रा को संभव बनाया।

सर्वप्रथम, भगवान शिव, मेरे ईश्वर, मेरे अगुआ, मेरे रक्षक। मैं यह समझने का प्रयास कर रहा हूं कि उन्होंने मुझ जैसे अयोग्य पात्र को इस सुंदर कहानी का आशीर्वाद क्यों दिया। मेरे पास अभी तक इसका उत्तर नहीं है।

मेरे ससुर और निष्ठावान शिव भक्त स्वर्गवासी मनोज व्यास जी, जो इस पुस्तक के अनावरण के कुछ महीने पहले ही चल बसे। वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिनका मैं सदैव सम्मान करता हूं। वे मेरे हृदय में निरंतर वास करते हैं।

मेरी पत्नी प्रीति का, जो मेरे जीवन की आधारशिला है। मेरी सबसे निकटवर्ती सलाहकार और मुझे लिखने के लिए सदा प्रोत्साहित करने वाली।

मेरा परिवार: उषा, विनय, भावना, हिमांशु, मीता, अनीश, दोनेत्ता, आशीष, शेरनाज़, स्मिता, अनुज, रुता। इनके समर्थन एवं प्रेम के लिए। दोनेत्ता का अतिरिक्त उल्लेख आवश्यक है क्योंकि उसने मेरी पहली वेबसाइट का निर्माण किया था।

शर्वणी पंडित, मेरी संपादक। हठी और अत्यधिक उत्साह से शिव रचना त्रय के लिए निष्ठावान। उनके साथ काम करना मेरे लिए सम्मान की बात है।

रश्मि पुसल्कर, इस पुस्तक के आवरण पृष्ठ की रूपकार। एक अत्यंत ही सुघड़ कलाकार, एक जादूगरनी। वह हठी है और सदैव ही अच्छे परिणाम देती है।

गौतम पद्मनाभन, पॉल विनय कुमार, रेणुका चटर्जी, सतीश सुंदरम्, अनुश्री बनर्जी, विपिन विजय, मनीषा शोभ्रंजनी और वैस्टलैंड की अद्भुत टीम, जो मेरे प्रकाशक हैं। उनकी मेहनत, लगन और शिव रचना त्रय में उनकी आस्था के लिए।

अनुज बाहरी, मेरा एजेंट। वह मेरा मित्र है और उसने मुझे तब समर्थन दिया जब मुझे सबसे अधिक आवश्यकता थी। औरयदि मैं अपने लेखन की इस सौभाग्यशाली यात्रा में बिंदुओं को जोड़ता हूं तो मुझे संदीपन देब को भी धन्यवाद देना होगा, जिन्होंने अनुज से मेरी मुलाकात करवाई थी।

चंदन कौली, आवरण पृष्ठ के छायाकार। प्रतिभाशाली और कुशाग्र। आवश्यक चित्रों का उन्होंने बड़ी खूबी से फिल्मांकन किया। चिंतन सरीन को कंप्यूटर ग्राफिक में सर्प की रचना करने के लिए और जूलियन दुबुआ को उनकी सहायता करने के लिए। प्रकाश गोर को रूप सज्जा के लिए। सागर पुसल्कर को सिस्टम सपोर्ट के लिए। उन्होंने सच में जादूगरी की है।

संग्राम सुर्वे, शालिनी अय्यर और थिंक वाय नॉट की समस्त टीम को। इस संस्था ने इस पुस्तक के विज्ञापन एवं डिजिटल विपणन का कार्यभार संभाला है। बाजार के इन विशेषज्ञों के साथ काम करना सुखद अनुभव रहा।

कवल शूर और योगेश प्रधान को प्रारंभिक क्रय-विक्रय योजना के निर्माण के लिए। उन्होंने मुझे सलाह देकर इस पुस्तक की विपणन संबंधी मेरी सोच को संवारा।

और अंततः, सबसे अधिक आप पाठक। अपने खुले दिल से इस पुस्तक को स्वीकार करने के लिए। आपके समर्थन ने मुझे विनीत बना दिया है। मैं आशा करता हूं कि शिव रचना त्रय की इस दूसरी पुस्तक से आप निराश ना हों। आप इस पुस्तक में जो कुछ भी पसंद करेंगे वह प्रभु शिव का आशीर्वाद है और जो कुछ भी आप पसंद नहीं करेंगे, वह मेरी अक्षमता है कि मैं उस आशीर्वाद के साथ न्याय ना कर सका।

शिव रचना त्रय

शिव! महादेव। देवों के देव। बुराई के विनाशक। भावुक प्रेमी। भीषण योद्धा। संपूर्ण नर्तक। चमत्कारी मार्ग दर्शक। सर्व शक्तिमान, फिर भी सच्चरित्र। कुशाग्रबुद्धि और साथ ही साथ उतनी ही शीघ्रता और प्रचंड रूप से क्रुद्ध होने वाले।

कई शताब्दियों से--विजेता, व्यापारी, विद्वान, शासक, पर्यटक--जो भी हमारी भूमि पर आए, उनमें से किसी ने भी यह विश्वास नहीं किया था कि ऐसे महान व्यक्ति सचमुच में ही अस्तित्व में थे। उनकी कल्पना रही थी कि वे पौराणिक गाथाओं के कोई ईश्वर रहे होंगे, जिनका अस्तित्व मात्र मानवीय कल्पनाओं के क्षेत्राधिकार में ही संभव हो सकता था। दुर्भाग्यवश यह विश्वास ही हमारा प्रचलित ज्ञान बन गया।

लेकिन अगर हम गलत हुए तो? अगर भगवान शिव कोरी कल्पना नहीं, बल्कि एक जीते जागते मनुष्य हुए तो। आपके और मेरे समान ही। ऐसे व्यक्ति जो अपने कर्म से ईश्वर के समकक्ष हो गए हों। यही इस शिव रचना त्रय का आधार वाक्य है जो ऐतिहासिक तथ्यों के साथ-साथ काल्पनिक कथा का मिश्रण कर प्राचीन भारत की पौराणिक धरोहर की व्याख्या करता है।

यह पुस्तक भगवान शिव और उनके जीवन को एक श्रद्धांजलि है, जो हमें ढेरों शिक्षाएं देता है। वे शिक्षाएं जो समय एवं अज्ञानता की गहराई में खो गई थीं। वह शिक्षा जिससे हम सभी लोग एक बेहतर मनुष्य बन सकते हैं। वह शिक्षा कि प्रत्येक जीवित व्यक्ति में एक संभावित ईश्वर का वास होता है। हमें मात्र इतना करना है कि स्वयं की सुनना है।

मेलूहा के मृत्युंजय रचना त्रय की प्रथम पुस्तक है जो एक असाधारण नायक का जीवन वृत्तांत है। आपके हाथ में यह दूसरी पुस्तक है, जिसका नाम है--नागाओं का रहस्य। एक और पुस्तक जल्द ही आने वाली है: वायुपुत्रों की शपथ।

लेखक की कलम से

नागाओं का रहस्य इस पृष्ठ के आगे से ही उजागर किया जा रहा है। यह शिव रचना त्रय की दूसरी पुस्तक है और यह उसीक्षण से प्रारंभ होती है, जहां पहली पुस्तक अर्थात *मेलूहा के मृत्युंजय* समाप्त हुई थी। वैसे मेरा मानना है कि इस पुस्तक का आनंद आप विना प्रथम पुस्तक पढ़े भी ले सकते हैं, लेकिन यदि आप *मेलूहा के मृत्युंजय* को पहले पढ़ेंगे तो आपको इस पुस्तक को पढ़ने में और भी अधिक आनंद आएगा। यदि आपने पहले से ही *मेलूहा के मृत्युंजय* को पढ़ रखा है तो आप इस संदेश को अनदेखा कर सकते हैं।

मेरी आशा है कि आप इस पुस्तक को पढ़ने में उतना ही आनंद उठा पाएंगे, जितना मैंने इसके लेखन में उठाया है।

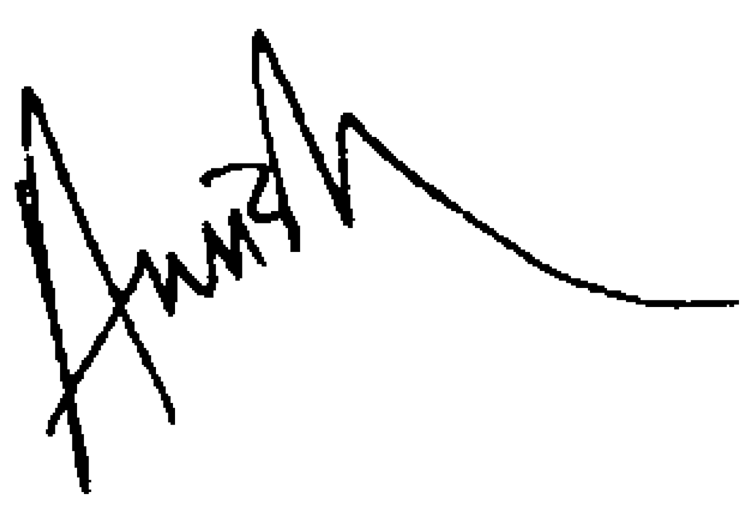
एक बात और, विभिन्न धर्मो के बहुत से लोगों ने मुझसे यह पूछा है कि क्या भगवान शिव अन्य देवताओं से श्रेष्ठ हैं।यदि मुझे इस संबंध में कुछ कहना ही है तो मैं अपनी प्रतिक्रिया को यहां दुवारा लिखना चाहूंगा। ऋग्वेद में एक बहुत ही सुंदर पंक्ति संस्कृत में लिखी हुई है जो मेरे विश्वास की पुष्टि करती है।

एकम् सत विप्रा बहुधा वदन्ति।
सत्य एक है, यद्यपि ऋषिगण उसे अनेक जानते हैं।

ईश्वर एक है, यद्यपि विभिन्न धर्म उसे प्राप्त करने के विभिन्न माध्यमों का चयन करते हैं।

उन्हें आप शिव, विष्णु, अल्लाह, प्रभु यीशु या किसी अन्य नाम से पुकार सकते हैं, जिसमें आपकी आस्था है।

हमारे मार्ग चाहे भिन्न हों, हमारा लक्ष्य एक ही और समान है।



प्रारंभ से पहले

वह बालक जितनी गति से दौड़ सकता था, दौड़ता जा रहा था। उसके शीतदंश वाले पैर के अंगूठे से एक चुभन उसके पैर से ऊपर तक लहरा रही थी। उस स्त्री की गुहार उसके कानों में लगातार गूंज रही थी: 'सहायता करें! कृपया मेरी सहायता करें!'

वह बिना थमे अपने गांव की ओर सरपट भागता जा रहा था। और उसके बाद सहसा ही एक विशालकाय, बालों वाले व्यक्ति ने उसे प्रयासरहित एक ओर को खींच लिया था। अब वह हवा में झूल रहा था और अपने पैरों को धरती पर रखने को बेताब हो रहा था। वह बालक उस राक्षस की वीभत्स हंसी सुन पा रहा था जो उसके साथ खेल रहा था। उसके बाद राक्षस ने अपने दूसरे हाथ से उसे चकरघिन्नी की तरह घुमा दिया और कसकर पकड़ लिया था।

वह बालक स्तब्ध होकर निःशब्द हो गया। उसने देखा कि शरीर तो बालों वाले राक्षस का था, लेकिन चेहरा उस सुंदर स्त्री का था जिसके पास से वह कुछ क्षण पहले ही भाग आया था। उसका मुंह खुला हुआ था, लेकिन उससे निकलने वाला स्वर स्त्रीरूपी ना होकर एक रक्तपिपासु गर्जना थी।

'तुम्हें बहुत आनंद आया ना? तुम्हें मेरी विपत्ति पर बहुत आनंद आया ना? तुमने मेरी विनती को अनसुना कर दिया ना? अबयह चेहरा तुम्हें शेष जीवन सताता रहेगा!'

उसके बाद एक छोटी तलवार पकड़े हुए एक और विकृत हाथ ना जाने कहां से उभरा और इससे पहले कि वह बालक कुछ समझ पाता, उसने उस भव्य सिर को बेधड़ कर दिया।

'नहीं ऽ ऽ ऽ ऽ!' अपने सपने से हड़बड़ाकर उठते हुए वह नन्हा बालक चीख पड़ा।

उसने पुआल की शय्या पर चारों ओर चौंककर नजर घुमाई। देर संध्या का समय था। उसकी अंधकारमय झोपड़ी में सूरज की थोड़ी-बहुत रोशनी छन-छनकर आ रही थी। द्वार पर एक छोटी सी आग दम तोड़ रही थी। अचानक ही किसी के तेजी से अंदर आने पर वह दहक उठी।

'शिव? क्या हुआ? क्या तुम ठीक हो, पुत्र?'

बालक ने ऊपर की ओर देखा। वह पूरी तरह से घबराया हुआ था। उसकी मां ने उसे अपनी बांहों में लिया और उसके थके हुए सिर को अपने सीने से लगा लिया। उसके कानों में मां की आरामदेह, ममतामयी और सधी हुई आवाज आई, 'सब ठीक है, मेरे बच्चे। मैं यहीं हूं। मैं यहीं हूं।'

बालक ने अनुभव किया कि जैसे ही उसकी आंखों से आंसू बहने लगे तो उसके शरीर का तनाव भी कम होने लगा था।

'क्या हुआ, मेरे बच्चे? वही भयानक सपना?'

बालक ने अपना सिर हिलाया। आंसू और तेजी से बहने लगे।

'वह तुम्हारा दोष नहीं है। तुम क्या कर सकते थे, पुत्र? वह तुमसे तीन गुना बड़ा था। एक बड़ा आदमी।'

बालक ने कुछ भी नहीं कहा, लेकिन उसका शरीर अकड़ गया। उसकी मां उसके चेहरे पर लाड़ से अपने हाथ फिराती हुई उसके आंसू पोंछती रही, 'तुम मारे भी जा सकते थे।'

बालक ने अचानक ही अपने शरीर को झटका दिया।

'तो फिर मुझे मर ही जाना चाहिए था! मैं इसी का पात्र था!'

उसकी मां हैरान हो मूक हो गई। उसने कभी भी अपनी मां से इस तरह ऊंची आवाज में बात नहीं की थी। कभी भी नहीं। उसने जल्दी से इस विचार को झटक दिया और पुत्र का चेहरा सहलाने के लिए हाथ आगे बढ़ाया, 'ऐसा दुबारा मत कहना, शिव। यदि तुम जीवित नहीं रहोगे तो मेरा क्या होगा?'

शिव ने अपनी नन्ही मुट्ठी को घुमाया और अपने ललाट पर मारता रहा, तब तक जब तक कि उसकी मां ने उसकी मुट्ठी नहीं हटाई। क्रोध से एक गहरे लाल रंग का निशान उसकी भौंहों के बीच उभर आया।

मां ने उसके हाथ नीचे कर उसे खींचकर अपने सीने से लगा लिया। उसके बाद जो उसने कहा वह सुनकर शिव चौंका, 'सुनो, मेरे बच्चे! तुमने ही बताया था कि उसने स्वयं को बचाने का प्रयत्न नहीं किया। वह उस व्यक्ति के पास रखे चाकू तक पहुंच सकती थी और उसे चोट पहुंचा सकती थी, है ना?'

पुत्र ने कुछ कहा नहीं। उसने सिर हिलाकर मात्र सहमति प्रकट की।

'क्या तुम जानते हो कि उसने ऐसा क्यों नहीं किया?'

बालक ने अपनी माता की ओर उत्सुकता से देखा।

'क्योंकि वह व्यावहारिक थी। वह जानती थी कि यदि वह संघर्ष करती तो संभवतया अपने प्राण गंवा बैठती।'

शिव अपनी मां की ओर भावशून्य हो एकटक देख रहा था।

'जान उसकी जोखिम में थी और फिर भी उसने वही किया जो उसे जीवित रहने के लिए करना था--प्रतिकार ना करना।'

उसकी आंखें एक पल के लिए भी अपनी मां के मुख से नहीं हटीं।

'फिर तुम्हारा व्यावहारिक बनना और जीवित रहने की इच्छा करना गलत कैसे हो सकता है?'

बालक पुनः सिसकियां भरने लगा। उसके मन को कुछ शांति मिल रही थी।

अध्याय 1

विचित्र दानव

शिव ने तेजी से तलवार निकाली और अपनी पत्नी की ओर दौड़ पड़ा। दौड़ते हुए ही वह चिल्लाया, 'सती!' और साथ ही अपनी ढाल आगे की ओर कर ली।

वह उसकी चाल में फंस जाएगी!

ज्यों ही उसने देखा कि अयोध्या के राम जन्मभूमि मंदिर की ओर जाने वाली सड़क के पास, पेड़ों के झुंड की ओर झपट्टा मारकर सती पहुंच चुकी थी तो शिव जोर से चिल्लाया, 'रुको!' और उसके साथ ही उसने अपनी गति और बढ़ा दी।

वह मुखौटा पहने चोगाधारी नागा सावधानी से पीछे हटता जा रहा था। सती उस पर पूरी तरह से ध्यान केंद्रित किए हुए थी। उसने तलवार बाहर निकालकर अपने शरीर से दूर साधी हुई थी। ठीक उस मंझे हुए योद्धा की तरह जिसका शिकार उसकी आंखों के सामने होना है।

शिव को सती के पास पहुंचने में कुछ क्षण लग गए। उसने सुनिश्चित कर लिया था कि सती अब सुरक्षित थी। उसके बाद दोनों मिलकर नागा का पीछा करने लगे। शिव का ध्यान उस नागा की ओर चला गया। वह भौचक्का था।

वह कुत्ता इतनी जल्दी इतनी अधिक दूर कैसे पहुंच गया?

सहजता के साथ, आश्चर्यजनक फुर्ती से, वृक्षों और ऊंचे-नीचे पहाड़ी ढलुआ मैदानों के मध्य वह नागा बड़ी सरलता से अपनी गति बढ़ाता हुआ दूर जाता दिख रहा था। मेरु के ब्रह्मा मंदिर पर नागा से हुई लड़ाई शिव को याद आई, जब वह सती से पहली बार मिला था।

ब्रह्मा मंदिर पर उसके पैरों की धीमी गति मात्र युद्ध नीति थी।

शिव ने अपनी ढाल उलटकर पीठ पर लटका ली ताकि उसे और तेज भागने में आसानी हो सके। सती उसके साथ-साथ, उसकी गति से गति मिलाकर बाईं ओर से दौड़ रही थी। सहसा सती ने एक सांकेतिक ध्वनि निकाली और अपनी दाईं ओर संकेत किया, जहां रास्ता दो भागों में विभक्त हो रहा था। शिव ने सहमति में सिर हिलाया। वे अलग हो जाएंगे और नागा को उस संकरी पहाड़ी पर दो विपरीत दिशाओं से घेरने का प्रयास करेंगे।

शिव वहां से दाईं ओर एक नए सिरे से तीव्र गति में भागा। उसकी तलवार आक्रमण करने की मुद्रा में बाहर निकली हुई थी और उधर सती भी पूरी ताकत के साथ नागा के पीछे-पीछे उसी तरह भागती जा रही थी। नए मार्ग में मैदान समतल था जिसके कारण शिव तेजी से उस दूरी को कम कर पाया था। उसने देखा कि नागा ने अपनी ढाल को दाहिने हाथ से पकड़ा हुआ था और बायां हाथ सुरक्षा के लिए मुक्त रखा था। शिव की त्योरी चढ़ गई।

सती अभी भी कुछ दूरी पर थी। नागा की दाईं ओर तेजी से जाकर शिव ने बाएं हाथ से चाकू निकाला और उस नागा के गले की ओर फेंका। उसके बाद हैरान शिव ने एक शानदार कौशल देखा जिसके बारे में उसने कल्पना तक नहीं की थी कि ऐसा कुछ संभव है।

चाकू को देखने के लिए मुड़े बिना और चाल धीमी किए बिना ही वह नागा अपनी ढाल को उस चाकू के सामने ले आया। चाकू उस ढाल से टकराकर सुरक्षित उछल गया। उसके साथ ही नागा ने अपनी गति ज्यों की त्यों रखते हुए ढाल को पुनः पीठ पर सहजता से लटका लिया।

शिव विस्मित था, उसकी गति धीमी पड़ गई थी।

उसने चाकू को बिना देखे ही रोक लिया! यह कमीना है कौन?

इस बीच सती ने अपनी गति बरकरार रखी थी। वह नागा के निकट पहुंचती जा रही थी। उधर शिव दूसरी ओर से उसी मार्ग पर दौड़ पड़ा था, जिस पर नागा दौड़ रहा था।

सती एक संकरे से पुल को पार कर रही थी। यह देख सती के निकट पहुंचने के लिए शिव ने अपनी गति और बढ़ा दी। तिरछी ढलुआ पहाड़ी पर सीधे कोण के कारण वह नागा को और आगे तक देख सकता था जो पहाड़ी के नीचे की दीवार तक पहुंच रहा था। पहाड़ी के नीचे की वह दीवार जानवरों के आक्रमण एवं अनधिकृत प्रवेश करने वालों से राम जन्मभूमि मंदिर को सुरक्षा प्रदान करती थी। उस दीवार की ऊंचाई ने शिव को भरोसा दिया कि उसे उछलकर पार करना नागा के लिए संभव नहीं था। इसके लिए उसे दीवार पर चढ़ना पड़ेगा, जिसके कारण सती और उसे कुछ महत्वपूर्ण क्षण मिल जाएंगे, जो उस तक पहुंचने और हमला करने के लिए आवश्यक होंगे।

उस नागा को भी इसका बोध हो चुका था। जैसे ही वह दीवार के निकट पहुंचा अचानक अपनी ऐड़ी पर घिरनी की तरह घूम गया। उसके दोनों हाथ फैल गए जिनमें दो तलवारें थीं। जो तलवार उसके दाएं हाथ में थी वह एक पारंपरिक तलवार थी, जो संध्या के सूर्यप्रकाश से दीप्तिमान थी और जो उसके बाएं हाथ में थी, वह मध्यम आकार की मूंठ पर चढ़ी हुई एक विचित्र प्रकार की दोधारी तलवार थी। जब शिव नागा के निकट पहुंचा तो उसने अपनी ढाल को आगे की ओर खींच लिया। सती ने नागा पर दाईं ओर से हमला किया।

उस नागा ने लंबी तलवार को बहुत ही शक्ति से हवा में लहराया जिसके कारण सती को विवश होकर पीछे हटना पड़ा। सती के पीछे हटने पर उस नागा ने अपने बाएं हाथ को झटके के साथ मोड़ा जिसके कारण उस वार से बचने के लिए शिव को अपना सिर झुकाना पड़ा। जैसे ही नागा की तलवार बिना कोई हानि किए घूमी, तभी अवसर देखकर शिव हवा में ऊंचा उछला और उसने उतनी ऊंचाई से नीचे की ओर वार किया। यदि प्रतिद्वंद्वी अपनी ढाल ना पकड़े हुए हो तो एक ऐसा वार जिससे सुरक्षा करना लगभग असंभव था। किंतु वह नागा वार से बचता हुआ सहजता से पीछे हटा। जबकि उसने अपनी छोटी तलवार को आगे की ओर चलाया जिसके कारण शिव को पीछे हट जाना पड़ा। उस वार को असफल करने के लिए नीलकंठ को तेजी से अपनी ढाल को हवा में लहराना पड़ा।

सती पुनः आगे की ओर बढ़ी। उसकी तलवार ने नागा को पीछे जाने पर विवश किया। इसका लाभ उठाकर सती ने बाएं हाथ से अपनी पीठ के पीछे से एक चाकू निकाला और नागा पर फेंका। उस नागा ने सही समय पर अपनी गर्दन झुकाई और उस चाकू को बिना कोई हानि पहुंचाए दीवार में जाने दिया। शिव और सती दोनों को अभी तक नागा पर एक भी वार करने में सफलता नहीं मिली थी, हालांकि वे उसे धीरे-धीरे पीछे हटने पर विवश करते जा रहे थे। बस कुछ ही समय की बात थी कि वह दीवार से चिपक जाने वाला था।

पवित्र झील की सौगंध, अंततः वह मेरी पकड़ में होगा।

और उसके बाद नागा ने अपने बाएं हाथ से बहुत ही भयंकर तरीके से तलवार लहराई। वह तलवार शिव तक पहुंचने के लिए बहुत छोटी थी और ऐसा लगा कि उसकी यह चाल बेकार गई। शिव आगे बढ़ा। उसे विश्वास था कि वह नागा के धड़ पर हमला करेगा। लेकिन नागा इस वार उस छोटी तलवार की धुरी पर बने मूंठ को अपने अंगूठे से दबाते हुए पीछे की ओर झूल गया। उस दोधारी तलवार में से एक धार दूसरी धार से जुड़कर लंबी हो गई, जिसने उस तलवार की पहुंच को दुगुना कर दिया। उस धार से शिव का कंधा कट गया। धार पर लगे विष ने शिव को तत्काल ही गतिहीन करते हुए उसके शरीर में बिजली का एक झटका दिया।

'शिव!' सती चिल्लाई जबकि उसने नागा के दाहिने हाथ की तलवार पर अपनी तलवार लहराई, इस आशा में कि उसके हाथ से तलवार को गिरा देगी। टक्कर होने से कुछ क्षण पहले ही नागा ने अपनी लंबी तलवार नीचे गिरा दी, जिसके कारण सती को झटका लगा। जब वह संतुलन बनाए रखने का प्रयास कर रही थी तो उसके हाथ से तलवार छूट गई।

'नहीं!' शिव चिल्लाया। वह अपनी पीठ के बल असहाय पड़ा कोई भी गति करने में असमर्थ था।

उसने देख लिया था कि सती क्या भूल गई थी। राम जन्मभूमि मंदिर में एक पेड़ के पीछे छुपे हुए नागा को देखकर सती ने उस पर जो अपना चाकू फेंका था, वह चाकू नागा के दाहिने हाथ पर बंधा हुआ था। गिरते हुए उस नागा ने सती के पेट पर अपने दाहिने हाथ से घुमाकर प्रहार कर दिया। सती ने अपनी गलती समझने में बहुत देर कर दी थी।

लेकिन उस नागा ने अंतिम क्षणों में अपने हाथ को रोक लिया। अतः जो प्रहार प्राणघातक हो सकता था, वह बस सतही घाव दे पाया था। रक्त की बूंदें घाव से छलछलाने लगी थीं। उस नागा ने अपनी बाईं कोहनी से सती की नाक को तोड़ते हुए और उसे धरती पर गिराते हुए एक कड़ा प्रहार किया।

दोनों शत्रुओं के गतिहीन हो जाने पर उस नागा ने तेजी से अपनी लंबी तलवार को दाहिने पैर से झटके से दबाकर ऊपर उछाला। उसने अपने दोनों हथियार लहराते हुए म्यानों में रख लिए। उसकी आंखें अभी भी शिव और सती पर जमी हुई थीं। उसके बाद अपने पीछे की दीवार की मुंडेर को हाथों से पकड़कर नागा ऊंचा उछल गया।

'सती!' जैसे ही विष का दुष्प्रभाव घटा, शिव अपनी पत्नी की ओर भागता हुआ चिल्लाया।

सती ने अपने पेट को जकड़ रखा था। उस नागा ने त्योरी चढ़ाई क्योंकि घाव मात्र सतही था। उसके बाद नागा की आंखें चौड़ी होकर चमक उठीं।

वह गर्भवती है।

अपने अत्यधिक विशाल उदर को ऊपर की ओर सिकोड़ते हुए उस नागा ने पैर सरलता से उठाए और दीवार से पार हो गया।

'कसकर दबाओ!' गहरा घाव समझते हुए शिव चिल्लाया।

शिव ने चैन की सांस ली जब उसे अहसास हुआ कि घाव हल्का था। यद्यपि रक्त की हानि एवं सती की नाक पर लगी ठोकर उसे चिंतित कर रही थी।

सती ने ऊपर की ओर देखा। उसकी नाक से रक्त बहे जा रहा था लेकिन आंखें गुस्से से दहक रही थीं। उसने अपनी तलवार उठाई और गरजी, 'पकड़िए उसे!'

अपनी तलवार उठाते हुए शिव पीछे मुड़ गया। और जब तक दीवार के पास पहुंचता, उसने तलवार अपनी म्यान में डाल ली थी। वह बड़ी तेजी से दीवार के ऊपर चढ़ गया। सती ने उसके पीछे जाने का प्रयास किया। किंतु जा ना सकी। उधर शिव दूसरी तरफ भीड़ भरी गली में उतरा। उसने नागा को एक अच्छी दूरी पर देखा जो अब भी बड़ी तेजी से दौड़ता चला जा रहा था।

शिव ने उस नागा के पीछे दौड़ना प्रारंभ कर दिया। लेकिन जानता था कि वह यह संघर्ष पहले ही हार चुका था। वह बहुत ही पीछे था। अब वह उस नागा से इतनी घृणा कर रहा था, जितनी उसने कभी किसी से नहीं की थी। उसकी पत्नी का उत्पीड़क! उसके भाई का हत्यारा! और उसके बाद भी गहरे अंतर्मन में वह उस नागा की युद्ध कला के कौशल की असीम प्रतिभा से अचंभित था।

वह नागा एक दुकान में बंधे हुए अश्व की ओर दौड़ रहा था।

यकायक हतप्रभ करते हुए वह बहुत ही ऊंचा उछला, उसका दाहिना हाथ फैला हुआ था और वह उस अश्व के ऊपर बहुत ही सरलता से जा बैठा। बैठने के साथ ही उसने दाहिने हाथ के चाकू से, अश्व की रस्सी को काटकर उसे मुक्त कर दिया। चकित अश्व के अपने पिछले दोनों पैरों पर खड़े हो जाने के कारण उसकी लगाम पीछे की ओर उड़कर आ गई। नागा ने बड़ी सहजता से उसे अपने बाएं हाथ में पकड़ा। तत्काल ही उसने अश्व के कान में कुछ फुसफुसा कर उसे ऐड़ लगा दी। अश्व ने नागा के शब्दों पर फुर्ती से कूद लगाई और सरपट भागने लगा।

एक आदमी दुकान से तेजी से बाहर आया और जोर से चिल्लाया, 'रोको-रोको! चोर! वह मेरा अश्व है!'

उस नागा ने यह हो-हल्ला सुनकर अपने परिधान की परतों में हाथ डालकर कोई वस्तु निकाली और बहुत ही बल से पीछे की ओर फेंकी, जबकि वह स्वयं निरंतर सरपट भागता जा रहा था। उस वस्तु का प्रहार इतना अधिक था कि अश्ववाला लड़खड़ाकर धरती पर चित्त जा गिरा।

'पवित्र झील भला करे!' शिव उस आदमी की ओर तेजी से दौड़ता हुआ चिल्लाया, जिसके बारे में उसने सोचा था कि वह गंभीर रूप से घायल हो गया होगा।

जैसे ही वह उस अश्ववाले के पास पहुंचा तो यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि वह व्यक्ति दर्द के मारे अपने सीने को मलता हुआ धीरे से उठ खड़ा हुआ और बहुत जोर-जोर से गाली देने लगा, 'भगवान करे, उस हरामी की कांख में हजार कुत्तों के पिस्सू भर जाएं!'

'क्या तुम ठीक हो?' उस आदमी के सीने का परीक्षण करते हुए शिव ने पूछा।

उस अश्ववाले ने शिव के शरीर को ध्यान से देखा। उसके शरीर पर लगे घावों से रक्त बह रहा था। यह देखकर वह भय से चुप हो गया।

उस वस्तु को उठाने के लिए शिव नीचे झुका जिसे उस नागा ने घुड़सवार पर फेंका था। वह एक थैली थी जो ऐसी शानदार रेशम से बनी हुई थी जैसी उसने पहले कभी नहीं देखी थी। कोई घात समझकर शिव ने उस थैली को बड़ी सावधानी से परीक्षण करने की भांति खोला, लेकिन उसमें सिक्के थे। उसने एक सिक्का बाहर निकाला और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि वह सिक्का सोने का था। उसमें कम से कम पचास और सिक्के वैसे ही थे। वह उस दिशा में मुड़ा जिस दिशा में वह नागा सवारी करके भागा था।

वह आखिर किस प्रकार का दानव है? अश्व चुराता है और उसके बाद पर्याप्त मात्रा में इतना सोना छोड़ देता है जिससे कि पांच और अश्व खरीदे जा सकते हैं!

'सोना!' वह अश्ववाला धीरे से फुसफुसाया। फिर उसने शिव के हाथ से थैला झपट लिया और बोला, 'यह मेरा है!'

शिव ने उसकी ओर नहीं देखा। वह अभी भी एक सिक्का अपने हाथ में पकड़े हुए था। उस पर छपे अंकन का परीक्षण करते हुए वह बोला, 'मुझे एक सिक्के की आवश्यकता है।'

वह घुड़सवार डरते-डरते बोला, 'लेकिन...' क्योंकि वह शिव के समान बलशाली व्यक्ति से कोई लड़ाई नहीं करना चाहता था।

शिव घृणा से फुफकारा। उसके बाद उसने अपनी थैली से सोने के दो सिक्के निकाले और उस घुड़सवार को दे दिए जो अपने इस आशातीत भाग्यशाली दिन के लिए अपने नक्षत्रों को धन्यवाद देता हुआ तेजी से एक ओर भाग निकला।

शिव लौट आया और उसने देखा कि सती सिर को ऊपर रखते हुए, अपनी नाक को दबाए दीवार का सहारा लेकर आराम कर रही थी।

'तुम ठीक हो?'

सती ने प्रत्युत्तर में सिर हिलाया। सूखे हुए रक्त से उसका मुख गंदा हो चुका था, 'हां। आपका कंधा? ठीक नहीं लग रहा है।'

'वह देखने में जितना बुरा लग रहा है, उतना है नहीं। मैं ठीक हूं। तुम चिंता मत करो।'

सती ने उस दिशा में देखा जिस दिशा में वह नागा भागा था,'उसने अश्ववाले के ऊपर क्या फेंका था?'

'इससे भरा हुआ एक थैला,' शिव ने सती को वह सिक्का दिखाते हुए कहा।

'उसने सोने के सिक्के फेंके?'

शिव ने सहमति में सिर हिलाया।

सती ने त्योरी चढ़ाई और अपना सिर हिलाया। उसने उस सिक्के को ध्यान से देखा। उस पर मुकुट पहने हुए एक विचित्र व्यक्ति की मुखाकृति बनी हुई थी। यह विस्मित करने वाली बात थी कि नागाओं की भांति उसमें कोई विकृति नहीं थी।

'यह तो कहीं का राजा जान पड़ता है,' अपने मुंह से रक्त साफ करते हुए सती ने कहा।

'लेकिन इन अनोखे अंकन को देखो,' शिव ने सिक्के को दूसरी ओर पलटकर कहा।

उसके ऊपर एक क्षैतिज नवचंद्र का प्रतीक चिह्न था। लेकिन जो विचित्र बात थी, वह थी रेखाओं के जाल की जो सिक्के के आर-पार बना हुआ था। दो टेढ़ी-मेढ़ी पंक्तियां मध्य में आकर जुड़ी हुई थीं और एक अनियमित कोण बना रही थीं तथा उसके बाद वे मकड़ी के जाले के समान वहां से फूट पड़ी थीं।



'मैं चंद्रमा को समझ सकती हूं। लेकिन रेखाएं किसकी प्रतीक हो सकती हैं?' सती ने पूछा।

'मैं नहीं जानता,' शिव ने स्वीकारा। लेकिन वह एक चीज स्पष्ट रूप से जानता था। उसके मन का बोध स्पष्ट था।

नागाओं को ढूंढ़ो। बुराई की खोज के लिए वे ही तुम्हारे सूत्र हैं। नागाओं को ढूंढ़ो।

सती अपने पति का मन पढ़ने में कुछ-कुछ सक्षम थी, 'तो फिर हमें आने वाले विकर्षणों को अपने मार्ग से दूर रखना चाहिए?'

शिव ने उसकी ओर देखकर सिर हिलाया, 'लेकिन पहले तुम्हें आयुर्वती के पास लेकर चलता हूं।'

'आपको उनकी अधिक आवश्यकता है,' सती ने कहा।

'आपको हमारी लड़ाई से कुछ लेना-देना नहीं है?' दक्ष ने अचंभे से पूछा, 'आप नहीं समझ रहे हैं, प्रभु। आपने हमें अब तक की सबसे महान विजय दिलवाई है। अब हमें अपना काम पूरा करना है। चंद्रवंशी शैली वाले बुरे जीवन को समाप्त होना है और इन लोगों से हमारी

शुद्ध सूर्यवंशी शैली का अनुगमन करवाना है।'

'लेकिन, महाराज,' पीड़ा से छुटकारा पाने के लिए पट्टी बंधे हुए कंधे को थोड़ा हिलाते हुए विनम्र लेकिन दृढ़ निश्चयी स्वर में शिव ने कहा, 'मैं नहीं समझता कि ये लोग दुष्ट हैं। मैं अब समझ चुका हूं कि मेरा लक्ष्य भिन्न है।'

दक्ष के बाएं बैठा दिलीप बहुत प्रसन्न हुआ। शिव के शब्द उसके लिए पीड़ाहारी लेप के समान थे। शिव के दाएं सती एवं पर्वतेश्वर शांत बैठे थे। नंदी और वीरभद्र थोड़ी दूर ही पहरे पर खड़े थे लेकिन उत्सुकतापूर्वक सुन रहे थे। दक्ष के समान ही एकमात्र जो क्रोध में था वह था, अयोध्या का राजकुमार भगीरथ।

'सच क्या है, यह जानने के लिए हमें किसी विदेशी बर्बर के प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं है!' भगीरथ ने कहा।

'चुप रहो,' दिलीप ने फुसफुसाकर कहा, 'तुम नीलकंठ का अपमान नहीं करोगे।'

हाथ जोड़कर शिव की ओर मुड़ते हुए दिलीप ने कहना जारी रखा, 'मेरे अविवेकी पुत्र को क्षमा करें, प्रभु। वह बोलने से पहले सोचता नहीं है। आपने कहा कि आपका लक्ष्य भिन्न है। कृपया हमें बताएं कि अयोध्या आपकी कैसे मदद कर सकता है?'

प्रकट रूप से चिढ़े हुए भगीरथ को शिव ने गौर से देखा और उसके बाद दिलीप की ओर मुड़ा, 'मैं नागाओं को कैसे ढूंढ़ सकता हूं?'

अचंभित एवं भयभीत दिलीप ने सहमकर गले में पहनी प्रभु रुद्र की प्रतिमा को पकड़ लिया। उधर दक्ष ने अपनी दृष्टि ऊपर की।

'प्रभु, वे लोग पूर्णतया दुष्ट व बुरे हैं,' दक्ष ने कहा, 'आप उन्हें क्यों ढूंढ़ना चाहते हैं?'

'आपने अपने प्रश्न का उत्तर दे दिया है, महाराज,' शिव ने कहा। वह दिलीप की ओर मुड़ गया, 'मुझे विश्वास नहीं है कि आप नागाओं से मिले हुए हैं। लेकिन आपके साम्राज्य में कुछ लोग हैं जो मिले हुए हैं। मैं जानना चाहता हूं कि मैं उन लोगों तक कैसे पहुंच सकता हूं।'

'प्रभु,' थूक निगलते हुए दिलीप ने कहा, 'ऐसी अफवाह है कि ब्रंगा का राजा काली ताकतों से मेल-जोल रखता है। वह आपके प्रश्नों का उत्तर दे सकता है। लेकिन उस विचित्र किंतु अत्यधिक समृद्ध साम्राज्य में किसी विदेशी का ही नहीं हमारा भी प्रवेश निषेध है। वास्तव में, मुझे लगता है कि ब्रंगा हमें उनकी भूमि में प्रवेश ना करने के लिए ही शुल्क देता है, इसलिए नहीं कि उन्हें युद्ध में हमसे पराजित होने का कोई भय है।'

'आपके साम्राज्य में कोई दूसरा राजा भी है? यह कैसे संभव है?' आश्चर्यचकित शिव ने पूछा।

'हम सूर्यवंशियों की तरह हठी नहीं हैं। हम सभी लोगों पर एकल विधि के ही पालन करने का दबाव नहीं डालते। प्रत्येक साम्राज्य में उसके राजा के अपने अधिकार हैं, उनकी अपनी विधि है और उनके अपनी जीवनशैली है। वे अयोध्या को शुल्क देते हैं क्योंकि हमने उन्हें महान अश्वमेध यज्ञ के माध्यम से युद्ध में पराजित किया है।'

'अश्व बलि?'

'हां, प्रभु,' दिलीप ने कहना जारी रखा, 'बलि का अश्व इस भूमि पर किसी भी साम्राज्य में मुक्त भाव से विचरण करता है। यदि कोई राजा उस अश्व को रोकता है तो हम युद्ध करते हैं, उन्हें पराजित करते हैं और उनके राज्य क्षेत्र पर अधिकार कर लेते हैं। यदि वे अश्व को नहीं रोकते हैं तो वह साम्राज्य हमारा उपनिवेश बन जाता है और हमें शुल्क देता है लेकिन उसके बाद भी उन्हें अपने नियम बनाए रखने की अनुमति होती है। इस प्रकार हम मित्र राजाओं के एक राज्य संघ की भांति हैं, ना कि मेलूहा के समान एक कट्टर साम्राज्य।'

'अपने शब्दों पर लगाम लगाओ, निर्लज्ज मूर्ख,' दक्ष भड़क उठा, 'तुम्हारा राज्य संघ मुझे तो बलात् वसूली की भांति प्रतीत होताहै। वे तुम्हें शुल्क देते हैं क्योंकि यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो तुम उनकी भूमि पर आक्रमण करोगे और उन्हें लूट लोगे। इसमें राजसी धर्म कहां है? मेलूहा में, सम्राट होना किसी को शुल्क प्राप्त करने का अधिकार नहीं देता है, बल्कि साम्राज्य की सारी प्रजा की भलाई के लिए कार्य करने का उत्तरदायित्व प्रदान करता है।'

'और यह कौन निर्णय करता है कि प्रजा के लिए अच्छा क्या है? आप? किस अधिकार से? लोगों को तो वह करने की अनुमति होनी चाहिए जो वे करना चाहते हैं।'

'तो फिर उसके बाद अव्यवस्था होगी,' दक्ष चिल्लाया, 'तुम्हारे नैतिक मूल्यों की तुलना में तुम्हारी मूर्खता कहीं अधिक स्पष्ट है!'

'बहुत हो गया!' शिव ने अपनी झुंझलाहट पर नियंत्रण रखने का प्रयास करते हुए कहा, 'क्या आप दोनों ही सम्राट परस्पर दोषारोपण

कृपया बंद करेंगे?'

दक्ष ने शिव की ओर आश्चर्यमिश्रित क्रोध से देखा। पहले से अधिक आत्मविश्वासी शिव ना केवल नीलकंठ की भूमिका को स्वीकार कर रहे हैं, बल्कि उसमें जीने लगे हैं। दक्ष का हृदय डूब गया। परिवार का कोई सदस्य पूरे भारत का सम्राट हो और समस्त नागरिकों को सूर्यवंशीय जीवनशैली प्रदान करे, वह जानता था कि उसके पिता के इस सपने की पूर्ति की संभावना प्रतिक्षण धूमिल होती जा रही थी। वह स्वद्वीपवासियों को बेहतर युद्ध कौशल एवं तकनीक के कारण युद्ध में पराजित तो कर सकता था लेकिन उसके पास पर्याप्त सैनिक नहीं थे कि वह उस विजित भूमि पर नियंत्रण कर सके। इसके लिए उसे उस आस्था की आवश्यकता थी जो स्वद्वीपवासियों की नीलकंठ में थी। यदि नीलकंठ उसके सोचने के तरीके से नहीं चले तो उसकी योजना का असफल होना अवश्यंभावी था।

'आप ऐसा क्यों कहते हैं कि ब्रंगावालों की मित्रता नागाओं से है?' शिव ने पूछा।

'मैं दावे के साथ तो नहीं कह सकता, प्रभु,' दिलीप ने कहा,'लेकिन मैं अफवाहों की बात कर रहा हूं जो किसी ने काशी में रहनेवाले व्यापारियों से सुनी है। स्वद्वीप में यही एकमात्र ऐसा राज्य है, जिसके साथ ब्रंगा राज्य व्यापार करने की कृपा दिखाता है। इसके अतिरिक्त ब्रंगा राज्य के बहुत से शरणार्थी हैं, जो काशी में बस गए हैं।'

'शरणार्थी?' शिव ने पूछा, 'वे किससे भाग रहे हैं? आपने बताया कि ब्रंगा राज्य बहुत ही समृद्ध भूमि है।'

'अफवाहें हैं कि एक बहुत ही भयानक महामारी है जो ब्रंगा राज्य को बार-बार अपनी चपेट में ले लेती है। लेकिन इस बारे में मैं पूरी तरह सुनिश्चित नहीं हूं। बहुत ही कम ऐसे लोग हैं जो ब्रंगा राज्य के बारे में कोई बात निश्चित रूप से कह सकते हैं! लेकिन फिर भी काशी नरेश इस बारे में अवश्य ही बेहतर उत्तर दे सकते हैं। क्या मैं उन्हें यहां आने के लिए बुलावा भेज दूं, प्रभु?'

'नहीं,' शिव ने कहा, वह इस बारे में निश्चित नहीं था कि यह एक अन्य बेकार की दौड़-भाग थी या फिर ब्रंगा राज्य का नागाओं से सचमुच ही कुछ लेना-देना था।

सती के मन में एक विचार उभरा तो वह दिलीप की ओर मुड़कर बोल उठी, 'क्षमा करें, महाराज। लेकिन यह ब्रंगा राज्य वास्तव में है कहां?'

'यह पूर्व में अत्यधिक दूरी पर है, राजकुमारी सती, जहां हमारी परम पावन नदी गंगा उत्तर-पूर्व दिशा से आती उनकी पवित्र नदी ब्रह्मपुत्र से मिलती है।'

शिव को तत्काल ही कुछ समझ में आया। उसने मुस्कुराते हुए मुड़कर सती की ओर देखा। उत्तर में सती भी मुस्कुराई।

वे रेखाएं नहीं हैं! वे नदियां हैं!

शिव ने अपनी थैली टटोली और वह सिक्का निकाला जो उसे नागा से प्राप्त हुआ था और दिलीप को दिखाया, 'क्या यह ब्रंगा राज्य का सिक्का है, महाराज?'

'हां, प्रभु!' आश्चर्यचकित दिलीप ने उत्तर दिया, 'एक ओर राजा चंद्रकेतु हैं और दूसरी ओर उनकी भूमि की नदियों का मानचित्र है। लेकिन ये सिक्के दुर्लभ हैं। ब्रंगा राज्य अपना शुल्क कभी भी सिक्कों के रूप में नहीं भेजता है, वह मात्र सोने की ईंटों के रूप में होते हैं।'

दिलीप यह पूछने ही वाला था कि शिव को वह सिक्का कहां से मिला, लेकिन नीलकंठ ने बीच में ही टोक दिया।

'हम कितनी जल्दी काशी के लिए प्रस्थान कर सकते हैं?'

'अ ऽ हा, यह तो बहुत अच्छा है,' वीरभद्र को चिलम पकड़ाते हुए शिव मुस्कुराया।

'मैं जानता हूं,' वीरभद्र मुस्कुराया, 'यहां की घास मेलूहा से काफी बेहतर है, चंद्रवंशी निश्चित रूप से जानते हैं कि जीवन में उत्तम वस्तुओं का आनंद कैसे लेते हैं।'

शिव मुस्कुराया। गांजा उस पर अपना जादू बिखेर रहा था। अयोध्या के बाहर एक छोटी सी पहाड़ी पर शाम की ठंडी हवा का दो मित्र आनंद ले रहे थे। दृश्य अद्भुत था।

घास उगी हुई हल्की ढलुआ पहाड़ी नीचे मैदान में छितरे हुए ऐसे जंगल का रूप ले रही थी, जो दूर जाकर एक चोटी पर समाप्त होता था। प्रचंड सरयू जिसने हजारों साल पहले चोटी को काट दिया था, वह भाव प्रवणता से घड़घड़ाती हुई नीचे दक्षिण की ओर प्रवाहित हो रही थी। धीरे-धीरे क्षितिज में डूबता हुआ सूरज उस प्रशांत क्षण की नाटकीय सुंदरता को और निखार रहा था।

'मेरा अनुमान है कि मेलूहा के सम्राट अंततः प्रसन्न हैं,' शिव को चिलम वापस देते हुए वीरभद्र मुस्कुराया।

एक गहरा कश लेने से पहले शिव ने वीरभद्र को आंख मारी। वह जानता था कि चंद्रवंशियों के बारे में उसके बदले हुए विचार से दक्ष नाखुश था। और नागाओं को ढूंढ़ते समय वह स्वयं भी किसी भी प्रकार का भटकाव नहीं चाहता था। उसने एक अत्यंत ही चतुर समझौता किया, ताकि दक्ष की विजयी भावना तुष्ट रहे और दिलीप भी प्रसन्नता अनुभव करे।

शिव ने निर्णय दे दिया था कि अब से दक्ष को भारत का सम्राट जाना जाएगा। ना केवल देवगिरि के राजसभा में प्रार्थना के दौरान उनका नाम पहले लिया जाएगा बल्कि अयोध्या में भी। इसके बदले में चंद्रवंशियों के क्षेत्र के भीतर दिलीप को स्वद्वीप का सम्राट और मेलूहा में 'सम्राट के भ्राता' के नाम से जाना जाएगा। देवगिरि और अयोध्या दोनों स्थानों में ही राजसी प्रार्थना में दक्ष के बाद उसका नाम लिया जाएगा। दिलीप का साम्राज्य मेलूहा को, नाममात्र एक लाख स्वर्ण मुद्राएं शुल्क स्वरूप देगा, जिसके बारे में दक्ष ने घोषणा की थी कि वही धन अयोध्या के राम जन्मभूमि मंदिर को अनुदान में प्रदान कर दिया जाएगा।

इस प्रकार दक्ष का कम से कम एक सपना पूरा हो गया था: भारत का सम्राट बन जाना। तृप्त दक्ष विजयी होकर देवगिरि वापस लौट गया। सदा से व्यावहारिक रहा दिलीप बहुत खुश था कि सूर्यवंशियों से युद्ध में पराजित होने के बाद भी सभी व्यावहारिक प्रयोजनों हेतु उसने अपना साम्राज्य एवं उसकी स्वतंत्रता बनाए रखी थी।

'हम काशी एक सप्ताह में जाएंगे?' वीरभद्र ने पूछा।

'हुं ऽ म।'

'तो ठीक है, मैं यहां ऊब रहा हूं।'

चिलम वापस वीरभद्र को देते हुए शिव मुस्कुराया, 'यह भगीरथ तो बड़ा ही मनोरंजक व्यक्ति प्रतीत होता है।'

'हां, लगता तो है,' वीरभद्र ने एक कश लिया।

'तुमने उसके बारे में क्या सुना है?'

'आप जानते हैं, शिव,' वीरभद्र ने कहा, 'वह भगीरथ ही का सोचा था कि एक लाख सैनिकों के दल के साथ धर्मखेत में हमारे शिविर पर घेरा डाले।'

'पीछे की ओर से हमला करना? वह बहुत ही शानदार विचार था। हो सकता है कि वह काम भी कर जाता, लेकिन द्रपकु के पराक्रम ने ऐसा होने नहीं दिया।'

'वह निश्चित ही काम कर गया होता, यदि भगीरथ के आदेश का अनुकरण उस तिराहे स्थल तक किया गया होता।'

'सच में?' चिलम से कश लगाते हुए शिव ने पूछा।

'मैंने सुना है, भगीरथ चाहता था कि मुख्य युद्धभूमि से दूर, लंबे रास्ते से रात में चुपके से सेना ले जाई जाए। यदि उसने ऐसा किया होता तो हम उस दल की गतिविधि नहीं देख पाते। हमारी प्रतिक्रिया में हुई देरी युद्ध में हमारी पराजय सुनिश्चित कर देती।'

'तो फिर कहां चूक हुई?'

'ऐसा प्रतीत होता है कि जब भगीरथ ने बुलाया तो उस रात युद्ध परिषद उससे मिलना नहीं चाहती थी।'

'पवित्र झील के नाम पर यह तो बताओ कि वे लोग तुरंत क्यों नहीं मिले?'

'वे लोग सो रहे थे!'

'तुम मसखरी कर रहे हो!'

'नहीं, मैं मसखरी नहीं कर रहा,' अपना सिर हिलाते हुए वीरभद्र ने कहा, 'और उससे भी बुरी बात क्या है कि जब वे सुबह अंततः मिले तो उन्होंने भगीरथ को धर्मखेत और हमारे शिविर के मध्य की घाटी में निकट ही रहने का आदेश दिया, जिसने हमें उनकी गतिविधि को देखने में मदद की।'

'परंतु युद्ध परिषद ने ऐसा मूर्खतापूर्ण निर्णय लिया ही क्यों?'

'ऐसा प्रतीत होता है कि भगीरथ अपने पिता का विश्वासी नहीं है। और इसलिए, अधिकतर स्वद्वीप के राजाओं एवं उनके सेनापतियों का भी नहीं है। उनका मानना था कि वह सैनिकों को लेकर अयोध्या भाग जाता और वहां स्वयं को राजा घोषित कर देता।'

'यह बहुत ही हास्यास्पद है। दिलीप अपने ही बेटे पर विश्वास क्यों नहीं करता है?'

'क्योंकि वह ऐसा मानता है कि भगीरथ उसे बेवकूफ और निकृष्ट सम्राट समझता है।'

'मुझे विश्वास है कि भगीरथ वास्तव में ऐसा नहीं सोचता है!'

'बात यह है, जैसा मैंने सुना है,' चिलम की राख झाड़ते हुए वीरभद्र बोला, 'भगीरथ अपने पिता के बारे में ऐसा ही सोचता है और वह गलत भी नहीं है, है ना।'

शिव मुस्कुराया।

'और उसके बाद मामले को और भी बिगाड़ते हुए,' वीरभद्र ने कहना जारी रखा, 'समस्त असफलता का दोष भगीरथ पर मढ़ दिया गया। कहा गया, चूंकि वह एक लाख सैनिकों को लेकर चला गया था इसलिए वे युद्ध में पराजित हो गए।'

शिव ने सिर हिलाया। वह इस बात से दुखी था कि मूर्खों से घिरा एक बुद्धिमान व्यक्ति कटु आलोचना झेल रहा है, 'मेरे विचार में वह एक क्षमतावान व्यक्ति है जिसके पर कतर दिए गए हैं।'

वह प्रशांत क्षण अचानक एक तारसप्तक चीख से छिन्न-भिन्न हो गया। शिव और वीरभद्र ने सामने देखा तो उनकी दृष्टि एकघुड़सवार पर पड़ी जिसका अश्व सरपट भागा जा रहा था, जबकि उसका साथी काफी पीछे छूट गया था और ऊंचे स्वर में चीत्कार कर रहा था:
'सहायता! कोई सहायता करो, राजकुमार भगीरथ!'

भगीरथ सरपट भागते अश्व पर नियंत्रण खो बैठा था और शिखर की ओर तेजी से बढ़ता जा रहा था। वह निश्चित रूप से आसन्न मृत्यु के निकट था। शिव उछलकर अश्व पर चढ़ा और उसके पीछे भागा। वीरभद्र भी उसके साथ हो लिया। दूरी अधिक थी लेकिन हल्की ढाल ने शिव और वीरभद्र को उसे शीघ्रता से नापने में मदद की। शिव ने एक वृत्ताकार मार्ग लेकर भगीरथ के अश्व को बीच में ही पकड़ने की योजना बना ली थी। कुछ क्षणों में ही शिव भगीरथ के मार्ग पर साथ-साथ सरपट भाग रहा था। वह प्रभावित हुआ कि संहारक परिस्थिति का सामना करते हुए भी भगीरथ शांत एवं उसका ध्यान केंद्रित प्रतीत हो रहा था।

अपने अश्व को धीमा करने के प्रयास में भगीरथ लगाम को बहुत कसकर खींच रहा था। लेकिन इससे वह अश्व और बिदकता गया, साथ ही अपनी गति बढ़ा दी।

'लगाम छोड़ दें!' ऊंची घड़घड़ाती सरयू नदी की अनिष्टकारी निकटता पर शिव ने चिल्लाकर कहा।

'क्या?!' भगीरथ चीखा। उसका पूरा का पूरा प्रशिक्षण कहता था कि जब अश्व नियंत्रण से बाहर हो तो लगाम छोड़ना सबसे बड़ी मूर्खता होती थी।

'विश्वास करें, राजकुमार! लगाम को छोड़ दें!'

भगीरथ बाद में स्वयं को इसकी व्याख्या देगा क्योंकि उसका भाग्य नीलकंठ की ओर उसे मार्गदर्शित कर रहा था। इस क्षण उसके बोध ने कहा कि प्रशिक्षण को भूल जाओ और तिब्बत के इस गंवार पर विश्वास करो। भगीरथ ने लगाम छोड़ दी। उसे तब आश्चर्य हुआ जब अश्व तत्काल ही धीमा होने लगा।

शिव साथ ही अपना अश्व दौड़ा रहा था। वह अब तक इतना निकट आ चुका था कि उस पशु के कान में फुसफुसा सकता था। उसके बाद उसने एक विचित्र धुन गुनगुनाना प्रारंभ कर दिया। वह अश्व अपनी गति को दुलकी चाल में लाते हुए धीरे-धीरे शांत होता जा रहा था। शिखर निकट आता जा रहा था। अत्यधिक निकट।

'शिव!' वीरभद्र ने चेतावनी दी, 'शिखर कुछ सौ मीटर ही दूर है।'

शिव ने वीरभद्र के अश्व की गति के साथ चलते हुए वह चेतावनी सुन ली। अश्व पर बैठे राजकुमार ने नियंत्रण बनाए रखा, जबकि शिव वह धुन अब भी गुनगुनाता जा रहा था। धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से शिव नियंत्रण प्राप्त करता जा रहा था। शिखर से केवल कुछ ही मीटर पहले भगीरथ का अश्व अंततः रुक गया।

भगीरथ और शिव तत्काल ही अपने अश्वों से नीचे उतरे, जबकि वीरभद्र उनके निकट आ गया था।

'लानत है!' टीले की चोटी की ओर झांकते हुए वीरभद्र ने कहा,'यह सचमुच ही बहुत निकट था।'

शिव ने पहले वीरभद्र की ओर एक नजर देखा और उसके बाद भगीरथ की ओर मुड़ा, 'क्या आप ठीक हैं?'

यह सुनकर भगीरथ की आंखें शर्म से झुक गई। लेकिन उससे पहले वह टकटकी बांधे शिव की ओर ही देखे जा रहा था, 'इतने बड़े संकट में डालने के लिए मुझे क्षमा करें।'

'कोई संकट-वंकट नहीं था।'

भगीरथ अपने अश्व की ओर मुड़ा और उसे शर्मिंदा करने के लिए जोर से उसके मुंह पर मारा।

'यह अश्व की गलती नहीं है!' शिव ने चिल्लाकर कहा। भगीरथ ने त्योरी चढ़ाकर शिव की ओर मुड़के देखा। उधर भगीरथ के अश्व के निकट शिव नम्रता से ऐसे पुचकारते, उसके चेहरे को डुलाते हुए गया, जैसे कोई बच्चा बिना गलती के दंडित हुआ हो। उसके बाद उसने सावधानी से उसकी लगाम निकाल ली और भगीरथ को निकट आने का संकेत दिया। उसके बाद उसने चमड़े में घुसी वह कील दिखाई जो अश्व के मुंह के बहुत निकट थी। भगीरथ यह देखकर स्तब्ध रह गया। निष्कर्ष स्पष्ट था।

शिव ने वह कील निकाली और भगीरथ को देते हुए कहा,'कोई है जो आपको पसंद नहीं करता है, मित्र।'

इस बीच भगीरथ का सहयोगी भी वहां आ पहुंचा, 'राजकुमार!

क्या आप सकुशल हैं?'

भगीरथ ने अपने सहयोगी ओर देखा, 'हां, मैं ठीक हूं।'

शिव उस आदमी की ओर मुड़ा, 'सम्राट दिलीप से जाकर कहो कि उनका पुत्र एक असाधारण घुड़सवार है, उनसे कहो कि जब सब कुछ विपरीत था, उस समय भी एक पशु पर इतना सुंदर नियंत्रण करने वाले व्यक्ति को नीलकंठ ने आज तक नहीं देखा, उनसे कहो,नीलकंठ का अनुरोध है कि काशी प्रवास में राजकुमार भगीरथ भी साथ चलेंगे तो यह नीलकंठ के लिए सम्मान की बात होगी।'

शिव जानता था कि दिलीप के लिए यह अनुरोध कदापि नहीं था, बल्कि आदेश था। संभवतः यही एकमात्र तरीका था जिससे भगीरथ को अनजाने प्राणघातक संकट से सुरक्षित रखा जा सकता था। भगीरथ का सहयोगी तत्काल ही अपने घुटनों के बल झुक गया,'जैसी आपकी आज्ञा, प्रभु।'

भगीरथ हतप्रभ खड़ा था। उसका सामना ऐसे लोगों से हुआ था जिन्होंने उसके विरुद्ध योजना बनाई थी, ऐसे लोग जिन्होंने उसके विचारों के श्रेय स्वयं ले लिए थे, ऐसे लोग जिन्होंने उसे ध्वस्त किया था। लेकिन यह... यह अनोखा था। वह अपने सहसवार की ओर मुड़ा, 'एकांत चाहिए।'

वह व्यक्ति तत्काल ही वहां से चला गया।

'अभी तक ऐसी अनुकंपा मैंने मात्र एक ही व्यक्ति से पाई है,' भगीरथ ने कहा, 'उसकी आंखें नम थीं और वह है मेरी बहन, आनंदमयी। लेकिन उससे मेरा रक्तसंबंध है। मैं नहीं जानता कि आपकी इस उदारता पर मुझे क्या प्रतिक्रिया देनी चाहिए, प्रभु।'

'मुझे प्रभु के नाम से ना पुकारकर,' शिव मुस्कुराया।

'यह एक ऐसा आदेश है, जिसके लिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मुझे ना मानने की अनुमति दें,' भगीरथ ने कहा। उसके हाथ आदरपूर्वक नमस्ते की मुद्रा में जुड़े हुए थे, 'मैं इसके अलावा आपके किसी भी आदेश का पालन करूंगा, यहां तक कि यदि मुझे अपना जीवन भी देना पड़े तो भी।'

'अब इतने भी नाटकीय मत हो जाएं! इतनी मेहनत कर आपके जीवन की रक्षा करने के तुरंत बाद मैं यह नहीं कह सकता कि आप आत्महत्या कर लें।'

भगीरथ होले से मुस्कुराया, 'आपने मेरे अश्व को क्या गाकर सुनाया था, प्रभु।'

'कभी मेरे साथ चिलम पीने बैठिए तो मैं आपको सिखा दूंगा,राजकुमार।'

'आपके चरणों में बैठना और सीखना मेरे लिए सम्मान की बात होगी, प्रभु।'

'मेरे चरणों में नहीं मित्र, मेरी बगल में बैठिए, गाने का स्वर तब बेहतर सुनाई देगा!'

शिव ने उसके कंधे पर थपकी दी तो भगीरथ मुस्कुरा दिया।

अध्याय 2

सरयू की जलयात्रा

'राजकुमारी आनंदमयी से कहो,' पर्वतेश्वर ने आनंदमयी के महल के प्रवेश द्वार पर महिला प्रहरी के कप्तान से कहा, 'कि सेनापति पर्वतेश्वर बाहर प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

'उन्होंने मुझसे कहा था कि आप आने वाले हैं,' कप्तान ने नीचे झुककर कहा, 'क्या मैं आपसे क्षण भर यहीं रुकने का आग्रह कर सकती हूं, तब तक मैं उनसे पूछ लेती हूं।'

जैसे ही कप्तान आनंदमयी के कक्ष में प्रविष्ट हुई तो पर्वतेश्वर पीछे की ओर मुड़ गया। शिव ने उसे काशी जाने वाले अभियान का प्रभारी बनाया था। शिव जानता था कि यदि वह अयोध्या के किसी प्रशासक को यह भार सौंपता तो संभवतः वह अगले तीन वर्ष तक यही वाद-विवाद करता रह जाता कि यातायात का प्रकार क्या होगा। विशुद्ध सूर्यवंशी कुशलता वाले पर्वतेश्वर ने एक सप्ताह में ही सारी व्यवस्था देख ली थी। दल को मगध नगर तक सरयू नदी में राजसी नौका पर पूर्व में नीचे की ओर यात्रा करनी थी, जहां नदी शक्तिशाली गंगा में मिल जाती थी। वहां से, वे पश्चिम दिशा में गंगा की ऊपर जाने वाली धारा में काशी तक की नौका यात्रा करने वाले थे। *काशी* एक ऐसा नगर जहां दिव्य प्रकाश चमकता है।

अयोध्या के कुछ कुलीन लोगों के मूर्खतापूर्ण आग्रहों ने पर्वतेश्वर को परेशान कर दिया था, जो नीलकंठ के साथ यात्रा करने के अवसर ढूंढ़ रहे थे। उसने कुछ विचित्र आग्रहों को सम्मान देने की योजना तो बना ली थी, जैसे एक अंधविश्वासी कुलीन व्यक्ति चाहता था कि तीसरे प्रहर के प्रारंभ के बाद ठीक बत्तीस मिनट पर ही उनकी नौका प्रारंभ की जाए। किंतु उनके अलावा अन्य आग्रहों को उसने मानने से पूरी तरह से इंकार कर दिया था। जैसे एक अन्य कुलीन व्यक्ति का आग्रह था कि उनकी नौका में केवल महिला कर्मचारियों को ही रखा जाए। सेनापति को पूरा विश्वास था कि आनंदमयी भी अवश्य कुछ ऐसी ही विशेष प्रकार की व्यवस्था करवाना चाहती थी।

जैसे उसके सौंदर्य स्नान के लिए एक नौका भरकर दूध ले चलना।

कप्तान थोड़ी ही देर में वापस आई, 'आप अंदर जा सकते हैं, सेनापति।'

पर्वतेश्वर बहुत ही फुर्ती से कदम बढ़ाते हुए अंदर गया, अपना सिर झुकाया जैसे राजसी सम्मान में किया जाता है और बोला, 'आप क्या चाहती हैं, राजकुमारी?'

'आपको इतना संकोची होने की आवश्यकता नहीं है, सेनापति। आप ऊपर देख सकते हैं।'

पर्वतेश्वर ने ऊपर देखा। राजसी बाग का दृश्य दिखाती एक सुंदर खिड़की की बगल में आनंदमयी अपने पेट के बल लेटी हुई थी। मालिश करने वाली कामिनी, राजकुमारी के सुनम्य मोहक बदन पर अपना जादू बिखेर रही थी। आनंदमयी की कमर मात्र एक ढीले से वस्त्र से लिपटी हुई थी। उसका अनावृत शरीर पर्वतेश्वर के लिए एक आमंत्रण था।

'सुंदर दृश्य, है ना?' आनंदमयी ने पूछा।

पर्वतेश्वर शर्म से सुर्ख हो गया। उसका सिर झुक गया और उसने अपनी दृष्टि फेर ली। आनंदमयी को ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह कोई दुर्लभ प्रजाति का नर नाग है जो अभिसार नृत्य के प्रारंभ में अपने प्रेमी के आगे सिर झुकाता है मानो वह अपनी जोड़ीदार की श्रेष्ठता स्वीकार रहा हो।

'मैं क्षमाप्रार्थी हूं, राजकुमारी। मैं अत्यधिक क्षमाप्रार्थी हूं। आपका अनादर करने का मेरा आशय नहीं था।'

'राजसी बाग को देखने पर आपको क्षमाप्रार्थी क्यों होना चाहिए, सेनापति? इसकी तो अनुमति है।'

आजीवन ब्रह्मचारी पर्वतेश्वर नरम पड़ गया था। यद्यपि ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि आनंदमयी उसके आशय को गलत समझ बैठी थी। वह नम्र स्वर में फुसफुसाया। उसकी दृष्टि भूमि पर थी, 'आपके लिए क्या कर सकता हूं, राजकुमारी?'

'वास्तव में यह अति साधारण है। सरयू नदी में दक्षिण की ओर एक स्थल है जहां प्रभु राम अपने गुरु विश्वामित्र एवं भ्राता लक्ष्मण के साथ रुके थे, जब वे असुर ताड़का का वध करने जा रहे थे। यह वही स्थल है जहां महर्षि विश्वामित्र ने प्रभु राम को बल एवं अतिबल की कला सिखाई थी, जो शाश्वत उत्तम स्वास्थ्य एवं भूख और प्यास से मुक्ति का पौराणिक मार्ग है। मैं वहां रुकना चाहती हूं और प्रभु की आराधना करना चाहती हूं।'

पर्वतेश्वर उसकी प्रभु राम में भक्ति को देखकर प्रसन्न हुआ और मुस्कुराया, 'निस्संदेह, हम वहां रुक सकती हैं राजकुमारी। मैं इसकी व्यवस्था कर दूंगा। क्या आपको किन्हीं विशेष संसाधनों की आवश्यकता होगी।'

'नहीं कुछ भी नहीं, प्रभु तक पहुंचने की प्रार्थना के लिए मात्र एक निष्कपट हृदय की आवश्यकता होती है, बस।'

पर्वतेश्वर ने कुछ पल के लिए सिर उठाकर देखा। वह प्रभावित था। यद्यपि आनंदमयी की आंखें उस पर उपहास करती सी प्रतीत हो रही थीं। वह हौले से गरजा, 'कुछ और, राजकुमारी जी?'

आनंदमयी ने मुंह बनाया। उसे वह प्रतिक्रिया नहीं मिल पा रही थी जिसकी उसे कामना थी, 'और कुछ नहीं, सेनापति।'

पर्वतेश्वर ने जोशीले ढंग से अभिवादन किया और कक्ष से बाहर चला गया।

आनंदमयी पर्वतेश्वर को जाते हुए घूरती रही। उसने जोर से आह भरी और अपना सिर झटक दिया।

'कृपया सभी लोग एकत्र हो जाएं,' पंडित ने कहा, 'हम लोग पूजा प्रारंभ करने वाले हैं।'

शिव का दल बल-अतिबल कुंड पर था, जहां गुरु विश्वामित्र ने प्रभु राम को पौराणिक कलाओं की शिक्षा दी थी।

नीलकंठ अप्रसन्न थे कि अयोध्या के बहुत से कुलीन लोग काशी की इस यात्रा में चापलूसी करके शामिल हो गए थे। जिसे अत्यधिक गतिमान पांच नौकायानों का एक रक्षक दल होना चाहिए था, वह परिवर्तित हो अब पचास नौकायानों का एक सुस्त कारवां बन चुका था। सीधे-सादे पर्वतेश्वर के लिए चंद्रवंशी कुलीन वर्ग के लोगों के घुमा-फिराकर दिए गए तर्कों को मना करने में कठिनाई होती थी। किंतु शिव इस बात से प्रसन्न था कि भगीरथ ने अपने शानदार तरीके से सदस्यों की संख्या में कटौती कर दी थी। बड़ी चतुराई से उसने एक कुलीन व्यक्ति को सुझाव दिया कि उन्हें जल्द से जल्द काशी प्रस्थान कर जाना चाहिए और वहां पहुंचकर नीलकंठ के लिए एक स्वागत दल का गठन करना चाहिए। ऐसा करने से वे उस परम शक्तिशाली ईश्वर की दयादृष्टि के भागीदार बन सकते थे। जब कुलीनों ने देखा कि उनमें से एक कुलीन फुर्ती से इस कार्य हेतु वहां से चल पड़ा तो कई अन्य कुलीनों ने भी उसका अनुसरण किया। वे सभी चाहते थे कि वे काशी जाकर नीलकंठ के आगमन के प्रथम संदेशवाहक बनें। कुछ ही घंटों में उनका रक्षा दल कम होकर उतना ही रह गया जितनी शिव इच्छा कर रहा था।

नदी के तट से कोई पचास मीटर की दूरी पर पूजा की वेदिका बनाई गई थी। ऐसी मान्यता थी कि जो भी व्यक्ति इस पूजा को पूर्ण भक्ति-भाव से करेगा, वो किसी भी प्रकार के रोग से पीड़ित नहीं होगा। पंडित के बाद शिव, सती, पर्वतेश्वर, आयुर्वती, भगीरथ और आनंदमयी सबसे भीतरी घेरे में बैठे। अन्य जैसे नंदी, वीरभद्र, द्रपकु, कृत्तिका और सूर्यवंशियों एवं चंद्रवंशियों की सेना के लोग उनसे थोड़ी दूरी पर बैठे। गंभीर स्वर में ब्राह्मण संस्कृत श्लोकों का उच्चारण ठीक उसी प्रकार कर रहा था जैसा उसके गुरु ने उसे सिखाया था।

सती असहज थी और उसे असहज करने वाली यह अनुभूति इसलिए हो रही थी कि उसे लग रहा था कोई उसे देख रहा है। किसी विचित्र कारण से उसे यह अनुभूति हुई जैसे प्रचंड घृणा का वेग उसकी ओर ही निर्देशित था। इसके साथ ही साथ उसे असीम प्रेम और अथाह दुख की भी अनुभूति हुई। चकराई हुई सी उसने अपनी आंखें खोल दीं। उसने अपना सिर बाईं ओर घुमाया। इस पूजा के मार्गदर्शनानुसार प्रत्येक व्यक्ति अपनी आंखें बंद किए हुए था। उसके बाद उसने दाईं ओर अपना सिर घुमाया तो देखा कि शिव टकटकी बांधे उसे ही निहार रहा रहा था। उसकी आंखें पूरी खुली हुई थीं, और उन आंखों से प्रेम का प्रवाह हो रहा था। शिव के मुख पर एक हल्की मुस्कान उभरी।

अपनी आंखों से जताते हुए कि उन्हें अपनी पूजा पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, सती ने त्योरी चढ़ाई। लेकिन शिव ने अपने होंठों को संकुचित कर उसकी ओर हवा में चुंबन उड़ा दिया। आश्चर्यचकित सती की त्योरी और भी अधिक चढ़ गई। उसकी सूर्यवंशी संवेदनशीलता को आघात लगा कि ऐसा करना तो नियम को भंग करना था। शिव ने एक बिगड़ैल बच्चे की तरह मुंह फुलाने की मुद्रा की। उसने अपनी आंखें बंद कीं और अग्नि की ओर मुड़ गया। सती भी मुड़ गई। उसकी आंखें बंद थीं। वह इस बात पर हल्के से मुस्कुरा उठी कि उसे एक बहुत ही प्यारे से पति के साथ का आशीर्वाद प्राप्त हुआ था।

लेकिन वह अभी भी अनुभव कर रही थी कि उसे कोई देख रहा था, बहुत ही प्रचंडता से घूर रहा था।

— ⅄ⓄU↑⊛ —

नीलकंठ के काफिले की अंतिम नौका सरयू के मोड़ से मुड़ गई थी। शत्रुओं के दृष्टि से ओझल हो जाने पर वह नागा वृक्षों के झुरमुट से बाहर आ गया। वह उस स्थल तक तेजी से पहुंचा जहां ब्राह्मणों ने पूजा का आयोजन किया था। उसके पीछे नागाओं की रानी एवं हथियारों से लैस एक सौ सिपाही थे। वे उस नागा से थोड़ी दूरी पर रुक गए और उसे अकेला छोड़ दिया।

नागा रानी के प्रधानमंत्री कर्कोटक ने समय जानने के लिए ऊपर आसमान की ओर देखा। उसके बाद दूर खड़े नागा को देखकर वह संभ्रमित हो गया। उसे यह बात समझ में नहीं आ रही थी कि 'लोकाधीश', जैसा कि उस नागा के संबंध में कहा जाता था, इस विशेष पूजा में इतनी रुचि क्यों दर्शा रहे थे। वास्तव में, मात्र उसका ही नहीं बल्कि अधिकतर नागाओं का मानना था कि उनके नेता के पास इससे अधिक शक्ति एवं ज्ञान था। कुछ लोग तो उन्हें नागाओं की रानी से भी बेहतर समझा करते थे।

'महारानी,' कर्कोटक ने रानी से कहा, 'क्या आप ऐसा सोचती हैं कि 'लोकाधीश' को घर वापस चलने के महत्व पर बल देकर सुझाव देने की आवश्यकता है?'

'जब मुझे तुम्हारे सुझाव की आवश्यकता होगी कर्कोटक,' रानी ने फुसफुसाकर मात्र इतना कहा, 'तब मैं तुमसे पूछ लूंगी।'

कर्कोटक तत्काल ही पीछे हट गया। हमेशा की तरह वह रानी के गुस्से से डर गया था।

रानी उस नागा की ओर मुड़ी। उसके मन में कर्कोटक की बात घर कर गई थी। उसे स्वीकारना पड़ा कि प्रधानमंत्री सही था। नागाओं को अपनी राजधानी तत्काल लौट जाना चाहिए था। नष्ट करने के लिए समय बहुत कम था। राज्य सभा यानी नागाओं की राजसी परिषद की बैठक शीघ्र ही आयोजित होनी थी। ब्रंगाओं को स्वास्थ्य के क्षेत्र में समर्थन देने का मुद्दा पुनः उभरने वाला था। वह जानती थी कि उस समर्थन के कारण होने वाला अत्यधिक व्यय अनेक नागाओं को ब्रंगा राज्य के साथ उनकी मित्रता के विरुद्ध करता जा रहा था। विशेषकर, शांति से जीवनयापन करने वाले और अपना बहिष्कृत जीवन आराम से व्यतीत करने की इच्छा रखने वाले नागा, क्योंकि जो कुछ भी उनके साथ हुआ था वह उन्हीं के बुरे कर्मों का फल था। किंतु जो बदला वह लेना चाहती थी, इस मित्रता के बिना वो असंभव था और सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि ब्रंगा राज्य को वह उस समय अकेला नहीं छोड़ सकती थी जब उन्हें नागाओं की मित्रता की आवश्यकता थी। यह भी अनदेखी करने योग्य बात नहीं थी कि वे दृढ़तापूर्वक उसके साथ अब तक निष्ठावान रहे थे।

दूसरी ओर, लोगों के ईश्वर यानी अपने भांजे को भी वह अकेला नहीं छोड़ सकती थी। वह परेशान था; उस नीच स्त्री की उपस्थिति ने सामान्यतया उसके प्रशांत रहने वाले आचरण को अशांत कर दिया था। वह अनावश्यक जोखिम उठा रहा था। जैसे राम जन्मभूमि मंदिर में सती एवं शिव पर मूर्खतापूर्ण हमला करना। यदि वह उसे मारना नहीं चाहता था तो उसने स्वयं को उस गंभीर संकट में डाला ही क्यों? और यदि वह स्वयं ही मारा जाता तो? या उससे भी बुरा, यदि वह जीवित पकड़ा जाता तो? हालांकि उसने बाद में इस कार्यवाही को न्यायोचित ठहराते हुए कहा था कि वह सती को नगर से बाहर निकालना चाहता था क्योंकि नगर के अंदर उसे बंदी बनाना असंभव था। वह इस कार्य में सफल भी हो गया था और उसने सती को काशी की यात्रा के लिए नगर से बाहर निकाल ही दिया था। लेकिन वह अपने पति एवं पूरी पलटनभर सेना के साथ थी। उसका अपहरण करना असंभव था।

रानी ने देखा कि उसका भांजा थोड़ा आगे बढ़ गया। वह भी कर्कोटक को सैनिकों सहित वहीं खड़े रहने का इशारा करते हुए आगे बढ़ गई।

उस नागा ने अपने कमरबंद में बने नए खोल से एक चाकू निकाला। यह वही चाकू था जिसे सती ने राम जन्मभूमि मंदिर में उस पर फेंका था। चाकू की धार को अंगूठे पर चलाते हुए उसने ललककर देखा। तेज धार से उसकी त्वचा हल्के से कट गई थी। उसने गुस्से में अपना सिर जोर से झटका, उस चाकू को रेत पर ही दे मारा जिससे वह उसमें जा गड़ा और फिर मुड़कर रानी की ओर बढ़ गया।

अचानक ही वह रुक गया। अजीब तरह से हिचकिचाते हुए।

रानी इतनी दूर थी कि उसका कुछ भी कहा उसके भांजे को सुनाई नहीं पड़ पाया। वह अपने विचारों से दृढ़निश्चित होकर फुसफुसाई, 'बस, अब इसे जाने दो, मेरे बच्चे। यह इस योग्य नहीं है। जिद छोड़ दो।'

वह नागा उसी स्थल पर जड़ सा हो गया था। अनिश्चितता का बोझ उस पर हावी था। थोड़ी दूर पर खड़े सैनिक अपने नेता को ऐसी कमजोर मानसिक स्थिति में देख स्तब्ध थे। रानी को तब आश्चर्य हुआ जब वह पीछे मुड़ा और उसी स्थान पर गया जहां उसने चाकू को गाड़ा था। उसने बहुत ही सावधानी से उसे बाहर निकाला, भक्तिभाव से अपनी ललाट से लगाया और कमरबंद की खोल में वापस रख

दिया।

रानी ने घृणा से भर गहरी सांस छोड़ी और पीछे मुड़ी। उसने कर्कोटक को आगे आने का संकेत दिया। वह जानती थी कि अब उसके पास कोइ विकल्प नहीं बचा। अंगरक्षकों के साथ उसे अपने भांजे को छोड़ना पड़ेगा। जबकि उसे स्वयं अपनी राजधानी पंचवटी की ओर कूच करना होगा।

— ᛣⓄᛘᛏ⊛ —

'माल भाड़ा? क्या मूर्खता है?' अयोध्या के प्रधानमंत्री सियामंतक ने गरजकर कहा, 'यह जलयान स्वद्वीप के सम्राट का है। इसमें बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं, असल में इस पृथ्वी के सबसे महत्वपूर्ण।'

सियामंतक मगध के पत्तन मंत्री अंधक की मार्गदर्शक नौका में था, जो चंद्रवंशियों के विशिष्ट न्यायिक पत्र के अतिरिक्त हर वस्तु की अनदेखी करता था। सियामंतक ने घबराकर उस विशाल जलयान को देखा जो नीलकंठ को लेकर चल रहा था। पर्वतेश्वर और भगीरथ के साथ शिव जंगले में खड़े थे। सियामंतक यह बात जानता था कि शिव मगध में रुकना चाहते थे। उन्होंने नगर के बाहर स्थित नरसिंह मंदिर में जाने की इच्छा प्रकट की थी। सियामंतक नीलकंठ को किसी भी भांति निराश नहीं करना चाहता था। वैसे भी यदि वह उस जलयान के लिए माल भाड़ा देता तो यह एक नकारात्मक उदाहरण बन जाता। अगर एक सम्राट का जलयान अपने ही साम्राज्य में माल भाड़ा देता तो इससे शेष राज्य भी ऐसा करने लगते और यह एक गलत परंपरा का आरंभ होता। अंधक के साथ कोई सौदेबाजी एक नाजुक मामला था।

'मैं इसकी परवाह नहीं करता कि वह जलयान किसका है,' अंधक ने कहा, 'और मैं इसकी भी परवाह नहीं करता कि उस जलयान में स्वयं प्रभु राम हैं, नियम है, कोई भी जलयान मगध के बंदरगाह पर लंगर डालता है तो उसे माल भाड़ा देना पड़ता है, एक सहस्र स्वर्ण मुद्राओं की इस छोटी सी धनराशि के लिए सम्राट दिलीप क्यों चिंता करें?'

'यह धन की बात नहीं है, यह सिद्धांत की बात है,' सियामंतक ने तर्क किया।

'बिल्कुल ठीक! यह सिद्धांत की बात है। इसलिए कृपया भाड़ा दें।'

शिव अपना धैर्य खोता जा रहा था, 'इतने लंबे समय से ये क्या बातें कर रहे हैं?'

'प्रभु,' भगीरथ ने कहा, 'अंधक पत्तन मंत्री है। वह अवश्य ही इस बात पर जोर डाल रहा होगा कि माल-भाड़े के नियम का पालन किया जाए। उधर सियामंतक मेरे पिता के किसी भी जलयान के लिए माल-भाड़े की अनुमति नहीं दे सकता है। यह मेरे पिता के सुकुमार अहं का अपमान है। अंधक एक मूर्ख व्यक्ति है।'

'विधि का अनुसरण करने वाले व्यक्ति को आप मूर्ख कैसे कह सकते हैं?' पर्वतेश्वर की त्योरी चढ़ गई, 'इसके विपरीत उसका आदर होना चाहिए।'

'कभी-कभार परिस्थितियों को भी देखना चाहिए, सेनापति?'

'राजकुमार भगीरथ, मैं समझता हूं कि किसी भी परिस्थिति में विधि की अवहेलना नहीं करनी चाहिए।'

शिव नहीं चाहता था कि एक बार फिर उसे सूर्यवंशी एवं चंद्रवंशी तरीके के जीवनशैली से जुड़े तर्क-वितर्कों को सुनना पड़े,'मगध का राजा किस प्रकार का है?'

'राजा महेंद्र?' भगीरथ ने पूछा।

'क्या इसका अर्थ *विश्व को जीतने वाला* नहीं है?'

'हां, यही है, प्रभु, किंतु वह अपने नाम के साथ न्याय नहीं करता है। कभी मगध एक महान साम्राज्य था। असल में, एक ऐसा समय था जब वह स्वद्वीप का भी अधिपति साम्राज्य हुआ करता था और उसके राजा आदरणीय एवं सम्माननीय थे। किंतु जैसा बहुत से राजाओं के साथ होता है कि उनके अयोग्य वंशज संपत्ति एवं साम्राज्य को टुकड़े-टुकड़े करके गंवा बैठते हैं, मगध के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। वे मगध की पूर्वकालीन कीर्ति प्राप्त करने के लिए बहुत प्रयास करते रहे हैं किंतु बुरी तरह असफल हुए हैं। हमारा संबंध उनके साथ बहुत ही वैमनस्यपूर्ण है।'

'सच में, क्यों?'

'बात ऐसी है कि स्वद्वीप का अधिपति साम्राज्य बनाने के लिए अयोध्या ने मगध साम्राज्य को तीन सौ साल पूर्व पराजित किया था। वह एक वैभवपूर्ण अश्वमेध यज्ञ था। तब तक अयोध्या ऐसे अयोग्य शासक का शिकार नहीं बना था, जैसा आज शासन कर रहे हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि मगध अपने पद एवं शुल्कों और करों से प्राप्त राजस्व की हानि से प्रसन्न नहीं था।'

'हां, लेकिन तीन सौ सालों तक बैर भाव बनाए रखना, कुछ लंबा समय नहीं हो गया!'

भगीरथ मुस्कुराया, 'क्षत्रियों की स्मरण शक्ति चिरायु होती है, प्रभु और इसके साथ ही वे अयोध्या द्वारा पराजित होने के कारण अब भी दुख झेल रहे हैं। सैद्धांतिक रूप से मगध इस तथ्य से लाभान्वित हो सकता है कि वह दो नदियों के संगम पर बसा है। इस प्रकार सरयू या गंगा किनारे बंदरगाहों वाले नगरों में व्यापार करना बहुत सुगम हो सकता था। लेकिन यह लाभ उन्हें नहीं मिल पा रहा है क्योंकि वे हमसे अश्वमेध में पराजित हो गए थे। उनके माल-भाड़ों एवं व्यापारिक केंद्र प्रभारों आदि में अधिकतम सीमा बांध दी गई है। और फिर, सौ वर्ष पूर्व हमारी शत्रुता को पुनः जीवनदान मिल गया।'

'और वह कैसे हुआ?'

'गंगा नदी की ऊपरी धार पर पश्चिम में एक राज्य है, जिसका नाम प्रयाग है। ऐतिहासिक दृष्टि से वह मगध का परम मित्र रहा है। वास्तव में, दोनों ही राज्यों के शासकीय परिवार एक-दूसरे के निकट-संबंधी रहे हैं।'

'और...'

'और जब यमुना ने मेलूहा से अपनी दिशा बदल ली और स्वद्वीप में बहने लगी तो वह प्रयाग में गंगा से आकर मिल गई,' भगीरथ ने कहा।

'उसने तो प्रयाग को बहुत ही महत्वपूर्ण बना दिया होगा?' शिव ने पूछा।

'हां, प्रभु। मगध के समान ही वह नदी व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण संगम स्थल बन गया। और मगध से भिन्न उनके माल एवं व्यापार प्रभारों आदि को किसी समझौते से बांधा नहीं गया। कोई व्यापारी या राज्य यमुना के नए-नए खुले भीतरी प्रदेश में निवास या व्यापार करना चाहता था तो उसे प्रयाग को शुल्क देना पड़ता था। इसके कारण प्रयाग की समृद्धि एवं शक्ति में आशातीत वृद्धि हो गई। अफवाहें भी उठीं कि वे अयोध्या के आधिपत्य को चुनौती देने के लिए मगध के अश्वमेध यज्ञ की योजना में समर्थन देने वाले थे। किंतु जब मेरे परदादा सूर्यवंशियों से पराजित हो गए और यमुना पर बांध बनाकर उसे मेलूहा की ओर मोड़ दिया गया तो प्रयाग का महत्व पुनः कम हो गया। उन्होंने तब से अयोध्या को इसका दोषी मान लिया। वे, वास्तव में, ऐसा मानते हैं कि उन्हें एक ध्वंसात्मक आघात देने के लिए हम वह युद्ध जान-बूझकर हार गए थे।'

'ओह, तो ये बात है।'

'हां,' अपना सिर हिलाते हुए भगीरथ ने कहा, 'किंतु यदि ईमानदारी से कहा जाए तो हमारे परदादा इसलिए पराजित हुए क्योंकि उन्होंने बहुत ही बेकार रणनीति बनाई थी।'

'इस प्रकार आप लोग हमेशा से एक-दूसरे से घृणा करते रहे हैं।'

'हमेशा से नहीं, प्रभु एक समय था जब अयोध्या और मगध परम मित्र हुआ करते थे।'

'तो क्या आपका यहां स्वागत होगा?'

भगीरथ ठठाकर हंस पड़ा, 'सभी लोग जानते हैं कि मैं अयोध्या का प्रतिनिधित्व कदापि नहीं करता हूं, यह एक ऐसी जगह है, जहां मुझ पर संदेह नहीं किया जाएगा। किंतु राजा महेंद्र बहुत ही शक्की स्वभाव के लिए प्रसिद्ध हैं। हमें यह आशा करनी चाहिए कि हर समय गुप्तचर हमारी गतिविधियों पर दृष्टि रखेंगे। वह सभी महत्वपूर्ण आगंतुकों के साथ ऐसा ही करते हैं। यह कहने के बाद भी इतना समझ लें कि उनकी गुप्तचर व्यवस्था उतनी दक्ष नहीं है, मुझे किसी गंभीर समस्या की संभावना नहीं लगती।'

'क्या मेरे नीले गले से द्वार खुलने की कुछ संभावना है?'

भगीरथ थोड़ा परेशान दिखा, 'राजा महेंद्र उस किसी भी वस्तु में विश्वास नहीं करते हैं, जिसमें मेरे पिता विश्वास करते हैं, प्रभु। चूंकि अयोध्या के सम्राट नीलकंठ में विश्वास करते हैं, तो मगध के राजा उसमें विश्वास नहीं करेंगे।'

सियामंतक के सीढ़ियों से चढ़कर ऊपर आ जाने से उनके वार्तालाप में बाधा पड़ गई। वह नीलकंठ के पास आया। उसने बहुत ही जोशीले ढंग से अभिवादन किया और बोला, 'समझौता कर लिया गया है, प्रभु। हम नीचे उतर सकते हैं। किंतु हमें यहां दस दिनों तक रुकना पड़ेगा।'

शिव की त्योरियां चढ़ गई।

'मैंने अस्थायी ढंग से जलयान का स्वामित्व मगध के राजमहल के विश्रामगृह के स्वामी को हस्तांतरित कर दिया है, प्रभु हम लोग उसके विश्रामगृह में दस दिनों तक रुकेंगे। हम विश्रामगृह को जो किराया देंगे, उससे ही अंधक को माल-भाड़े का भुगतान कर दिया जाएगा। जब हम यहां से प्रस्थान करने की इच्छा करेंगे तो जलयान का स्वामित्व पुनः महाराज दिलीप के नाम कर दिया जाएगा। हमें यहां दस दिन रुकना पड़ेगा ताकि विश्राम गृह का स्वामी पर्याप्त धन कमा सके जिससे उसे लाभ भी हो और पत्तन शुल्क का भी भुगतान कर सके।'

शिव ने विस्मय में सियामंतक को देखा। वह नहीं समझ पा रहा था कि उसके इस विचित्र घुमावदार समझौते पर हंसे या उसकी इस आधिकारिक समझ से प्रभावित हो, जिसके कारण शिव के मगध में भ्रमण के उद्देश्य को तो पूरा किया ही साथ में अपने सम्राट का मान भी बनाए रखा। बंदरगाह का शुल्क दिया जाएगा, लेकिन तकनीकी दृष्टि से सम्राट दिलीप के द्वारा नहीं।

वह नागा और उसके सैनिक चुपचाप उस जहाजी बेड़े का पीछा कर रहे थे जिसमें शिव, सती और उनके परिचारकगण यात्रा कर रहे थे। नागाओं की रानी, प्रधानमंत्री कर्कोटक और रानी के अंगरक्षक नागाओं की राजधानी पंचवटी के लिए निकल चुके थे। सेना की छोटी पलटन होने के कारण शिव की तेज गति से चलने वाले जहाजी बेड़े की गति से चलने में उस नागा को मदद मिल रही थी।

वे बुद्धिमानी से नदी के किनारे से दूर रहे थे। इतनी दूर कि नौका से निगरानी करने वालों से छुपे रहें और इतना निकट कि उन नौकाओं के मार्ग का आसानी से पीछा कर सकें। मगध से बचे रहने के लिए वे और भी अधिक अंदर की ओर चले गए और उनकी मंशा थी कि जब वे नगर से दूर निकल जाएं तो पुनः निकट आ जाएं।

'अब थोड़ी दूर और, मेरे स्वामी,' विश्वद्युम्न ने कहा, 'उसके बाद हम नदी की ओर पुनः जा सकते हैं।'

उस नागा ने सहमति में सिर हिलाया।

अचानक जंगल की शांति एक तेज चीख ने भंग कर दी,'नहीं ऽ ऽ ऽ!'

अपने हाथ के संकेतों से विश्वद्युम्न को आदेश देता हुआ वह नागा तत्काल अपने घुटने के बल नीचे झुक गया। संकट टल जाने की प्रतीक्षा में समस्त पलटन शीघ्र ही शांति से नीचे बैठ गई।

लेकिन संकट का प्रारंभ अभी हुआ ही था।

एक औरत दुबारा चीखी, 'नहीं! कृपा करो! उसे छोड़ दो!'

विश्वद्युम्न ने बिना आवाज किए अपने सैनिकों को झुके रहने का संकेत किया। जहां तक उसका सवाल था, उसे केवल एक ही कार्यवाही करने की आवश्यकता थी। उनके पदचिह्नों को पुनः ढूंढना, उस क्षेत्र का कोई बहुत लंबा घुमावदार रास्ता पकड़ना और नदी की ओर उनके पीछे चल पड़ना। अपना सुझाव देने के लिए वह अपने स्वामी की ओर मुड़ा। लेकिन उस नागा की आंखें एक हृदयविदारक दृश्य पर टिकी हुई स्तंभित थीं।

यह दृश्य आंशिक रूप से वृक्षों एवं झाड़ियों के झुरमुट से छुपा हुआ था। कुछ ही दूरी पर एक आदिवासी महिला लेटी हुई थी। वह एक छह-सात वर्ष के बालक को अत्यधिक व्यग्रता से जकड़े हुए थी। दो हथियारबंद सिपाही, जो संभवतः मगध के थे, वे उस बच्चे को उससे छीनने का प्रयास कर रहे थे। वह महिला अपनी दुबली-पतली काया के बावजूद आश्चर्यजनक रूप से विस्मयकारी शक्ति का प्रदर्शन कर रही थी और अपने बच्चे को निराशोन्माद में पकड़े हुए थी।

'लानत है!' मगध सेना का नेता चीखा, 'उस औरत को धक्के देकर अलग करो, उजड्डो!'

गंगा और नर्मदा के मध्य जंगली एवं अशांत भूमि पर जंगलों में रहने वाले आदिवासी इधर-उधर रहा करते थे। उन महान नदियों के साथ-साथ रहने वाले नगरीय सभ्य लोगों के लिए ये आदिवासी पिछड़े लोग थे क्योंकि वे प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर रहने का हठ करते थे। अधिकतर साम्राज्यों ने उनकी कोई सुधि नहीं ली और शेष ने अपनी मनमर्जी से उनकी भूमि पर कब्जा कर लिया था क्योंकि

उनकी अपनी जनसंख्या बढ़ गई थी और खेती के लिए भूमि की आवश्यकता बढ़ गई थी। और कुछ, विशेषकर क्रूर साम्राज्य, इन असहाय समूहों पर दवाव डाल इनसे वेगार मजदूरी करवाने के लिए दास वना लेते थे।

मगध के उस नेता ने अपने पैरों से महिला को बहुत जोर से ठोकर मारी, 'तुम दूसरा वेटा जन सकती हो! लेकिन मुझे यह लड़का चाहिए! यह मेरे बैलों को चलाकर मुझे विजय दिलाएगा! पिछले तीन वर्षों से प्रत्येक दौड़ जीत रहे मेरे पिता अंततः अपने इस अंतहीन गर्व को पाने से रुक जाएंगे!'

उस नागा ने उस मगधी नेता को बिना अपनी घृणा छुपाए देखा। बैलों की दौड़ चंद्रवंशी क्षेत्रों में एक सनक के समान थी जिसमें दावं लगते थे, राजसी रुचि होती थी और षड्यंत्र होते थे। सवारों को जानवरों को दौड़ में बनाए रखने के लिए चीखने-चिल्लाने और भड़काने की आवश्यकता होती थी। साथ ही साथ यदि सवार बहुत भारी होता था तो वह बैलों की गति को कम देता था। इसलिए छह से आठ वर्ष की आयु के बालक इसके लिए आदर्श समझे जाते थे। वे डर के मारे चीख पड़ते थे और उनका भार भी नगण्य होता था। बच्चों को पशु से बांध दिया जाता था। यदि बैल गिर जाता था तो सवार बच्चे या तो गंभीर रूप से घायल हो जाते थे या मर भी जाते थे। इसलिए अक्सर सवार बनाने के लिए आदिवासी बच्चों का अपहरण कर उन्हें दास बनाया जाता था। यदि वे मर भी जाते थे तो किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता था।

उस मगधी नेता ने अपने एक आदमी की ओर सिर हिलाया, जिसने अपनी तलवार निकाल ली। उसके वाद उसने उस महिला को देखा, 'मैं तुम्हारे साथ यथोचित करने का प्रयास कर रहा हूं। अपने बेटे को छोड़ दो। अन्यथा तुम्हें चोट लग सकती है।'

'नहीं!'

उस मगधी सैनिक ने उस मां के दाहिने हाथ को चीरते हुए अपनी तलवार चला दी। बच्चे के चेहरे पर रक्त की धार फूट पड़ी,जिसने उसे इतना अधिक रुला दिया कि अब वह ढाढस बंधाने योग्य भी नहीं रहा।

वह नागा उस औरत को घूर रहा था। उसका मुंह विस्मय से खुला था। उस माता का रक्तिम हाथ एक ओर लटका हुआ झूल रहा था, लेकिन उस माता ने अभी भी अपने बेटे को बाएं हाथ से जकड़ रखा था।

विश्वद्युम्न ने सिर हिलाया। वह आसानी से वता सकता था कि बस कुछ ही देर की बात थी, वह औरत अपने प्राण गंवा बैठेगी। वह अपने सैनिकों की ओर मुड़ा। उन्हें संकेत दिया कि वे रेंगकर पीछे हट जाएं। उसके बाद वह अपने स्वामी की ओर मुड़ा। लेकिन वह नागा वहां नहीं था। वह त्वरित गति से आगे की ओर बढ़ चुका था, उस मां की ओर। विश्वद्युम्न हड़बड़ा गया और अपने सिर को झुकाए हुए ही अपने स्वामी के पीछे भागा।

'मार डालो इस औरत को!' मगधी नेता ने कहा।

उस मां के निकट वाले मगधी सैनिक ने तलवार को ऊंचा उठाया। वह उसे चलाने के लिए तैयार ही हुआ था कि अचानक वह नागा वृक्षों के पीछे से निकलकर सामने आ गया। उसके हाथ में एक चाकू था। इससे पहले कि वह सैनिक यह जान पाता कि क्या हुआ, वह चाकू उसके हाथ में आकर धंस गया और उसकी तलवार कोई अहित पहुंचाने से पूर्व धरती पर गिर पड़ी।

जब वह मगधी सैनिक पीड़ा से चिल्लाया तो उस नागा ने दो चाकू और निकाल लिए। लेकिन वह पीछे की ओर मगधी सैनिकों की पलटन को देख नहीं पाया था। उनमें से एक सैनिक का तीर, कमान पर चढ़ा हुआ था। वह तीर उसके बाएं कंधे की हड्डी को तोड़ता हुआ उसके धड़ के कवच और कंधे की हड्डी के बीच में जा धंसा। उस प्रहार का बल इतना अधिक था कि नागा धरती पर आ गिरा और पीड़ा ने उसे गतिहीन कर दिया।

अपने स्वामी को गिरा देख नागाओं की पलटन जोर से चिल्लाती हुई दौड़ पड़ी।

'स्वामी!' विश्वद्युम्न रो पड़ा। वह उस नागा को खड़े होने में सहायता कर रहा था।

'तुम कौन हो मूर्ख?' उस क्रूर मगधी नेता ने चिल्लाकर पूछा। इससे पूर्व वह पीछे हटकर अपनी पलटन के पास पहुंच चुका था और मुड़कर नागा के ऊपर चिल्लाया था।

'भाग जाओ यहां से, यदि तुम जीवित रहना चाहते हो!' अपने स्वामी को चोटिल देखकर क्रोध से चिल्लाते हुए नागाओं के एक सैनिक ने कहा।

'बंगा वाले!' बोलने के तरीके से समझकर मगधी चीखे,'भगवान इंद्र के नाम पर तुम नीच लोग यहां क्या कर रहे हो?'

'यह ब्रंगा है! बंगा नहीं!'

'ऐसा लगता है कि मुझे इससे कोई मतलब होगा? मेरे राज्य से भाग जाओ!'

ब्रंगवालों ने कोई प्रतिक्रिया नहीं की क्योंकि उन्होंने देखा कि विश्वद्युम्न की मदद से उनके स्वामी धीरे-धीरे खड़े हो रहे थे। उस नागा ने विश्वद्युम्न को संकेत किया कि वह पीछे हट जाए और वह अपने कंधे से उस तीर को बाहर निकालने का प्रयास करने लगा। लेकिन वह बहुत ही गहरा धंसा हुआ था। उसने उस तीर के डंडे को बीच में से ही तोड़ दिया और एक ओर फेंक दिया।

उस मगधी ने उस नागा की ओर डरावने ढंग से इंगित करते हुए कहा, 'मैं उग्रसेन हूं, मगध का राजकुमार। यह मेरा देश है। ये लोग मेरी संपत्ति हैं। मेरे रास्ते से हट जाओ।'

उस राजसी बिगड़ैल की बात पर उस नागा ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

वह मुड़ा तो उसने एक हृदयविदारक दृश्य देखा जो उसने अब तक कभी नहीं देखा था। उसके सैनिकों के पीछे वह मां लगभग अचेत पड़ी हुई थी। उसकी आंखें बंद होने के कगार पर थी क्योंकि उसका बहुत सारा रक्त बह गया था। शरीर अत्यधिक कंपन कर रहा था। वह इतनी डरी हुई थी कि उसके मुंह से आवाज भी नहीं निकल पा रही थी।

और तब भी, वह हठ करती हुई अपने पुत्र को देने से इंकार कर रही थी। उसका बायां हाथ अभी भी अपने पुत्र के चारों ओर लिपटा हुआ था और उसका शरीर अपने पुत्र के सामने उसे सुरक्षा देने वाली स्थिति में था।

'क्या मां है!'

वह नागा पीछे मुड़ा। उसकी आंखें क्रोध से जल रही थीं। उसका शरीर तना हुआ था। उसकी मुट्ठी कस के बंद थी। वह डरावने ढंग से शांत स्वर में फुसफुसाया, 'तुम एक मां को चोट पहुंचाना चाहते हो क्योंकि वह अपने बच्चे की रक्षा कर रही है?'

उस कोमल स्वर से केवल धमकी ही प्रकट हो रही थी। उसने उस व्यक्ति को भी प्रभावित कर दिया था जो राजसी अभिमान में लिप्त था। लेकिन उग्रसेन अपने चापलूस दरबारियों के सामने पीछे नहीं हट सकता था। कोई पागल ब्रंगा, जो बेमौसम होली का मुखौटा पहने हुए था, उसे अपने शिकार से वंचित नहीं कर सकता था, 'यह मेरा साम्राज्य है, मैं चाहे जिसे चोट पहुंचाऊं और यदि तुम अपना खेद छुपाना चाहते हो तो यहां से भाग जाओ। तुम उस शक्ति को नहीं जानते...'

'तुम एक मां को चोट पहुंचाना चाहते हो क्योंकि वह अपने बच्चे की रक्षा कर रही है?'

स्वर इतना प्रचंड और भयानक था कि उग्रसेन चुप हो गया क्योंकि उसकी मोटी बुद्धि वाली खोपड़ी में आतंक घर कर गया था। वह अपने अनुचरों की ओर मुड़ा। उन लोगों ने भी वही भय महसूस किया था जो उस नागा के स्वर ने उत्पन्न किया था।

स्तब्ध विश्वद्युम्न ने अपने स्वामी को घूरकर देखा। उसने पहले कभी अपने स्वामी को इतनी प्रचंड आवाज में बोलते नहीं सुना था। कभी नहीं। उस नागा की सांस बहुत तेज चल रही थी जो रुक-रुककर, भिंचे दांतों से छन-छनकर आ-जा रही थी। उसका शरीर क्रोध से अकड़ गया था।

और उसके बाद विश्वद्युम्न ने सुना कि उस नागा की सांस धीरे-धीरे फिर सामान्य हो गई थी। वह तत्काल ही जान गया। उसके स्वामी ने निर्णय ले लिया था।

उस नागा ने हाथ बढ़ाकर बगल से अपनी तलवार निकाल ली। उसे वह अपने शरीर से दूर पकड़े हुए था। अब वह हमला करने के लिए पूरी तरह तैयार था। उसके बाद उसने अपने आदेश को फुसफुसाकर कहा, 'कोई दया नहीं।'

'कोई दया नहीं!' विश्वासपात्र ब्रंगा सैनिकों ने चिल्लाकर कहा। अपने स्वामी के पीछे से उन्होंने हमला बोल दिया। वे दयनीय मगधियों पर टूट पड़े। कोई दया नहीं थी।

अध्याय 3

मगध का पंडित

वह भोर का समय था जब शिव ने नरसिंह मंदिर जाने के लिए विश्रामगृह को छोड़ा। उसके साथ भगीरथ, द्रपकु, सियामंतक, नंदी और वीरभद्र भी गए थे।

अयोध्या की तुलना में मगध बहुत ही छोटा सा नगर था। व्यावसायिक या सैनिक सफलता और उसके परिणामस्वरूप अधिक संख्या में लोगों के आप्रवासन से त्रस्त ना होने के कारण वह स्थल हरियाले मार्गों वाला एक सुंदर नगर स्वरूप बना हुआ था। जबकि यहां देवगिरि के समान शानदार संस्थागत व्यवस्था या अयोध्या के समान गगनचुंबी अट्टालिकाएं नहीं थीं, फिर भी यह मेलूहा की राजधानी के उबाऊ मानकीकरण या स्वद्वीप की राजधानी की अव्यवस्था के दलदल में नहीं फंसा था।

शिव और उसके अनुयायी दल को नगर से दूर वहां पहुंचने में आधे घंटे से अधिक समय नहीं लगा, जहां वह भव्य नरसिंह मंदिर स्थित था। शिव ने उस वैभवपूर्ण मंदिर के अहाते में प्रवेश किया। शिव के निर्देशानुसार अनुयायी दल के सदस्य बाहर ही प्रतीक्षा करने के लिए रुक गए, लेकिन तभी जब उन्होंने मंदिर परिसर में किसी संदिग्ध की संभावना को दूर कर लिया।

मंदिर चारों ओर से एक विशालकाय वर्गाकार बाग से घिरा हुआ था। उसी शैली से जो भारत की सुदूर पश्चिमी सीमाओं पर प्रभु रुद्र के देश की थी। उस बाग के हृदयस्थल में बड़ी ही प्रवीणता से एक विशालकाय फव्वारा और कलात्मक जलमार्ग, फूलों की क्यारियां बनी हुई थीं और अद्वितीय समानता वाली घास मध्य से बाहर की ओर जाती हुई बिछी हुई थी। दूर एक छोर पर नरसिंह मंदिर स्थित था। सफेद संगमरमर से बनी विशालकाय सीढ़ियां मुख्य वेदिका की ओर ले जा रही थीं। वहां एक मीनार थी जो कम से कम सत्तर मीटर लंबी थी। उस पर हर ओर देवी-देवताओं की अलंकृत मूर्तियां उत्कीर्ण की गई थीं। शिव को विश्वास था कि उस भव्य, प्रेरक एवं स्पष्ट रूप से बहुमूल्य मंदिर का निर्माण उस समय किया गया होगा जब मगध के पास समस्त स्वद्वीप राज्य संघ के संसाधन उपलब्ध थे।

शिव ने अपनी पादुका सीढ़ियों के पास उतार दी। फिर वह सीढ़ियों से ऊपर चढ़ता हुआ मुख्य मंदिर में प्रवेश कर गया। मंदिर के दूर किनारे पर मुख्य पवित्र स्थल था। जहां एक भव्य सिंहासन पर शिव के ईष्टदेव, प्रभु नरसिंह विराजमान थे। प्रभु रुद्र से भी पूर्व काल में प्रभु नरसिंह का अवतार हुआ था। शिव ने चिंतन किया कि यदि प्रभु की मूर्ति का आकार वास्तविक स्वरूप का था तो वे अवश्य ही बहुत शक्तिशाली रहे होंगे। वे अप्राकृतिक रूप से ऊंचे कद के दिख रहे थे, कम से कम आठ फीट के। उनकी मांसलता ऐसी थी कि दानव तक भयभीत हो जाएं। लंबे नाखूनों के साथ उनके हाथ असाधारण रूप से बलवान थे, जिसने शिव को यह सोचने पर विवश कर दिया कि प्रभु के तो हाथ ही किसी संहारक अस्त्र से कम नहीं रहे होंगे।

लेकिन वह प्रभु का मुख था, जिसने शिव को स्तब्ध कर दिया। उनके मुख पर होंठ कल्पनातीत रूप से अति विशाल थे। उनकी मूंछों के बाल आम आदमी की तरह नीचे की ओर नहीं गए हुए थे बल्कि बिल्ली की मूंछों की तरह कड़े, सीधे-सीधे बाहर की ओर फैले हुए थे। पैनी आंखों के दोनों ओर होने के साथ-साथ उनकी नाक असाधारण रूप से बड़ी थी। उनके सिर के बाल सिंह के अयाल की तरह दूर तक फैले हुए थे। लगभग ऐसा प्रतीत हो रहा था कि प्रभु नरसिंह और कुछ नहीं बल्कि मानव शरीर में सिंह मुखवाले थे।

यदि वे आज जीवित होते तो अधिकतर चंद्रवंशी प्रभु नरसिंह से उसी प्रकार भयभीत होते जिस प्रकार वे नागाओं से भयभीत होते हैं। और फिर भी ये अप्रत्याशित लोग वास्तव में उनकी मूर्ति की पूजा करते हैं। क्या उनमें कोई साम्यता नहीं हो सकती?

'साम्यता खच्चरों में होती है।'

शिव ने उधर देखा जिधर से आवाज आई थी और आश्चर्यचकित हो गया कि कैसे किसी ने उसकी मन की आवाज को सुन लिया।

स्तंभों के पीछे से एक और वासुदेव पंडित बाहर निकल आया। शिव अभी तक जितने भी पंडितों से मिला था, इसकी लंबाई उन सब पंडितों में सबसे कम थी; मात्र पांच फीट से कुछ ज्यादा। लेकिन अन्य दृष्टिकोण से वह पूर्णतया अन्य वासुदेवों की तरह ही दिख रहा था—हिम समान सफेद केश और बढ़ती आयु की रेखाएं मुख पर झलकती हुई। वह केसरिया रंग की धोती एवं अंगवस्त्रम पहने हुआ था।

'आपको कैसे...'

'वह महत्वपूर्ण नहीं है,' अपने हाथ उठाते हुए उस पंडित ने बीच में ही टोक दिया। उसने कैसे शिव के विचारों को जान लिया था, यह

बनाना उसके लिए कोई महत्ता नहीं रखता था।

वह वार्तालाप... किसी और समय... महान नीलकंठ।

शिव शपथ ले सकता था कि उसने अपने मन में उस पंडित का स्वर सुना था। शब्द टूट-टूटकर आ रहे थे जैसे कहीं बहुत दूर से आ रहे हों। बहुत ही धीमा एवं अस्पष्ट। लेकिन वह स्वर निश्चित रूप से पंडित का ही था। शिव की त्योरी चढ़ गई क्योंकि पंडित के होंठ हिले भी नहीं थे।

आह प्रभु वासुदेव... यह विदेशी... प्रभावशाली है।

शिव ने पंडित के स्वर को पुनः सुना। पंडित धीरे से मुस्कुरा रहा था। वह बता सकता था कि नीलकंठ उसके विचारों को सुन सकते थे।

'आप व्याख्या नहीं करने वाले हैं, है ना?' शिव ने मुस्कुराते हुए पूछा।

नहीं। आप निश्चित रूप से... अभी... तैयार नहीं हैं।

उस पंडित का रूप-रंग अन्य वासुदेवों की तरह ही था लेकिन उसका चरित्र स्पष्ट रूप से भिन्न था। यह पंडित ऐसा मुंहफट था जो अक्खड़पन की सीमा तक चला जाता था। लेकिन शिव जानता था कि उसका प्रतीत होता यह अक्खड़पन लेशमात्र भी पूर्वविचारित नहीं था। यह मात्र उस पंडित विशेष के चरित्र की अस्थिर प्रकृति का ही प्रतिबिंब था।

हो सकता है कि यह पंडित किसी अन्य जीवन में चंद्रवंशी रहा हो।

'मैं वासुदेव हूं,' पंडित ने कहा, 'आज मेरी कोई अन्य पहचान नहीं है। मैं पुत्र नहीं हूं। ना पति। ना पिता। और मैं चंद्रवंशी भी नहीं हूं। मैं मात्र वासुदेव हूं।'

एक व्यक्ति की कई पहचान होती है, पंडितजी।

पंडित ने अपनी आंखें संकुचित कीं।

'क्या आप जन्म से वासुदेव हैं?'

'जन्म से कोई वासुदेव नहीं होता है, प्रभु नीलकंठ। आप इसे अर्जित करते हैं। एक प्रतियोगी परीक्षा है जिसमें सूर्यवंशी एवं चंद्रवंशी भाग ले सकते हैं। यदि आप उसमें उत्तीर्ण होते हैं तो आप कुछ और नहीं हो सकते। आपको अपनी सारी पहचान त्यागनी पड़ती है। आप वासुदेव बन जाते हैं।'

'लेकिन आप वासुदेव बनने की योग्यता अर्जित करने से पूर्व चंद्रवंशी थे,' शिव मुस्कुराया जैसे वह मात्र एक कथन प्रकट कर रहा हो।

शिव के कथन को स्वीकारते हुए, वह पंडित मुस्कुराया।

शिव के मन में बहुत सारे ऐसे प्रश्न थे, जिनके उत्तर जानने का वह इच्छुक था। लेकिन एक प्रश्न सबसे स्पष्ट था जो वह इस वासुदेव से पूछना चाहता था।

'कुछ महीने पहले राम जन्मभूमि मंदिर के वासुदेव पंडित ने मुझसे कहा था कि मेरा कार्य बुराई का नाश करना नहीं है, बल्कियह पता करना है कि बुराई क्या है?' शिव ने कहा। वासुदेव पंडित ने सहमति में सिर हिलाया।

'मैं उस विचार को अब भी आत्मसात करने का प्रयत्न कर रहा हूं। इस प्रकार मेरा प्रश्न उससे संबंधित नहीं है,' शिव ने कहना जारी रखा, 'मेरा प्रश्न उनके कुछ और कहने से संबंधित है। उन्होंने मुझसे कहा था कि सूर्यवंशी पुल्लिंग का प्रतीक हैं जबकि चंद्रवंशी स्त्रीलिंग का। इसका क्या अर्थ है? क्योंकि मेरे विचार से इसका पुरुष और स्त्री जाति से कुछ लेना-देना नहीं है।'

'आप इससे और अधिक स्पष्ट नहीं हो सकते हैं, मित्र! आप बिल्कुल सही हैं। इसका पुरुष एवं स्त्री से कुछ भी लेना-देना नहीं है। असल में ये सूर्यवंशियों एवं चंद्रवंशियों के जीवन शैलियों से संबंधित हैं।'

'जीवनशैली?'

— ⅄ⓄⅡ↑⊛ —

'राजकुमार उग्रसेन मारे गए?' भगीरथ ने पूछा।

'हां, राजकुमार,' सियामंतक ने धीरे से कहा, 'यह समाचार ऐसे स्रोत से मिला है जिस पर मैं आंखें मूंदकर विश्वास करता हूं।'

'प्रभु राम हमारी सहायता करें! हमें इसी की आवश्यकता थी। राजा महेंद्र सोचेंगे कि अयोध्या ने ही इस हत्या की व्यवस्था की होगी और आपको तो पता ही है कि वे कितना प्रतिशोधी हो सकते हैं।'

'मैं आशा करता हूं कि वे ऐसा ना सोचें, राजकुमार,' सियामंतक ने कहा, 'यह हमारे लिए बहुत बुरा सिद्ध होगा।'

'उनके गुप्तचर हमारा पीछा कर रहे हैं,' नंदी ने कहा, 'मुझे पूरा विश्वास है कि उनके पास हमारे रहने, आने-जाने इत्यादि गतिविधियों के बारे में अवश्य ही सूचना होगी क्योंकि हम नगर में प्रवेश कर चुके हैं। हमें इसके लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता है।'

'नहीं, नंदी,' भगीरथ ने कहा, 'राजा महेंद्र यह भी सोच सकते हैं कि हमने उनके पुत्र की हत्या करवाने के लिए किराए के लोगों को लगाया होगा खैर, यह बताओ कि वे गुप्तचर कहां हैं?'

'उनमें से दो वहां हैं,' गुप्तचरों की ओर अपनी आंखों से संकेत करते हुए द्रपकु ने कहा, 'वे बहुत ही अनाड़ी हैं वह पेड़ वास्तव में उन्हें छुपा नहीं पा रहा है।'

भगीरथ धीरे से मुस्कुराया।

'यह सुर्पदमन हो सकता है,' सियामंतक ने कहा, 'स्वद्वीप में सभी लोग जानते हैं कि मगध राज्य का छोटा राजकुमार निर्दयी है। उसने सिंहासन पर दावा करने के लिए इस हत्या की व्यवस्था की होगी।'

'नहीं,' भगीरथ ने अपनी आंखें संकुचित करते हुए कहा,'सुर्पदमन राजा महेंद्र का बहुत ही योग्य पुत्र है। कुछ राजाओं को जिन्हें मैं जानता हूं, उनसे भिन्न राजा महेंद्र उसकी गलतियों के बावजूद उसकी योग्यता को सम्मान देते हैं। वास्तव में सुर्पदमन के पास ही सिंहासन है। इसके लिए उसे अपने भाई की हत्या करने की आवश्यकता नहीं है।'

'लेकिन ऐसा कैसे संभव है कि अब तक जनता ने इसका शोक मनाना प्रारंभ नहीं किया?' द्रपकु ने पूछा।

'वे इस सूचना को गोपनीय रख रहे हैं,' सियामंतक ने कहा,'मुझे नहीं पता क्यों।'

'संभव है कि वे एक विश्वसनीय कहानी की व्यवस्था कर सकें ताकि उग्रसेन की याद को कुछ सम्मान प्राप्त हो सके,' भगीरथ ने कहा, 'वह मूर्ख तो अपनी ही तलवार पर गिर जाए, ऐसा था वो।' द्रपकु की ओर मुड़ने से पहले सियामंतक ने सहमति में सिर हिलाया, 'प्रभु मंदिर में अकेले ही क्यों इतना समय व्यतीत करना चाहते हैं? यह तो बहुत अपरंपरागत है।'

'वह इसलिए क्योंकि प्रभु स्वयं ही इतने अपरंपरागत हैं। लेकिन आप उनकी पहचान को मगध में गोपनीय क्यों रख रहे हैं?'

'सभी जो पौराणिक गाथा में विश्वास रखते हैं, वे नीलकंठ के अनुयायी नहीं हैं, द्रपकु,' भगीरथ ने कहा, 'मगध के वर्तमान राजा नीलकंठ को नहीं मानते हैं और यहां के लोग अपने राजा के विश्वासपात्र अनुयायी हैं। प्रभु की पहचान को यहां गुप्त रखना ही उचित है।'

— ⅄ⓄⅡ↑⊛ —

'क्या आप जानते हैं कि पशुओं की तुलना में मनुष्य किस कारण से विशिष्ट होते हैं?' पंडित ने पूछा।

'क्या?' शिव ने पूछा।

'यह तथ्य कि हम साथ कार्य करते हैं। हम किसी संयुक्त लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मिल-जुलकर कार्य करते हैं। हम अपने ज्ञान को एक-दूसरे में बांटते हैं। इस प्रकार प्रत्येक पुश्त अपने पूर्वजों के कंधे का सहारा लेकर अपनी यात्रा प्रारंभ करती है ना कि प्रारंभ से।'

'मैं सहमत हूं, लेकिन केवल हम लोग ही ऐसे नहीं हैं जो समूह में काम करते हैं अन्य पशु जैसे हाथी या सिंह भी ऐसा करते हैं लेकिन हां, उतने बड़े स्तर पर नहीं करते, जितने बड़े स्तर पर हम करते हैं।'

'हां, यह सही बात है। लेकिन यह हमेशा ही मिल-जुलकर काम करने के संबंध में नहीं है। यह कभी-कभी प्रतियोगिता के बारे में भी है। यह हमेशा ही शांति के संबंध में नहीं है। कई बार यह युद्ध के बारे में भी होता है।'

शिव मुस्कुराया और उसने सहमति में अपना सिर हिलाया।

'इस प्रकार सर्वप्रमुख बिंदु यह है कि हम मनुष्य वैयक्तिक स्तर पर कुछ भी नहीं हैं,' पंडित ने कहा, 'हमारी शक्ति हम सबसे एक साथ प्रवाहित होती है। उसी प्रकार जिस प्रकार हम एक-दूसरे से घुल-मिलकर रहते हैं।'

'हां,' शिव सहमत हुआ।

'और यदि हमें एक साथ मिलकर रहना है तो हमारे पास एक जीवनशैली होनी चाहिए, क्या मैं सही हूं?'

'हां हम सबके लिए कोई तरीका ताकि हम मिल-जुलकर रहें या एक-दूसरे से प्रतियोगिता कर सकें।'

'अधिकतर लोगों का मानना है कि दुनिया में कई सौ जीवन-शैलियां हैं,' पंडित ने कहा, 'प्रत्येक संस्कृति सोचती है कि वह किसी ना किसी प्रकार दूसरों से भिन्न है।'

शिव ने सहमति में सिर हिलाया।

'लेकिन यदि आप वास्तव में उन जीवन-शैलियों का अध्ययन करें और उनका सार निकालें तो केवल दो ही प्रकार बचेंगे: पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग।'

'और इन जीवन-शैलियों के क्या अर्थ हैं?'

'पुरुषवाचक जीवनशैली है, "कानून का जीवन" कानून जो महान नेताओं द्वारा बनाया गया हो, संभवतया एक विष्णु द्वारा जैसे प्रभु राम। या फिर कानून जो धार्मिक परंपराओं द्वारा निर्धारित हुआ हो। या ऐसा सामूहिक कानून जो आम जनता द्वारा बनाया गया हो। लेकिन पुरुषवाचक जीवनशैली बहुत ही स्पष्ट है। कानून अपरिवर्तनीय होते हैं और उनका पालन अवश्य ही कड़ाई से किया जाना चाहिए। इसमें अस्पष्टता की कोई संभावना नहीं होती। जीवन पूर्वानुमय होता है क्योंकि जन साधारण वही करेगा जो विधि द्वारा उनके लिए नियत किया गया है। मेलूहा इस प्रकार की जीवनशैली का एक आदर्श उदाहरण है। इसलिए यह स्पष्ट है कि क्यों ऐसी जीवनशैली वाले लोग सत्य, कर्तव्य एवं सम्मान के नियमों से बंधे जीवनयापन करते हैं। क्योंकि उन्हें व्यवस्था में सफल होने के लिए इनकी ही आवश्यकता होती है।'

'और स्त्रीवाचक?'

'स्त्रीवाचक जीवनशैली है, "संभावना का जीवन"। कुछ भी परम सिद्धांत नहीं है। कोई काला या सफेद नहीं है। लोग पूर्व में आदेशित किसी कानून के अनुसार कार्य नहीं करते हैं, बल्कि उस समय विभिन्न प्रकार की संभावनाओं पर आधारित परिणामों के अनुसार करते हैं। उदाहरण के लिए, वे उस राजा का अनुसरण करेंगे जिसके बारे में उनकी सोच होगी कि सत्ता में रहने की उनकी संभावना सबसे अधिक है। जैसे ही संभावना बदलती है तो उनकी निष्ठा भी बदल जाती है। यदि ऐसे समाज में कानून होते हैं तो वे लचीले होते हैं। एक ही कानून अलग-अलग समय में भिन्न-भिन्न अर्थ वाले बन जाया करते हैं। यहां मात्र परिवर्तन ही स्थिर है। स्त्रीलिंग प्रकार की संस्कृति जैसे स्वद्वीप विरोधाभासों में सहज अनुभव करते हैं और ऐसी व्यवस्था में सफलता का नियम क्या होता है? बिना किसी त्रुटि के--अनुराग, सुंदरता एवं स्वतंत्रता।'

'और कोई भी जीवनशैली दूसरे से उत्कृष्ट नहीं है?'

'स्वतः यही सत्य है। दोनों ही तरह की संस्कृतियों का अस्तित्व होना चाहिए। क्योंकि वे एक-दूसरे को संतुलित करती हैं।'

'कैसे?'

'आप देख सकते हैं कि एक पुरुषवाचक संस्कृति जब अपने उत्कर्ष पर होती है तो वह उस युग के अनुकूल उन कानूनों के समूह विशेष के लिए सम्माननीय, स्थिर, विश्वसनीय एवं शानदार तरीके से सफल होती है। एक व्यवस्था कार्य करती है और समाज निश्चित पूर्व-आदेशित दिशा में सामंजस्यपूर्ण प्रगति करता है। आज आप सूर्यवंशियों को देखिए। लेकिन जब पुरुषवाचक संस्कृति पतन की ओर अग्रसर होती है तो वे कट्टरवादी एवं कठोर बनकर प्रलय का कारण बन जाते हैं। वे किसी भी अपने से भिन्न पर हमला करते हैं, उन्हें वे अपने "सत्य" में "परिवर्तित" करने का प्रयास करते हैं, जिससे परिणामस्वरूप हिंसा एवं गड़बड़ी उत्पन्न होती है। यह विशेषकर तब होता है जब युग परिवर्तित होता है। पुरुषवाचक जीवनशैली के लिए परिवर्तन को अपनाना कठिन है। वे उन कानूनों को और भी अधिक कसकर जकड़ लेते

हैं, यद्यपि वे कानून संभवतया उस युग के योग्य ना हों, फिर भी। पुरुषवाचक संस्कृति द्वारा लागू की गई व्यवस्था का तब स्वागत होता है जब वे शक्तिशाली होते हैं, लेकिन जब वे अवनति की ओर अग्रसर होते हैं तब वे घुटन उत्पन्न करते हैं। असुर जो पुरुषवाचक जीवनशैली के अनुयायी थे, उन्होंने इसी प्रकार की कठिनाइयों का सामना किया था, तभी उनकी शक्ति अवनति की ओर अग्रसर हो गई थी।'

'इस प्रकार जब कट्टरवादिता कुंठा से उत्पन्न विद्रोहों का कारण बनती है तो स्त्रीवाचक जीवनशैली सादगी के माध्यम से ताजगी लेकर आती है।'

'बिल्कुल सही, स्त्रीवाचक जीवनशैली सभी प्रकार के विभेदों को समाविष्ट कर लेती है। विभिन्न प्रकार की आस्थाओं और विश्वास का शांति से एक साथ अस्तित्व बना रह सकता है। कोई भी अपने प्रकार के सत्य को लागू करने का प्रयास नहीं करता है। विविधता एवं स्वतंत्रता का उत्सव होता है जो नवीकृत रचनात्मकता एवं उत्साह लाता है, जिसके कारण समाज को अत्यधिक लाभ पहुंचता है। देव जो स्त्रीवाचक जीवनशैली के अनुयायी थे, उन्होंने जब असुरों को पराजित किया तब वे ये सारी विशिष्टताएं समाज में लाए थे। लेकिन जैसाकि अत्यधिक स्वतंत्रता या यों कहें उन्मुक्तता के साथ होता है, स्त्रीवाचक संस्कृति अधोगति, भ्रष्टाचार एवं व्याभिचार से भी परे निकल जाती है।'

'उसके बाद फिर से लोग पुरुषवाचक शैली का स्वागत करते हैं।'

'हां, प्रभु राम के काल में स्त्रीवाचक देवों की शैली पतनोन्मुख थी। साम्राज्य भ्रष्ट, अनैतिक और पथभ्रष्ट था। लोगों में व्यवस्था एवं सभ्यता की बहुत मांग उठी थी। प्रभु राम वह ले आए थे क्योंकि उन्होंने नई पुरुषवाचक जीवनशैली की रचना की। अनावश्यक रूप से विद्रोहों को रोकने के लिए उन्होंने बहुत ही बुद्धिमत्ता से देवों की शैली की कभी भी निंदा नहीं की। उन्होंने केवल अपने नियम को जीवन की नवीन शैली कहा: सूर्यवंशी मार्ग।'

'लेकिन आप सचमुच यह कह सकते हैं कि स्त्रीवाचक एवं पुरुषवाचक शैली मात्र संस्कृति के स्तर पर ही विद्यमान होता?' शिव ने पूछा, 'क्या यह सचमुच प्रत्येक पुरुष एवं स्त्री में विद्यमान नहीं है? क्या प्रत्येक मनुष्य के अंदर थोड़ा-बहुत सूर्यवंशी एवं चंद्रवंशी विद्यमान नहीं होता? उनका तत्संबंधी प्रभाव किसी व्यक्ति में उन परिस्थितियों पर निर्भर करता है जिनका वह सामना करता है और क्या ये परस्पर परिवर्तनीय नहीं होते?'

'हां, आप बिल्कुल सही हैं। लेकिन अधिकतर लोगों में कोई एक विशिष्टता प्रबल होती है। या तो वह पुरुषवाचक होता है या फिर स्त्रीवाचक।'

शिव ने सहमति में सिर हिलाया।

'जीवनयापन की इन दोनों शैलियों को जानने की आवश्यकता से जुड़ा कारण यह है कि जब आप बुराई को जान जाएंगे तो अपने संदेश को जिस प्रकार के लोगों से बात करेंगे, उसी के अनुरूप ढाल सकेंगे। बुराइयों के विरुद्ध युद्ध में आपको सूर्यवंशियों को एक अलग प्रकार से समझाना होगा और चंद्रवंशियों को बिल्कुल ही अलग प्रकार से।'

'मुझे उनको समझाने की आवश्यकता क्यों पड़ेगी? मेरे विचार से सूर्यवंशियों एवं चंद्रवंशियों में साहस का तनिक भी अभाव नहीं है।'

'इसका साहस से कुछ लेना-देना नहीं है, मित्र। साहस की आवश्यकता तभी है जब युद्ध का प्रारंभ हो चुका हो। सर्वप्रथम आपको बुराई के विरुद्ध युद्ध में लोगों को सम्मिलित होने के लिए मनाना पड़ेगा। आपको उन्हें प्रभावित करने की आवश्यकता होगी ताकि वे बुराई के साथ अपनी आसक्ति को छोड़ सकें।'

'आसक्ति! बुराई से!' भौचक्का हुआ शिव पूछ बैठा, 'पवित्र झील के नाम पर बताएं कि क्यों कोई बुराई से आसक्ति रखेगा?'

पंडित मुस्कुराया।

शिव ने एक गहरी सांस छोड़ी, 'अब क्या? इस पल वार्तालाप रोकने की क्या व्याख्या है? मैं तैयार नहीं हूं? अभी उचित समय नहीं है?'

पंडित हंसा, 'मैं अभी आपको इसकी व्याख्या नहीं कर सकता, हे नीलकंठ। आप नहीं समझेंगे। और जब आप बुराई को खोज निकालेंगे तो आपको उसे समझने के लिए मेरी व्याख्या की आवश्यकता नहीं होगी। जय गुरु विश्वामित्र। जय गुरु वशिष्ठ।'

अध्याय 4

वह नगर जहां दिव्य प्रकाश चमकता है

'राजकुमार सुर्पदमन?' आश्चर्यचकित भगीरथ ने पूछा, 'यहां!'

'हां, राजकुमार,' चिंतित सियामंतक ने कहा।

भगीरथ शिव की ओर मुड़ा। नीलकंठ ने सिर हिलाकर अनुमति दी।

अयोध्या के राजकुमार सियामंतक की ओर मुड़े, 'राजकुमार सुर्पदमन को अंदर आने दिया जाए।'

कुछ क्षणों बाद ही एक जोशीला व्यक्ति तेजी से अंदर आया। लंबे कद, सुगठित शरीर और सांवले रंग वाले सुर्पदमन की तेल से चिकनी मोटी-मोटी मूंछें थीं जो किनारे पर उमठीं हुई थीं। उसके बाल खूब सहेजे हुए लंबे थे और वे अतिव्ययी फिर भी रुचिकर मुकुट के नीचे सुघड़ता से व्यवस्थित थे। श्वेत अंगवस्त्रम के साथ उसने गेरुए रंग की धोती पहनी हुई थी जो किसी चंद्रवंशी कुलीन के लिए सादा पहनावा था। उसके शरीर पर युद्ध से मिली चोटों के अनेक निशान थे जो एक क्षत्रिय के लिए गर्व के द्योतक थे।

वह सीधे शिव के पास गया, नीचे झुका और नीलकंठ के पैरों पर अपना मस्तक रख साष्टांग प्रणाम किया, 'प्रभु, भारत में अंततः आपकी उपस्थिति बड़े सम्मान की बात है।'

आश्चर्यचकित शिव में सहज बोध था कि वह पीछे ना हटे। अन्यथा अवश्य ही इसे अनादर के रूप में देखा जाता। उसने सुर्पदमन को आशीर्वाद दिया, '*आयुष्मान भव* राजकुमार। आपको कैसे पता चला कि मैं कौन हूं?'

'दिव्य प्रकाश को गोपनीय नहीं रखा जा सकता, प्रभु,' सुर्पदमन ने भगीरथ की ओर मुड़ते हुए किसी जानकार सा मुस्कुराते हुए कहा,'इससे कोई अंतर नहीं पड़ता चाहे उस पर कितना ही गहन आवरण डाला गया हो।'

भगीरथ मुस्कुराया और उससे सहमति जताते हुए अपना सिर हिलाया।

'मैंने आपके भाई के बारे में सुना,' शिव ने कहा, 'कृपया, मेरी संवेदना स्वीकार करें।'

उस संवेदना को स्वीकारते हुए सुर्पदमन ने कुछ नहीं कहा। वह विनम्रता से झुका और बात की दिशा बदल दी, 'चिरप्रतिक्षित नीलकंठ को जो सम्मान अपेक्षित था, उस विधिवत सम्मान के साथ आपका स्वागत नहीं करने के लिए मैं आपसे करबद्ध क्षमा मांगता हूं। लेकिन मेरे पिता थोड़े हठी हैं।'

'कोई बात नहीं। मैंने अभी तक किसी को ऐसा कोई कारण दिया भी नहीं कि वे मेरा सम्मान कर सकें। सुर्पदमन, आप उस बारे में बात क्यों नहीं करते जो आप करने के लिए आए हैं?'

'प्रभु, मेरा मानना है कि आपसे कोई बात छुपी नहीं है। अपने कुछ मित्रों एवं अंगरक्षकों के साथ मेरा भाई कुछ दिनों पूर्व जंगल में मारा गया। ऐसा माना जा रहा है कि ऐसा कायरतापूर्ण कृत्य संभवतया अयोध्या द्वारा ही किया गया होगा।'

'मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हमने ऐसा कुछ नहीं किया...,' भगीरथ ने कहना प्रारंभ किया। सुर्पदमन ने अपने हाथ से चुप रहने का आग्रह किया।

'मैं जानता हूं, राजकुमार भगीरथ,' सुर्पदमन ने कहा, 'इस हत्या के संबंध में मेरे पास एक अलग सिद्धांत है।'

सुर्पदमन ने अपनी कमर से बंधी थैली खोली और ब्रंगा राज्य का एक सिक्का निकाला। यह उसी सिक्के के समान था जो शिव ने उस नागा से प्राप्त किया था जिसे *लोकाधीश* कहा जाता था।

'प्रभु,' सुर्पदमन ने कहा, 'यह है जो मुझे अपने भाई के शरीर के निकट मिला। मेरा मानना है कि जब आप अयोध्या में थे तो आपको एक स्वर्ण मुद्रा मिली थी। क्या यह मुद्रा उसी की तरह है?'

भगीरथ ने सुर्पदमन को स्तब्ध होकर घूरा। वह विचार कर रहा था कि सुर्पदमन को कैसे पता चला कि नीलकंठ को कुछ मिला था। सुर्पदमन द्वारा गुप्तचरों का जाल बनाने वाली अफवाह अवश्य ही सत्य होनी चाहिए। मगध की अत्यधिक अक्षम गुप्तचर व्यवस्था से स्वतंत्र एक तंत्र-व्यवस्था।

शिव ने सुर्पदमन से वह मुद्रा ले ली। गहनता से घूरते हुए उसका शरीर क्रोध से तन गया, 'मुझे नहीं लगता कि वह घिनौना चूहा पकड़ा गया होगा?'

शिव का प्रचंड क्रोध और उसके वचन सुन सुर्पदमन हतप्रभ रह गया, 'नहीं, प्रभु, खेद है कि ऐसा नहीं हुआ। मुझे भय है कि वह उसी बिल में दुबक गया जहां से आया था।'

शिव ने वह मुद्रा सुर्पदमन को लौटा दी। वह अब शांत था। सुर्पदमन भगीरथ की ओर मुड़ा, 'मुझे मात्र इसकी पुष्टि की आवश्यकता थी, राजकुमार। मैं राजा को बताऊंगा कि मेरा भाई राजकुमार उग्रसेन एक नागा के हमले से मगध की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ था। मैं उन्हें यह भी बताऊंगा कि अयोध्या का इससे कोई लेना-देना नहीं है। मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि आप भी चंद्रवंशी राज्य संघ के दो स्तंभों के मध्य अनावश्यक युद्ध नहीं चाहते होंगे। विशेषकर अभी नहीं, जब हमें सूर्यवंशियों के हाथों अत्यधिक क्षति पहुंची हो।'

अंतिम टिप्पणी उपहास उड़ाने वाली थी। धर्मखेत में मेलूहा के विरुद्ध युद्ध में अपने नेतृत्व के कारण अयोध्या ने चंद्रवंशियों के मध्य अपनी साख खो दी थी।

'आपके कथन ने मेरी गहरी चिंता को कम किया है, राजकुमार सुर्पदमन,' भगीरथ ने कहा, 'मैं मगध के प्रति अयोध्या के मित्रवत मंतव्य का विश्वास दिलाता हूं और कृपया मुझे अनुमति दें कि मैं आपके भाई की असमय मृत्यु पर अयोध्या की ओर से आधिकारिक रूप से सहानुभूति प्रकट कर सकूं।'

सुर्पदमन ने सहमति में सिर हिलाया। वह पुनः धीरे से झुकते हुए शिव की ओर मुड़ा, 'प्रभु, मैं समझ सकता हूं कि आपको भी नागा से हिसाब चुकाना है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि जब इस विशेष दानव से युद्ध हो तो मुझे आपकी सेवा करने का अवसर अवश्य दें।'

शिव ने सुर्पदमन को आश्चर्य से त्योरी चढ़ाकर देखा। राजकुमार ने अभी तक ऐसा संकेत नहीं दिया था कि उसे अपने भाई से प्रेम था या वह उसकी मृत्यु का बदला लेना चाहता था।

'प्रभु, चाहे वह जैसा भी था,' सुर्पदमन ने कहा, 'वह मेरा भाई था। उसके रक्त का प्रतिशोध मुझे अवश्य लेना चाहिए।'

'उस नागा ने मेरे भी भाई की हत्या की है, सुर्पदमन,' शिव ने मेलूहा के प्रमुख वैज्ञानिक बृहस्पति का संदर्भ देते हुए कहा जो उसके भाई समान था, 'जब उचित समय आएगा तो मैं आपको युद्ध करने के लिए अवश्य बुलाऊंगा।'

— —

शिव का अनुयायी दल शांतिपूर्वक मगध से बाहर निकल गया। अन्य नगरों अर्थात मेलूहा एवं स्वद्वीप से भिन्न, जहां शिव का जाना हुआ, यहां उसकी विदाई के लिए किसी समारोह का आयोजन नहीं किया गया था। अधिकतर मगधवासियों से उसका आना और जाना दोनों ही गोपनीय रखा गया था। हालांकि सुर्पदमन मगध राज्य के बंदरगाह पर गुप्त रूप से नीलकंठ के प्रस्थान पर उन्हें नमस्ते करने आया था।

जलयान मेलूहा के काफिले की मान्य बनावट में चल पड़ा था। मुख्य जलयान जिसमें नीलकंठ एवं उनके अन्य सहयोगी थे वह चारों ओर से चार जलयानों से घिरा हुआ था। चाहे जिस ओर से भी शत्रु आएं, उन्हें शिव के जलयान तक पहुंचने के पहले एक पूरे के पूरे युद्धपोत से युद्ध करना ही था। इस बनावट में सबसे प्रमुख भूमिका उस जलयान की थी जो सबसे आगे चल रहा था। वह समस्त काफिले का गति नियंत्रक था। उसे इतना धीमा चलना था ताकि वह नीलकंठ के जलयान की सुरक्षा सुनिश्चित कर सके लेकिन यदि आवश्यक हो तो वह इतनी तीव्र गति से भी चल सके ताकि उनके जलयान को मार्ग देकर बच निकलने का अवसर प्रदान कर सके। वह अग्रणी जलयान एक चंद्रवंशी कप्तान के नेतृत्व में था जो बड़े ही अजब ढंग से किसी अनाड़ी सा कार्य कर रहा था। संभवतया अपने जलयान की शक्ति दिखाने के लिए वह उन्मत्त गति से बढ़ता जा रहा था। इसके कारण नेतृत्व जलयान एवं शिव के जलयान के मध्य दूरी बढ़ती जा रही थी। पर्वतेश्वर को नेतृत्व नौका के कप्तान को सावधान करने एवं उसे धीमा करने के लिए जलयान की सीटी को लगातार बजाना पड़ रहा था।

उसकी अकुशलता से थककर पर्वतेश्वर ने निर्णय लिया कि वह नेतृत्व नौका में ही यात्रा करेगा ताकि वह उस चंद्रवंशी को नौकीय सुरक्षा बनावट के आधारभूत सिद्धांत सिखा सके। अपने काम की महत्ता को समझते हुए पर्वतेश्वर तब व्यथित हो गया जब आनंदमयी ने अवर्णनीय कारण से निर्णय लिया कि वह भी उस नेतृत्व नौका में ही यात्रा करेगी।

'हम लोग इतना धीमे क्यों चल रहे हैं?' आनंदमयी ने पूछा।

जलयान के अग्र भाग के जंगले से पर्वतेश्वर मुड़ा। दबे पांव उसका अपनी बगल तक आना, इसका आनंदमयी को भान नहीं हुआ। वह जंगले की ओर अपनी पीठ किए खड़ी थी और हल्के से कुहनी जंगले पर टिकाई हुई थी, उसकी एक एड़ी जंगले के सबसे नीचे वाले खंड पर रखी हुई थी, ऐसी मुद्रा से पहले से ही छोटी उसकी धोती दाहिने पैर पर और ऊंची उठ गई थी, वक्षस्थल भी खिंचकर उत्तेजक स्थिति में आ गए थे। पर्वतेश्वर किसी कारण से असुविधा महसूस करता हुआ कुछ समझ नहीं पाया और थोड़ा पीछे की ओर हट गया।

'यह एक नौकीय सुरक्षा बनावट है, राजकुमारी,' पर्वतेश्वर ने बड़ी मेहनत से बताया जैसे किसी ऐसे बच्चे को जटिल गणित समझा रहा हो जो समझने के लिए तैयार ना हो, 'आपको यह समझाने के लिए मेरा पूरा जीवन भी कम पड़ेगा।'

'क्या आप मुझसे अपने साथ पूरा जीवन बिताने के लिए कह रहे हैं? अरे, वृद्ध दानव, आप न...।'

पर्वतेश्वर शर्म से लाल हो गया।

'ऐसा है,' आनंदमयी ने कहना जारी रखा, 'आपको कुछ बहुत ही मौलिक बातें बताने में निश्चित रूप से मुझे अपना पूरा जीवन नहीं लगेगा। हमारी नेतृत्व नौका को सीमा से अधिक धीमा करने के बजाय, हम इस नौका को मुख्य जलयान से एक उचित लंबाई वाली रस्सी से बांध सकते हैं। उसके बाद पीछे एक सैनिक को नियुक्त कर सकते हैं जो हमें संकेत देता रहे। यदि कभी भी वह रस्सी जल में डूबती है तो उसका अर्थ होगा कि नेतृत्व नौका धीमी है और उसे गति बढ़ानी चाहिए। और यदि रस्सी तन जाती है तो सैनिक को संकेत देना चाहिए कि नेतृत्व नौका को धीमा किया जाए।'

आनंदमयी ने अपने बालों को सतर करने के लिए हाथ से संवारा, 'इससे आपकी यात्रा में लगने वाले समय में बचत होगी और मुझे इस बेतुकी छोटी सी नौका से मुक्ति पा काशी के महल जैसे आरामदायक स्थल में रहने का अवसर मिलेगा।'

पर्वतेश्वर उसकी चतुराई भरे सुझाव से चकित हुआ, 'बहुत ही सुंदर विचार है! मैं अभी कप्तान को बताता हूं कि इस विचार का पालन करे।'

आनंदमयी ने आगे बढ़कर अपने कोमल हाथों से पर्वतेश्वर को पकड़ा और पीछे की ओर खींच लिया, 'इतनी भी जल्दी क्या है, पर्व? कुछ क्षणों से कोई अंतर नहीं पड़ेगा। थोड़ी देर मुझसे बातें कीजिए।'

अपने नाम को तोड़ने-मरोड़ने और आनंदमयी का अपनी भुजा पर ऐसी हठी पकड़ पर पर्वतेश्वर शर्म से सुर्ख हो गया। उसने नीचे उसके हाथों की ओर देखा।

आनंदमयी ने त्योरी चढ़ाई और अपना हाथ वापस खींच लिया,'ये गंदे नहीं हैं, सेनापति।'

'मेरा तात्पर्य यह नहीं था, राजकुमारी।'

'तो फिर क्या था?' आनंदमयी ने पूछा। उसका स्वर थोड़ा रुखा सा था।

'मैं किसी स्त्री को छू नहीं सकता, राजकुमारी विशेषकर आपको। मैंने आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लिया है।'

आनंदमयी हक्की-बक्की रह गई। वह पर्वतेश्वर को ऐसे घूर रही थी जैसे वह किसी दूसरे ग्रह का प्राणी हो, 'रुकिए! आप यह बता रहे हैं कि आप एक सौ अस्सी साल के *कुंवारे* हैं?'

पर्वतेश्वर इस अनुचित वार्तालाप पर पूरी तरह से खीझ उठा। वह मुड़ा और वहां से तेजी से निकल गया। आनंदमयी खिलखिलाकर हंसती हुई दोहरी हो गई।

— ⚹ —

विश्वद्युम्न ने दबे पांव चलने की आहट सुनी। उसने तत्काल ही तलवार निकाल ली और अपनी पलटन को भी वैसा ही करने का संकेत दिया।

राजकुमार उग्रसेन और उसकी पलटन के साथ मुठभेड़ के बाद उनकी पलटन मगध के दक्षिण में और घने क्षेत्रों की ओर चली गई थी। वह नागा गंभीर रूप से घायल था और इस स्थिति में नहीं था कि अधिक दूर तक यात्रा कर सके। उस नागा के जीवन को बिना जोखिम में डाले हुए वे जितनी तेजी से चल सकते थे, चल रहे थे। क्योंकि अपने राजकुमार के हत्यारों को ढूंढ़ निकालने के लिए मगध के सैनिक चप्पे-चप्पे की खाक छान रहे थे।

'अपनी तलवार नीची करो, जड़बुद्धि,' एक शक्तिशाली महिला आवाज फुसफुसाई, 'यदि मुझे तुम्हारी हत्या ही करनी होती तो जब तक तुम अपनी तलवार निकाल पाते उससे पहले ही मैं अपना काम कर चुकी होती।'

विश्वद्युम्न उस रूखी फुसफुसाहट को पहचान नहीं पाया। संभवतया लंबी यात्रा की थकान ने या शीतकाल की ठंड ने आवाजको रूखा बना दिया था। लेकिन उसने इस लहजे को अवश्य पहचान लिया था। उसने तत्काल ही अपनी तलवार नीची कर ली और अपना सिर झुका लिया।

चुपचाप अपने अश्व को आगे बढ़ाते हुए नागाओं की रानी वृक्षों के पीछे से प्रकट हुई। उसके पीछे उसके विश्वासी प्रधानमंत्री कर्कोटक और सर्वोत्तम पचास अंगरक्षकों का दल था।

'मैंने तुम्हें एक सरल सा कार्य मात्र सौंपा था,' रानी ने फुंफकार कर कहा, 'क्या तुम अपने स्वामी की सुरक्षा तक नहीं कर सकते? क्या यह काम इतना कठिन है?'

'देवी,' हड़बड़ाया हुआ विश्वद्युम्न फुसफुसाया, 'परिस्थिति अचानक ही नियंत्रण से...'

'बकवास बंद करो!' अश्व की लगाम को एक सैनिक की ओर उछालते हुए रानी ने जलती नजरों से उसे देखा और साफ किए हुए जंगल में उस स्थान की ओर बढ़ गई जहां कपड़े का एक तंबू गड़ा हुआ था।

वह उस तंग मुड़े-तुड़े से तंबू में घुसी और अपना मुखौटा उतार लिया। सूखी घास की शय्या पर लोकाधीश यानी उसका भांजा लेटा हुआ था। पट्टियों से उसका शरीर ढका हुआ था। उसका शरीर शिथिल और कमजोर था।

रानी ने अपने भांजे को चिंतित दृष्टि से देखा। उसके स्वर में संवेदना थी, 'क्या अब हम आदिवासियों के भी मित्र हो गए हैं?'

उस नागा ने अपनी आंखें खोलीं और मुस्कुराया। वह धीमे से फुसफुसाया, 'नहीं, महारानी।'

'फिर, परमात्मा के लिए, मुझे यह बताओ कि किसी जंगलवासी की रक्षा करने के लिए तुम अपना जीवन संकट में क्यों डालते हो? तुम मेरी पीड़ा क्यों बढ़ाते हो? क्या वे मेरे भाग्य में पहले से ही पर्याप्त नहीं हैं?'

'मुझे क्षमा करो मौसी, लेकिन क्या मैंने आपके सबसे बड़े तनाव का निपटारा नहीं कर दिया?'

'हां, तुमने किया है और इसी एकमात्र कारण से मैं इतनी दूर से तुम्हारे लिए आई हूं। तुमने सभी नागाओं की भक्ति अर्जित कर ली है। लेकिन तुम्हारा कार्य अभी पूरा नहीं हुआ है। तुम्हें अभी और बहुत से कार्य करने हैं। और किसी बिगड़ैल राजवंशी को रोकना, चूंकि तुम समझते हो कि वह गलत है, यह कार्य उस सूची में कोई प्राथमिकता नहीं रखता। यह देश ऐसे घिनौने राजवंशियों से भरा पड़ा है जो अपने ही लोगों पर अत्याचार करते हैं। क्या तुम ऐसे प्रत्येक व्यक्ति से लड़ोगे?'

'यह बात इतनी सरल नहीं है, मौसी।'

'हां, है। वह मगध का राजकुमार कुछ गलत कर रहा था। लेकिन यह तुम्हारा कर्तव्य नहीं है कि तुम उन सबको रोकते फिरो जो गलत करते हैं। तुम प्रभु रुद्र नहीं हो।'

'वह एक बालक का अपहरण बैलों की दौड़ के लिए करना चाहता था।'

रानी ने एक गहरी सांस छोड़ी, 'ऐसा हर जगह होता है। ऐसा हजारों बच्चों के साथ होता है। यह बैलों की लड़ाई एक व्यसनकारी बीमारी है। कितने लोगों को तुम रोकोगे?'

'लेकिन वह वहीं नहीं रुक रहा था,' वह नागा फुसफुसाया,'वह उस बच्चे के मां की हत्या करने वाला था क्योंकि वह अपने बच्चे की रक्षा करना चाहती थी।'

रानी का शरीर तन गया। शीघ्र ही वह क्रोध से तमतमा उठी।

'वैसी माताएं कम ही होती हैं,' विरल भावावेश के साथ उस नागा ने फुसफुसाकर कहा, 'उन्हें सुरक्षा की आवश्यकता है।'

'बहुत हो गया! कितनी बार मैंने तुमसे कहा है कि इसे भूल जाओ?'

रानी ने शीघ्रता से अपना मुखौटा पहना और तीर सी बाहर चली गई। उसके सेवक सिर झुकाए खड़े थे क्योंकि वे उसके भयंकर क्रोध से डरे हुए थे, 'कर्कोटक!'

'आज्ञा दें, देवी।'

'हम एक घंटे के भीतर यहां से प्रस्थान कर रहे हैं। हम घर जा रहे हैं। तैयारी करो।'

लोकाधीश ऐसी स्थिति में नहीं था कि यात्रा कर सके। कर्कोटक यह जानता था, 'लेकिन, महारानी...'

रानी ने जिस प्रचंडता से उसे घूरा, कर्कोटक बोलते-बोलते बीच में ही रुक गया।

— ⅄ⓄⓊ↑⊛ —

शिव का काफिला जब *काशी* के निकट पहुंचा, *वह नगर जहां दिव्य प्रकाश चमकता है,* तो उसे यात्रा करते हुए तीन सप्ताह से अधिक हो चला था। पवित्र नदी गंगा के चित्ताकर्षक मोड़ पर वह नगर स्थित था। नदी ने फिर पूर्व दिशा की ओर बहने के पहले अलसाए से उत्तर दिशा की ओर से एक घुमावदार मार्ग अपनाया था। यदि आकाश से देखा जाए तो यह घुमावदार मोड़ नवचंद्र के प्रतीक के समान दिखाई देता था जो संयोग से चंद्रवंशियों का राजसी चिह्न भी था। इसलिए स्वद्वीपवासियों की दृष्टि में काशी प्राकृतिक रूप से एक चंद्रवंशी नगर था।

काशी का एक अपना ही अंधविश्वास था। नदी के उस घुमावदार मोड़ के केवल पश्चिमी तट पर ही वह नगर बसा था और पूर्वी तट पूरी तरह से खाली पड़ा था। ऐसा कहा जाता था कि यदि कोई काशी के पूर्वी तट पर अपना घर बनाएगा वह दारुण भाग्य से पीड़ित होगा। काशी के राजपरिवार ने इसी कारण पूर्वी दिशा वाली समस्त भूमि खरीद ली थी ताकि कोई गलती से भी ईश्वर के प्रचंड क्रोध का भागी ना बने।

जैसे-जैसे शिव का जलयान उस प्रसिद्ध अस्सी घाट की ओर बढ़ता जा रहा था जो उस समृद्ध नगर के सर्वप्रमुख पोत गोदामों में से एक था तो अनुष्ठानिक स्वागत आरती के लिए सीढ़ियों पर खड़ी भीड़ ढोल-नगाड़े बजाने लग गई थी।

'यह बहुत ही सुंदर नगर है,' अपने उभरते हुए पेट को सहलाते हुए सती फुसफुसाई।

शिव ने सती की ओर देखा और मुस्कुराया। उसका हाथ अपने हाथ में लेकर, हल्के से चूमते हुए कसकर अपने सीने से लगाते हुए कहा, 'कोई तो कारण है जो यहां घर जैसी अनुभूति हो रही है। यह वह स्थल है जहां हमारी संतान को जन्म लेना चाहिए।'

सती ने भी मुस्कुराकर प्रत्युत्तर दिया, 'हां, यही वह स्थल होगा।'

उतनी दूर से भी भगीरथ देख पा रहा था कि अयोध्या के कुलीन काशी के भद्रजनों से धक्का-मुक्की कर रहे थे। वे अपनी स्वागत मशालों को ऊपर उठाने का प्रयास कर रहे थे जबकि अपने सहायकों को उनकी पारिवारिक पताकाओं को ऊंचा ना पकड़ने के लिए झिड़क रहे थे। वे चाहते थे महादेव उनकी सुधि लें और उन पर कृपा करें। लेकिन नीलकंठ ने कुछ असामान्य ही देख लिया था।

'भगीरथ,' अपनी बाईं ओर मुड़ते हुए शिव ने पूछा, 'इस नगर में कोई दुर्गीकरण नहीं है। पवित्र झील के नाम पर ऐसा क्यों है कि इन्हें किसी सुरक्षा की आवश्यकता नहीं है?'

'आह! वह एक लंबी कहानी है, प्रभु,' भगीरथ ने कहा।

'मेरे पास समय ही समय है। मुझे पूरी कहानी बताएं क्योंकि भारत देश में मैंने यह सबसे विचित्र दृश्य देखा है।'

'बात ऐसी है प्रभु, कि यह कहानी अस्सी घाट से प्रारंभ होती है जहां हम रुकने वाले हैं।'

'हुं ऽ ऽ म।'

'इस घाट का यह अनोखा नाम इसलिए नहीं पड़ा क्योंकि इसकी अस्सी सीढ़ियां हैं। ना ही इस कारण कि एक अस्सी नाम की छोटी धारा इसके बगल में बहती है। इसका नाम अस्सी इसलिए पड़ा क्योंकि यहां अस्सी वध हुए थे। वास्तव में, अस्सी वध मात्र एक दिन में हुए थे।'

'प्रभु राम दया करें,' हैरान सती ने कहा, 'वे अभागे कौन थे?'

'वे लोग अभागे नहीं थे, देवी,' भगीरथ ने कहा, 'वे लोग इतिहास के सबसे बड़े अपराधी थे। युद्ध अपराध के लिए असुर राजवंश के अस्सी सदस्यों को प्रभु रुद्र द्वारा मृत्युदंड दिया गया था। अनेक लोगों का मानना है कि देवों एवं असुरों के मध्य अत्यधिक थकाऊ युद्ध वह नहीं था जिसने असुरों की धमकियों का अंत किया था बल्कि अवर्णनीय न्याय था जो प्रभु रुद्र ने किया। उनके महत्वपूर्ण नेताओं की अनुपस्थिति में देवों के विरुद्ध असुरों का विद्रोह असफल हो गया था।'

किसने कहा कि असुर बुरे थे?

'और उसके बाद कुछ बहुत विचित्र घटा। उसके कुछ दिनों बाद ही प्रभु रुद्र ने हिंसा छोड़ दी जो इतिहास में सबसे महान एवं सबसे भयंकर योद्धा थे। उन्होंने दैवी अस्त्रों को प्रतिबंधित कर दिया जिसने देव-असुर युद्ध में अत्यधिक विध्वंस किया था। कोई भी उनके आदेश की अवहेलना करे तो उन्हें प्रभु रुद्र के कोप का भाजन बनना पड़ सकता था। उन्होंने कहा था कि यदि ऐसा कुछ हुआ तो वे अपनी अहिंसा की प्रतिज्ञा भी छोड़ सकते थे और यदि कोई दैवी अस्त्र का प्रयोग करता है तो वे उस व्यक्ति की सात पुश्तों तक का सर्वनाश कर देंगे।'

'दैवी अस्त्रों पर प्रभु रुद्र के आदेश के बारे में मुझे पता है,' सती ने कहा क्योंकि मेलूहावासी महादेव के दैवी अस्त्रों के प्रतिबंध के बारे में भी जानते थे, 'लेकिन इसके पीछे की कहानी नहीं जानती। किस कारण से उन्होंने यह आदेश दिया था?'

'मैं यह नहीं जानता, देवी,' भगीरथ ने कहा।

मैं जानता हूं, शिव को ध्यान आया। यह वह क्षण रहा होगा जब प्रभु रुद्र ने अनुभव किया होगा कि असुर बुरे नहीं थे, वे मात्र भिन्न थे। अवश्य ग्लानि का दंश उन्हें चुभा होगा।

'लेकिन कहानी यहीं पर समाप्त नहीं होती। प्रभु रुद्र ने यह भी कहा था कि अस्सी घाट और काशी पवित्र हो चुके थे। उन्होंने इसका कारण वर्णित नहीं किया, लेकिन तत्कालीन लोगों ने ऐसा मान लिया था कि यह इस कारण से हुआ होगा क्योंकि यह वह स्थल था जहां युद्ध समाप्त हुआ था। प्रभु रुद्र ने कहा था कि अस्सी घाट पर फिर कभी कोई मृत्यु नहीं होगी। कभी नहीं। और इस स्थल को सम्मान देना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा था कि यदि अस्सी घाट और काशी में अंतिम संस्कार किया जाता है तो बड़े से बड़े पापी को भी क्षमादान और उनकी मुक्ति के लिए मार्गदर्शन मिलेगा।'

'मनोरंजक,' सती ने कहा।

'काशी के राजाओं ने, जो प्रभु रुद्र के महान अनुयायी थे, अस्सी घाट पर ना केवल किसी भी प्रकार के वध या हत्या को प्रतिबंधित कर दिया बल्कि किसी भी साम्राज्य के लोगों की अंत्येष्टि के लिए इसे सार्वजनिक कर दिया जहां बिना जाति, समुदाय या लिंग विभेद के कोई भी आ सकता था। समय के साथ, काशी के बारे में लोगों की यह आस्था बन गई कि यह वह स्थल है, जो आत्मा की मुक्ति का द्वार है। इससे अत्यधिक संख्या में लोग अपने जीवन के अंतिम दिनों में आकर यहां रहने लगे थे। इस लघु अस्सी घाट में उतनी बड़ी संख्या में मृतकों की अंत्येष्टि करवा पाना असंभव था। अतः अस्सी घाट पर अंत्येष्टि कर्म बंद कर दिया गया और नगर ने एक अन्य घाट को अंत्येष्टि कर्म के लिए तैयार कर लिया जिसका नाम है, मणिकर्णिका, जो एक विशालकाय शवदाह गृह है।'

'लेकिन इसका इससे क्या लेना-देना है कि यहां कोई दुर्ग की दीवार नहीं है?' शिव ने पूछा।

'इसका कारण यह है कि स्वद्वीप के सबसे प्रभावशाली व्यक्ति भी अपनी मृत्यु के समय इस विश्वास के साथ यहां आते थे कि इस स्थल पर उनके पाप धुल जाएंगे और उन्हें मुक्ति मिल जाएगी। बहुत ही कम लोग ऐसे थे जो चाहते थे कि काशी कभी भी नष्ट हो या राज्य संघ के युद्धों से यह किसी भी प्रकार से प्रभावित हो। इसके अतिरिक्त, काशी के राजाओं ने प्रभु रुद्र के अहिंसा के आदेश का पालन किया क्योंकि उनका विश्वास था कि यही तर्कसंगत निष्कर्ष हो सकता था। राजपरिवारों ने आम जनता के समक्ष प्रतिज्ञा ली कि वे और उनकी संतति कभी भी किसी प्रकार के युद्ध में प्रतिभागी नहीं होगी। अपनी वचनबद्धता को प्रमाणित करने के लिए उन्होंने दुर्ग के परकोटों को तुड़वाया और नगर के चारों ओर खुली सड़क का निर्माण करवाया। उसके बाद उन्होंने आध्यात्मिक परिवेश बनाने के लिए सभी सड़कों के किनारे अनेक बड़े-बड़े मंदिरों का निर्माण करवाया।'

'तो क्या काशी पर हमला नहीं हुआ और उसे जीता नहीं गया?'

'इसके विपरीत, प्रभु,' भगीरथ ने आगे कहा, 'प्रभु रुद्र की शिक्षाओं के प्रति उनकी उत्कट प्रतिबद्धता ने काशी को लगभग पवित्र बना दिया। इस नगर पर कोई भी आक्रमण नहीं कर सकता था क्योंकि वह प्रभु रुद्र के प्रति अपमान की भांति होता। यह शांति की दिव्य भूमि बन गई और इसलिए समृद्ध भी। राज्य संघों के दमित लोग यहां सांत्वना पाने लगे। व्यापारी समझ गए कि व्यवसाय करने के लिए यह सबसे सुरक्षित स्थल है। शांति एवं स्वद्वीप साम्राज्य में किसी भी राज्य से गुटनिरपेक्षता ने काशी को वास्तव में स्थिरता के कारण एक सुखदायक स्थान बना दिया।'

'क्या इसी कारण से यहां बहुत से ब्रंगा लोग मिल जाते हैं?'

'हां, प्रभु और कहां वे सुरक्षित रह सकेंगे? काशी में सभी लोग किसी भी प्रकार की हानि से बच सकते हैं। लेकिन ब्रंगावालों ने काशी के धैर्य एवं अतिथि सत्कार की भी परीक्षा ली है।'

'क्या सचमुच में?'

'प्रकट रूप से वे लोग ऐसे हैं जिनके साथ रहना कठिन है। काशी एक सार्वदेशिक नगरी है जहां किसी पर भी अपनी जीवनशैली परिवर्तित करने के लिए दवाब नहीं डाला जाता। लेकिन ब्रंगावाले अपना एक क्षेत्र चाहते थे क्योंकि उनके कुछ विशेष प्रकार के रीति-रिवाज हैं। काशी के राजपरिवार ने अपने नागरिकों को सुझाव दिया कि चूंकि ब्रंगावाले स्वदेश में बहुत प्रताड़नाओं से गुजरे हैं अतः काशी निवासियों को उनके साथ सहानुभूतिशील रहना चाहिए। लेकिन अधिकतर लोगों को यह बहुत ही कठिन लगा। वास्तव में, कुछ वर्ष पूर्व अफवाहें फैली थीं कि परिस्थिति इतनी बिगड़ गई थी कि काशी नरेश ब्रंगावासियों के निष्कासन का आदेश देने वाले थे।'

'फिर उसके बाद क्या हुआ?' शिव ने पूछा।

'सोने की धातु ने वह कर दिखाया जो सुआशय नहीं कर सका था। ब्रंगा राज्य आज सबसे अधिक धनी राज्य है। प्रकट रूप से ब्रंगा के राजा ने काशी के दस वर्षों की कर-वसूली के बराबर मूल्य का सोना भेजा और परिणामस्वरूप निष्कासन आदेश को भुला दिया गया।'

'भला ब्रंगा का राजा अपना धन उन लोगों की सहायता के लिए क्यों व्यय करेगा जिन्होंने अपने ही देश को छोड़ दिया हो?'

'मैं नहीं जानता, प्रभु। मेरे विचार से हम इसे ब्रंगावालों के एक विशिष्ट गुण के रूप में देख सकते हैं।'

अस्सी घाट पर जलयान धीरे से किनारे लग गया और शिव ने उनके स्वागत के लिए वहां जमा हुए जनसाधारण की ओर देखा। पर्वतेश्वर पहले ही उस स्थल की व्यवस्था में जुट चुका था, जहां से शिव को नीचे उतरना था। उसने देखा कि द्रपकु कुछ दूरी पर नंदी और वीरभद्र को आदेश दे रहा था। काशी के पुलिस प्रमुख की खोज में भगीरथ पहले से ही गलियारे में उतर चुका था। सती ने शिव को हल्के से थपथपाया। वह उसे देखने के लिए मुड़ा तो सती ने अपनी आंखों से बड़े हौले से संकेत किया। शिव ने उस दिशा में देखा जिधर सती ने संकेत किया था। उस हंगामे से कुछ दूरी पर एक शालीन छतरी के नीचे एक गंभीर वृद्ध खड़ा था, जिसने अपने कुलीनों और अयोध्या के अभिजात वर्ग के लोगों को नीलकंठ के स्वागत के लिए आगे रहने दिया था। शिव ने अपने हाथ विनम्रता से नमस्ते की मुद्रा में जोड़े और थोड़ा झुककर काशी के नरेश अथिथिग्व का अभिवादन किया। प्रत्युत्तर में अथिथिग्व ने नीलकंठ के सम्मान में पूरी तरह से झुककर अभिवादन किया। सती उस दूरी से निश्चित तौर पर नहीं कह सकती थी, लेकिन उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि राजा की आंखों में आंसू थे।

अध्याय 5

एक छोटी गलती?

'ऊं ऽ ऽ' सती ने नींद से जगाने के लिए धीमे से चूमा तो शिव बुदबुदाया। उसने सती के मुख को अपने हाथों से बड़ी कोमलता से थामा। 'या तो मेरी आंखें मुझे भ्रम में डाल रही हैं या फिर तुम सचमुच दिन-प्रतिदिन सुंदर होती जा रही हो।'

अपने पेट को सहलाते हुए सती मुस्कुराई, 'इतनी सुबह-सुबह बातें बनाना छोड़ दो!'

फिर से उसे चूमते हुए शिव अपनी कोहनी के बल उठा, 'तो इसका आशय है कि अब से प्रशंसा करने का समय भी निश्चित समझा जाए?'

धीरे से शय्या से उठती हुई सती हंस पड़ी, 'आप जाकर मुंह-हाथ क्यों नहीं धो लेते? मैंने निवेदन किया है कि जलपान हमारे कक्ष में ही भेज दिया जाए।'

'अहा! अंततः तुमने मेरे तरीकों को सीखना प्रारंभ कर ही दिया!' शिव व्यवस्थित एवं शिष्टता से भोजनकक्ष में एकत्र हो भोजन करने से सदा ही घृणा करता था, जैसाकि सती को भाता था।

जब शिव काशी के राजमहल में अपने कक्ष से संबद्ध आरामदायक स्नानागार में चला गया तो सती बाहर की ओर देखने लगी। प्रसिद्ध मेखला मार्ग जो पवित्र मार्ग भी कहलाता था, वहां से स्पष्ट दिख रहा था। वह एक बहुत ही भव्य प्रेरणाप्रद दृश्य था। संकुलित, भीड़ भरी काशी नगरी से भिन्न वह मार्ग काफी चौड़ा था, जिसमें छह रथ एक साथ चल सकते थे। उस मार्ग के दोनों ओर वृक्षों का असाधारण प्राचुर्य था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे वहां भारतीय उपमहाद्वीप की समस्त प्रकार की वनस्पतियों का अस्तित्व हो। उन वृक्षों के बाद अनेकानेक मंदिर बने हुए थे। वह मुख्य पथ कुछ-कुछ अर्द्ध-वलयाकार होता हुआ तीस किलोमीटर से भी अधिक लंबा था लेकिन उनके किनारों पर मात्र पूजा स्थल ही बने हुए थे और किसी भी प्रकार के घर नहीं थे। चंद्रवंशियों को यह कहना बहुत भाता था कि काशी के इस पवित्र पथ पर लगभग सभी भारतीय ईश्वरों के आवास थे। और निस्संदेह यह विश्वास इस सचाई पर आधारित था कि भारतीय तीन करोड़ से भी अधिक देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। लेकिन कोई भी इस तथ्य को आसानी से कह सकता था कि सभी प्रसिद्ध देवी-देवताओं के मंदिर इस पवित्र पथ पर स्थापित थे और जो सबसे अधिक भव्य मंदिर था वह निस्संदेह सबसे प्रशंसित महान महादेव प्रभु रुद्र को समर्पित था। यही वह मंदिर था जिसे सती अपलक निहार रही थी। यह मंदिर ब्रह्म घाट के निकट निर्मित किया गया था। पौराणिक कथाओं में ऐसा प्रमाण मिलता है कि प्रभु रुद्र के जीवन काल में ही देवों ने उनके लिए मंदिर बनाने की योजना बना ली थी और वे इसे अस्सी घाट के निकट बनाना चाहते थे, जो प्रभु रुद्र के न्याय प्रदान करने का स्थल था। लेकिन महान महादेव, असुर संहारक, ने आदेश दिया था कि उनका कोई भी स्मारक अस्सी घाट के निकट ना बनाया जाए। उनकी सर्वाधिक गहन पंक्तियां थीं– *'यहां नहीं। और कहीं भी। लेकिन यहां नहीं।'* किसी को भी यह समझ में नहीं आया कि ऐसा क्यों था। लेकिन, फिर भी किसी ने भयंकर प्रभु रुद्र से तर्क करने का प्रयत्न नहीं किया।

'वे इसे *विश्वनाथ* मंदिर कहते हैं,' अचानक ही वहां आकर सती को आश्चर्यचकित करते हुए शिव ने कहा, 'इसका अर्थ होता है *जगत का स्वामी*'।

'वे बहुत ही महान थे,' सती फुसफुसाई, 'एक सच्चे ईश्वर।'

'हां,' प्रभु रुद्र को नमन करता हुआ शिव सहमत हुआ।

'ओऽम रुद्राय नमः'।

'ओऽम रुद्राय नमः।'

'राजा अथिथिग्व ने अच्छा किया जो पिछली रात हमें अकेला छोड़ दिया। अस्सी घाट पर उन आयोजनों के बाद हमें निश्चित ही विश्राम करने की आवश्यकता थी।'

'हां, वे भले व्यक्ति प्रतीत होते हैं। लेकिन मुझे भय है कि वे आज आपको अकेला नहीं छोड़ने वाले। मुझे लग रहा था कि उन्हें आपसे

बहुत सी बातें करनी हैं।'

शिव हंसा। 'लेकिन मुझे यह नगर पसंद है। जितना अधिक निहारता हूं, यह उतनी ही मुझे घर जैसी अनुभूति होती है।'

'चलिए जलपान कर लेते हैं,' सती ने कहा, 'मेरे विचार से हमें बहुत से कार्य करने हैं!'

— ⅄◎Ʊ↟⊛ —

'विशेषकर तुम नहीं?' कानिनी ने पूछा, 'क्या उन्होंने सचमुच ही ऐसा कहा?'

'ये ही शब्द थे,' आनंदमयी ने कहा, 'उन्होंने कहा कि वे किसी स्त्री को स्पर्श नहीं कर सकते। विशेषकर मुझे!'

कानिनी ने विशेषज्ञा की भांति पुनर्यौवन वाला तेल आनंदमयी के सिर पर डालकर मालिश करते हुए कहा, 'इसका अर्थ है, राजकुमारी। आजीवन ब्रह्मचर्य के व्रत को तोड़ने पर विवश कर देने वाली मात्र दो ही महिलाएं हैं। या तो वह अप्सरा मेनका है या फिर आप।'

'दो?' दैवीय अप्सरा से समानता करने पर आनंदमयी की भौंहें तन गई।

'मेरी क्षमा प्रार्थना स्वीकार करें, देवी,' कानिनी ने चहकते हुए कहा, 'आपकी तुलना में मेनका क्या है?'

आनंदमयी हंसी।

'लेकिन यह तो मेनका की चुनौती से कहीं अधिक कठिन चुनौती है, राजकुमारी,' कानिनी ने कहना जारी रखा, 'मुनि विश्वामित्र ने अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में प्रतिज्ञा ली थी। उन्होंने प्रेम के आनंद का पूर्व में अनुभव किया था। मेनका को उन्हें मात्र याद दिलाना था, उनके लिए रचना नहीं करनी थी। दूसरी ओर सेनापति बाल ब्रह्मचारी हैं।'

'मैं जानती हूं। लेकिन जब कोई वस्तु बहुत अधिक सुंदर हो तो उसे प्राप्त करना आसान नहीं होता है। क्या ऐसा हो सकता है?'

कानिनी ने अपनी आंखें संकुचित कीं, 'आप विजयश्री प्राप्त करने से पूर्व यूं निराश ना हों, राजकुमारी।'

आनंदमयी ने त्योरी चढ़ा ली, 'निस्संदेह, मैं नहीं हुई!'

कानिनी ने आनंदमयी को घूरा और मुस्कुराई। स्पष्ट था,राजकुमारी का हृदय प्रेम से स्पंदित हो रहा था। उसने आशा की कि पर्वतेश्वर को अपने अच्छे भविष्य का भान समय रहते हो जाए।

— ⅄◎Ʊ↟⊛ —

'आपकी राजधानी बहुत ही सुंदर है, महाराज,' शिव ने कहा।

सूर्य ने दिन की अपनी यात्रा का तीसरा हिस्सा तय कर लिया था। शिव काशी नरेश अथिथिग्व के व्यक्तिगत कक्ष में सती के साथ बैठा हुआ था। द्रपकु, नंदी और वीरभद्र काशी के लठैत राजसी पहरेदारों के सहयोग में द्वार पर खड़े थे। द्रपकु के लिए यह रहस्य था कि ये लठैत पहरेदार कैसे राजपरिवार की सुरक्षा कर सकते थे। यदि कोई गंभीर हमला हो जाए तो? इस मध्य पर्वतेश्वर काशी के पुलिस प्रमुख के साथ यात्रा पर निकल गया था। वह राजमहल से काशी विश्वनाथ मंदिर तक के मार्ग की सुरक्षा को सुनिश्चित करना चाहता था, जिस मार्ग पर नीलकंठ की उस मंदिर तक जाने की योजना थी। इसकी संभावना थी कि नीलकंठ के दर्शन के लिए लगभग संपूर्ण नगर उस पवित्र मार्ग पर पंक्तिबद्ध होने वाला था क्योंकि उनके आगमन पर केवल कुलीनों को ही अस्सी घाट पर उनसे मिलने का अवसर प्रदान किया गया था।

'वास्तव में, यह आपका ही नगर है, प्रभु,' झुककर नमन करते हुए अथिथिग्व ने कहा।

शिव की त्योरियां चढ़ गईं।

'भगवान रुद्र ने अपना अधिकतम समय काशी में ही बिताया था, जिसे वे अपनाया हुआ आवास कहते थे,' अथिथिग्व ने व्याख्या की, 'पश्चिम में अपनी जन्मभूमि की ओर उनके प्रस्थान करने के बाद, काशी के राजपरिवार ने अस्सी घाट पर एक पूजा का आयोजन किया था, जिसमें उन्होंने व्यावहारिक तौर पर भगवान रुद्र एवं उनके उत्तराधिकारियों को हमेशा के लिए हमारा वास्तविक राजा मान लिया था। वैसे तो मेरा परिवार उस राजपरिवार से भिन्न है जिन्होंने पूजा की थी, लेकिन उस प्रतिज्ञा का सम्मान हम आज तक कर रहे हैं और

आजीवन करते रहेंगे। हम तो भगवान रुद्र के उत्तराधिकारियों के जन्माधिकार के मात्र रखवाले हैं।'

शिव धीरे-धीरे असहज अनुभव कर रहा था।

'अब जब भगवान रुद्र के उत्तराधिकारी यहां हैं, तो यह उचित समय है जब उन्हें सिंहासन ग्रहण कर लेना चाहिए,' अथिथिग्व ने कहना जारी रखा, 'आपकी सेवा करने में मुझे गर्व होगा, प्रभु।'

आश्चर्य एवं क्रोध के मिलेजुले प्रभाव से शिव का लगभग दम घुटने लगा था।

ये सभी लोग पागल हैं! नेकनीयत हैं, लेकिन पागल!

'एक तो राजा बनने की मेरी कोई मंशा नहीं है, महाराज,' शिव मुस्कुराया, 'दूसरी बात यह है कि मैं निश्चित रूप से प्रभु रुद्र का उत्तराधिकारी कहलाने की योग्यता नहीं रखता हूं। फिर आप एक अच्छे राजा हैं और मैं निवेदन करता हूं कि आप प्रजा की सेवा करते रहें।'

'लेकिन, प्रभु...'

'वैसे मैं कुछ निवेदन करने का इच्छुक अवश्य हूं, महाराज,' शिव ने बीच में ही कहा। वह अपने राजसी पूर्ववृत्त पर चर्चा को जारी रखना नहीं चाहता था।

'आपके लिए कुछ भी स्वीकार है, प्रभु।'

'पहली बात यह है कि मेरी पत्नी और मैं यह चाहते हैं कि हमारे बच्चे का जन्म यहीं हो। हम इस दौरान आप पर अपने अतिथि सत्कार का भार डाल रहे हैं।'

'प्रभु, मेरा पूरा का पूरा राजमहल आपका है। देवी सती और आप सदैव के लिए यहां निवास कर सकते हैं।'

शिव धीमे से मुस्कुराया, 'नहीं, मैं नहीं समझता कि हम इतनी लंबी अवधि के लिए यहां रुकेंगे। साथ ही मैं आपके नगर में ब्रंगा के नेता से मिलना चाहता हूं।'

'उसका नाम दिवोदास है, प्रभु। मैं निश्चित रूप से उसे आपकी सेवा में उपस्थित करूंगा। उस अभागे कबीले के किसी अन्य सदस्य से बात करना बेकार ही है। दिवोदास एकमात्र विवेकी या सक्षम है जो दूसरों से बातें कर सकता है। मेरा मानना है कि वह एक व्यापारिक यात्रा पर गया है और आज रात तक उसे वापस आ जाना चाहिए। मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि उसे आपके समक्ष शीघ्रताशीघ्र उपस्थित किया जाए।'

'बहुत बढ़िया।'

'ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वहां पर एकत्रित भीड़ नियंत्रण से बाहर जा रही है, द्रपकु,' पर्वतेश्वर ने इशारे से बताया।

पर्वतेश्वर पवित्र मार्ग पर बनी एक ऊंची वेदिका पर भगीरथ, द्रपकु और काशी पुलिस प्रमुख त्रात्या के साथ था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि नीलकंठ की एक झलक पाने के लिए काशी नगर के दो लाख नागरिक वहां टूट पड़े थे। और खेद की बात यह थी कि काशी पुलिस उस भीड़ का प्रबंधन करने में अप्रशिक्षित प्रतीत हो रही थी। वे लोग इतने विनम्र थे कि लगता था कि गलती पुलिसवालों की हो। सामान्यतया उनका असर काशी के सभ्य नागरिकों पर ही काम करता था। लेकिन ऐसे अवसर पर जहां प्रत्येक व्यक्ति आगे आने और प्रभु को स्पर्श करने की होड़ में था, ऐसे में वहां सूर्यवंशियों जैसे दृढ़ हाथों की आवश्यकता थी।

'मैं इसे संभाल लूंगा, सेनापति,' द्रपकु ने नीचे प्रतीक्षा कर रहे नंदी को आदेश देने के लिए वेदिका से छलांग लगाते हुए कहा।

'लेकिन वह बल-प्रयोग बिल्कुल न करे,' त्रात्या ने कहा।

'वह जैसी परिस्थिति होगी उसी के अनुसार व्यवहार करेगा,त्रात्या,' पर्वतेश्वर ने चिढ़कर कहा।

द्रपकु का आदेश सुनने के बाद नंदी एक पलटन के साथ उस दिशा में बढ़ गया। द्रपकु अपने कटे हुए हाथ के कुंदे का प्रयोग करते हुए

आश्चर्यजनक फूर्ति के साथ वेदिका पर पुनः चढ़ गया।

'कार्य हो गया, सेनापति,' द्रपकु ने कहा, 'भीड़ को पीछे ढकेल दिया जाएगा।'

पर्वतेश्वर ने सहमति में सिर हिलाया और शिव और उसके दल के सदस्यों को देखने के लिए मुड़ गया। भीड़ उनका नाम पुकार रही थी और शिव भीड़ में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति का अभिवादन स्वीकार कर रहे थे, सती का हाथ पकड़े चौड़ी मुस्कान बिखेरते शिव धीरे-धीरे टहलते हुए चले आ रहे थे। सती की सहचरी कृत्तिका सती से कुछ कदम पीछे थी, जबकि अथिथिग्व एक सच्चे भक्त की निष्ठा से अपने परिवार एवं मंत्रियों संग पीछे-पीछे चल रहे थे।

'नायक त्रात्या,' काशी का एक हड़बड़ाया हुआ पुलिसवाला वेदिका के निकट चीखते हुए कूदा।

त्रात्या ने उसकी ओर नीचे देखा, 'कहो, कावस?'

'ब्रंगाओं की बस्ती में दंगे आरंभ होने वाले हैं!'

'मुझे बताओ कि वास्तव में हुआ क्या है?'

'उन्होंने एक बार फिर से एक मोर की हत्या कर दी। लेकिन इस बार यह काम करते हुए उनके कुछ पड़ोसियों ने उन्हें रंगे-हाथों पकड़ लिया। इस पाप का वे लोग प्रतिशोध लेने की प्रतिज्ञा ले रहे हैं।'

'मुझे इस पर कोई आश्चर्य नहीं है! मैं नहीं जानता कि हमारे महाराज क्यों उन असभ्य मंदबुद्धियों को काशी में रहने देने का हठ कर रहे हैं। आज नहीं तो कल नागरिकों का धैर्य चुकना ही था और उनके हाथों किसी ना किसी घटना का होना तय ही था।'

'क्या हुआ?' पर्वतेश्वर ने पूछा।

'ये ब्रंगावाले हैं। उन्हें पता है कि काशी में मोरों को मारना प्रतिबंधित है क्योंकि वे भगवान रुद्र के सबसे पसंदीदा पक्षियों में सेएक हैं। एक व्यापक मान्यता है कि वे अपनी बस्ती में किसी विचित्र अनुष्ठान में मोर की बलि देते हैं। अब जब वे रंगे-हाथों पकड़े गए हैं तो उन्हें सबक सिखाया जाएगा।'

'आप अपने कुछ आदमियों को दंगे को समाप्त करने के लिए क्यों नहीं भेज देते?'

त्रात्या ने पर्वतेश्वर को विचित्र ढंग से देखा, 'कुछ बातें आप नहीं समझेंगे। हम काशी में सभी समुदायों को स्वीकार करते हैं। इस महान नगर को अपना घर मानकर सभी शांतिपूर्वक रहते हैं। लेकिन ब्रंगावाले जानबूझकर हम सबको क्रोधित करना चाहते हैं। यह दंगा वास्तव में अच्छे अंत के लिए एक बुरा मार्ग है। बस इसे हो जाने दें।'

पर्वतेश्वर उस पुलिस अधिकारी की बात सुनकर स्तब्ध था, जो कुछ समय पूर्व ही अहिंसा के गुणों का प्रचार कर रहा था, 'यदि उन्होंने कोई अपराध किया है तो उन्हें आपके न्यायालय द्वारा दंडित किया जाना चाहिए। आपके नागरिकों को दंगा करने और उन निर्दोषों को चोट पहुंचाने का अधिकार नहीं है जिनका संभवतया उस पक्षी के प्राण लेने से कोई संबंध भी नहीं हो।'

'उनमें कुछ निर्दोष भी हों तो इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। यदि इस नगर को ब्रंगावालों एवं उनके अमंगलकारी तरीकों से मुक्ति मिल जाती है तो इतनी छोटी आहूति देने में कोई समस्या नहीं। इस विषय में मैं कुछ नहीं कर सकता और ना ही कुछ करूंगा।'

'यदि आप कुछ नहीं करेंगे, तो मैं करूंगा,' पर्वतेश्वर ने चेतावनी दी।

त्रात्या ने रोष से पर्वतेश्वर की ओर देखा और फिर नीलकंठ के अनुगामियों को देखने के लिए मुड़ गया। पर्वतेश्वर ने त्रात्या पर कठोर दृष्टि डाली। उसे निर्णय लेने में कुछ ही पल लगे।

'द्रपकु, आपको मेरा आदेश है,' पर्वतेश्वर ने कहा, 'सुनिश्चित करें कि जैसे ही प्रभु विश्वनाथ मंदिर पहुंचें, भीड़ छंट जाए। राजकुमार भगीरथ क्या आप मेरे साथ आएंगे? मुझे सहायता की आवश्यकता होगी क्योंकि मैं चंद्रवंशी रीति-रिवाजों को नहीं जानता।'

'यह मेरे लिए गर्व की बात होगी, सेनापति,' भगीरथ ने कहा।

'यह आपका कार्य नहीं है,' पहली बार त्रात्या ने अपनी आवाज ऊंची करते हुए कहा, 'आपको हमारे आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है।'

'उनके पास सारे अधिकार हैं,' भगीरथ ने बीच में टोककर ऐसे दर्प से कहा जो किसी राजवंशी के पास ही होता है, 'क्या आप प्रभु राम के शब्दों को भूल गए हैं? जब कोई पाप किया जा रहा हो तो उसे देखना और कुछ ना करना उतना ही बुरा है जितना कि वह पाप करना। सेनापति आपका ही कार्य करने जा रहे हैं, आपको तो उसके लिए कृतज्ञता ज्ञापित करनी चाहिए।'

पर्वतेश्वर एवं भगीरथ, कावस के साथ शीघ्रता से उस वेदिका से नीचे उतरे। उन्होंने वीरभद्र को आदेश दिया कि वह सौ सैनिकों के साथ उनके पीछे आएं और वे ब्रंगाओं की बस्ती की ओर तुरंत कूच कर गए।

— ⅄⦶Ʊ↟⊛ —

'यह तो कठिन है और जटिल भी,' भगीरथ ने कहा।

वे ब्रंगाओं की बस्ती के सामने पहुंच चुके थे। शरणार्थियों द्वारा पूर्व दिशा से लाए गए प्रसिद्ध स्वर्ण कोष ने इस विशेष क्षेत्र के भीड़ भरे भाग को बड़े-बड़े निवासस्थलों में परिवर्तित कर दिया था। ब्रंगा लोग अत्यधिक अलंकृत और कलात्मक बूटों से उत्कीर्ण किए हुए बहु-तलीय आवासों में रहते थे। पूरे काशी में विश्वनाथ मंदिर एवं राजमहल के अलावा कोई अन्य आवास उनसे बड़े नहीं थे। आवास के चारों ओर बाग-बगीचे थे जो रुचिपूर्ण भूदृश्य वाले एवं रूढ़िवादी ढंग से एक समान थे। ये विचित्र रूप से लगभग मगध के नरसिंह मंदिर जैसे थे। प्रवेशद्वार पर एक पट्ट लगा हुआ था जो वहां के निवासियों की निष्ठा की गर्व से घोषणा करता था: 'ब्रंगा की सर्वाधिक दैवीय भूमि पर भगवान रुद्र कृपा करें।'

उस बाड़ लगे बगान की सीमा के तत्काल बाद ही नगर की भीड़-भाड़ और अस्त-व्यस्तता का प्रारंभ हो गया। वे तंग रास्ते उस नगर परिसर की ओर चले गए थे, जहां अयोध्या, मगध, प्रयाग और चंद्रवंशी राज्य संघ के अन्य हिस्सों से आए शरणार्थियों की बहुलता थी। बहुत ही कम लोग इस बात को जानते थे कि अपने देश की अत्यधिक अनुशासित जीवनशैली एवं अपने बच्चों को उस मयका में दिए जाने के भय से मेलूहावासी भी काशी में शरणार्थी बने हुए थे। अपने बच्चों को अपनी आंखों के सामने बड़े होते देखने के आनंद के लिए वे चंद्रवंशी शैली की अव्यवस्था को झेल रहे थे।

'मैं निश्चिन्त तौर पर कह सकता हूं कि यह उनकी प्रथाओं के प्रति क्रोध मात्र नहीं है,' काशी के जनसाधारण एवं ब्रंगावालों की जीवनशैली के मूलभूत अंतर को समझते हुए वीरभद्र ने कहा, 'उनकी समृद्धि के प्रति ईर्ष्या ने भी ब्रंगावालों के विरुद्ध इस घृणा को उत्पन्न किया होगा।'

पर्वतेश्वर परिस्थिति का आकलन कर रहा था। उसकी ओर मुड़ने से पहले भगीरथ ने सहमति में सिर हिलाया। 'आप क्या सोचते हैं, सेनापति?'

सुरक्षात्मक दृष्टि से वह स्थल आपदाकारी था। ब्रंगा लोग एक ओर कुआं तो दूसरी ओर खाई के समान घिरे हुए थे। चारों ओर लोग उनके प्रति शत्रुतापूर्ण भावनाओं से ओतप्रोत थे। भीड़-भाड़ भरी गलियों से होते हुए सघन जनसंख्या वाला यह क्षेत्र ब्रंगावालों की बस्ती की ओर चला जाता था। वहां से निकल भागना असंभव ही था। उन संकरी गलियों में वे आसानी से घेरे जा सकते थे। वे बगान ब्रंगावालों को कुछ सुरक्षा अवश्य प्रदान करते थे। क्योंकि हमलावर भीड़ को ब्रंगावालों के आवासों तक पहुंचने से पहले उस खुले स्थल से अवश्य गुजरना पड़ता जिसमें कम से कम एक मिनट का समय लग ही जाता था।

संभवतया काशी में अपनी स्थिति का आकलन करते हुए भय के कारण ब्रंगा लोगों ने अपने-अपने घरों की छतों पर पत्थरों के ढेर रखे हुए थे। उस ऊंचाई से फेंके जाने पर वे पत्थर प्रक्षेपास्त्रों की तरह कार्य करने और गंभीर रूप से घायल करने में सक्षम थे। यहां तक कि यदि वे शरीर के संवेदनशील हिस्सों पर लगें तो प्राणघातक भी सिद्ध हो सकते थे।

इस बीच काशी की भीड़ ने उनके घिरे आहाते में कुत्ते छोड़ दिए, जिन्हें ब्रंगा लोग गंदा मान घृणा करते थे। उन्हें पता था कि उन पशुओं को भगाने के लिए ब्रंगावाले पत्थरों से वार करेंगे। पर्वतेश्वर ने अनुभव कर लिया था कि इस थकाऊ लड़ाई में मात्र कुछ ही समय की बात थी, ब्रंगावालों के पत्थरों के ढेर समाप्त होने ही वाले थे और पत्थर समाप्त होते ही उन्हें सीधी लड़ाई करनी ही पड़ेगी। उनके शत्रु रसोईघर में काम आने वाले चाकू और कपड़े धोने वाले डंडों से लैस थे और साथ ही उनकी संख्या ब्रंगावालों की तुलना में एक पर सौ के बराबर थी। ऐसे में उनके बचने की संभावना बहुत ही कम थी।

'ये सब ब्रंगावालों के लिए कुछ अच्छा नहीं लग रहा,' पर्वतेश्वर ने कहा, 'क्या काशी की भीड़ को मना सकते हैं?'

'मैंने पहले ही प्रयास कर लिया है, सेनापति,' भगीरथ ने कहा,'वे नहीं सुनेंगे। उनका मानना है कि ब्रंगावाले अपने स्वर्ण के दम पर न्यायालय को खरीद लेंगे।'

'संभवतया यह सच है,' काशी का सेनापति कावस चुपके से अपना झुकाव प्रकट करते हुए बुदबुदाया।

भगीरथ कावस की ओर मुड़ा तो वह तत्काल ही डरकर घबरा गया क्योंकि काशी में भगीरथ का बहुत यश था।

'आप भीड़ से सहमत नहीं हैं, है ना?' भगीरथ ने पूछा।

कावस ने क्रुद्ध दृष्टि डाली, 'मैं ब्रंगा के लोगों से घृणा करता हूं। वे नीच लोग हैं। वो अपने स्वर्ण फेंक सभी प्रकार के कानूनों का उल्लंघन करते रहते हैं।' इतना कहने के बाद कावस शांत हो गया। उसने दृष्टि नीचे की ओर फुसफुसाया, 'लेकिन क्या उनके साथ इस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए? क्या प्रभु रुद्र ने ऐसा किया होगा? नहीं, राजकुमार, नहीं।'

'तो फिर हमें इसका समाधान बताएं।'

उन्हें घेरे हुए काशी के क्रुद्ध नागरिकों की ओर संकेत कर कावस ने कहा, 'यह झुंड तब तक पीछे नहीं हटेगा जब तक ब्रंगावाले किसी ना किसी प्रकार से दंडित नहीं किए जाएंगे, राजकुमार भगीरथ ब्रंगावालों को जीवित एवं सुरक्षित रखते हुए हम यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं? मैं नहीं जानता।'

'और यदि सूर्यवंशी उन पर आक्रमण कर दें तो?' पर्वतेश्वर ने पूछा। इस प्रभावी लेकिन नैतिक रूप से विवादित समाधान पर वह स्वयं स्तब्ध था।

भगीरथ तत्काल मुस्कुराया क्योंकि वह समझ चुका था कि पर्वतेश्वर का आशय क्या था, 'हम लोग काशी की लाठियों का प्रयोग करेंगे ना कि अपने हथियारों का। हम लोग उन्हें केवल घायल करेंगे, जान से नहीं मारेंगे।'

'बिल्कुल सही,' पर्वतेश्वर ने कहा, 'भीड़ को न्याय मिल जाएगा और वे पीछे हट जाएंगे। ब्रंगावाले घायल होंगे, लेकिन जीवित रहेंगे। मैं जानता हूं यह पूर्णतया उचित नहीं है। लेकिन कभी-कभी गंभीर गलती को रोकने के लिए एक छोटी गलती करना ही एकमात्र उपाय रह जाता है। मुझे इसका पूरा उत्तरदायित्व लेना होगा और परमात्मा को उत्तर देना होगा।'

भगीरथ हल्के से मुस्कुराया। पर्वतेश्वर के चित्त में कुछ चंद्रवंशी शैलियां प्रवेश करने लगी थीं। उसकी दृष्टि से छुपा नहीं था कि उसकी बड़ी बहन मेलूहा के सेनापति का अत्यधिक ध्यान रख रही थी।

पर्वतेश्वर कावस की ओर मुड़ा। 'मुझे सौ लाठियों की आवश्यकता होगी।'

कावस के साथ भगीरथ पवित्र मार्ग की ओर दौड़ पड़ा। वे कुछ ही समय में वापस आ गए। इस बीच पर्वतेश्वर ने काशी की भीड़ से बात कर ली थी। उसने उन्हें यह वचन दिया कि यदि वे अपने हथियार डाल देंगे तो उन्हें न्याय मिलेगा। वो सूर्यवंशियों के इस न्याय की आशा में प्रतीक्षा करने लगे।

पर्वतेश्वर ने अपने सामने सूर्यवंशियों को एकत्र किया,'मेलूहावासियों, अपनी तलवार का प्रयोग मत करना। इन लाठियों का प्रयोग करो। उनके सिर छोड़ शरीर के अन्य अंगों पर चोट करो। अपनी ढालों को सख्ती से कछुए की बनावट में रखो। उस ऊंचाई से पत्थर प्राणघातक सिद्ध हो सकते हैं।'

सूर्यवंशियों ने अपने सेनापति को एकटक देखा।

'यही एक तरीका है जिससे ब्रंगावालों की जान बचाई जा सकती है,' पर्वतेश्वर ने कहना जारी रखा।

पर्वतेश्वर, भगीरथ और वीरभद्र के नेतृत्व में मेलूहावासी शीघ्रता से युद्ध की बनावट में आ गए। कावस को, जो इस प्रकार के व्यूह कौशल से अनभिज्ञ था, मध्य में रखा गया जहां वह सबसे सुरक्षित था। जैसे ही सैनिकों ने ब्रंगा के बगान की ओर कूच किया तो पत्थरों की ओला-वृष्टि होने लगी। अपनी ढालों से वे पूर्णतया सुरक्षित रहे और धीमे लेकिन निश्चित गति से वे उस भवन के प्रवेशद्वार की ओर बढ़ते रहे।

सहज रूप से, प्रवेशद्वार बगान के मार्ग से भी अधिक संकरा था। कछुए की बनावट को यहां पर तोड़ना पड़ा। पर्वतेश्वर ने सैनिकों को दोहरी पंक्ति में भवन में प्रवेश करने का आदेश दिया। ढालों को बाएं एवं दाएं रखा गया ताकि हमले से बचाव हो सके। उसने सोचा था कि भवन के अंदर पत्थरों का प्रयोग नहीं हो सकता। यहीं पर अनुमान लगाने में भयंकर गलती हुई।

'कितनी सुंदर मूर्ति है,' प्रभु रुद्र की विस्मयकारी लेकिन प्रेरणादायी मूर्ति को देख सती हल्के से कांप उठी।

शिव एवं सती उस विशालकाय विश्वनाथ मंदिर में अभी-अभी प्रविष्ट हुए थे।

ब्रह्म घाट से कुछ दूरी पर बना हुआ वह मंदिर भव्य था। वह ना केवल सौ मीटर की विशालकाय ऊंचाई वाला था बल्कि उस भवन की मग्नता इतनी जबर्दस्त थी कि अचंभित कर देती थी। प्रभु रुद्र की धरती वाली एकसमान शैली में एक खुला उद्यान बना हुआ था जिससे होकर पवित्र मार्ग से मंदिर को प्रवेश मिल रहा था। रक्त के रंग के लाल बलुआ पत्थर से निर्मित वह संरचना आश्चर्यजनक रूप से सादी थी। उद्यान के एक सबसे दूर छोर से लगभग बीस मीटर ऊंची विशालकाय वेदिका गगन चूम रही थी। उस पर अन्य मंदिरों से भिन्न कोई नक्काशी या अलंकरण नहीं था, जैसाकि शिव ने अब तक के मंदिरों में देखा था। वेदिका पर ऊपर जाने के लिए सौ सीढ़ियां बनाई गईं थीं। जो भक्तगण वेदिका के ऊपर पहुंचेंगे वे मंदिर के शिखर को देखकर हैरान रह जाएंगे, जो पुनः लाल बलुआ पत्थर का बना हुआ था और असंभव्य अस्सी मीटर ऊंचा था। वेदिका के समान ही मुख्य मंदिर में भी कोई नक्काशी नहीं थी। उस शिखर को स्थिर रखने के लिए सौ स्तंभ बनाए गए थे। अन्य मंदिरों से भिन्न पवित्र पुण्यागार केंद्र में था, ना कि दूर एक छोर पर। उस पवित्र स्थान के अंदर ही एक मूर्ति थी जो पूरे भारत के भक्तगणों को आकर्षित करती थी, और वह मूर्ति थी दुर्जेय प्रभु रुद्र की।

पौराणिक गाथाओं में ऐसा वर्णन मिलता था कि प्रभु रुद्र अधिकतर अकेले ही कार्य किया करते थे। उनके कोई ज्ञात मित्र नहीं थे जिनकी कथाएं मंदिर की दीवारों पर भित्तिचित्रों के रूप में अमर की जातीं। उनका कोई कृपापात्र भक्त भी नहीं था जिसकी मूर्ति उनके चरणों पर बनाई जाती। प्रभु रुद्र की एकमात्र संगिनी, जिसकी वे सुनते थे, वह थी देवी मोहिनी। इसलिए कृत्तिका को यह कुछ जंचा नहीं कि उस प्रसिद्ध सौंदर्य को मूर्ति स्वरूप गढ़ा नहीं गया था।

'देवी मोहिनी की मूर्ति यहां कैसे नहीं हैं?' कृत्तिका अथिथिग्व के एक सहायक से फुसफुसाकर बोली।

'आप प्रभु की कहानी अच्छी तरह से जानती हैं,' उस सहायक ने उत्तर दिया, 'आएं।'

वह कृत्तिका को उस पवित्र स्थल के दूसरी ओर ले गई। कृत्तिका को तब आश्चर्य हुआ जब उसने देखा कि उस पवित्र स्थल का एक और प्रवेशद्वार था जो पीछे की ओर से बना हुआ था। कोई भक्त उस प्रवेशद्वार से अंदर आता तो वह देवी मोहिनी की मूर्ति देख सकता था। ऐसा कहा जाता था कि देवी मोहिनी समस्त इतिहास की सबसे सुंदर स्त्री थी, जो वहां एक सिंहासन पर विराजमान थीं। उनकी सुंदर आंखें मोहक रूप से अधखुली ध्यान लगाए हुए सी थीं। लेकिन कृत्तिका ने देख लिया था कि उनके हाथ में गुप्त रूप से एक चाकू इस तरह छुपा हुआ था, जो पहली दृष्टि में किसी को दिखाई नहीं देता था। मोहिनी हमेशा ही उमंगी और घातक थीं। कृत्तिका मुस्कुराई। यह उपयुक्त प्रतीत हो रहा था कि देवी मोहिनी एवं प्रभु रुद्र की मूर्तियां पीठ से पीठ सटाए बनी हुई थीं। उनके संबंध जटिलता के परिचायक थेः युगल होकर भी बहुत अधिक भिन्न दृष्टिकोण रखने वाले।

कृत्तिका ने देवी मोहिनी को साष्टांग प्रणाम किया। जबकि कुछ लोगों ने उन्हें *विष्णु* के रूप में सम्मानित करने से इंकार कर दिया, लेकिन कृत्तिका उन अधिसंख्यों में से थी जो मानते थे कि देवी मोहिनी *अच्छाई की प्रचारक* उपाधि की सुपात्र हैं।

पवित्र स्थल के दूसरी ओर शिव प्रभु रुद्र की प्रतिमा को टकटकी लगाए देख रहा था। प्रभु प्रभावशाली और असंभव्य रूप से सुडौल मांसपेशियों वाले थे। उनके रोएंदार सीने पर एक लॉकेट लटका हुआ था। निकट से देखने पर शिव ने पाया कि वह शेर का एक पंजा था। सिंहासन के बगल में उनकी ढाल रखी हुई थी। उनकी तलवार भी सिंहासन पर ही एक ओर रखी हुई थी, जबकि प्रभु का हाथ उसकी मूंठ के पास था। स्पष्टतया शिल्पकार इस बात का महत्व दर्शाना चाहता था कि वैसे तो इतिहास के सबसे भयानक योद्धा ने हिंसा त्याग दी थी, लेकिन उनके बनाए नियमों को तोड़ने का साहस करने वालों को पाठ पढ़ाने के लिए उनकी तलवार उनके हाथ के निकट ही थी। शिल्पकार ने विश्वसनीय ढंग से प्रभु रुद्र के शरीर पर उन्हें सुशोभित करने वाले युद्ध के गर्वीले निशानों को उकेरा था। उनमें से एक निशान उनके मुख के आर-पार उनकी दाईं कनपटी से लेकर उनके बाएं जबड़े तक चला गया था। प्रभु की लंबी दाढ़ी और मूंछें थीं जिनकी बहुत सी लटें बड़ी मेहनत से घुंघराली बनाई गई थीं और उनमें मोती जड़े गए थे।

'भारत देश में अपनी दाढ़ी में मोती पहने हुए मैंने किसी को नहीं देखा है,' शिव ने अथिथिग्व से कहा।

'प्रभु के जन्मस्थान परिहा के लोगों में यह प्रथा रही है, प्रभु।'

'परिहा?'

'हां, प्रभु। *परियों की भूमि।* भारत की पश्चिमी सीमा से बहुत दूर और हमारे महान हिमालय से बहुत दूर यह भूमि स्थित है।'

शिव प्रभु की प्रतिमा की ओर पुनः मुड़ गया। उस मंदिर में जो प्रबल भाव प्रदर्शित हो रहे थे वह भय के थे। किसी ईश्वर के लिए ऐसा भाव आना क्या गलत था? क्या सदैव प्रेम का भाव नहीं होना चाहिए? सम्मान? या विस्मय? भय क्यों?'

क्योंकि कभी-कभी भय के सिवाय मन को कुछ भी स्पष्ट या केंद्रित नहीं करता। प्रभु रुद्र को अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भय का वातावरण बनाना था।

शिव ने अपने मन में स्वर सुना। ऐसा प्रतीत हुआ कि वह स्वर दूर से आ रहा है, लेकिन निस्संदेह वह स्पष्ट था। वह जानता था कि यह वासुदेव पंडित का स्वर था।

आप कहां हैं, पंडितजी?

दृष्टि से ओझल हूं, प्रभु नीलकंठ। यहां बहुत सारे लोग एकत्र हैं।

मुझे आपसे बात करनी है।

किसी शुभ काल में करेंगे, मित्र। किंतु यदि आप मुझे सुन सकते हैं तो अपने सर्वाधिक सिद्धांतवादी अनुयायी की हताश पुकार को आप क्यों नहीं सुन सकते?

सर्वाधिक सिद्धांतवादी अनुयायी?

स्वर मूक हो चुका था। शिव पीछे मुड़ा, चिंतित।

अध्याय 6

पहाड़ भी टूट सकता है

'आड़ लो!' पर्वतेश्वर चिल्लाया।

भगीरथ और पर्वतेश्वर जब ब्रंगों के भवन में घुसे तो उनका स्वागत पत्थरों की बौछार से हुआ।

एक रौशनदान सहित उस भवन के प्रवेशद्वार पर एक बहुत बड़ा प्रांगण था। बनावट बहुत ही उत्कृष्ट थी जिसमें प्राकृतिक रूप से सूर्य की रौशनी एवं ताजी हवा का बाधारहित आवागमन होता रहता था। उस प्रांगण को वर्षा से बचाने के लिए बड़ी चतुराई से सिकुड़ जाने वाली एक छत का निर्माण किया गया था। यद्यपि वर्तमान में वह प्रांगण सूर्यवंशियों के लिए मृत्यु की घाटी के समान था। वह चारों ओर से छज्जों से घिरा हुआ था जहां से ब्रंगावाले उन पर पत्थरों की वर्षा कर रहे थे।

एक तीखे प्रक्षेपास्त्र ने पर्वतेश्वर के बाएं कंधे को आघात पहुंचाया। उसे अनुभव हुआ जैसे उसके गर्दन की हड्डी चटक गई हो। क्रोध से आग-बबूला हो उसने अपना डंडा ऊंचा उठाया और गरज उठा, 'हर हर महादेव!'

'हर हर महादेव!' सूर्यवंशियों ने चिल्लाकर कहा।

वे ईश्वर थे! मात्र पत्थर उन्हें रोक नहीं सकते। जो भी रास्ते में आए, चाहे वे औरतें ही क्यों ना हों, उन सबको डंडों से पीटते हुए सूर्यवंशी सीढ़ियों पर बढ़ गए। किंतु उस गुस्से में भी वे पर्वतेश्वर के निर्देशों को भूले नहीं थेः सिर पर वार नहीं करना है। उन्होंने ब्रंगावालों को घायल किया, लेकिन किसी के प्राण नहीं लिए।

सूर्यवंशियों के अनवरत एवं अनुशासित हमले के सामने ब्रंगावाले टिक ना सके और पीछे हटने लगे। बस कुछ समय की बात थी कि सूर्यवंशी भवन के ऊपरी हिस्से तक पहुंच चुके थे। पर्वतेश्वर को यह देखकर विचित्र-सा लगा कि वहां कोई नेता नहीं था। ब्रंगावाले किसी अनियमित भीड़ की तरह थे, वो भी त्रासद रूप से पूर्णरूपेण अक्षमों की तरह। जब तक सूर्यवंशी सबसे ऊपरी तल पर पहुंचे, वास्तव में, सभी ब्रंगावाले भूमि पर पीड़ा से छटपटाते हुए पड़े थे। घायल, किंतु जीवित।

और उसके बाद ही पर्वतेश्वर ने शोरगुल सुना। अनेकानेक ब्रंगावालों की पीड़ा से चीखने-चिल्लाने की आवाज। हो-हल्ले के बीच भी भय उत्पन्न कर देने वाले उस कोलाहल को स्पष्ट सुना जा सकता था। ऐसी आवाजें मानो सैकड़ों शिशु हताशा में चीख रहे थे जैसे उनका जीवन उसी पर निर्भर था।

पर्वतेश्वर ने अत्यधिक विकट प्रकार के बलिदान के अनुष्ठानों के बारे में अफवाहें सुनी हुई थीं, जो ब्रंगावाले किया करते थे। उसकी भयावहता की कल्पना करते हुए किसी आशंका से वह उस द्वार की ओर दौड़ पड़ा जहां से वे आवाजें आ रही थीं। सेनापति ने पैर के एक ही धक्के से उस द्वार को तोड़ कर खोल दिया। उसने वहां जो देखा, उससे वह घृणा से सिहर उठा।

सिर कटे मोर का धड़ कक्ष के एक कोने में टंगा हुआ था और उसका बहा हुआ रक्त एक बर्तन में एकत्र था। उसके चारों ओर कई औरतें जमा थीं। सभी पीड़ा से छटपटाते हुए शिशुओं को पकड़े हुए थीं। कुछ शिशुओं के मुख पर रक्त लगा हुआ था। भयाक्रांत पर्वतेश्वर ने डंडे को गिरा दिया और अपनी तलवार उठा ली। अचानक ही उसके बाईं ओर एक धुंधली सी झलक दिखी। इससे पहले कि वह कोई प्रतिक्रिया कर पाता, उसे अपने सिर पर तीव्र पीड़ा अनुभव हुई। दुनिया अंधकारमय हो गई।

भगीरथ अपनी तलवार निकालते हुए चीख पड़ा। सूर्यवंशियों ने भी ऐसा ही किया। जिस व्यक्ति ने पर्वतेश्वर को डंडे से मारा था उस पर वह अपनी तलवार से प्रहार करने ही वाला था कि एक स्त्री चीखीः 'कृपया ऐसा ना करें!'

भगीरथ रुक गया। स्पष्ट रूप से वह स्त्री गर्भवती थी।

वह ब्रंगा व्यक्ति अपने डंडे को फिर से उठाने ही वाला था कि वह स्त्री फिर से चीखी, 'नहीं!'

भगीरथ को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उस व्यक्ति ने उस स्त्री की बात मान ली।

अन्य ब्रंगा स्त्रियां पीछे की ओर उस घृणास्पद कर्मकांड को करने में अब भी जुटी हुई थीं।

'रुको!' भगीरथ ने चीखकर कहा।

वह गर्भवती स्त्री भगीरथ के पैरों में गिर गई, 'नहीं-नहीं, हे वीर राजकुमार। हमें ना रोकें। मैं विनती करती हूं।'

'हे पुजारिन, यह आप क्या कर रही हैं?' उस ब्रंगा व्यक्ति ने कहा, 'स्वयं को अपमानित ना करें!'

भगीरथ ने उधर पुनः देखा। और वास्तविक अनुमान तक पहुंचा। वह भौचक्का था। वही शिशु रो रहे थे जिनके मुख में रक्त नहीं था। उनके अंग पीड़ादायक संताप से अकड़े हुए थे मानो उनके नन्हे शरीर को डरावनी ताकतें निचोड़ रही थीं। जैसे ही मोर का रक्त उस शिशु के मुख में डाला गया वो शांत हो गया।

भगीरथ स्तब्ध होकर फुसफुसाया, 'यह क्या है...'

'कृपया,' ब्रंगा की पुजारिन ने प्रार्थना की, 'हमें अपने शिशुओं के लिए इसकी आवश्यकता है। इसके बिना वे मर जाएंगे। मैं भीख मांगती हूं। हमें उनकी जान बचानी चाहिए।'

भगीरथ मूक खड़ा था। आश्चर्यचकित।

'राजकुमार,' वीरभद्र ने कहा, 'सेनापति।'

भगीरथ तत्काल ही पर्वतेश्वर का परीक्षण करने के लिए झुक गया। उसके हृदय की धड़कन चल रही थी, लेकिन नाड़ी कमजोर थी।

'सूर्यवंशियों, हमें सेनापति को आयुरालय ले जाने की आवश्यकता है। जल्दी! हमारे पास समय बहुत कम है!'

अपने सेनापति को उठाकर सूर्यवंशी बाहर की ओर दौड़ पड़े। पर्वतेश्वर को चिकित्सालय ले जाया गया।

आयुर्वती शल्य चिकित्सालय से बाहर आई। चंद्रवंशी वैद्यों को पर्वतेश्वर के चोट से निबटने के बारे में कुछ ज्ञात नहीं था। आयुर्वती को अविलंब बुलावा भेजा गया था।

शिव और सती तत्काल उठ खड़े हुए। आयुर्वती के मुख पर उदासी देखकर सती का हृदय डूब गया।

'वे कितनी जल्दी ठीक हो जाएंगे, आयुर्वती?' शिव ने पूछा।

आयुर्वती ने एक गहरी श्वास ली, 'प्रभु, डंडे से सेनापति के सबसे अहितकारी स्थल कनपटी पर प्रहार किया गया है। वे गंभीररूप से आंतरिक रक्त स्राव से पीड़ित हैं। रक्त की हानि उनके लिए प्राणघातक सिद्ध हो सकती है।'

शिव ने अपना होंठ काट लिया।

'मैं...,' आयुर्वती ने कहा।

'यदि कोई उन्हें बचा सकता है तो वह आप हैं आयुर्वती,' शिव ने कहा।

'औषधीय नियम पुस्तिका में ऐसी गंभीर चोट के लिए कुछ उल्लिखित नहीं है, प्रभु। हम मस्तिष्क की शल्य चिकित्सा कर सकते हैं, लेकिन वह तब नहीं की जा सकती जब रोगी अचेत हो। उस शल्य चिकित्सा में अंग विशेष पर पीड़ाहारकों का प्रयोग किया जाता है ताकि चेतनायुक्त व्यक्ति हमें अपनी हलचल से मार्गदर्शन दे सके। जब पर्वतेश्वर अचेत हैं तब उनके मस्तिष्क की शल्य चिकित्सा करना उस चोट से अधिक घातक सिद्ध हो सकता है।'

सती की आंखों में आंसू छलछला रहे थे।

'हम कदापि ऐसा होने नहीं दे सकते, आयुर्वती,' शिव ने कहा,

'नहीं, बिल्कुल नहीं।'

'मैं जानती हूं, प्रभु।'

'तो फिर कुछ सोचें। आप आयुर्वती हैं, जगत की सर्वोत्तम वैद्य!'

'मेरे पास एकमात्र समाधान है, प्रभु,' आयुर्वती ने कहा,'लेकिन मैं नहीं जानती कि वह काम करेगा या नहीं।'

'सोमरस?' शिव ने पूछा।

'आप सहमत हैं?'

'हां, हमें प्रयत्न करना चाहिए।'

आयुर्वती तेजी से अपने सहायकों को ढूंढ़ने चली गई।

शिव चिंतित मुद्रा में सती की ओर मुड़ा। वह जानता था कि सती का अपने पित्रतुल्य से कितना लगाव था। उसकी यह विपत्ति अजन्मे शिशु को भी प्रभावित करेगी, 'वे अच्छे हो जाएंगे। मुझ पर विश्वास करो।'

— ⅄@Մ↑⊛ —

'यह सोमरस कहां है?' परेशान शिव ने पूछा।

'मुझे क्षमा करें, प्रभु,' अथिथिग्व ने कहा, 'लेकिन हमारे पास अधिक मात्रा में सोमरस नहीं है। हम आयुरालय में इसे नहीं रखते हैं।'

'आ रहा है, प्रभु,' आयुर्वती ने ढांढस बंधाया, 'मैंने मस्त्रक को अपने निवास से लाने के लिए भेज दिया है।'

शिव झुंझलाहट में फुफकारा और पर्वतेश्वर के कक्ष की ओर मुड़ गया, 'बस थोड़ी देर रुके रहिए, मित्र। हम आपको बचा लेंगे। बस रुके रहिए।'

हाथ में एक लकड़ी की बोतल पकड़े हांफता हुआ मस्त्रक पहुंचा, 'देवी!'

'तुमने सही तरीके से तैयार किया है?'

'हां, देवी।'

आयुर्वती पर्वतेश्वर के कक्ष की ओर तेजी से दौड़ पड़ी।

— ⅄@Մ↑⊛ —

पर्वतेश्वर कक्ष के सबसे दूर छोर पर लेटा हुआ था। आयुर्वती के सहायक मस्त्रक एवं ध्रुविनी शय्या की बगल में बैठे हुए उसके नाखूनों के भीतर नीम के पत्तों के रस की मालिश कर रहे थे। सेनापति की नाक से हवा भरने वाला एक उपकरण उसकी श्वास को सहज करने के लिए लगा हुआ था।

'रक्त का स्राव बंद हो चुका है, प्रभु,' आयुर्वती ने कहा, 'अब उनकी हालत बिगड़ नहीं रही।'

सेनापति की नाक से जुड़े उपकरण को देखकर शिव पूरी तरह हिल गया था। पर्वतेश्वर जैसे व्यक्ति को ऐसी असहाय स्थिति में देखना उसके लिए कठिन था, 'तो फिर उस उपकरण की क्या आवश्यकता है?'

'रक्त स्राव ने उनके मस्तिष्क के उन हिस्सों को हानि पहुंचाई है जो उनके श्वास को नियंत्रित करते हैं, प्रभु,' आयुर्वती ने शांत भाव से कहा। जब कभी भी चिकित्सकीय संकट आता था तो वह ऐसा ही व्यवहार करती थी, 'पर्वतेश्वर अपने आप श्वास नहीं ले सकते। यदि हम इस उपकरण को हटाते हैं तो वे मर जाएंगे।'

'तो फिर आप उनके मस्तिष्क का उपचार क्यों नहीं करती हैं?'

'मैंने आपको बताया था ना प्रभु, कि रोगी की अचेतावस्था में मस्तिष्क की शल्य चिकित्सा नहीं की जा सकती। यह बहुत ही जोखिम भरा

है। मेरे उपकरणों से उनके किसी महत्वपूर्ण कार्यप्रणाली को हानि पहुंच सकती है।'

'सोमरस...'

'उसने रक्त स्राव तो बंद कर दिया है, प्रभु। उनकी स्थिति अब स्थिर है। लेकिन ऐसा नहीं लगता है कि वह उनके मस्तिष्क का उपचार कर रहा है।'

'अब हम क्या करें?'

आयुर्वती चुप रही। उसके पास कोई जवाब नहीं था। कम से कम ऐसा जवाब जो व्यावहारिक हो।

'कोई ना कोई तरीका तो अवश्य होगा।'

'परोक्ष रूप से एक संभावना है, प्रभु,' आयुर्वती ने कहा, 'संजीवनी वृक्ष की छाल। यह वास्तव में सोमरस के सामग्रियों में सेएक है, एक घुली हुई सामग्री।'

'तो हम उसका प्रयोग क्यों नहीं करते हैं?'

'यह बहुत ही अस्थिर है। छाल बहुत तेजी से चूर्ण हो जाती है। उसे किसी जीवित संजीवनी वृक्ष से निकाला जाता है और मिनटभर में उसका उपयोग किया जाता है।'

'तो फिर एक वृक्ष...'

'वह यहां नहीं होता है, प्रभु। वास्तव में ये वृक्ष हिमालय की तलहटी में प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं। मेलूहा में हमने उसके उद्यान लगाए हैं। लेकिन उसे प्राप्त करने में महीनों लग जाएंगे और जब तक उसे यहां लाएंगे, वह चूर्ण हो चुका होगा।'

कोई ना कोई तरीका तो होना ही चहिए! पवित्र झील, कृपया हमें मार्ग दिखाएं!

'राजकुमार,' प्रधान अधिपति के पद पर प्रोन्नत कर दिए गए नंदी ने कहा।

'हां, प्रधान अधिपति,' भगीरथ ने कहा।

'क्या आप कृपा करके मेरे साथ आ सकते हैं?'

'कहां?'

'यह महत्वपूर्ण है, राजकुमार।'

भगीरथ को अजीब सा लगा कि जब पर्वतेश्वर आयुरालय में अपनी मृत्यु से लड़ रहे थे, तब नंदी उसे बाहर चलने को कह रहा था। लेकिन वह जानता था कि नंदी नीलकंठ का निकटस्थ मित्र था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह एक स्थिर दिमाग वाला व्यक्ति था। यदि वह उसे कहीं जाने के लिए कह रहा था तो अवश्य ही कोई महत्वपूर्ण बात होगी।

भगीरथ नंदी के पीछे चला गया।

भगीरथ अपने आश्चर्य को छुपा नहीं सका जब नंदी उसे ब्रंगावालों के भवन में ले गया।

'यह क्या हो रहा है, प्रधान अधिपति?'

'आप उससे अवश्य मिलिए,' नंदी ने कहा।

'किससे?'

'मुझसे,' एक लंबे, काले व्यक्ति ने उस भवन से बाहर आते हुए कहा। उस व्यक्ति ने अच्छे से तेल लगे अपने लंबे बालों का जूड़ा बांध रखा था। उसकी हिरण जैसी आंखें थीं। गालों की हड्डियां उभरी हुई थीं। चेहरा बेदाग था और अपने दुबले-पतले शरीर पर उसने कलफ लगी सफेद धोती लपेट रखी थी, साथ ही एक दूधिया रंग का अंगवस्त्रम भी कंधे पर डाला हुआ था। उसके चेहरे के भाव ऐसे थे, जैसे उसने अपने जीवन में बहुत दुख झेले थे।

'कौन हो तुम?'

'मैं दिवोदास हूं। यहां के ब्रंगावालों का प्रधान।'

भगीरथ ने दांत पीसते हुए कहा, 'सेनापति ने तुम सबकी जान बचाई और तुम्हारे आदमियों ने उन्हें मृत्यु के मुख में ला खड़ा किया!'

'मैं जानता हूं, राजकुमार। मेरे आदमियों ने सोचा कि सेनापति उन्हें अपने बच्चों की रक्षा करने से रोकना चाहते हैं। वह एक सहज भूल थी। हमारी हार्दिक क्षमा याचना स्वीकार करें।'

'तुम समझते हो कि तुम्हारे अपराध स्वीकार कर लेने और क्षमा मांग लेने से सेनापति के जीवन की रक्षा हो जाएगी?'

'नहीं, जीवन की रक्षा नहीं होगी। मैं यह जानता हूं। उन्होंने अटल विनाश से मेरे समूचे कबीले की रक्षा की है। उन्होंने मेरी पत्नी और मेरे अजन्मे शिशु की रक्षा की है। यह उनका एक बहुत बड़ा ऋण है हम पर, जिसे हमें चुकाना ही चाहिए।'

चुकाने की बात ने भगीरथ को और अधिक क्रोधित कर दिया,'तुम समझते हो कि तुम्हारा यह घृणास्पद स्वर्ण तुम्हें इस कुकर्म से बचा लेगा? तुम मेरे शब्दों को ध्यान से सुनो, यदि सेनापति को कुछ भी होता है, तो मैं स्वयं यहां आकर एक-एक करके तुम सबको मार डालूंगा। एक-एक को, समझे तुम!'

दिवोदास ने चुप्पी साध ली। उसका चेहरा भावशून्य था।

'राजकुमार,' नंदी ने कहा, 'पहले इसकी बात तो सुन लें।' भगीरथ झुंझलाते हुए भुनभुनाया।

'स्वर्ण का कोई अर्थ नहीं होता है, राजकुमार,' दिवोदास ने कहा, 'हमारे राज्य में हजारों किलो स्वर्ण रखा हुआ है। लेकिन इससे हम अपने दुख से मुक्ति नहीं खरीद सकते। जीवन से महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है। कुछ भी नहीं। आप इस बात का अर्थ तभी समझ पाते हैं जब प्रतिदिन मृत्यु का सामना करते हैं।'

भगीरथ ने कुछ नहीं कहा।

दिवोदास आगे बोला, 'सेनापति पर्वतेश्वर एक वीर एवं सम्माननीय व्यक्ति हैं। उनके लिए मैं अपनी वो प्रतिज्ञा तोड़ दूंगा जो मैंने अपने पूर्वजों के नाम पर ली थी। चाहे वह मेरी आत्मा को जीवन भर लानत देता रहे।'

भगीरथ ने त्योरी चढ़ाई।

'मैं किसी अब्रंगा को यह औषधि दूं यह अपेक्षित नहीं है। लेकिन मैं आपको यह सेनापति पर्वतेश्वर के लिए दूंगा। आप वैद्य से कहिए कि उनकी कनपटी और नासापुटों में इसे लगा दें। वे जीवित रहेंगे।'

भगीरथ ने एक छोटे से रेशम की थैली को संदेह की दृष्टि से देखा, 'यह क्या है?'

'आपको यह जानने की आवश्यकता नहीं है कि यह क्या है। राजकुमार, आप बस यह जान लें कि यह सेनापति पर्वतेश्वर के जीवन की रक्षा करेगा।'

— ⁂ —

'यह क्या है?'

आयुर्वती उस रेशम की थैली को देख रही थी जो भगीरथ ने उसे अभी-अभी दी थी।

'इससे कोई अंतर नहीं पड़ता,' भगीरथ ने कहा, 'उनकी कनपटी और नासापुटों पर लगा दें, बस। संभवतया इससे उनकी जान बच जाए।'

आयुर्वती ने अपनी त्योरी चढ़ाई।

'देवी आयुर्वती, प्रयास करने में हानि ही क्या है?' भगीरथ ने कहा।

आयुर्वती ने उस थैली को खोला तो उसमें एक रक्तिम भूरे रंग का लेप उसे दिखा। उसने इस प्रकार की वस्तु पहले कभी नहीं देखी थी। उसने उस लेप को सूंघा और तत्काल ही भगीरथ की ओर हैरानी से देखा, 'आपको यह कहां से मिली?'

'उससे कोई अंतर नहीं पड़ता। कृपया इसका उपयोग करें।'

आयुर्वती टकटकी लगाकर भगीरथ को देखती रहीं। उसके मन में सैकड़ों प्रश्न उभर रहे थे। लेकिन उसे सर्वप्रथम वही कार्य करना था जो स्पष्ट था। वह भलीभांति जानती थी कि वह लेप पर्वतेश्वर के जीवन की रक्षा करेगा।

— ⁂ —

पर्वतेश्वर ने धीमे से अपनी आंखें खोलीं। उसकी श्वास अस्थिर थी।

'मित्र,' शिव ने धीरे से कहा।

'प्रभु,' उठने का प्रयास करते हुए पर्वतेश्वर भी फुसफुसाया।

'नहीं! उठिए मत!' पर्वतेश्वर को हल्के से लिटाते हुए शिव ने कहा, 'आपको आराम की आवश्यकता है। आप सशक्त नेतृत्व करने वाले हैं, लेकिन उतने शक्तिशाली नहीं।'

पर्वतेश्वर फीकी सी मुस्कान मुस्कुराया।

शिव जानता था वो प्रश्न जो सेनापति के मन में सबसे पहले आएगा,'सभी ब्रंगावाले सुरक्षित हैं। आपने असाधारण कार्य किया है, मित्र।'

'मैं नहीं जानता, प्रभु। मुझे प्रायश्चित करना होगा। मैंने पाप किया है।'

'आपने जो किया उसने सैकड़ों जीवन की रक्षा की। प्रायश्चित की कोई आवश्यकता नहीं है।'

पर्वतेश्वर ने गहरी श्वास ली। उसका सिर अभी भी बहुत जोर से धमक रहा था, 'उनका कोई बहुत ही भयानक कर्मकांड चल रहा था...'

'उसके बारे में मत सोचें, मित्र। इस समय आपको आराम करने की आवश्यकता है। आयुर्वती ने कठोर आदेश दिया है कि कोई विघ्न ना डाला जाए। मैं आपको एकांत में अकेला छोड़ दूंगा। आप थोड़ा सोने का प्रयास करें।'

— ⁂ —

'आनंदमयी!'

भगीरथ ने अपनी बहन को रोकने का प्रयास किया। आनंदमयी तीर सी आयुरालय के उस कक्ष की ओर भागी जा रही थी जहां पर्वतेश्वर विश्राम कर रहा था। वह नगर से बाहर, निकट के आश्रम में संगीत कक्षा के लिए गई हुई थी इसलिए दिनभर बाहर थी। वह दौड़ते हुए अपने भाई की बांह में समा गई।

'क्या वे ठीक हैं?'

'हां,' भगीरथ ने कहा।

आनंदमयी ने क्रुद्ध दृष्टि से देखा, 'वह कौन हरामी है जिसने यह किया? मुझे आशा है कि तुमने उस कुत्ते को मार दिया होगा।'

'हम लोग पर्वतेश्वर को निर्णय लेने देंगे कि क्या करना चाहिए।'

'मैंने सुना कि उनको कनपटी पर चोट लगी है। और आंतरिक रक्त स्राव भी हो रहा था।'

'हां।'

'भगवान अग्नि देव दया करें। वह तो घातक हो सकता था।'

'हां। लेकिन ब्रंगावालों की किसी औषधि ने उनकी जान बचा ली।'

'ब्रंगा वालों की? पहले वे उन्हें जान से मारते हैं और फिर उनकी जान बचाने के लिए औषधि देते हैं। क्या उनके पागलपन की कोई सीमा नहीं है?'

'वह औषधि उनके प्रधान दिवोदास ने दी थी। उसका काशी में आगमन कुछ घंटे पूर्व ही हुआ और तभी उसने इस घटना के बारे में सुना। वह दयालु प्रतीत होता है।'

आनंदमयी ब्रंगा के प्रधान में रुचि नहीं रखती थी, 'क्या पर्वतेश्वर जाग गए हैं?'

'हां। प्रभु नीलकंठ उनसे मिल चुके हैं। अब वे पुनः सो गए हैं और खतरे से बाहर हैं। तुम चिंता मत करो।'

आनंदमयी ने सहमति में सिर हिलाया। उसकी आंखें नम थीं।

'और, वैसे,' भगीरथ ने कहा, 'मैं भी अपने घावों से स्वस्थ हो चुका हूं।'

आनंदमयी खिलखिलाकर हंस पड़ी, 'मुझे क्षमा करना, मेरे भाई! मुझे तुमसे पूछना चाहिए था।'

भगीरथ ने एक नाटकीय मुद्रा बनाई, 'कोई तुम्हारे भाई को चोट नहीं पहुंचा सकता। वह चंद्रवंशियों का सबसे प्रतापी योद्धा है!'

'किसी ने भी तुम्हें चोट नहीं पहुंचाई क्योंकि तुम अवश्य ही पर्वतेश्वर के पीछे छुपे होगे!'

भगीरथ ठहाका मारकर हंस पड़ा और अपनी बहन को हंसी-हंसी में बनावटी क्रोध के साथ पकड़ने दौड़ा। आनंदमयी ने अपने छोटे भाई को खींचकर अपनी बांहों में भर लिया।

'जाओ,' भगीरथ ने कहा, 'उनको देखकर तुम्हें संभवतया राहत मिलेगी।'

आनंदमयी ने सहमति में सिर हिलाया। जैसे ही वह पर्वतेश्वर के कक्ष में गई, आयुर्वती तभी एक दूसरे कक्ष से बाहर आई।

'राजकुमार।'

'हां, देवी आयुर्वती,' भगीरथ ने नमस्ते करते हुए पूछा।

'प्रभु नीलकंठ और मुझे आपसे कुछ बातें करनी हैं। क्या आप मेरे साथ आ सकते हैं?'

'निस्संदेह।'

'आपने वह औषधि कहां से प्राप्त की, भगीरथ?' शिव ने पूछा।

भगीरथ शिव के लहजे से आश्चर्यचकित था। प्रभु सदैव ही शांत प्रतीत होते थे। अभी वे स्नेहहीन लगे। क्रोधित।

'क्या बात है, प्रभु?' भगीरथ ने चिंतित होकर पूछा।

'मेरे प्रश्न का उत्तर दें, राजकुमार। आपने वह औषधि कहां से प्राप्त की?'

'ब्रंगावालों से।'

शिव ने कठोरता से भगीरथ की आंखों में देखा। भगीरथ अनुमान लगा सकता था कि नीलकंठ को उसके शब्दों पर विश्वास करने में समस्या आ रही थी।

'मैं झूठ नहीं कह रहा, प्रभु,' भगीरथ ने कहा, 'फिर मैं झूठ क्यों बोलूं? इस औषधि ने सेनापति के जीवन की रक्षा की है।'

शिव अभी भी उसे घूर रहा था।

'प्रभु, कृपा करके हमें बताएं कि समस्या क्या है?'

'समस्या यह है, राजकुमार,' आयुर्वती ने कहा, 'कि वह औषधि सप्त सिंधु में उपलब्ध नहीं है। मुझे पता चल चुका है कि वह संजीवनी वृक्ष की छाल से बनाई गई थी। लेकिन किसी भी संजीवनी औषधि के साथ समस्या यह है कि वह बहुत तेजी से खराब हो जाती है। जब तक कि उसे किसी जीवित संजीवनी वृक्ष से ताजा-ताजा ना लिया गया हो, इसका उपयोग नहीं किया जा सकता। यह औषधि स्थिर की हुई थी। वह एक मिश्रण के रूप में थी। हम उसका उपयोग कर सकते थे।'

'मुझे क्षमा करें, देवी आयुर्वती, किंतु मैं अब भी समस्या नहीं समझ पाया।'

'केवल एक तत्व है, एक विशेष वृक्ष की चूर्ण की हुई लकड़ी जो संजीवनी के साथ मिश्रित हो सकती है और उसे स्थिर बनाए रखती है। पर वह वृक्ष सप्त सिंधु में नहीं उगता।'

भगीरथ की त्योरियां चढ़ गईं।

'वह वृक्ष केवल नर्मदा नदी के दक्षिण में उगता है। नागाओं के क्षेत्राधिकार में।'

अयोध्या के राजकुमार पर तुषारापात हो गया। वह जानता था कि नीलकंठ क्या सोच रहे होंगे, 'प्रभु, मुझे वह औषधि ब्रंगा के प्रधान दिवोदास से मिली थी। मैं अयोध्या की सौगंध खाकर कहता हूं। मैं अपनी प्यारी बहन की भी सौगंध खाकर कहता हूं। मेरा नागाओं से कोई लेना-देना नहीं है।'

शिव लगातार भगीरथ को घूरे जा रहा था, 'मैं दिवोदास से मिलना चाहता हूं।'

'प्रभु, आप मेरा विश्वास करें नागाओं के बारे में मैं कुछ नहीं जानता।'

'मुझे दिवोदास चाहिए, राजकुमार भगीरथ, वो भी अगले एक घंटे के अंदर।'

भगीरथ का हृदय बुरी तरह धड़क रहा था, 'प्रभु, कृपा करके मेरा विश्वास करें...'

'हम लोग इसके बारे में बाद में बात करेंगे, राजकुमार भगीरथ,' शिव ने कहा, 'कृपया, दिवोदास को बुलाएं।'

'मुझे पता चला है प्रभु, कि सम्राट अथिथिग्व ने पहले से ही दिवोदास को कल प्रातः आपकी सेवा में उपस्थित होने का आदेश दे दिया है।'

शिव ने भगीरथ को घूरा। उसकी आंखें थोड़ी संकुचित हुईं।

'मैं दिवोदास के यहां आने का प्रबंध अभी इसी समय करता हूं, प्रभु,' भगीरथ ने कहा और कक्ष से बाहर की ओर दौड़ पड़ा।

पर्वतेश्वर की शय्या के निकट आनंदमयी चुपचाप बैठी थी। सेनापति गहरी नींद में थे, श्वास धीमे-धीमे चल रही थी। राजकुमारी ने पर्वतेश्वर के शक्तिशाली कंधों, हाथ और उंगलियों तक मानो अपने हाथ से एक लंबी सी रेखा खींच दी और तभी ऐसा प्रतीत हुआ जैसे एक सिहरन सी सेनापति के पूरे शरीर में दौड़ गई।

आनंदमयी धीमे से हंसी, 'आपने चाहे प्रतिज्ञा ले रखी हो, लेकिन हैं तो आप एक मनुष्य ही।'

जैसे किसी सहज प्रवृत्ति से चालित हो, पर्वतेश्वर ने अपना हाथ खींच लिया। वह नींद में कुछ बुदबुदाया। उसका स्वर स्पष्ट नहीं था कि आनंदमयी के कानों तक पहुंच सके। वह सामने की ओर झुकी।

'मैं अपनी प्रतिज्ञा कभी नहीं तोड़ूंगा... पिताश्री। वह मेरी... दशरथ प्रतिज्ञा है। मैं कभी नहीं तोड़ूंगा... अपनी प्रतिज्ञा।'

दशरथ प्रतिज्ञा, यह नाम उस प्रतिज्ञा को दिया गया था जो प्रभु राम के पिता ने कभी ली थी। यह उस वचन को कहा जाता था जिसे कभी भी तोड़ा नहीं जा सकता। आनंदमयी ने अपना सिर हिलाया और गहरी श्वास छोड़ी। पर्वतेश्वर एक बार फिर अपने ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा को दोहरा रहा था।

'मैं कभी नहीं तोड़ूंगा... अपनी प्रतिज्ञा।' आनंदमयी मुस्कुराई, 'हम देखेंगे।'

— ⁂ —

'प्रभु,' तत्काल ही झुककर नीलकंठ के पांव छूते हुए दिवोदास बोला।

'*आयुष्मान भव,* दिवोदास,' शिव ने उसे लंबी आयु का आशीर्वाद देते हुए कहा।

'आपसे मिलने का इतना बड़ा सम्मान मुझे मिला है, प्रभु।

हमारे बुरे दिन बीत गए। आप तो हमारी सारी समस्याओं का समाधान कर देंगे। हम अपने घर जा सकते हैं।'

'घर जाना चाहते हो? तुम अभी भी घर जाना चाहते हो?'

'ब्रंगा मेरी आत्मा है, प्रभु। यदि महामारी नहीं फैली होती तो मैं अपना देश कभी नहीं छोड़ता।'

शिव ने त्योरी चढ़ाई, उस बिंदु पर आने से पहले जो उसकी चिंता का विषय था, 'तुम एक अच्छे व्यक्ति हो दिवोदास। तुमने मेरे मित्र की जान बचाई है। यहां तक कि अपना जीवन खतरे में डाला।'

'यह तो सम्मान की बात थी, प्रभु। वहां जो कुछ भी हुआ, मुझे पता है। सेनापति पर्वतेश्वर ने मेरे कबीले के लोगों की अटल मृत्यु से रक्षा की थी। हमें उनके लिए कुछ तो करना ही था। और इसके लिए मैं कोई भी मूल्य चुका सकता था।'

'यह तो तुम पर निर्भर करता है, मित्र। जब तुम इसका उत्तर दो तो अपनी आचार संहिता को याद रखना।'

दिवोदास ने त्योरी चढ़ाई।

'तुम्हें नागाओं की औषधि कैसे प्राप्त हुई?' शिव ने पूछा।

दिवोदास जम गया।

'मुझे उत्तर दो, दिवोदास,' शिव ने धीमे से पुनः पूछा।

'प्रभु...'

'मैं जानता हूं कि वह औषधि केवल नागाओं द्वारा बनाई जा सकती है। प्रश्न यह है दिवोदास कि तुम उस तक कैसे पहुंचे?'

दिवोदास नीलकंठ को झूठ नहीं बोलना चाहता था। फिर भी वह सच बोलने से भयभीत था। 'दिवोदास, सच बताओ,' शिव ने कहा, 'मुझे सबसे अधिक क्रोध झूठ बोलने पर आता है। सच बोलो। मैं तुम्हें वचन देता हूं कि तुम्हें कोई हानि नहीं होगी। मुझे केवल नागा लोग चाहिए।'

'प्रभु, मैं नहीं जानता कि मैं ऐसा कर सकता हूं या नहीं। मेरे कबीले वालों को प्रत्येक वर्ष इस औषधि की आवश्यकता पड़ती है। कुछ दिनों की देरी से कैसी अव्यवस्था फैल जाती है, वो तो आपने देखा ही है। वे सब इसके अभाव में मर जाएंगे, प्रभु।'

'मुझे बताओ कि ये घृणित लोग कहां मिलेंगे, मैं तुम्हें वचन देता हूं कि प्रत्येक वर्ष मैं तुम्हें वह औषधि दूंगा।'

'प्रभु...'

'यह मेरा वचन है, दिवोदास। तुम्हें सदैव वह औषधि मिलती रहेगी। यदि शेष जीवन भर मैं एकमात्र यही कार्य करता रहूं, तब भी। औषधि के अभाव में तुम्हारे कबीले का कोई भी व्यक्ति मरने नहीं दिया जाएगा।'

दिवोदास झिझका। फिर नीलकंठ से जुड़ी दंतकथा में उसकी आस्था ने उस अनजाने भय को जीत लिया, 'मैं किसी नागा से कभी नहीं मिला, प्रभु। हम में से अनेक लोग ऐसा मानते हैं कि उन्होंने ब्रंगा राज्य को शापित किया हुआ है। हमारे देश में प्रत्येक वर्ष ग्रीष्म ऋतु में निरपवाद महामारी फैलती है। एकमात्र औषधि जो हमारे जीवन की रक्षा करती है, वो वही औषधि है जो नागा लोग हमें देते हैं। राजा चंद्रकेतु नागाओं को अवर्णिनीय मात्रा में स्वर्ण एवं अधिसंख्य आदमियों की आपूर्ति करते हैं, बदले में वे उन्हें औषधियां देते हैं।'

शिव भौंचक्का रह गया, 'तुम्हारे कहने का अर्थ है कि राजा चंद्रकेतु नागाओं के साथ सौदा करने के लिए विवश हैं? वे उनके बंधक हैं?'

'वे एक धर्मात्मा राजा हैं, प्रभु। यहां तक कि हम जैसे कुछ लोग, जो वहां से बच निकले हैं और ब्रंगा के बाहर शरणार्थी बने हुए हैं, हमारे राजा उन्हें भी जीवनयापन करने के लिए स्वर्ण देकर सहायता करते हैं। हम प्रत्येक वर्ष यही औषधि लेने के लिए ब्रंगा राज्य में जाते हैं।'

शिव चुप रहा।

दिवोदास की आंखों में थोड़ी-सी नमी थी, 'हमारे राजा एक महान व्यक्ति हैं, प्रभु। उन्होंने केवल ब्रंगा के लोगों की रक्षा करने के लिए दुष्टों से सौदा किया है और अपनी आत्मा को शापित कर लिया है।'

शिव ने धीमे से सिर हिलाया, 'क्या राजा एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जो नागाओं से सौदा करते हैं?'

'मेरी सूचना के अनुसार वे स्वयं और कुछ उनके विश्वासी सलाहकार हैं, प्रभु। कोई अन्य नहीं।'

'मेरे शिशु के जन्म के बाद हम ब्रंगा राज्य के लिए रवाना होंगे। मेरे साथ तुम्हें चलना होगा।'

'प्रभु!' दिवोदास चौंककर चीख पड़ा, 'हम अपनी भूमि पर अब्रंगा लोगों को नहीं ले जा सकते। हमारे रहस्य हमारी सीमा के अंदर ही रहने चाहिए। मेरे कबीले का भविष्य दावं पर है। मेरी जन्मभूमि का भविष्य दावं पर है।'

'यह तुमसे, तुम्हारे कबीले या मुझसे भी कहीं महत्वपूर्ण है।

यह भारतवर्ष के बारे में है। हमें नागाओं को ढूंढ़ना ही होगा।' दिवोदास ने शिव पर एक गहरी दृष्टि डाली। वो टूटा हुआ और चकराया सा था।

'मेरा विश्वास है कि मैं सहायता कर सकता हूं,' शिव ने कहा,'क्या यह जीवन जीने योग्य है? प्रत्येक वर्ष हताशा की हद तक औषधियों के लिए भीख मांगना? यह भी ना जानते हुए कि तुम्हारे कबीले को क्या बीमारी है? हमें इस समस्या का समाधान करना है। मैं यह कर सकता हूं। लेकिन तुम्हारी सहायता के बिना नहीं।'

'प्रभु...'

'दिवोदास, सोचो। मैंने सुना है कि मोर के रक्त के कई अन्य दुष्प्रभाव होते हैं। क्या हुआ होता यदि तुम नागाओं की औषधि लेकर समय पर नहीं पहुंचे होते? तुम्हारे कबीले का क्या हुआ होता? तुम्हारी पत्नी? तुम्हारा अजन्मा बच्चा? क्या तुम इस समस्या का समाधान सदैव के लिए नहीं करना चाहते?'

दिवोदास ने धीमे से सहमति में सिर हिलाया।

'तो फिर मुझे अपने राज्य में ले चलो। हम तुम्हारे राजा को और ब्रंगा की भूमि को नागाओं के चंगुल से मुक्त करा देंगे।'

'ठीक है, प्रभु।'

— ⁂ —

'मैं सौगंध खाकर कहता हूं कि मेरा नागाओं से कोई लेना-देना नहीं है, प्रभु,' भगीरथ ने कहा। उसका सिर झुका हुआ था।

नंदी जो शिव के कक्ष के द्वार पर खड़ा था, वह सहानुभूतिपूर्वक राजकुमार भगीरथ को देख रहा था।

'मैं सौगंध खाता हूं, प्रभु, मैं आपके विरुद्ध कभी नहीं जा सकता,' भगीरथ ने कहा, 'कभी नहीं।'

'मैं जानता हूं,' शिव ने कहा, 'ऐसा लगता है कि औषधि की उपस्थिति से मैं विचलित हो गया था। नंदी ने पहले ही मुझे बता दिया। मुझे

पता चल चुका है कि आप कैसे औषधि तक पहुंचे थे। मुझे क्षमा करें जो मैंने आप पर संदेह किया।'

'प्रभु,' भगीरथ रो पड़ा, 'आपको क्षमा मांगने की आवश्यकता नहीं है।'

'नहीं भगीरथ। यदि मैंने कोई गलती की है तो मुझे अवश्य

क्षमा मांगनी चाहिए। मैं आप पर फिर कभी संदेह नहीं करूंगा।'

'प्रभु...' भगीरथ बोला।

शिव ने भगीरथ को अपने निकट खींचकर गले लगा लिया।

— ⅄ⓄႮ⇡⊕ —

'अपनी उपस्थिति से हम पर कृपा करने के लिए एक बार पुनः धन्यवाद, मुनिवर,' मेलूहा की प्रधानमंत्री कनखला ने महान महर्षि भृगु के चरणों को स्पर्श करते हुए कहा, 'मुझे अब आज्ञा दें।'

'आयुष्मान भव पुत्री' भृगु ने हल्के से मुस्कुराते हुए कहा।

मेलूहा की राजधानी देवगिरि में एकांतप्रिय महर्षि के अचानक आगमन पर कनखला अचंभित थी। लेकिन उनके सम्राट, दक्ष थोड़े भी अचंभित नहीं लग रहे थे। कनखला जानती थी कि अनुशासित *सप्तर्षि उत्तराधिकारी* को रहने के लिए किन-किन वस्तुओं की आवश्यकता थी। इसलिए उसने उनके कक्ष को ठीक हिमालय की उसी गुफा की भांति तैयार किया था जहां महर्षि भृगु निवास करते थे। सिवाय एक पत्थर की शय्या के, जिस पर अभी महर्षि बैठे हुए थे, अन्य कोई वस्तु वहां नहीं थी। पहाड़ों की कष्टकारी ठंड और नम वातावरण जैसी अनुरूपता देने के लिए जमीन और दीवारों पर ठंडे जल का छिड़काव किया गया था। सभी खिड़कियों पर मोटे-मोटे पर्दे डालकर सूर्य के प्रकाश को मद्धिम कर दिया गया था। फलों से भरी हुई एक टोकरी उस कक्ष में रख दी गई थी। महर्षि मात्र उसी का भोजन करते थे। और सबसे महत्वपूर्ण भगवान ब्रह्मा की एक मूर्ति कक्ष की एक दीवार के कोने में उत्तर दिशा में स्थापित कर दी गई थी।

महर्षि भृगु ने कनखला के वहां से चले जाने की प्रतीक्षा की और फिर वे अपने शांत, सुमधुर स्वर में दक्ष से बात करने के लिए मुड़ गए, 'क्या आप निश्चित रूप से यह कह सकते हैं, राजन?' दक्ष धरती पर बैठे हुए थे, महर्षि भृगु के चरणों में, 'हां, मुनिवर। यह मेरे पौत्र के लिए है। इस दुनिया में मैं इतना अधिक निश्चित किसी अन्य वस्तु के लिए नहीं हुआ हूं।'

भृगु के मुख पर हल्की सी मुस्कान फैल गई, किंतु आंखों में अप्रसन्नता ही झलक रही थी, 'राजन, मैंने देखा है कि अपने संतान मोह के कारण कई राजा राष्ट्र के प्रति अपना धर्म भुला देते हैं। पर मैं आपसे आशा करता हूं कि आप पुत्री मोह में अत्यधिक अनुरागी होकर भी, राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को नहीं भुलाएंगे।'

'नहीं, मुनिवर। सती मेरे लिए इस दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण है। लेकिन मैं अपने ध्येय के लिए अपने कर्तव्यों को नहीं भूलूंगा।'

'अति उत्तम राजन। यही कारण था कि मैंने आपके सम्राट बनने का समर्थन किया था।'

'मैं जानता हूं, मुनिवर। ध्येय से अधिक कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं होता। भारत से अधिक कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है।'

'राजन क्या आप ऐसा नहीं सोचते, आपके दामाद इतने बुद्धिमान हैं कि जब वे उसे देखेंगे तो प्रश्न नहीं पूछेंगे?'

'नहीं, मुनिवर। वे मेरी पुत्री से प्रेम करते हैं। वे भारत से प्रेम करते हैं। वे उद्देश्य को हानि पहुंचाने वाला कोई कार्य नहीं करेंगे।'

'वासुदेवों ने उन्हें प्रभावित करना प्रारंभ कर दिया है, राजन।'

दक्ष स्तब्ध रह गया कि उसे कोई शब्द सूझा ही नहीं। भृगु ने अनुभव किया कि इस वार्ता को आगे बढ़ाने का कोई लाभ नहीं। निहितार्थों को समझने के लिए दक्ष सरलमना थे। उन्हें उस ध्येय के लिए स्वयं ही संघर्ष करना होगा।

'यदि आपका मत यही है तो फिर कार्य आगे बढ़ाएं,' महर्षि ने कहा, 'लेकिन आप किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं देंगे कि वे कहां से आए। किसी को भी नहीं। यह स्पष्ट है ना?'

दक्ष ने सहमति में सिर हिलाया। वह महर्षि भृगु के शिव एवं वासुदेवों से जुड़े उस कथन से अभी भी स्तब्ध थे।

'अपनी पुत्री को भी नहीं, राजन,' भृगु ने कहा।

'जैसी आपकी आज्ञा, मुनिवर।'

भृगु ने सिर हिलाया। उन्होंने गहरी श्वास ली। यह उन्हें परेशान कर रहा था। दक्ष को अपनी विरासत की रक्षा करने के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ेगा। यह अवश्यंभावी था। भृगु का मानना था कि भारत का भविष्य ही दावं पर था।

'वैसे किसी भी हालत में डरने वाली कोई बात नहीं है, मुनिवर,' दक्ष ने चतुराई से कहा जैसा वह स्वयं महसूस नहीं कर रहा था,'बृहस्पति के साथ चाहे जो भी हुआ हो, गोपनीयता सुरक्षित है। वह सैकड़ों वर्षों तक जीवित रहेगा। भारत समृद्ध होता रहेगा और विश्व पर शासन करता रहेगा।'

'बृहस्पति मूर्ख था!' भृगु ने कहा। उनका स्वर तीखा हो रहा था, 'वस्तुतः इससे भी अधिक कहा जाए तो संभवतया वह देशद्रोही था।'

दक्ष ने कुछ नहीं कहा। सदैव की तरह वह भृगु के क्रोध से भयभीत था।

भृगु शांत हो गए, 'मैं विश्वास नहीं कर सकता कि मैंने अपनी शिष्या तारा का उससे विवाह तक करने का मन बना लिया था। उस बेचारी बच्चीं का जीवन बर्बाद हो गया होता।'

'तारा कहां है, मुनिवर? मैं आशा करता हूं कि वह सुरक्षित और प्रसन्न है।'

'वह सुरक्षित है। मैंने उसे प्रभु रुद्र के देश में रखा है। उनमें से कुछ लोग मेरे प्रति सच्चे बने रहे। किंतु प्रसन्नता की जहां तक बात है...,' भृगु ने थकावट से अपना सिर हिलाया।

'वह अभी भी उससे प्रेम करती है?'

'मूर्खतावश, हां। तब भी जब वह जीवित नहीं है।'

'बृहस्पति के संबंध में बात करने का कोई अर्थ नहीं है,' दक्ष ने कहा, 'अनुमति देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, मुनिवर। हृदय की गहराई से मेरा बहुत-बहुत धन्यवाद।'

भृगु ने सिर हिलाया। और नीचे झुकते हुए फुसफुसाकर कहा, 'सावधानी बरतें, राजन। युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है। यह ना सोचें कि आप एकमात्र ऐसे हैं जो नीलकंठ का उपयोग कर सकते हैं।'

अध्याय 7

प्रसव पीड़ा

दशाश्वमेध घाट पर राजसी प्रांगण के एक किनारे पर शिव खड़ा हुआ था। अपने अन्य प्रमुख कुलीन सदस्यों के साथ उनके पास ही महाराज दिलीप और अथिथिग्व खड़े थे। काशी के नागरिक उस प्रांगण से दूर खड़े हुए थे। वे बहुत उत्साहित नहीं थे। जब से नीलकंठ ने उस नगर को अपना अस्थायी निवास बनाया था, तब से निरंतर उनका नगर आकर्षण का केंद्र बना हुआ था, जिसके कारण अब उन्हें आदत सी पड़ चुकी थी।

काशी के कूटनीतिज्ञों के लिए वह एक व्यस्त दिन था। दिलीप का आगमन प्रातःकाल ही हुआ था। स्वद्वीप के सम्राट के लिए सभी मानकीय शिष्टाचारों का पालन किया गया था। उसी के अंतर्गत राजसी प्रांगण के ऊपर एकल श्वेत पताका, जिस पर नवचंद्र बना हुआ था, उसे लगा दिया गया था। अब वे भारत के सम्राट दक्ष की प्रतीक्षा कर रहे थे।

शिष्टाचार प्रक्रिया बहुत जटिल थी। अंततः यह निर्णय लिया गया कि लाल सूर्यवंशी पताका राजसी प्रांगण के सबसे उच्चस्थ स्थान पर लगाई जानी चाहिए। आखिरकार नीलकंठ ने दक्ष को भारत का सम्राट घोषित कर दिया था। दिलीप की संवेदनशीलता का सम्मान करते हुए काशी के शिष्टाचार अधिकारियों ने चंद्रवंशी पताका को भी प्रांगण में सूर्यवंशी पताका से थोड़ा नीचे की ओर लगा दिया था।

शिव को, निस्संदेह, इन समारोहों से कोई लेना-देना नहीं था। वह नदी के उस पार बने अस्थायी नौका घाट के मजदूरों में रुचि ले रहा था, जहां दिवोदास के नेतृत्व में ब्रंगा के लोग पिछले तीन महीने से जी-जान से काम में जुटे हुए थे। गंगा की लहराती धारा के पूर्वी हिस्से में निवास ना करने के अंधविश्वास के कारण वह स्थान ब्रंगा लोगों के काम करने के लिए प्राकृतिक रूप से सर्वाधिक सुरक्षित था। वे एक विशेष प्रकार के जलपोत का निर्माण कर रहे थे, जो ब्रंगा के नदी के आर-पार बनाए गए विशालकाय द्वारों को पारकर उनकी भूमि में प्रवेश कर सकता था। शिव इसकी कल्पना नहीं कर सका था कि गंगा जैसी चौड़ी नदी के आर-पार कैसे बंध बनाए जा सकते हैं। लेकिन दिवोदास ने कहा था कि उन विशेष प्रकार के जलपोतों की आवश्यकता होगी। शिव को याद था कि संशयी अथिथिग्व ने ब्रंगावालों की इस योजना का विरोध किया था। उसने कहा था: 'मात्र इसलिए कि आप कल्पना नहीं कर सकते, इसका यह अर्थ नहीं होता है कि वह अस्तित्व में नहीं है।' लेकिन अथिथिग्व ने इस कार्य के लिए ब्रंगावालों को पूर्वी घाट पर राजभवन या उसके मैदानों का उपयोग कर लेने से मना कर दिया था। इसलिए ब्रंगावाले एक खतरनाक, हाल ही में सूखे नदी के तट पर काम कर रहे थे।

दिवोदास ने नीलकंठ को जैसे ही वचन दिया कि वह उनके साथ ब्रंगा देश को जाएगा, ठीक उसी के दूसरे दिन से कार्य आरंभ कर दिया था।

दिवोदास अपने वचन का पक्का है। वह एक नेक आदमी है।

अंततः दक्ष के जलयान के घाट पर रुकने की आहट ने शिव को फिर वर्तमान में ला खड़ा किया था। उसने देखा कि सीढ़ियों को रस्सी वाली घिर्री से नीचे किया जा रहा था। राजसी शिष्टाचार आदि के बारे में सोचे बिना ही दक्ष त्वरित गति से मार्ग पर उतरा और भागता सा शिव की ओर बढ़ा। उसने झुककर अभिवादन किया और हांफते हुए पूछा। 'पुत्र हुआ है, प्रभु?'

भारत के सम्राट का स्वागत करने के लिए शिव उठ खड़ा हुआ। उसने एक औपचारिक नमस्ते की और मुस्कुराता हुआ बोला,'हमें अभी पता नहीं है, महाराज। जन्म की बेला कल तक ही आ पाएगी।'

'ओह, अति सुंदर। तब फिर मुझे देरी नहीं हुई! मैं बहुत डरा हुआ था कि यह आनंद भरा दिन नहीं देख पाऊंगा।'

शिव ठहाका मारकर हंस पड़ा। यह कहना बहुत कठिन था कि कौन अधिक रोमांचित था--पिता या पितामह।

'आपको पुनः देखकर बहुत प्रसन्नता हो रही है, पूर्वक *जी,*' अपनी कुर्सी से उठकर उस अंधे व्यक्ति के पांव छूने के लिए झुकते हुए शिव ने कहा।

द्रपक का अंधा पिता पूर्वक वही विकर्म था, जिससे शिव ने कुछ वर्ष पूर्व मेलूहा के कोटद्वार में आशीर्वाद की इच्छा प्रकट की थी। कोटद्वार

के निवासी शिव के विकर्म नियमों को अस्वीकार करने पर स्तब्ध रह गए थे। ना केवल विकर्म के स्पर्श से दूषित हो जाने को शिव ने अस्वीकार कर दिया था बल्कि उन्होंने एक विकर्म से आशीर्वाद की इच्छा भी प्रकट कर दी थी।

पूर्वक सम्राट दक्ष के काफिले के साथ काशी आया था। वह तत्काल पीछे हट गया जैसे उसे इंद्रियबोध हो गया कि शिव क्या करने वाले थे, 'नहीं, नहीं, प्रभु। आप नीलकंठ हैं। मैं आपको अपने पांव कैसे छूने दे सकता हूं?'

'क्यों नहीं, पूर्वक जी?'

'लेकिन प्रभु, आप मेरे पिता के पांव कैसे छू सकते हैं?' द्रपकु ने कहा, 'आप महादेव हैं।'

'क्यों, यह तो मेरे ऊपर है ना कि मैं किसके चरणस्पर्श करूं?' शिव ने पूछा।

पूर्वक की ओर मुड़ते हुए शिव ने कहना जारी रखा, 'आप मुझसे बड़े हैं। आशीर्वाद प्राप्त करने के अधिकार से आप मुझे वंचित नहीं कर सकते। अतः आप कृपया शीघ्रता करें। इतनी देर झुके रहने से मेरी पीठ में दर्द होने लगा है।'

शिव के सिर पर अपना हाथ रखते हुए पूर्वक हंस पड़ा,'आपको कोई इंकार नहीं कर सकता, हे अद्वितीय। *आयुष्मान भव।*

दीर्घायु होने का आशीर्वाद पा शिव संतुष्ट होकर खड़ा हो गया,'तो अब आप अपने पुत्र के साथ समय बिताना चाहते हैं?'

'जी हां, प्रभु।'

'किंतु हम एक बहुत ही संकटपूर्ण यात्रा पर जाने वाले हैं। क्या आप इस बारे में निश्चित हैं?'

'कभी मैं भी एक योद्धा था, प्रभु। मैं अभी तक बलवान हूं। यदि कोई नागा मेरे सामने आ खड़ा हो जाए तो मैं उसे मार सकता हूं!'

शिव मुस्कुराया। द्रपकु की ओर मुड़ते हुए उसकी भौंहें उठीं। अपने हाथों से संकेत देते हुए कि वह उनकी रक्षा करेगा, द्रपकु भी मुस्कुराया।

'मेरे बेटे, ऐसा मत समझो कि मुझे इंद्रियबोध नहीं कि तुम क्या कह रहे हो?' पूर्वक ने कहा, 'चाहे मैं अंधा हूं, लेकिन तुमने मेरा हाथ पकड़कर ही तलवार घुमाना सीखा है। मैं अपनी रक्षा कर लूंगा। और तुम्हारी भी।'

शिव और द्रपकु दोनों ही ठहाका मारकर हंस पड़े। शिव को यह देखकर बहुत प्रसन्नता हुई कि कोटद्वार में वह एक ऐसे संकोची पूर्वक से मिला था, जिसने अपनी प्राकृतिक वीरता को भाग्य के प्रहार से पराजित मान दबा लिया था, किंतु आज उसमें वही उत्साह फिर झलकने लगा था।

'आप अपने पुत्र को भूल जाएं, पूर्वक जी,' शिव ने कहा,'आपको अपना अंगरक्षक बनाकर मुझे अति प्रसन्नता होगी।'

'मुझे डर लग रहा है, शिव।'

अपने कक्ष में सती शय्या पर लेटी हुई थी। एक थाली में भोजन लेकर शिव कक्ष में अभी-अभी पहुंचा था। राजसी रसोइए को हैरान-परेशान छोड़ नीलकंठ ने हठ की कि वह अपनी पत्नी के लिए स्वयं ही भोजन तैयार करेगा।

जैसे उसे आघात लगा हो, शिव ने कहा, 'मेरा भोजन इतना भी बुरा नहीं है!'

सती खिलखिलाकर हंस पड़ी, 'मेरे कहने का यह अर्थ नहीं था।'

शिव निकट आया और मुस्कुराया। मेज पर थाली रखने के बाद उसने सती के मुख पर लाड़ से हाथ फेरा, 'मैं जानता हूं। मैंने हठ की है कि आयुर्वती ही प्रसव का पर्यवेक्षण करे। वह विश्व में सबसे अच्छी वैद्य है। कुछ भी बुरा नहीं होगा।'

'लेकिन यदि यह बच्चा भी मृत पैदा हुआ तो? यदि मेरे विगत पाप हमारे बेचारे शिशु को प्रभावित करें तो?'

'विगत पाप जैसा कुछ भी नहीं होता है, सती! केवल एक ही जीवन होता है। एक ही सत्य होता है। इसके अतिरिक्त बाकी सब बस सिद्धांत होते हैं। उस सिद्धांत को मानो जो शांति देता है और उसे अस्वीकारो जो पीड़ा देता है। ऐसे सिद्धांत पर क्यों विश्वास करो जो

दुख दे? तुमने अपनी और शिशु की देखभाल करने के लिए वह सबकुछ किया है जो किया जाता है। अब आस्था रखो।'

सती चुप रही। उसकी आंखों में अभी भी उन अनिष्टकारी पूर्वाभासों की परछाईं झिलमिला रही जो उसे अनुभूत हुई थी।

शिव ने सती के मुख पर पुनः हाथ फेरा, 'प्रिय, मेरा विश्वास करो। तुम्हारी ये चिंता तुम्हें कोई सहायता नहीं देगी। सकारात्मक और सुखकारी सोचो। हमारे बच्चे के लिए सबसे अच्छा यही है जो तुम कर सकती हो। और बाकी सब भाग्य पर छोड़ दो। वैसे भी भाग्य ने यह सुनिश्चित कर दिया है कि कल तुम अपनी शर्त हार जाओगी।'

'कैसी शर्त?'

'अब तुम इससे बच नहीं सकतीं!' शिव ने कहा।

'बताएं ना, कौन सी शर्त?'

'यह कि हमारी बेटी पैदा होगी।'

'अरे हां, मैं तो इसके बारे में भूल ही गई थी,' सती मुस्कुराई,'लेकिन मुझे पता नहीं क्यों ऐसा अनुभव हो रहा है कि बेटा ही होगा।'

'नहीं!' शिव हंसा।

सती भी साथ में हंसी और उसने शिव के हाथों से अपना मुख सटा दिया।

शिव ने रोटी तोड़कर, उसे थोड़ी सी सब्जी में लपेटा और कौर सती को खिलाते हुए पूछा, 'क्या नमक ठीक है?'

— ⚹ —

'क्या सचमुच पूर्व जीवन के पाप होते हैं?' शिव ने पूछा।

नीलकंठ काशी विश्वनाथ मंदिर में थे। उनके सामने वासुदेव पंडित बैठे हुए थे। मंदिर के स्तंभों के मध्य से अस्त होता हुआ सूर्य दिखाई दे रहा था। लाल बलुआ पत्थर और भी अधिक चमक रहा था जिससे विस्मयकारी प्रेरणादायक वातावरण बन रहा था।

'आप क्या सोचते हैं?' वासुदेव ने पूछा।

'मैं किसी वस्तु पर तब तक विश्वास नहीं करता जब तक कि उसका प्रमाण ना देख लूं। मेरे विचार से बिना प्रमाण वाले सिद्धांतों में से उन सिद्धांतों को मानना चाहिए जो हमें शांति प्रदान करते हैं। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता है कि वह सिद्धांत सत्य है या नहीं।'

'यह सुखी जीवन के लिए एक बहुत अच्छी रणनीति है। इसमें कोई संदेह नहीं है।'

शिव ने पंडित के और भी कुछ बोलने की प्रतीक्षा की। जब वे नहीं बोले तो शिव ने पुनः कहा, 'आपने मेरे प्रश्न का उत्तर अभी भी नहीं दिया। क्या सचमुच ही पूर्व जीवन के पाप होते हैं, जिनके लिए हम इस जीवन में दुख पाते हैं?'

'मैंने आपके इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया क्योंकि मेरे पास इसका उत्तर नहीं है। किंतु यदि लोग इस बात पर विश्वास करते हैं कि उनके पूर्व जीवन के पाप उन्हें प्रभावित करेंगे तो क्या वे कम से कम इस जीवन में एक अच्छा जीवन जीने का प्रयास नहीं कर सकते?'

शिव मुस्कुराया। *क्या ये लोग मात्र प्रतिभावान लेखक हैं या कोई महान दार्शनिक?*

पंडित प्रत्युत्तर में मुस्कुराया। *पुनः, मेरे पास उत्तर नहीं है।*

शिव ठहाका मारकर हंस पड़ा। वह भूल गया था कि पंडित उसके मन की सोची हुई बात को सुन सकता था और वह भी पंडित के मन की बात को सुन सकता था।

'यह कैसे होता है? ऐसा कैसे है कि मैं आपके मन की बात सुन सकता हूं?'

'यह, सच में, सीधा सा विज्ञान है। रेडियो तरंगों का विज्ञान।'

'यह सिद्धांत नहीं है?'

पंडित मुस्कुराया, 'यह निश्चित ही सिद्धांत नहीं है। यह एक तथ्य है। जिस प्रकार प्रकाश आपको देखने में सहायता करता है उसी तरह रेडियो तरंगें आपको सुनने में सहायता करते हैं। यह भी सच है कि सारी मानव जाति प्रकाश के गुणों को देख सकती है, किंतु अधिकतर लोग रेडियो तरंगों को सुन नहीं पाते। हम लोग सुनने के लिए ध्वनि तरंगों पर निर्भर करते हैं। ध्वनि तरंगें हवा में तुलनात्मक दृष्टि से कम गति से यात्रा करती हैं और कम दूरी तक ही जा पाती हैं। रेडियो तरंगें तीव्र गति से दूर तक प्रकाश की भांति यात्रा कर सकती हैं।'

शिव को अपने काका की याद आई जिनके बारे में उसे सदैव

यही लगता था कि वे उसके मन की बात सुन लेते थे। जब वह किशोर था, तब वह इसे जादू समझा करता था। अब वह समझ गया कि इसके पीछे क्या विज्ञान है, 'यह बहुत ही मनोरंजक है। तो फिर आप ऐसे मशीन का निर्माण क्यों नहीं करते जो रेडियो तरंगों को ध्वनि तरंगों में बदल सके?'

'आह! यह एक कठिन प्रश्न है। अभी तक हम इसमें सफल नहीं हो पाए हैं। किंतु हम अपने मस्तिष्क को प्रशिक्षण देने में सफल रहे हैं कि वे इन रेडियो तरंगों को सुन सकें। इसके लिए सालों अभ्यास करना पड़ता है। इसलिए हमें आश्चर्य हुआ था कि आप यह बिना किसी अभ्यास के ही कर लेते हैं।'

'मैं भाग्यशाली हूं, ऐसा मेरा अनुमान है।'

'इसमें भाग्य की कोई बात नहीं है, हे अद्वितीय। आप जन्मजात ही विशेष हैं।'

शिव ने त्योरी चढ़ा ली, 'मैं ऐसा नहीं समझता। वैसे भी यह कैसे काम करता है? आप रेडियो तरंगों को कैसे सुन पाते हैं? मैं सभी लोगों के मन की बातें क्यों नहीं सुन सकता?'

'अपने मन की बात को स्पष्ट रूप से रेडियो तरंगों के रूप में प्रसारित करने में भी प्रयास की आवश्यकता होती है। कई लोग अनजाने में बिना प्रशिक्षण के ही कर लेते हैं। किंतु रेडियो तरंगों को पकड़ना और दूसरों के मन की बात पढ़ना, यह पूरी तरह से भिन्न होता है। यह सरल नहीं है। हमें शक्तिशाली प्रेषकों की सीमा में ही रहना होता है।'

'मंदिर?'

'आप असाधारण बुद्धिमान हैं, हे नीलकंठ!' पंडित मुस्कुराया,'हां, मंदिर हमारे प्रेषकों की भांति कार्य करते हैं। इसीलिए मंदिर जिनका हम उपयोग करते हैं, वे कम से कम पचास मीटर की ऊंचाई के होते हैं। दूसरे वासुदेवों के मन की बातों को पकड़ने और वापस मेरी बात उन तक प्रसारित करने में यह सहायक होता है।'

आपके कहने का अर्थ है कि अन्य वासुदेव सदैव हमारी बातें सुनते रहते हैं, पंडित जी?

हां। जो भी हमारे मध्य हो रहे वार्तालाप को सुनना चाहें। और बहुत ही कम वासुदेव होंगे जो हमारे समय के संरक्षक, महान नीलकंठ की बातें ना सुनना चाहें।

शिव की त्योरियां चढ़ गईं। पंडित जो कह रहे थे यदि वह सच था तो वह पूरे भारत वर्ष में किसी भी मंदिर के किसी भी वासुदेव से बातें कर सकता था। *मगध के वासुदेव पंडित कृपाकर यह बताएं कि आपके यह कहने का क्या अर्थ था कि लोग बुराई में आसक्त होते हैं?*

शिव ने बहुत जोरदार ठहाका सुना। ऐसा प्रतीत हुआ कि वह स्वर थोड़ी दूर से आ रहा था। मगध के नरसिंह मंदिर के वासुदेव ने कहा, *'आप अत्यधिक प्रतिभावान एवं चतुर हैं, प्रभु नीलकंठ।'*

शिव मुस्कुराया। *हे महान वासुदेव, मुझे इस खुशामद के बजाय आपके उत्तर की प्रतीक्षा है।*

चुप्पी।

उसके बाद शिव ने मगध से आता हुआ अत्यधिक स्पष्ट स्वर सुना। *धर्मखेत युद्ध में आपका भाषण मुझे बहुत पसंद आया था। हर हर महादेव। हम सभी महादेव हैं। हम सबके अंदर एक ईश्वर विराजमान है। बहुत ही उत्तम सोच थी।*

उसका मेरे प्रश्न से क्या लेना-देना है? मैंने पूछा था कि लोगों को बुराई से आसक्ति क्यों रखनी चाहिए।

इसका लेना-देना है। इसका उससे पूर्णतया लेना-देना है। हम सबमें एक ईश्वर है। इसका स्पष्ट रूप से उपसिद्धांत क्या है?

वह यह है कि हममें से प्रत्येक का यह उत्तरदायित्व है कि हम अपने अंदर ईश्वर को ढूंढें।

नहीं, मित्र। यह तो सदाचार है। मैंने पूछा कि इसका उपसिद्धांत क्या है?

मैं नहीं समझ पाया, पंडित जी।

प्रत्येक वस्तु को संतुलन की आवश्यकता होती है, नीलकंठ। पुरुषवाचकों को स्त्रीवाचकों की आवश्यकता होती है। ऊर्जा को द्रव्यमान की आवश्यकता होती है। अतः विचार करें! हर हर महादेव। इसका उपसिद्धांत क्या है? कथन को क्या संतुलित करता है?

शिव ने त्योरी चढ़ा ली। एक विचार उसके मन में उभरा। उसे वह पसंद नहीं आया।

अयोध्या के वासुदेव ने शिव से आग्रह किया। *अपने विचारों को आने से ना रोकें, मित्र। उन्मुक्त प्रवाह ही सत्य को पहचानने का एकमात्र उपाय है।*

शिव ने मुंह बनाया। *लेकिन यह सत्य नहीं हो सकता।*

सत्य को पसंद करना आवश्यक नहीं होता है। इसे मात्र बोला जाता है। आप इसे बोलें। सत्य आपको पीड़ा दे सकता है, किंतु वह आपको मुक्त कर देगा।

लेकिन मैं नहीं मान सकता।

सत्य किसी को विश्वास करने के लिए कहता नहीं है। वह मात्र अस्तित्व में रहता है। मुझे बताएं कि आप क्या सोचते हैं? हममें से प्रत्येक में एक ईश्वर का वास है। उसका उपसिद्धांत क्या है?

हममें से प्रत्येक में बुराई भी है।

बिल्कुल सही। हममें से प्रत्येक में एक ईश्वर है। और हममें से प्रत्येक में एक दुष्ट है। अच्छाई और बुराई का सच्चा युद्ध तो अपने अंदर ही लड़ा जाता है।

और बड़ी बुराई हमारे अंदर छुपी बुराई से संबंध बना लेती है। क्या यही कारण है कि लोग बुराई से अनुरक्त होते हैं?

मेरा ऐसा विश्वास है कि जब आप हमारे इस काल की सबसे बड़ी बुराई की खोज कर लेंगे, तब आपको इस व्याख्या की आवश्यकता नहीं रह जाएगी कि बुराई आखिर कितनी गहराई से हमसे जुड़ी है।

अपने सामने उपस्थित पंडित को शिव ने टकटकी लगाकर देखा। इस वार्तालाप ने उसे हिलाकर रख दिया था। उसका कार्य केवल बुराई को खोजने तक ही सीमित नहीं था। संभवतया वह तुलनात्मक दृष्टि से सरल होता। आखिर वह कैसे बुराई के प्रति आसक्ति से लोगों को मुक्ति दिलवा सकेगा?

'आपको सभी प्रश्नों के उत्तर अभी के अभी प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है, मित्र,' काशी के वासुदेव ने कहा।

शिव हौले से मुस्कुरा दिया। वह असहज था। उसके बाद उसने दूर से आता एक स्वर सुना जिसे वह पहचान नहीं सका। एक प्रभावशाली स्वर, जिसे सुनकर ऐसा प्रतीत हुआ कि कभी तेजस्वी रहा होगा। तेजस्वी, फिर भी प्रशांत।

औषधि...

'निस्संदेह,' काशी के पंडित ने कहा और शीघ्रता से उठ खड़ा हुआ। वह एक रेशमी थैली थामे शीघ्र ही वापस आ गया।

शिव की त्योरी चढ़ गई।

'अपनी पत्नी के पेट पर इसे लगा दें, मित्र,' काशी के पंडित ने कहा, 'आपका बच्चा जन्म से ही तंदुरुस्त एवं शक्तिशाली होगा।'

'यह क्या है?'

'इसकी पहचान का कोई महत्व नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि यह प्रभावकारी सिद्ध होगी।'

शिव ने उस थैली को खोला। उसके अंदर गाढ़ा रक्तिम भूरे रंग का लेप था। *धन्यवाद। यदि यह मेरे बच्चे की सुरक्षा सुनिश्चित करता है तो मैं आपका सदा आभारी रहूंगा।*

वह स्वर जिसे शिव पहचान नहीं सका था। वह स्वर जिसने काशी के पंडित को आदेश दिया था, बोला। *आपको कृतज्ञता प्रकट करने की कोई आवश्यकता नहीं है, प्रभु नीलकंठ। आपके किसी भी काम आना हमारा कर्तव्य और हमारा सम्मान है। जय गुरु विश्वामित्र। जय गुरु वशिष्ट।*

— ⅄ⓄⅡ♆⊛ —

शिव खिड़की के पास खड़ा था। राजभवन की उस ऊंची दीवार से वह भीड़ भरे नगर और उससे दूर चौड़े पवित्र मार्ग को देख पा रहा था। उसी के किनारे, ब्रह्म घाट के निकट वह वृहद विश्वनाथ मंदिर खड़ा था। शिव उसे टकटकी बांधे देख रहा था। उसके दोनों हाथ प्रार्थना करने की मुद्रा में जुड़े हुए थे।

भगवान रुद्र, मेरे बच्चे की रक्षा करें। कृपा करें, कुछ भी अघटित ना घटे।

उसने हल्के से खांसने की ध्वनि सुनी तो पीछे मुड़ा।

भारत का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति सती एवं शिव के बच्चे का समाचार सुनने के लिए सांस रोके प्रतीक्षा कर रहा था। दक्ष घबराहट में व्यग्र हो रहा था। वह बहुत डरा हुआ था।

वे वास्तव में सती की चिंता करते हैं। चाहे वे और कुछ हों या ना हों, वे एक निष्ठावान पिता अवश्य हैं।

भावनाशून्य वीरिनी दक्ष का हाथ पकड़े हुए थी। सम्राट दिलीप शांत बैठ हुए थे। वे अपने बच्चों भगीरथ एवं आनंदमयी को देख रहे थे जो प्रफुल्लित से, किंतु हल्के स्वर में वार्तालाप करने में निमग्न थे।

भगीरथ को दिलीप टकटकी बांधे देखे जा रहे थे...

पिछले तीन महीनों में स्वस्थ हो चुका पर्वतेश्वर उसी कक्ष के एक कोने में खड़ा था। राजा अथिथिग्व कक्ष में एक छोर से दूसरे छोर तक चहलकदमी कर रहे थे। वे इस बात से दुखी थे कि नीलकंठ की प्रथम संतान के प्रसव का उत्तरदायित्व उनके वैद्यों को नहीं दिया गया था। लेकिन शिव कोई जोखिम नहीं उठाना चाहता था। केवल आयुर्वती ही देखभाल कर सकती थी।

शिव पीछे मुड़ा। उसने नंदी को दीवार से सटकर खड़ा देखा तो उसे अपनी आंखों से संकेत किया।

'जी, प्रभु?' शिव के पास आते हुए नंदी ने पूछा।

'मैं बहुत असहाय अनुभव कर रहा हूं। मुझे घबराहट हो रही है।'

नंदी तत्काल कक्ष से भागकर बाहर गया। थोड़ी ही देर में वह वीरभद्र के साथ वापस आ गया।

दोनों मित्र खिड़की के निकट चले गए।

'यह सच, बहुत ही अच्छा है!' वीरभद्र ने कहा।

'सच में?' शिव ने पूछा।

वीरभद्र ने चिलम जलाई और शिव को दी, उसने एक गहरा कश खींचा।

'हुऽम...,' शिव फुसफुसाया।

'हां?'

'मुझे अभी भी घबराहट है!'

वीरभद्र ने हंसना शुरू कर दिया, 'आपको क्या लगता है, क्या होगा?'

'लड़की।'

'लड़की? सच में? लड़की योद्धा नहीं हो सकती?'

'क्या बकवास करते हो! सती को देखो?'

वीरभद्र ने सिर हिलाया, 'बात तो सही है। और नाम?'

'कृत्तिका।'

'कृत्तिका! आपको मेरे लिए ऐसा कुछ करने की कोई आवश्यकता नहीं है, मित्र।'

'मैं तुम्हारे लिए नहीं कर रहा हूं, मूर्ख!' शिव ने कहा, 'यदि मुझे ऐसा करना होता तो मैं अपनी बेटी का नाम भद्र रखता, समझे। मैं यह कृत्तिका और सती के लिए कर रहा हूं। मेरी पत्नी के जीवन में कृत्तिका एक स्थिर आधार रही है। मैं उसकी प्रशंसा करना चाहता हूं।'

वीरभद्र मुस्कुराया, 'वह एक भद्र महिला है, है ना?'

'वह तो है। तुम भाग्यशाली हो।'

'अरे भाई, वो भी कम नहीं है। मैं कोई बेकार पति थोड़े हूं।'

'वास्तव में, उसे और अच्छा पति मिल सकता था!'

भद्र ने हंसी-हंसी में शिव की कलाई पर थपकी दी और दोनों मित्रों ने साथ ठहाका लगाया। शिव ने चिलम पुनः वीरभद्र को वापस पकड़ा दी।

अचानक, भीतरी कक्ष का द्वार खुला। आयुर्वती भागकर शिव के पास गई, 'पुत्र हुआ है, प्रभु! एक बलवान, सुंदर और तेजस्वी बालक!'

शिव ने आयुर्वती को अपनी बांहों में उठाकर घुमा दिया और प्रसन्नता से हंस पड़ा, 'बालक भी चलेगा!'

लजाती-सकुचाती आयुर्वती को नीचे उतार शिव आंतरिक कक्ष की ओर दौड़ पड़ा। आयुर्वती ने किसी और को उस कक्ष में जाने से मना कर दिया। सती अपनी शय्या पर लेटी हुई थी। उसके निकट ही दो परिचारिकाएं घूम-घूमकर कार्य कर रही थीं। सती का हाथ पकड़े हुए बगल में एक कुर्सी पर कृत्तिका बैठी हुई थी। शिव ने अब तक जितने नवजात शिशु देखे थे, उन सबसे सुंदर शिशु सती के पास लेटा हुआ था। सफेद कपड़े के एक छोटे से टुकड़े में उसे कसकर लपेटा गया था और वह सो रहा था।

सती हल्के से मुस्कुराई, 'यह पुत्र है। लगता है कि मैं जीत गई, प्रियतम!'

'यह सच है,' शिव फुसफुसाया। वह अपने पुत्र को छूने से डर रहा था, 'लेकिन मैं भी कुछ हारा नहीं!'

सती हंस पड़ी, लेकिन शीघ्र ही शांत हो गई। टांके पीड़ा दे रहे थे, 'हम इसे क्या कहकर पुकारेंगे? निश्चित ही इसे कृत्तिका तो नहीं बुला सकते।'

'हां, उसका तो प्रश्न ही नहीं उठता,' सती की दासी मुस्कुराई,'कृत्तिका तो स्त्री का नाम होता है।'

'लेकिन मैं अब भी तुम्हारे नाम पर ही इसका नाम रखना चाहता हूं, कृत्तिका,' शिव ने कहा।

'मैं सहमत हूं,' सती ने कहा, 'लेकिन नाम होगा क्या?' शिव ने कुछ क्षण के लिए सोचा, 'मिल गया! हम लोग इसे 'कार्तिक' बुलाएंगे।'

अध्याय 8

अभिसार नृत्य

जैसे ही जाने की अनुमति मिली दक्ष उस आंतरिक कक्ष की ओर दौड़ पड़ा। वीरिनी उसके पीछे-पीछे थी।

'पिताजी,' सती धीमे से बोली। 'आपका पहला पौत्र...' दक्ष ने उत्तर नहीं दिया। उसने धीमे से कार्तिक को उठाया और

सती की झुंझलाहट की परवाह किए बिना उस सफेद कपड़े को खोलकर शय्या पर गिरा दिया, जिससे उस शिशु को कसकर लपेटा गया था। दक्ष ने उसे ऊपर उठा लिया और उलट-पुलटकर देखने लगा। वह अपने पौत्र की हर छवि को प्रशंसा भरी दृष्टि से निहार रहा था। भारत के सम्राट की आंखों से आंसू धाराप्रवाह बह रहे थे,'यह बहुत ही सुंदर है। यह अत्यधिक सुंदर है।'

चौंककर कार्तिक नींद से जग गया और तत्काल ही रोने लगा। वह एक सुस्वस्थ शिशु का तार सप्तक रुदन था! सती ने अपने बेटे को लेने का प्रयत्न किया। लेकिन दक्ष ने आनंदमग्न वीरिनी को उसे पकड़ा दिया। सती को तब आश्चर्य हुआ जब कार्तिक वीरिनी की बांहों में जाते ही शांत हो गया। रानी ने कार्तिक को उसी सफेद कपड़े पर रखा और पुनः लपेट दिया। फिर उसने उसे सती की बांहों में दे दिया। उसका नन्हा-सा सिर सती के कंधे पर विश्राम कर रहा था। कार्तिक किलकारी मारकर पुनः सो गया।

ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे दक्ष के आंसुओं को बहने का कोई कारण मिल गया हो। उसने शिव को कसकर आलिंगनबद्ध कर लिया, 'मैं समस्त इतिहास में सर्वाधिक प्रसन्न व्यक्ति हूं, प्रभु! इतना प्रसन्न जितना आज तक कोई नहीं हुआ होगा।'

हल्के से मुस्कुराते हुए शिव ने सम्राट की पीठ को थपथपाया,'मैं जानता हूं, महाराज।'

दक्ष पीछे हटा और अपने आंसू पोंछे, 'सबकुछ ठीक है। नीलकंठ, हमारे परिवार में जो अशुद्ध था, आपने सब शुद्ध कर दिया। एक बार फिर से सबकुछ ठीक है।'

वीरिनी ने दक्ष को घूरा। उसकी आंखें संकुचित थीं, श्वास तेज थी। उसने अपने दांत पीसे, लेकिन चुप रही।

दिवोदास के आदमियों द्वारा बनाए जा रहे जलपोत की प्रगति का परीक्षण करने के बाद भगीरथ नदी के किनारे पर टहलता हुआ वापस आ रहा था। चूंकि देर हो चुकी थी, अतः उसने अपने अंगरक्षकों को घर भेज दिया था। आखिरकार यह काशी था, ऐसा नगर जहां सभी लोग आश्रय पाने की इच्छा रखते थे।

गलियों में मौत का सन्नाटा छाया हुआ था। सन्नाटा इतना गहरा था कि उसने अपने पीछे हुई हल्की सी चरमराहट को भी स्पष्ट सुन लिया था।

उदासीनता जताते देते हुए अयोध्या का राजकुमार चलता रहा। उसका हाथ तलवार की मूंठ पर था। कान आहट पर। कोई धीमे पग धरता तेजी से उसके पास आता जा रहा था। एक तलवार बहुत धीमे से बाहर निकाली गई। भगीरथ अचानक ही तेजी से घूमा, उसने अपना चाकू बाहर निकाला और हमलावर की ओर उछाल दिया। चाकू हमलावर के पेट में जा घुसा। प्रहार उस हमलावर को शिथिल करने के लिए पर्याप्त था। वह अत्यधिक पीड़ा में हो सकता था, लेकिन मृत नहीं।

कनखियों से भगीरथ ने एक और आकृति देखी। वह अपने दूसरे चाकू तक पहुंचा। लेकिन वह खतरा तो दीवार के पास जा गिरा था। एक छोटी तलवार उसके सीने में गड़ी हुई थी। वह मृत था।

भगीरथ ने बाएं मुड़कर देखा तो वहां नंदी था, 'कोई और है?' उसने फुसफुसाकर पूछा।

नंदी ने इंकार में सिर हिलाया।

भगीरथ तेजी से पहले हमलावर के पास पहुंचा। उसे कंधे से झिंझोड़ते हुए भगीरथ ने पूछा, 'किसने भेजा है तुम्हें?'

वह हमलावर चुप रहा।

भगीरथ ने चाकू को उस व्यक्ति के पेट में मरोड़ दिया।

'किसने?'

उस व्यक्ति के मुंह से अचानक झाग निकलने लगा। उस चूहे ने विष खा लिया था। वह कुछ सैकंड में ही मर गया।

'लानत है!' झुंझलाए हुए भगीरथ ने कहा।

नंदी ने अयोध्या के राजकुमार को देखा। उसने तलवार निकाली हुई थी और किसी भी नए हमले से दो-चार होने के लिए सावधान था।

भगीरथ ने सिर हिलाया और उठ खड़ा हुआ, 'धन्यवाद नंदी। मैं भाग्यशाली था जो आप आस-पास ही थे।'

'यह भाग्य की बात नहीं थी, राजकुमार,' नंदी ने धीमे से कहा,'यहां आपके पिता के भ्रमण के कार्यक्रम तक नीलकंठ ने मुझे आपके पीछे रहने के लिए कहा था। सच, मैंने सोचा था कि प्रभु आवश्यकता से अधिक चिंतित हो रहे हैं। कोई पिता अपने पुत्र के जीवन पर हमला नहीं करेगा। मेरा अनुमान है कि मैं गलत था।'

भगीरथ ने सिर हिलाया, 'यह मेरे पिता नहीं थे। कम से कम सीधे तौर पर तो नहीं ही।'

'सीधे तौर पर नहीं? आपके कहने का अर्थ क्या है?'

'उनके पास हिम्मत नहीं है। लेकिन वे इस बात को उजागर करते रहते हैं कि मैं उनके पक्ष में नहीं हूं। इससे स्पष्ट रूप से उनकी सभा में रहने वाले सिंहासन के प्रतिद्वंद्वी दावेदारों को बढ़ावा मिलता है। उन्हें केवल इतना करना है कि मुझे इस समीकरण से बाहर निकाल फेंकना है। ऐसा प्रतीत कराएं जैसे मेरी मृत्यु एक दुर्घटना थी।'

'यह,' नंदी ने उन मृतक हमलावरों की ओर संकेत करते हुए कहा, 'कभी भी दुर्घटना की तरह नहीं दिखेगा।'

'मैं जानता हूं। इसका अर्थ केवल इतना ही है कि वे हताश हो रहे हैं।'

'क्यों?'

'मेरे पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। मेरे विचार से उनका सोचना है कि उनके पास समय नहीं है। यदि मेरे जीवित रहते उनकी मृत्यु हो जाती है तो मैं ही सिंहासन की बागडोर संभालूंगा।'

नंदी ने सिर हिलाया।

भगीरथ ने नंदी को थपथपाया, 'मैं आपका ऋणी हूं, मित्र। सदैव के लिए कृतज्ञ। जब तक मैं जीवित हूं।'

नंदी मुस्कुराया, 'और आप लंबी आयु तक जीवित रहेंगे, राजकुमार। जब तक मैं आपके आस-पास हूं, आपको कुछ नहीं होगा। आप पर जो भी हमला करेगा, उसके और आपके बीच मैं खड़ा रहूंगा। और आपको छुपाने के लिए मेरा शरीर ही काफी है।'

अपनी भारी-भरकम कमर पर मसखरी करने के नंदी के प्रयास पर भगीरथ हंस दिया।

— ⁂ —

'क्या आपको किसी का नाम मिला? किसने उन्हें भेजा था?'

'मैं नहीं जानता, प्रभु,' भगीरथ ने कहा, 'इससे पहले कि मैं कुछ जान पाता, वे मर चुके थे।'

शिव ने आह भरी, 'मृत देह?'

'काशी पुलिस को सौंप दी गई हैं,' भगीरथ ने कहा, 'लेकिन मुझे कोई आशा नहीं है कि वे कोई सुराग प्राप्त कर सकेंगे।'

'हम्म,' शिव के मुंह से निकला।

'दूसरी बार मेरे जीवन की रक्षा करने के लिए मैं आपका ऋणी हूं, प्रभु।'

'मेरा कोई ऋण नहीं है,' शिव ने कहा। फिर नंदी की ओर मुड़कर बोला, 'धन्यवाद मित्र। वह आप हैं जो इस आभार के पात्र हैं।'

नंदी नीचे झुका, 'आपकी सेवा करना मेरे लिए सम्मान की बात है, प्रभु।'

शिव भगीरथ की ओर वापस मुड़ा, 'आप आनंदमयी से क्या कहेंगे?'

भगीरथ की त्योरी चढ़ गई, 'कुछ नहीं। मैं नहीं चाहता कि वह अनावश्यक परेशान हो। मैं ठीक हूं। किसी को भी इस बारे में जानने की आवश्यकता नहीं है।'

'क्यों?'

'क्योंकि मुझे विश्वास है कि मेरे पिता इसकी जांच करवाने का प्रयास भी नहीं करेंगे। अन्य कुलीन इसे उनकी मौन स्वीकृति के रूप में देखेंगे। वे मेरे ऊपर अधिक आक्रामक प्रहार करेंगे ना कि दुर्घटना जैसे दिखने वाले प्रहार। इस समाचार के बाहर जाने से प्रतिद्वंद्वी दावेदारों को सिवाय उकसाने के और कुछ नहीं होगा।'

'लगता है कि अनेक कुलीन आपके पीछे पड़े हैं?'

'राजसभा के आधे लोग मेरे पिता के संबंधी हैं, प्रभु। वे सभी सोचते हैं कि सिंहासन पर उनका अधिकार है।'

शिव ने गहरी श्वास ली, 'जब तक आपके पिता यहां हैं, आप अकेले मत रहिए। और आप मेरे साथ ब्रंगा की यात्रा पर आ रहे हैं, जो यहां से बहुत दूर है।'

भगीरथ ने सहमति में सिर हिलाया।

शिव ने भगीरथ के कंधे को थपथपाया, 'सुनिश्चित करें कि आप स्वयं को जीवित रखेंगे। आप मेरे लिए महत्वपूर्ण हैं।'

भगीरथ मुस्कुराया, 'मैं आपके लिए जीवित रहने का प्रयास करूंगा, प्रभु।'

शिव धीमे से मुस्कुराया। और नंदी भी।

'महाराज, मैं नहीं समझता कि इतना अधिक सोमरस चूर्ण दे देना अच्छी बात है,' शिव ने कहा।

शिव एवं दक्ष, शिव के भवन में थे। कार्तिक का जन्म हुए एक सप्ताह बीत चुका था। कृत्तिका और परिचारिकाओं के एक झुंड के साथ सती और कार्तिक बगल वाले कक्ष में सो रहे थे। कार्तिक के उपहार के रूप में दक्ष द्वारा बहुत अधिक मात्रा में सोमरस चूर्ण को देखकर शिव स्तब्ध था। दक्ष चाहते थे कि जन्म से ही प्रत्येक दिन कार्तिक को सोमरस दिया जाए ताकि वह एक शक्तिशाली, बलवान योद्धा के रूप में बड़ा हो। वे इतनी मात्रा में चूर्ण लाए थे जो कार्तिक के अठारवें जन्मदिन तब पर्याप्त होता।

'प्रभु,' दक्ष ने कहा, 'एक अत्यधिक वत्सल नाना को यह बताना कि वह अपने नाती को क्या दे सकता है या क्या नहीं, यह उचित नहीं है।'

'लेकिन, महाराज, मंदार पर्वत के विध्वंस के बाद सोमरस की आपूर्ति में अवश्य कमी आई होगी। मैं नहीं समझता कि ऐसे में मेरे बेटे को इतना सोमरस देना उचित होगा जबकि आपका पूरा साम्राज्य इससे लाभान्वित हो सकता है।'

'मुझे उसकी चिंता करने दें, प्रभु। कृपया, ना मत कहें।'

शिव ने आत्म-समर्पण कर दिया, 'मंदार पर्वत के पुनर्निर्माण की योजना कैसी चल रही है?'

'यह बहुत समय ले रहा है,' दक्ष ने अपने हाथों को उपेक्षा से हिलाते हुए कहा, 'उसके बारे में अभी भूल जाते हैं। यह इतनी सुखद घटना है। मेरा अब एक नाती है। एक संपूर्ण, स्वस्थ, सुंदर नाती जो बड़ा होकर भारत का सम्राट बनेगा!'

— ⅄ⓄƱ⇞⊛ —

काशी के नागरिकों में बच्चे के जन्म के ठीक सातवें दिन नृत्य एवं संगीत के साथ खुशी मनाने की प्रथा थी। शिव ने अपने मेजबानों की प्रथाओं का सम्मान करने का निर्णय लिया।

नृत्य प्रेक्षागृह में नीलकंठ एक राजसिंहासन पर बैठे हुए थे।

उनकी बगल में, काशी की रानी के लिए बने सिंहासन पर सोते कार्तिक को हाथों में लिए सती बैठी हुई थी। शिव और सती के बगल में दक्ष और दिलीप जैसे सम्मानित अतिथि बैठे हुए थे। काशी का राजपरिवार उनसे दूर बैठा हुआ था। साम्राज्य के राजा का उतने निम्न स्थान पर बैठना अपारंपरिक था। किंतु अथिथिग्व ने बुरा नहीं माना था।

सती शिव की ओर झुकी और फुसफुसाई, 'आपने शानदार नृत्य किया। सदैव की तरह!'

'तुमने ध्यान दिया था?' शिव ने छेड़ा।

इससे पहली शाम को, शिव ने हठ किया था कि उस आयोजन की शुरुआत वह अपने नृत्य से करेगा। दर्शकों को विश्वास नहीं हो पाया कि उन्हें नीलकंठ के नृत्य को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। और उन्होंने खड़े होकर पांच मिनट तक ताली बजाकर उनके प्रदर्शन की प्रशंसा की थी। वह अब तक का सर्वोत्तम नृत्य था। और दर्शकगण हर्षोन्माद में झूम उठे थे। लेकिन शिव ने देख लिया था कि उसके प्रदर्शन के दौरान सती का मन विचलित था, जिससे वह खीझ गया था। वह तब से परेशान थी जब से शिव ने उसे दक्ष द्वारा सोमरस लाने की बात बताई थी।

'निस्संदेह, मैंने देखा था,' सती मुस्कुराई, 'मैं थोड़ी परेशान हूं कि पिताजी इतना अधिक सोमरस दे रहे हैं। यह उचित नहीं है। यह समस्त मेलूहा के लिए है। कार्तिक के साथ इसलिए विशेष व्यवहार नहीं होना चाहिए क्योंकि वह राजपरिवार से है। यह प्रभु राम के सिद्धांतों के विरुद्ध है।'

'तो फिर अपने पिता से बात करो।'

'मैं अवश्य करूंगी। उचित समय आने पर।'

'ठीक है। लेकिन अभी आनंदमयी को देखो जब वह नृत्य करे। वह मेरी तरह क्षमा करने वालियों में से नहीं है।'

सती मुस्कुराई और उसने शिव के कंधे पर अपना सिर रख दिया और उसके बाद उस मंच की ओर देखने लगी जहां आनंदमयी धीमे-धीमे चलती हुई पहुंच चुकी थी। उसने सबको चौंका देने वाली बहुत ही छोटी धोती पहन रखी थी और उसकी चोली बहुत कसी हुई थी। जिसके कारण देखने वालों के लिए कल्पना करने योग्य कुछ भी नहीं बचा था। सती ने अपनी भौंहें उठाईं और शिव की ओर देखा। शिव मुस्कुरा रहा था।

'इस नृत्य के लिए यह उचित परिधान है,' शिव ने कहा।

सती ने सहमति में सिर हिलाया और एक फिर से मंच की ओर मुड़ गई। शिव ने गुपचुप दृष्टि से पर्वतेश्वर को देखा और मुस्कुराया। सेनापति का चेहरा अभेद्य मुखौटा था। उसका सूर्यवंशी प्रशिक्षण जाग उठा था, लेकिन उसके भींचे हुए जबड़े और भौंहों के निकट का गड्ढा धोखा दे रहा था कि उस पर कोई असर नहीं हुआ।

आशीर्वाद और प्रेरणा प्राप्त करने के लिए आनंदमयी ने अपने सिर से मंच का स्पर्श किया। पहली पंक्ति के चंद्रवंशी कसी चोली से उभर आए स्तनों के सौंदर्य को और अधिक निहारने के लिए आगे को झुके। यदि वह कोई अन्य नर्तकी होती तो दर्शकगण अब तक सीटियां बजा चुके होते। लेकिन वह स्वद्वीप की राजकुमारी थी। इसलिए वे केवल कनखियों से उसे देख रहे थे।

उसके बाद एक अन्य नर्तक मंच पर आया: उत्तंक। मगध के प्रसिद्ध दलपति की संतान उत्तंक का सैनिक काल सहसा ही समाप्त हो गया, जब चोट लगने के कारण उसके दाएं कंधे पर बहुत बड़ा कूबड़ बन गया था। अधिकतर लोगों की तरह ही वह भी जीवन से तंग आकर काशी में शरणार्थी बन गया था, जहां उसने नृत्य की सुंदरता का ज्ञान पाया। लेकिन उसी चोट ने जिसने उसके सैनिक जीवन को नष्ट कर दिया था, उसके नृत्य जीवन में भी बाधा डाल दी थी। उसके कंधे का चलन कम हो पाता था, जो उसे एक अच्छा नर्तक बनने में बाधक था। लोगों ने सुना था कि सच्चे दिल वाली आनंदमयी को उस बेबस उत्तंक के लिए दया आ गई थी और उसे वह अपना जोड़ीदार बनाने के लिए सहमत हो गई थी।

लेकिन लोगों में इस प्रकार की भावना भी थी कि यह सहानुभूति अनुपयुक्त थी। बहुत संभव था कि उत्तंक मंच पर अपमानित होगा। जिस नृत्य-नाटिका के प्रदर्शन की बात कही गई थी वह थी सप्तर्षि विश्वामित्र एवं अप्सरा मेनका के मध्य होने वाले प्रेम-प्रसंग के क्षणों का अभिनय। उत्तंक इस नृत्य के लिए अपेक्षित उतने कठिन चलनों को कैसे कर पाएगा?

इस प्रकार के अनुमानों से अनजान आनंदमयी ने उत्तंक का झुककर अभिवादन किया। उसने भी प्रत्युत्तर में झुककर अभिवादन किया। उसके बाद वे एक-दूसरे के निकट आ गए। बहुत अधिक निकट जो नृत्य के प्रारंभ करने की एक मानकीय दूरी से बहुत अधिक थी। संभवतया एक आवश्यक समझौता था क्योंकि उत्तंक का हाथ उतनी दूरी तक नहीं पहुंच सकता था। शिव ने एक बार फिर से पर्वतेश्वर की ओर मुड़कर देखा। उसने अपनी आंखें थोड़ी संकुचित कीं और लगा कि वह अपनी सांसें रोके हुए था।

क्या वह ईर्ष्या कर रहा है?

अयोध्या की राजकुमारी ने नृत्य-निर्देशन बहुत ही अच्छी तरह से किया था। उसने इस विशेष अभिनय के लिए प्राचीन नियमों को थोड़ा बदल दिया था ताकि उत्तंक के कम चलने वाले हाथ से नृत्य के अभिनय में कोई परेशानी ना हो। लेकिन इस परिवर्तन ने इस चीज को भी सुनिश्चित कर दिया था कि नृत्य अभिनय के दौरान उन्हें एक-दूसरे के निकट ही रहना था जो गहन कामुकता की रचना कर रहा था। दर्शकों ने पहले तो स्तब्ध होकर देखा। उनके जबड़े खुले हुए थे। एक पूर्व सैनिक को राजकुमारी आनंदमयी को इतने निकट स्पर्श करने की अनुमति कैसे दी जा सकती थी? लेकिन उसके बाद वे उस अभिनय की गुणवत्ता से खिंचे चले गए थे। विश्वामित्र और मेनका का नृत्य आज तक किसी ने भी इससे पहले इतनी उन्मुक्त कामुकता से भरा नहीं देखा था।

जैसे ही नृत्य समाप्त हुआ सारे दर्शकगण तालियां बजाते हुए और सीटियां मारते हुए खड़े हो गए। वह सचमुच ही विलक्षण प्रदर्शन था। आनंदमयी नीचे झुकी और उसके बाद उसने उत्तंक की ओर संकेत करते हुए सारा श्रेय उस शारीरिक रूप से विकृत पूर्व सैनिक को दे दिया। उत्तंक ने जो प्रशंसा पाई, उससे वह बहुत खुश हुआ। पहली बार उसे लग रहा था कि उसके जीवन का भी कोई अर्थ था। उपस्थित लोगों में पर्वतेश्वर एकमात्र व्यक्ति था, जिसने ताली नहीं बजाई।

— ⅄ⵁ꒯✢⊛ —

दूसरे दिन पूर्वक के साथ पर्वतेश्वर काशी के राजभवन में निर्मित अस्थायी सैनिक प्रशिक्षण स्थल में मुक्केबाजी का अभ्यास कर रहा था। पूर्व दलपति अपनी पुरानी शक्ति को पुनः प्राप्त कर रहा था। दृष्टि के अभाव पर भी पूर्वक अपनी सुनने की शक्ति से पर्वतेश्वर के प्रहारों को पहचान पा रहा था और बहुत ही शानदार ढंग से प्रतिक्रिया कर रहा था।

पर्वतेश्वर बहुत खुश था।

मुक्केबाजी को रोकते हुए, पर्वतेश्वर द्रपकु की ओर मुड़ा और उसने अपना सिर हिलाया। उसके बाद वह पूर्वक की ओर मुड़ा और उसने सिर को थोड़ा झुकाकर मेलूहा परंपरा में अभिवादन किया। पूर्वक ने भी अपनी मुट्ठी से सीने पर मारा और नीचे झुक गया। वह पर्वतेश्वर की तुलना में बहुत नीचे झुका और फिर उसने अभिवादन किया। वह पर्वतेश्वर की विख्यात वीरता का सम्मान करता था।

'नीलकंठ के साथ यात्रा करने वाले सूर्यवंशी दल में आपको सम्मिलित करना सम्मान की बात होगी, दलपति पूर्वक,' पर्वतेश्वर ने कहा।

पूर्वक मुस्कुराया। दशकों में यह पहली बार था जब उसे दलपति कहा गया था, 'सम्मान मेरा हुआ है, सेनापति। और चंद्रवंशियों के दल में मुझे ना भेजने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे नहीं लगता कि मैं उनकी अक्षमता को झेल पाऊंगा!'

कक्ष के एक किनारे खड़ा भगीरथ अपनी हंसी नहीं रोक पाया,'हम लोग देखेंगे कि नीलकंठ के लिए कौन अधिक श्रम करता है, पूर्वक जी! भूलें नहीं कि अभी आप चंद्रवंशी क्षेत्राधिकार में हैं। यहां युद्ध दूसरे तरीके से लड़ा जाता है।'

पूर्वक ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसका प्रशिक्षण किसी राजसी व्यक्ति को प्रत्युत्तर देने से रोकता था। उसने सहमति में सिर हिला दिया।

ठीक उसी समय आनंदमयी ने कक्ष में प्रवेश किया। भगीरथ मुस्कुराया और उसने पर्वतेश्वर को एक तीक्ष्ण दृष्टि से देखने के बाद आनंदमयी की ओर देखा। वह एक चमकीली हरी चोली और छोटी सी धोती पहने हुए थी। वह रंग इतना चटक था कि आनंदमयी जैसी एक सुंदर और आत्मविश्वासी स्त्री ही उसे पहन सकती थी। उसे संदेह था कि पर्वतेश्वर का ध्यान आकर्षित करने के लिए आनंदमयी दिन-प्रतिदिन निर्लज्ज बनती जा रही थी। उसने अपनी बहन को इतना व्याकुल कभी नहीं देखा था। वह निर्णय नहीं कर पा रहा था कि आनंदमयी से बात करे या फिर पर्वतेश्वर से, अलग से, पूछे कि आखिर वह क्या चाहता है।

भाई की ओर दूर से अभिवादन करते हुए आनंदमयी सीधे पर्वतेश्वर के पास गई। उत्तंक उसके पीछे था। वह पर्वतेश्वर के अत्यधिक निकट आ गई, जिसके कारण उसे पीछे हट जाना पड़ा,'मेरे सबसे प्यारे मेलूहा के सेनापति कैसे हैं,' उसने अपनी आंखों को तिरछाकर इशारा करते

हुए पूछा।

'मेलूहा के अंदर अलग-अलग राज्य नहीं हैं, राजकुमारी। हमारे पास केवल एक सेना है,' पर्वतेश्वर ने कहा।

आनंदमयी की भृकुटि तन गई।

'इसका अर्थ है कि किसी एक को पसंद करने का अवसर नहीं है क्योंकि मेलूहा का केवल एक ही सेनापति है।'

'मैं मानती हूं। पर्वतेश्वर केवल एक है...'

पर्वतेश्वर लाल हो गया। द्रपकु ने अरुचि से मुंह बनाया।

'कोई ऐसी सेवा है जो मैं आपके लिए कर सकता हूं, राजकुमारी,' पर्वतेश्वर जल्द से जल्द इस वार्तालाप को समाप्त करने का तरीका ढूंढ़ना चाहता था।

'मैंने सोचा था कि आप कभी नहीं पूछेंगे,' उत्तंक की ओर संकेत करते हुए आनंदमयी मुस्कुराई, 'यह नवयुवक मगध से आया हुआ एक शरणार्थी है। इसका नाम उत्तंक है। यह सदैव ही एक योद्धा बनना चाहता था। लेकिन घुड़सवारी में चोट लग जाने के कारण इसका कंधा चोटग्रस्त हो गया। मूर्खतापूर्ण गुणों से आसक्त राजकुमार सुर्पदमन ने इसे सेना से निकाल दिया। अधिकतर दुखी आत्माओं की तरह यह भी काशी आ गया। मुझे विश्वास है कि आपने कल इसका नृत्य देखा होगा। मैं चाहती हूं कि आप इसे नीलकंठ के दल में शामिल कर लें।'

'एक नर्तक के रूप में,' हक्के-बक्के पर्वतेश्वर ने पूछा।

'क्या आप जान-बूझकर मूर्ख बनना चाहते हैं या फिर यह मात्र एक अभिनय है?'

पर्वतेश्वर की त्योरी चढ़ गई।

'स्पष्ट है कि नर्तक के रूप में नहीं,' रोष में कंधे सिकोड़ते हुए आनंदमयी ने कहा, 'एक सैनिक के रूप में।'

पर्वतेश्वर उत्तंक की ओर मुड़ा। उसके पैर खुले हुए थे। उसके हाथ हथियार के निकट थे। वह युद्ध के लिए तैयार था। स्पष्ट रूप से उत्तंक को अच्छा प्रशिक्षण दिया गया था। उसके बाद पर्वतेश्वर की आंखें उसके कंधे पर आकर ठहर गईं। चोट के कारण कूबड़ बन जाने से उसके दाहिने हाथ को चलाने में कठिनाई थी। 'तुम लंबे आदमियों के साथ युद्ध नहीं कर पाओगे।'

'मैं मर जाऊंगा लेकिन पीछे नहीं हटूंगा, सेनापति,' उत्तंक ने कहा।

'ऐसे सैनिकों का हमारे पास कोई काम नहीं जो मर जाते हैं,'पर्वतेश्वर ने कहा, 'मुझे ऐसे सैनिकों की आवश्यकता है जो दूसरों को मारते हैं और जीवित रहते हैं। तुम नृत्य की साधना में ही क्यों नहीं रम जाते हो?'

'आप यह कहना चाह रहे हैं कि नर्तक योद्धा नहीं हो सकते?'

आनंदमयी ने एतराज किया।

पर्वतेश्वर ने आंखें तरेरकर देखा। प्रभु नीलकंठ एक विख्यात नर्तक थे और साथ ही प्रचंड योद्धा भी। वह पीछे मुड़ा और उसने लकड़ी से बनी दो तलवारें और ढालें उठा लीं। एक उसने उत्तंक की ओर उछाल दी। उसने अपनी तलवार को पकड़ा, ढाल को ठीक किया और मगधवासी को संकेत किया कि वह युद्ध के लिए तैयार हो जाए।

'आप उसके साथ लड़ने वाले हैं?' आनंदमयी ने पूछा जैसे उसे आघात लगा हो। वह जानती थी कि उत्तंक पर्वतेश्वर के सामने कुछ भी नहीं था, 'आप कुछ समझते क्यों नहीं? वह हमारे साथ ऐसे ही क्यों नहीं आ सकता?'

भगीरथ ने आनंदमयी को पीछे से टोका और वह चुप हो गई। भगीरथ ने उसे पीछे की ओर खींच लिया। पूर्वक और द्रपकु भी पीछे हट गए।

'तुम्हारे पास अब भी विकल्प है, सैनिक,' पर्वतेश्वर ने कहा,'पीछे हट जाओ।'

'इससे बेहतर होगा कि मैं उठ जाऊं, सेनापति,' उत्तंक ने कहा।

पर्वतेश्वर ने अपनी आंखें संकुचित कीं। उसे उत्तंक की भावना पसंद आई। लेकिन अब उसे उसकी क्षमता का परीक्षण करना था। युद्धभूमि में क्षमता के बिना भावना सामान्यतया एक दर्दनाक मृत्यु की ओर ले जाती है।

पर्वतेश्वर धीरे-धीरे आगे बढ़ा। वह उत्तंक के प्रहार की आशा कर रहा था। लेकिन वह व्यक्ति खड़ा रहा था। पर्वतेश्वर ने महसूस कर लिया कि वह मगधवासी सुरक्षात्मक नीति अपना रहा था। उत्तंक के कंधे की चोट उसे ऊपर की ओर ऊंचे प्रहार से प्रतिबंधित करती थी जो पर्वतेश्वर के समान ऊंचे व्यक्ति पर प्रहार करने के लिए आवश्यक था।

सेनापति ने हमला बोल दिया। वह पूरी तरह अपारंपरिक हमला था। अपनी ढाल को मध्यम ऊंचाई पर रखते हुए वह केवल ऊपर की दिशा में वार करता जा रहा था। उत्तंक को पीछे की ओर हटना पड़ रहा था। वह अपनी ढाल को बाएं हाथ से ऊंचा पकड़े हुए था ताकि उन शक्तिशाली प्रहारों से स्वयं को सुरक्षित रख सके। यदि वह अपने दाहिने हाथ को ऊंचा उठा पाता तो वह पर्वतेश्वर के खुले सिर एवं कंधे पर प्रहार कर सकता था। लेकिन वह ऐसा नहीं कर पा रहा था। इसलिए वह सीने की ऊंचाई पर ही वार करता जा रहा था। पर्वतेश्वर आसानी से अपनी ढाल से उन प्रहारों का बचाव करता जा रहा था। धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से पर्वतेश्वर उत्तंक को दीवार की ओर ढकेलता जा रहा था। कुछ ही क्षणों में उत्तंक के पास भागने का सभी मार्ग बंद हो जाने वाले थे।

आनंदमयी जहां एक ओर खुश थी कि मेलूहावासी सेनापति को ईर्ष्या हो रही है, वहीं दूसरी ओर उत्तंक के बारे में चिंतित थी, 'वे कुछ दया क्यों नहीं दिखा रहे?'

भगीरथ अपनी बहन की ओर मुड़ा, 'पर्वतेश्वर सही कर रहे हैं। युद्ध के दौरान शत्रु सहानुभूति नहीं दिखाता है।'

उसी समय उत्तंक की पीठ दीवार से टकरा गई। उसकी ढाल हिली। तभी पर्वतेश्वर ने दाईं ओर से तलवार चलाई और उत्तंक के सीने पर जोरदार प्रहार किया।

'वास्तविक तलवार के साथ यह मृत्यु का प्रहार होता,' पर्वतेश्वर फुसफुसाया।

उत्तंक ने सहमति में सिर हिलाया। स्पष्ट रूप से पीड़ा होने के बावजूद उसने अपने सीने को सहलाने की कोशिश नहीं की।

पर्वतेश्वर शांति से चहलकदमी करता हुआ कक्ष के मध्य में पहुंचा और जोर से उसे पुकारा, 'एक बार फिर?'

उत्तंक किसी प्रकार पैर घसीटता हुआ तैयारी की स्थिति में पहुंचा। पर्वतेश्वर ने एक बार फिर से हमला कर दिया। पुनः वही परिणाम।

उत्तंक को पीड़ा में देखकर आनंदमयी की सिसकारी निकल गई। वह आगे बढ़ने ही वाली थी, लेकिन भगीरथ ने उसे रोक लिया। वह भी चिंतित था। लेकिन उसे मालूम था कि हस्तक्षेप करना उचित नहीं है। ऐसा करना सेनापति का और उससे लड़ने का प्रयास कर रहे उस मूर्ख सैनिक का अपमान होगा।

'तुम उस आदमी को यहां क्यों लाई?' भगीरथ ने पूछा।

'उत्तंक सुंदर नृत्य करता है। मैंने सोचा था कि ब्रंगा राज्य की यात्रा के दौरान उसके होने से थोड़ी मस्ती रहेगी।'

भगीरथ आंखें सिकोड़ते हुए बहन की ओर मुड़ा, 'यह पूरा सत्य नहीं है। मैं जानता हूं कि तुम क्या कर रही हो। और यह उचित नहीं है।'

'प्रेम और युद्ध में सबकुछ उचित है, भगीरथ। लेकिन मैं सचमुच ही नहीं चाहती कि उत्तंक को चोट पहुंचे।'

'तो फिर तुम्हें उसे यहां लाना ही नहीं चाहिए था।' पर्वतेश्वर पुनः मध्य में आ चुका था, 'फिर से?'

उत्तंक लड़खड़ाते हुए पीछे हटा। वह प्रकट रूप से पीड़ा में था। उसका चेहरा उसके बढ़ते गुस्से और निराशा को प्रकट कर रहा था। उधर दूसरी ओर पर्वतेश्वर चिंतित था। उसे डर था कि अगर एक और बार द्वंद्वयुद्ध हुआ तो वह उस सैनिक के सीने की हड्डी तोड़ बैठेगा। लेकिन उसे इस मूर्खतापूर्ण दुस्साहस को रोकना ही था। यदि यह वास्तविक युद्ध हुआ होता तो उत्तंक अब तक दो बार मर चुका होता।

उसने उत्तंक पर पुनः प्रहार किया। उसे तब आश्चर्य हुआ जब उत्तंक एक ओर हट गया जिसके कारण पर्वतेश्वर अपनी ही गति में आगे की ओर बढ़ता चला गया। उसके बाद उत्तंक मुड़ा और उसने आक्रामक बनकर प्रहार किया। उसने बाईं ओर तलवार चलाई, जिसके कारण उसकी ढाल नीचे की ओर चली गई और उसका धड़ खुला रह गया। पर्वतेश्वर ने अपनी तलवार आगे की ओर करके प्रहार कर दिया। उस प्रहार से बचने के लिए उत्तंक दाईं ओर मुड़ गया और एक गति में उसका दायां हाथ घूम गया। इसके कारण उसकी तलवार उसके घायल

कंधे की ऊंचाई से अधिक हो गई, जैसा सामान्यतया संभव नहीं था। इस प्रकार उसने पर्वतेश्वर के गले पर चोट कर दी। वह प्रहार घातक था, यदि वह अभ्यास वाली तलवार ना होकर असली तलवार होती तो।

पर्वतेश्वर स्तब्ध खड़ा रह गया। उत्तंक ने ऐसा कैसे कर लिया था?

उत्तंक स्वयं भी स्तब्ध था। चोट लगने के बाद से आज तक उसने इतनी ऊंचाई तक कभी भी प्रहार नहीं किया था। कभी नहीं।

पर्वतेश्वर के मुख पर एक हल्की मुस्कान थी। उत्तंक अपनी सुरक्षात्मक शैली को छोड़ आक्रामक बन गया था और इसलिए जीत गया था।

'ढाल के साथ अपनी आसक्ति को छोड़ दो,' पर्वतेश्वर ने कहा,'जब तुम कड़ा प्रहार करते हो, तो तुम्हारे पास प्राण हरण करने की क्षमता है।'

उत्तंक अब भी हांफ रहा था। वह हल्के से मुस्कुराया।

'हे बहादुर सैनिक, तुम्हारा मेलूहा की सेना में स्वागत है।'

उत्तंक ने तत्काल ही अपनी तलवार गिरा दी और पर्वतेश्वर के चरणों में गिर गया। उसकी आंखें नम थीं।

पर्वतेश्वर ने उत्तंक को उठाकर खड़ा किया, 'तुम अब मेलूहा के एक सैनिक हो। और मेरे सैनिक रोते नहीं हैं। मेलूहा के सैनिकों की तरह व्यवहार करो।'

भगीरथ ने लंबी श्वास ली और आनंदमयी की ओर मुड़ा, 'इस बार तुम भाग्यशाली रहीं।'

आनंदम ने सहमति में धीरे से अपना सिर हिलाया। किंतु उसका हृदय बहुत तेजी से आगे की योजना की ओर भागता चला जा रहा था। पर्वतेश्वर को जो प्रभावित करता है वह है सैन्य वीरता। आनंदमयी ने पर्वतेश्वर को रिझाने के लिए एक नई योजना बना ली थी।

— ⁂ —

'शिव सही हैं, पिताजी,' सती ने कहा, 'आप इतना अधिक सोमरस नहीं दे सकते हैं। मेलूहा को इसकी आवश्यकता है।'

कार्तिक के जन्म के पश्चात दस दिन बीत चुके थे। सम्राट दिलीप और उनके अनुयायियों के दल अयोध्या के लिए रवाना हो चुके थे। शिव गंगा के तट पर जलपोत के निर्माण को देखने के लिए गया हुआ था। दक्ष और वीरिनी सती के व्यक्तिगत कक्ष में बैठे हुए थे। मां गर्व से कार्तिक के पलने को झुला रही थी।

वीरिनी ने दक्ष की ओर देखा लेकिन कुछ कहा नहीं।

'मेलूहा की चिंता मुझ पर छोड़ दो, पुत्री,' दक्ष ने कहा, 'तुम केवल कार्तिक की देखभाल करो।'

सती को इस प्रकार की कृपादृष्टि वाले बोलों से चिढ़ थी,'पिताजी, निस्संदेह, मैं कार्तिक के बारे में सोच रही हूं। मैं उसकी मां हूं। लेकिन मेलूहा के प्रति अपने कर्तव्यों को नहीं भूल सकती।'

'मेरी बच्ची,' दक्ष मुस्कुराया, 'मेलूहा सुरक्षित है। इतना सुरक्षित जितना पहले कभी नहीं था। मैं नहीं समझता कि अपने लोगों की देखभाल करने की मेरी योग्यता पर तुम्हें संदेह करने की कोई आवश्यकता है।'

'पिताजी, मैं आपकी योग्यता पर संदेह नहीं कर रही। या आपकी निष्ठा पर। मैं बस इतना ही कहना चाह रही हूं कि कार्तिक द्वारा सोमरस का इतना हिस्सा प्राप्त करना गलत है जो वास्तव में मेलूहा के लोगों का अधिकार है। मुझे विश्वास है कि मंदार पर्वत के विध्वंस के बाद सोमरस की अत्यधिक कमी हो चुकी है। फिर मेरे पुत्र को इतना क्यों देना? केवल इसलिए क्योंकि वह सम्राट का नाती है? यह प्रभु राम के नियमों के विरुद्ध है।'

दक्ष जोर से हंसा, 'मेरी प्यारी पुत्री, प्रभु राम के नियम यह कहीं नहीं कहते हैं कि एक सम्राट आपने नाती को सोमरस चूर्ण नहीं दे सकते हैं।'

'निस्संदेह बिल्कुल वैसी ही शब्दावली नहीं होगी, पिताजी,' सती ने झुंझलाकर तर्क किया, 'और यह शब्दों की बात नहीं है। प्रभु राम ने जो सिद्धांत बनाए थे यह उसके बारे में है। एक सम्राट को अपने परिवार के पहले अपनी प्रजा का ध्यान करना चाहिए। हम लोग उस सिद्धांत

का पालन नहीं कर रहे हैं।'

'तुम्हारे कहने का क्या अर्थ है कि हम उस सिद्धांत का पालन नहीं कर रहे हैं?' क्रोधित होते हुए दक्ष ने पूछा, 'क्या तुम मुझे नियमों का उल्लंघन करने वाला बता रही हो?'

'पिताजी, कृपया अपने स्वर को धीमा रखें। कार्तिक जाग जाएगा। और यदि आप कार्तिक को एक सामान्य मेलूहावासी की तुलना में अधिक पसंद कर रहे हैं तो हां, आप प्रभु राम की नियमों का उल्लंघन कर रहे हैं।'

वीरिनी ने घबराकर कहा, 'कृपा करें...'

वीरिनी के आग्रह को अनसुना करते हुए दक्ष ने जोर से कहा,'मैं प्रभु राम की नीतियों का उल्लंघन नहीं कर रहा हूं!'

'हां, आप कर रहे हैं,' सती ने कहा, 'क्या आपके पास सूर्यवंशियों के लिए पर्याप्त मात्रा में सोमरस उपलब्ध है? और कार्तिक को एक अन्य कम सौभाग्यशाली मेलूहावासी की तुलना में अधिक लाभ नहीं पहुंच रहा है? जब तक कि आप ऐसा वचन नहीं देते, यह सोमरस यहीं पड़ा-पड़ा सड़ जाएगा। मैं इसे किसी को भी कार्तिक को देने नहीं दूंगी।'

'तुम अपने ही बेटे को चोट पहुंचाओगी?' दक्ष ने आंखें तरेरकर सती को देखने से पहले अपने सोते हुए नाती को एक झलक देखकर कहा।

'कार्तिक मेरा बेटा है। वह दूसरों की कीमत पर लाभ उठाना पसंद नहीं करेगा। मैं उसे सिखाऊंगी कि *राजधर्म* क्या होता है।'

उनकी अपनी पुत्री ही उन पर दोषारोपण कर रही थी कि वे अपने राजधर्म का पालन नहीं कर रहे हैं। दक्ष गुस्से से फट पड़ा और उसने चिल्लाते हुए कहा, 'मैंने अपने राजधर्म की व्यवस्था कर रखी है!'

कार्तिक रोता हुआ जग पड़ा। सती खड़ी हुई और उसने कार्तिक को अपनी गोद में उठा लिया जो अपनी मां की जानी-पहचानी सुगंध पाकर जल्दी ही शांत हो गया। सती अपने पिता की ओर मुड़ी और उन्हें तीक्ष्ण दृष्टि से देखा।

'मैं तुम्हें यह बताना नहीं चाहता था,' दक्ष ने कहा, 'लेकिन चूंकि तुम कार्तिक को सोमरस से वंचित रखना चाहती हो तो तुम्हें बता दूं कि सोमरस के उत्पादन का एक अन्य उद्यम अस्तित्व में है। महर्षि भृगु ने कई वर्षों पहले ही उसे स्थापित करने का आदेश दिया था। वह इसलिए बनाया गया था कि यदि मंदार पर्वत नहीं रहता, तो भी सोमरस की आपूर्ति सुचारु रूप से होती रहे। हमने इसे गोपनीय रखा था क्योंकि हमारे मध्य अनेक देशद्रोही मौजूद हैं।'

सती ने सदमे की स्थिति में अपने पिता को एकटक देखा। वीरिनी अपना सिर पकड़े हुए थी।

'इस प्रकार मेरी प्यारी पुत्री,' दक्ष ने व्यंग्य से कहा, 'मैंने अपने राजधर्म का पालन किया है। समस्त मेलूहा के लिए सैंकड़ों सालों तक चल सकने वाली मात्रा में सोमरस उपलब्ध है। अब तुम ईश्वर के इस पेय को कार्तिक को तब तक पिलाती रहो जब तक कि वह अठारह साल का नहीं हो जाता। वह इतिहास में सबसे महान व्यक्ति के रूप में विख्यात होगा।'

सती ने कुछ नहीं कहा। वह सोमरस के एक गोपनीय उद्यम के इस समाचार के सदमे से उबर नहीं पाई थी। उसके मन में सैंकड़ों प्रश्न उमड़ रहे थे।

'क्या तुमने मेरी बात सुनी?' दक्ष ने पूछा, 'तुम कार्तिक को प्रतिदिन सोमरस दोगी। प्रतिदिन!'

सती ने सहमति में सिर हिलाया।

शिव नदी के सूखे हुए तट पर खड़ा था, जहां ब्रंगावालों ने अस्थायी कार्यशाला बनाई हुई थी। वहां पांच जलयानों का निर्माण कार्य चल रहा था। मेलूहा के समुद्री बंदरगाह करछप पर बनाए जा रहे विशालकाय जलयानों को बनते शिव ने देखा था, लेकिन ब्रंगावालों द्वारा बनाए जा रहे उस पूरी तरह से भिन्न प्रकार के जलयान को देखकर वह विस्मित था। और पर्वतेश्वर भी।

वे दोनों ही एक साथ लकड़ी से निर्मित उस विशाल चबूतरे पर टहल रहे थे, जिस पर वह जलयान रखा हुआ था। स्वद्वीपवासियों के जलयानों की तुलना में उसका आकार एवं उसकी संरचना अति उच्च कोटि की थी। वे लगभग मेलूहावासियों के जलयान के आकार के थे। लेकिन जो अंतर था, वह था जलयान के तल में बनी हुई पेंदी। पानी के नीचे पेंदी को अत्यधिक संकरा बनाया गया था जो नीचे की ओर

दो से तीन मीटर तक गई हुई थी।

'इसका क्या अर्थ हो सकता है, पर्वतेश्वर?' शिव ने पूछा।

'मैं नहीं जानता, प्रभु,' पर्वतेश्वर ने कहा, 'आज तक मैंने जितने भी जलयान देखे हैं, यह उन सबसे विचित्र है।'

'आप सोचते हैं कि यह पानी में जलयान को तेज चलने में सहायता करता है?'

'मैं कुछ निश्चित रूप से नहीं कह सकता। लेकिन क्या यह जलयान की स्थिरता को कम नहीं कर देता है?'

'इसके ऊपर चढ़ाया गया यह अतिरिक्त भार इसे वजनी बना देगा,' शिव ने धातु की चादरों को स्पर्श करते हुए कहा जो लकड़ी में कीलों की सहायता से टांके गए थे, 'क्या यह वही विचित्र धातु है जिसे आपके लोगों ने अभी हाल ही में ढूंढ़ी थी?'

'जी हां, प्रभु। यह लोहे के समान ही प्रतीत होती है।'

'तो फिर इसका भारीपन इसकी स्थिरता को बढ़ा देता है।'

'लेकिन यह भार जलयान की गति को भी कम कर देगा।'

'हां, यह बात तो है।'

'ना जाने ये विचित्र खांचे किसलिए बनाए गए हैं?' पर्वतेश्वर ने उन गहरे खांचों पर हाथ फेरते हुए पूछा, जो पेंदी के बढ़े हुए हिस्से में धातु की चादरों पर हर जगह बने हुए थे।

'या फिर इन खूंटियों को देखें,' शिव ने अनेक खूंटियों की ओर देखा जो उन खांचों के लगभग दो मीटर ऊपर की ओर हर जगह बनी हुई थीं।

ठीक उसी समय आयुर्वती के साथ दिवोदास वहां आ पहुंचा। दो पालियों में दिनभर उस कड़ी धूप में काम करने से ब्रंगावाले थककर चूर हुए जा रहे थे। दिवोदास ने आयुर्वती से सहायता करने की मांग की थी। आयुर्वती ने खुशी-खुशी ब्रंगावालों के लिए अपने दल के सदस्यों द्वारा तैयार किया हुआ ऊर्जा प्रदायक पेय दिया था।

'प्रभु,' दिवोदास ने मुस्कुराते हुए कहा, 'देवी आयुर्वती अत्यधिक निपुण हैं। उनकी औषधि को पीने से शुद्ध ऊर्जा ग्रहण करने के जैसा लगता है। पिछले कुछ दिनों में मेरे मजदूरों के काम करने की क्षमता दोगुनी हो गई है।'

शर्माती हुई आयुर्वती लाल हो गई, 'नहीं, नहीं, यह कुछ भी नहीं है।'

'आप सूर्यवंशियों के साथ ऐसा क्या है जो आप लोग प्रशंसा नहीं सुन सकते?' दिवोदास ने पूछा।

शिव और आयुर्वती जोर से हंस पड़े। पर्वतेश्वर को इसमें हंसने वाली कोई बात नहीं लगी, 'प्रभु राम ने कहा था कि विनम्रता ही महान व्यक्तियों की पहचान है। यदि हम अपनी विनम्रता भूल जाते हैं जो हम प्रभु राम का अनादर करते हैं।'

'पर्वतेश्वर, ऐसा मत समझिए कि दिवोदास जो कह रहा था उसमें कुछ भी ऐसा था जिससे प्रभु राम का अनादर हो,' आयुर्वती ने कहा, 'हम सभी प्रभु राम का आदर करते हैं। मेरे विचार से दिवोदास का आशय था कि हमें अपने जीवन को थोड़ा और अधिक उन्मुक्त हो जीना चाहिए। उसमें कोई बुराई नहीं है!'

'ऐसा है,' शिव ने विषय को बदलते हुए कहा, 'कि मुझे इस जलयान के तल के इन विचित्र अतिरिक्त बढ़े हुए हिस्से के बारे में जानने में अधिक रुचि है। सबसे पहली बात तो यह है कि इसकी संरचना करना ही बहुत कठिन कार्य होगा। आपको भार एवं आकार को बिल्कुल सही रखना होगा अन्यथा जलयान नहीं टिकेगा। इसलिए मुझे आपके अभियंताओं की प्रशंसा करनी पड़ेगी।'

'मुझे बड़ाई स्वीकारने में कोई समस्या नहीं है, प्रभु,' दिवोदास मुस्कुराया, 'मेरे अभियंता शानदार हैं।'

शिव ने मुस्कुराते हुए कहा, 'अवश्य वे शानदार हैं। लेकिन इस विस्तार का उद्देश्य क्या है? यह क्या काम करता है?'

'यह तालों को खोलता है, प्रभु।'

'क्या?'

'यह एक चाबी है। जब आप ब्रंगा के द्वारों पर पहुंचेंगे तो आप देखेंगे कि यह कैसे काम करता है।'

शिव ने त्योरी चढ़ा ली।

'इसके अभाव में कोई भी जलयान ब्रंगा की भूमि में प्रवेश नहीं कर सकता है। वह ध्वस्त हो जाएगा।'

'विशालकाय गंगा पर द्वार?' पर्वतेश्वर ने पूछा, 'मैंने सोचा था कि यह एक मिथक है। मैं कल्पना नहीं कर सकता कि इस आकार एवं प्रवाह वाली नदी के आर-पार द्वार कैसे बनाया जा सकता है।'

दिवोदास मुस्कुराया, 'मिथक से वास्तविक निर्माण करने के लिए आपको विख्यात अभियंताओं की आवश्यकता होती है।'

'तो वह द्वार कैसे काम करता है?' शिव ने पूछा।

'अच्छा यही रहेगा कि आप उसे काम करते देखें, प्रभु,' दिवोदास ने कहा, 'वैसी भव्य संरचनाओं के वर्णन नहीं किए जा सकते। वे मात्र देखे जा सकते हैं।'

ठीक उसी समय एक स्त्री अपने एक महीने के बच्चे को गोद में लिए वहां आई। वह ब्रंगा की पुजारिन थी। वही स्त्री जिसने भगीरथ को ब्रंगा के भवन में हमला करने से रोका था।

शिव ने उस बच्चे को देखा और मुस्कुराया, 'कितना प्यारा बच्चा है!'

'वह मेरी बेटी है, प्रभु,' दिवोदास ने कहा, 'और यह यशिनी है, मेरी पत्नी।'

यशिनी शिव के चरण स्पर्श करने के लिए झुकी और उसके बाद उसने अपनी बेटी को वहीं रख दिया। शिव तत्काल ही झुका और उसने उस बच्ची को उठा लिया, 'इसका नाम क्या है?'

'देवयानी, प्रभु,' याशिनी ने कहा।

शिव मुस्कुराया, 'इसका नाम प्रसिद्ध आचार्य शुक्र की पुत्री के नाम पर रखा गया है?'

यशिनी ने सहमति में सिर हिलाया, 'जी हां, प्रभु।'

'यह बहुत ही सुंदर नाम है। जब यह बड़ी होगी तो मेरा विश्वास है कि यह विश्व को अपना महान ज्ञान बांटेगी,' शिव ने कहा और उस बच्ची को यशिनी को सौंप दिया।

'अपने बच्चों के व्यावसायिक जीवन के बारे में सपना देखना तो हम ब्रंगा वालों के लिए बहुत महत्वाकांक्षी है, प्रभु,' यशिनी ने कहा। 'हम लोग बस इतनी ही आशा कर सकते हैं कि वे भविष्य को देखने के लिए जीवित रहें।'

शिव ने सहानुभूति में सिर हिलाया, 'जब तक मैं इसे बदल नहीं देता, मैं नहीं रुकने वाला, यशिनी।'

'धन्यवाद, प्रभु,' दिवोदास ने कहा, 'मैं जानता हूं कि आप सफल होंगे। हम अपने जीवन की परवाह नहीं करते। लेकिन हमें अपने बच्चों को सुरक्षित रखना है। जब आप सफल होंगे तो हम सदैव के लिए आपके कृतज्ञ हो जाएंगे।'

'लेकिन दिवोदास,' आयुर्वती ने बीच में ही टोका, 'स्वयं प्रभु भी तुम्हारे कृतज्ञ हैं।'

शिव और दिवोदास दोनों ही आयुर्वती की ओर मुड़े। दोनों ही चकित थे।

'क्यों?' दिवोदास ने पूछा।

'तुम्हारी औषधि ने कार्तिक के जीवन की रक्षा की है,' आयुर्वती ने वर्णन किया।

'ये आप क्या कह रही हैं?'

'ऐसा है कि कई बार गर्भ में नाभि रज्जु शिशु के गर्दन में लिपट जाती है। कुछ मामलों में शिशु जन्म तक की यात्रा नहीं कर पाता। उसका दम घुट जाता है और वह मर जाता है। मैं निश्चित तौर पर नहीं बता सकती क्योंकि मैं वहां नहीं थी, लेकिन मुझे लगता है कि राजकुमारी सती के प्रथम शिशु के साथ भी संभवतया यही हुआ होगा। कार्तिक के गले में नाभि रज्जु लिपटी हुई थी। लेकिन इस बार मैंने तुम्हारी औषधि राजकुमारी सती के पेट पर मल दी थी। चाहे जैसे भी हो वह औषधि गर्भ के अंदर तक फैल गई और उसने कार्तिक को उन कुछ पलों के लिए पर्याप्त शक्ति प्रदान कर दी थी जिनमें वह बाहर आ पाया। तुम्हारी औषधि ने उसका जीवन बचा लिया।'

'कौन-सी औषधि?' दिवोदास ने पूछा।

'नागाओं की औषधि,' आयुर्वती ने अपनी त्योरी चढ़ाकर कहा,'जैसे ही मैंने सूंघा तो उस लेप को पहचान गई थी। केवल तुम ही वह दे सकते थे, सही है ना?'

'लेकिन मैंने नहीं दिया था!'

'तुमने नहीं दिया था?' शिव की ओर मुड़ते हुए आयुर्वती ने स्तब्ध होकर कहा, 'तो फिर... आपने वह औषधि कहां से प्राप्त की, प्रभु?'

शिव भौचक्का रह गया था। जैसे किसी ने उसकी सबसे मूल्यवान याद को क्रूरता से कुचल दिया था।

'प्रभु? यह क्या है?' आयुर्वती ने पूछा।

शिव अत्यधिक क्रोध में था। वह अचानक ही मुड़ गया, 'नंदी, भद्र! मेरे साथ आओ।'

'प्रभु, आप कहां जा रहे हैं?' पर्वतेश्वर ने पूछा।

लेकिन शिव पहले ही दूर निकल चुके थे। उनके पीछे नंदी, वीरभद्र और पलटनभर सैनिक थे।

'पंडितजी!'

शिव काशी विश्वनाथ मंदिर में था। जैसा आदेश था, नंदी और वीरभद्र अपनी पलटन के साथ बाहर ही रुक गए थे।

'पंडितजी!'

वह आखिर है कहां?

और उसके बाद शिव को अनुभव हुआ कि उसे चिल्लाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। उसे केवल इतना करना था कि अपने विचारों को प्रसारित करना था। *वासुदेव! क्या आपमें से कोई सुन रहे हैं?*

कोई उत्तर नहीं। शिव का क्रोध और बढ़ चुका था।

मैं जानता हूं कि आप सुन सकते हैं! क्या आप लोगों में से किसी में भी इतना साहस है कि मुझसे बात कर सके?

अब भी कोई उत्तर नहीं मिला।

आपने वह नागाओं की औषधि कहां से प्राप्त की?

पूरी तरह से निःशब्दता थी।

अपने बारे में बताएं! आपके और नागाओं के मध्य क्या संबंध है? वह कितना गहरा है?

किसी वासुदेव ने प्रतिक्रिया नहीं दी।

पवित्र झील के नाम पर उत्तर दें! या मैं आपका नाम ईश्वर के शत्रुओं में जोड़ दूं!

शिव ने एक शब्द भी नहीं सुना। वह प्रभु रुद्र की प्रतिमा की ओर मुड़ा। किसी विचित्र कारण से वह प्रतिमा उतनी भयानक प्रतीत नहीं हुई

जितनी उसे याद थी। वह शांत प्रतीत हुई। निर्मल। लगभग ऐसी कि वह शिव से कुछ कहना चाहती हो।

शिव पीछे मुड़ा और उसने अंतिम बार चिल्लाकर पूछा, 'वासुदेव! अभी उत्तर दें या मैं कुछ बुरा ही अनुमान लगा लूं!'

कोई उत्तर ना पाकर, शिव मंदिर से आंधी-तूफान सा बाहर निकल गया।

अध्याय 9

आपका कर्म क्या है?

'क्या हुआ, शिव?'

वह छोटा बालक पीछे मुड़ा तो उसने देखा कि उसके काका पीछे खड़े थे। उस बालक ने जल्दी से अपने आंसू पोंछ लिए क्योंकि गुण कबीलों में आंसुओं को कमजोरी की निशानी माना जाता था। उसके काका मुस्कुराए। वे शिव के पास ही बैठ गए और उसे बांहों में भर लिया।

वे कुछ समय तक यूं ही चुपचाप बैठे रहे। उनके पांवों में मानसरोवर का जल हिचकोले लेता हुआ स्पर्श कर रहा था। बहुत अधिक सर्दी थी। किंतु उन्हें परवाह नहीं थी।

'तुम्हें क्या कष्ट है, मेरे बच्चे?' काका ने पूछा।

शिव ने ऊपर की ओर देखा। उसे सदैव आश्चर्य होता था कि उसके काका जैसे इतने भयंकर योद्धा कैसे इतने शांत होकर मुस्कुरा सकते हैं।

'मां ने मुझसे कहा कि मुझे दोषी अनुभव नहीं करना चाहिए...'

शब्द अटक गए क्योंकि आंसुओं से गला रुंध गया था। उसे अनुभव हो रहा था कि उसका ललाट फिर कांप रहा था।

'उसी बेचारी स्त्री के बारे में?' काका ने पूछा। बालक ने सहमति में सिर हिलाया।

'और तुम क्या सोचते हो?'

'मैं नहीं जानता कि इससे अधिक क्या सोचना है।'

'हां, तुम जानते हो। अपने हृदय की सुनो। क्या सोचते हो?'

शिव के नन्हे हाथ बघछाल से बनी कमीज के साथ उलझे हुए थे, 'मां सोचती है कि मैं उसकी सहायता नहीं कर सकता था क्योंकि मैं बहुत छोटा हूं, मेरी आयु कम है और मैं बहुत ही दुर्बल हूं। मैं कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता था। उसकी सहायता करने के बजाय संभवतया मैं स्वयं ही घायल हो गया होता।'

'संभवतया यह सही भी है। लेकिन क्या इससे कोई अंतर पड़ता है?'

उस छोटे से बालक ने ऊपर की ओर देखा। उसने आंखें सिकोड़ी हुई थीं और उनमें आंसू उमड़ते आ रहे थे, 'नहीं।'

उसके काका मुस्कुराए, 'इसके बारे में सोचो। यदि तुमने उसकी सहायता करने का प्रयत्न किया होता तो भी संभव था कि वह पीड़ित होती ही। लेकिन यह भी संभव था, चाहे उसकी बहुत की कम संभावना थी, कि वह बच गई होती। लेकिन तुमने प्रयत्न नहीं किया तो फिर उसके पास ऐसा कोई अवसर ही नहीं था। क्या कोई अवसर था?'

शिव ने सहमति में सिर हिलाया।

'इसके अलावा तुम्हारी मां ने क्या कहा?'

'उस स्त्री ने अपनी जान बचाए रखने के लिए ही प्रतिकार नहीं किया था।'

'हां, यह सच हो सकता है।'

'और मां यह भी कहती है कि यदि वह स्त्री अपनी जान बचाने के लिए व्यावहारिक हुई तो वही करके मैं गलत कैसे हो सकता हूं?'

'यह एक महत्वपूर्ण बिंदु है। पाप उसके विरुद्ध किया जा रहा था। और उसके बाद भी वह उसे स्वीकार कर रही थी।'

वे कुछ देर तक अस्त होते सूर्य को एकटक देखते हुए चुप बैठे रहे।

'इस प्रकार यदि उस स्त्री ने प्रतिकार नहीं भी किया,' काका ने कहा, 'तो तुम क्या सोचते हो कि तुम्हें क्या करना चाहिए था?'

'मुझे...'

'हां।'

'मैं सोचता हूं कि इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि उस स्त्री ने प्रतिकार किया या नहीं। चाहे जो भी था, मुझे उसके लिए संघर्ष करना चाहिए था।'

'क्यों?'

शिव ने सामने देखा, 'क्या आप भी ऐसा सोचते हैं कि मुझे व्यावहारिक होना चाहिए था? और वहां से भाग जाने में मेरी कोई गलती नहीं थी?'

'मैं क्या सोचता हूं, इसका कोई अर्थ नहीं है। मैं तुम्हारी व्याख्या जानना चाहता हूं। तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि तुम्हारा वहां से भाग जाना अनुचित था?'

शिव ने अपनी कमीज में उंगलियों को व्यग्रता से इधर-उधर घुमाते हुए नीचे की ओर देखा। उसके ललाट पर बहुत धमक हो रही थी, 'क्योंकि यह मुझे अनुचित लगता है।'

उसके काका मुस्कुराए, 'यही उत्तर है। यह अनुचित लगता है क्योंकि जो तुमने किया वह तुम्हारे कर्म के विरुद्ध था। तुम्हें उस स्त्री के कर्म से कुछ भी लेना-देना नहीं था। उस स्त्री ने जो किया वह उसका विकल्प था। तुम्हें अपने कर्म की चिंता करनी चाहिए थी।'

शिव ने ऊपर की ओर देखा।

'बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करना तुम्हारा कर्म है। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि बुराई ऐसे लोगों के साथ हो रही है जो उसके विरुद्ध संघर्ष नहीं करते। सदैव यह याद रखना। तुम दूसरों के कर्मों के परिणामों के साथ जीवनयापन नहीं करते। तुम अपने कर्मों के परिणामों के साथ जीवनयापन करते हो।'

शिव ने सहमति में हल्के से सिर हिलाया।

'क्या यह पीड़ा देता है?' काका ने शिव के ललाट पर दोनों आंखों के ठीक मध्य में गहरे लाल दाने जैसे आकार की ओर संकेत करते हुए पूछा।

शिव ने उसे जोर से दबाया। दबाने से उसे आराम मिला,'नहीं। किंतु इसमें जलन होती है। अत्यधिक जलन होती है।'

'विशेषकर जब तुम अप्रसन्न होते हो?'

शिव ने सहमति में सिर हिलाया।

काका ने अपने अंगरखे में हाथ डाला और एक छोटी-सी थैली निकाली, 'यह बहुत ही अनमोल औषधि है। मैं इसे बहुत लंबे समय से अपने पास रखे हुए हूं। और मुझे लगता है कि तुम वह सुपात्र हो जिसे यह मिलना चाहिए।'

शिव ने वह थैली ले ली। खोलने पर उसे थैली के अंदर रक्तिम भूरा गाढ़ा लेप दिखा, 'क्या यह जलन को समाप्त कर देगा?'

काका मुस्कुराए, 'यह तुम्हें तुम्हारे प्रारब्ध के मार्ग पर ले जाएगा।'

शिव ने त्योरी चढ़ा ली। वह परेशान था।

मानसरोवर से दूर विशालकाय हिमालय की ओर संकेत करते हुए उसके काका ने कहना जारी रखा, 'मेरे बच्चे, तुम्हारा प्रारब्ध इन विशालकाय पर्वतों से भी बहुत विशाल है। लेकिन उसे सच करने के लिए तुम्हें इन विशालकाय पर्वतों को पार करना होगा।'

उसके काका ने फिर और कुछ भी वर्णन करने की आवश्यकता नहीं समझी। उन्होंने थोड़ा रक्तिम भूरा लेप लिया और शिव की ललाट पर उसकी आंखों और बालों के मध्य एक स्पष्ट लंबी रेखा के रूप में लगा दिया। शिव को तत्काल ही जलन में कमी लगी। उसके बाद उसके काका ने वही लेप उसके गले में भी लगाया। फिर उन्होंने शेष बचे लेप को लिया और शिव की दाईं हथेली पर रख दिया। उसके बाद उन्होंने एक उंगली को हल्के से काटा और उस लेप में रक्त की कुछ बूंदें यह फुसफुसाते हुए गिरा दीं, 'हम आपके आदेश को कभी नहीं भूलेंगे, प्रभु रुद्र। यह एक वायुपत्र की रक्तिम शपथ है।'

शिव ने सिर उठा पहले अपने काका को देखा और फिर अपनी हथेली को जिस पर वह विचित्र रक्तिम भूरा लेप उसके काका के रक्त से सना हुआ रखा हुआ था।

'अपने मुंह के पिछले हिस्से में रख लो,' काका ने कहा,'लेकिन निगलना नहीं। तब तक मलते रहो जब तक कि वह पूरा सोख नहीं जाता।'

शिव ने वैसा ही किया।

'अब तुम तैयार हो। उचित समय भाग्य निश्चित करेगा।'

शिव कुछ भी समझ नहीं पाया। लेकिन वह उस औषधि से मिलने वाले आराम को अनुभव कर रहा था, 'क्या आपके पास यह औषधि और भी है?'

'मेरे पास जितनी थी मैंने तुम्हें सब दे दी, मेरे बच्चे।'

'वासुदेवों के पास नागाओं की औषधि थी?' सती ने हैरानी से पूछा।

वह अपने पिता के साथ सुबह हुई परेशान कर देने वाली बातचीत के बारे में शिव से बात करना चाहती थी। वह अभी भी आपातकालीन सोमरस के उत्पादन सुविधा की बात से विस्मित थी, जिसके बारे में किसी को पता तक नहीं था। लेकिन उसने शिव के गुस्से भरे मुख को देखा तो तत्काल ही उस बात को भुला दिया।

'मुझे भटकाया गया है। संभवतया उनका नागाओं के साथ कोई समझौता हो! क्या इस देश में किसी पर भी विश्वास नहीं कर सकते?'

सती के अंतर्मन ने उससे कहा कि वासुदेव दुष्ट नहीं हो सकते। यह बात समझ में नहीं आई, 'शिव, आप संभवतया एक निष्कर्ष की ओर भाग रहे...'

'भाग रहा हूं? निष्कर्ष की ओर?' शिव ने गुस्से से तमतमाते हुए कहा, 'तुम जानती हो आयुर्वती ने क्या कहा था। वह औषधि केवल नागाओं की भूमि में बनाई जा सकती है। हम जानते हैं कि ब्रंगावालों ने उसे कैसे प्राप्त किया। उनकी विवशताओं का बलात् लाभ उठाया जा रहा है। वासुदेवों के लिए क्या तर्क दिया जा सकता है? उन्हें अपने मंदिरों को बनवाने के लिए नागाओं की सहायता चाहिए?'

सती चुप रही।

शिव खिड़की की ओर गया और उसने विश्वनाथ मंदिर को कड़ी दृष्टि से देखा। किसी विचित्र कारण से वह अपने अंतर्मन की बात सुन पा रहा था, जो बार-बार दोहरा रहा था। *शांत रहो। निष्कर्ष निकालने की शीघ्रता मत करो।*

शिव ने अपना सिर हिलाया।

'मुझे विश्वास है कि वासुदेवों को इस बात का अनुमान था कि आप इस बात को जान जाएंगे कि औषधि कहां से आई है,' सती ने कहा, 'इस प्रकार वासुदेव ने जो आपको वह औषधि दी उसकी दो ही व्याख्याएं हो सकती हैं।'

शिव पीछे मुड़ गया।

'या तो वे मूर्ख हैं या वे सोचते हैं कि आपके पुत्र का सुरक्षित जन्म इतना महत्वपूर्ण है कि वे आपके गुस्से का जोखिम उठाने के लिए तैयार हैं।'

शिव ने त्यौरी चढ़ा ली।

'जो कुछ भी मैंने उनके बारे में आपसे सुना है, मैं नहीं सोचती कि वे मूर्ख हैं,' सती ने कहा, 'फिर केवल एक ही विकल्प बचता है। वे सोचते हैं, यदि हमारे पुत्र को कुछ हो जाता तो आप इतने अधिक बिखर जाते कि बुराई के विरुद्ध उनके उद्देश्यों को हानि पहुंचती।'

शिव चुप रहा।

— ⅄ⓄꙨ⇡⊛ —

नागा लोकाधीश अपने निजी कक्ष में खिड़की के पास बैठा हुआ था। वह उस गायक मंडली के गीतों को सुन सकता था जो हर सप्ताह पंचवटी की गलियों में शाम को इसी समय जुलूस की शक्ल में गाते हुए जाते थे। रानी उन शोक गीतों को प्रतिबंधित करना चाहती थी। वह उन्हें पराजयवादी कहकर तिरस्कृत करती थी। लेकिन नागाओं की *राज्य सभा*, जो चयनित *राजसी परिषद* थी, उसने रानी की इस मुहिम के विरुद्ध मत दिया था, जिसके कारण वह गीत अब भी गाया जा रहा था।

उस गीत से नागा के हृदय में भावनाएं उमड़ पड़ी थीं, लेकिन उसने उन्हें बाहर नहीं आने दिया था।

तुम मेरे संसार, मेरे ईश्वर, मेरे रचनाकार,
और फिर भी, तुमने मुझे तज दिया।
मैं तुम्हारी तलाश में ना था, तुमने मुझे बुलाया,
और फिर भी, तुमने मुझे तज दिया।
मैंने तुम्हें सम्मान दिया, तुम्हारे नियमों से जिया, तुम्हारे रंगों में रंगा,
और फिर भी, तुमने मुझे तज दिया।
तुमने मुझे दुख दिया, तुमने मुझे वीरान किया, तुम अपने कर्तव्यों में चूके,
और फिर भी, मैं एक दानव हूं,
बताओ स्वामी, मैं क्या करूं...

'घिनौना गीत,' नागा के विचारों में बाधा डालते हुए रानी ने कहा, 'यह हमारी कमजोरी और हमारे बंधनों को और पुष्ट करता है।'

'मौसी,' नागा ने खड़े होते हुए कहा, 'आप आई हैं, मैं सुन ना सका।'

'तुम सुन भी कैसे सकते हो? ये घृणा उत्पन्न करने वाले गीत दुनिया को डुबो देते हैं। सकारात्मक सोच को डुबो देते हैं।'

'बदला लेना एक सकारात्मक सोच नहीं है, महारानी,' नागा मुस्कुराया, 'साथ ही गायक मंडली खुशी वाले गीत भी गाते हैं।'

रानी ने अपना हाथ हवा में लहराया, 'मेरे पास इससे अधिक महत्वपूर्ण कुछ चर्चा करने के लिए है।'

'हां, मौसी।'

रानी ने एक गहरी श्वास ली, 'तुम वासुदेवों से मिले?'

नागा ने अपनी आंखें सिकोड़ीं। वह इस बात पर आश्चर्यचकित था कि रानी को यह समाचार पाने में इतना समय लगा, 'हां।'

'क्यों?' रानी ने गुस्से को कठिनता से रोकते हुए पूछा।

'महारानी, मैं समझता हूं कि हम उनकी सहायता का उपयोग कर सकते हैं।'

'वे हमारा समर्थन कभी नहीं करेंगे। वे चाहे हमारे दुश्मन ना हों, लेकिन वे हमारे साथी भी कभी नहीं होंगे!'

'मैं असहमत हूं। मैं सोचता हूं कि हमारा दुश्मन एक है। वे हमारे पक्ष में आएंगे।'

'बकवास! सभी वासुदेव उस प्राचीन पौराणिक गाथा के कट्टर समर्थक हैं। नीले गले वाला कोई विदेशी इस देश की रक्षा करने वाला है।'

'लेकिन एक अन्य मोती जड़े दाढ़ीवाले ने इस देश की रक्षा की थी, नहीं की थी क्या?'

'इस कबायली की तुलना महान प्रभु रुद्र से मत करो। संभवतया विनाश ही इस देश की नियति है। और सिवाय पीड़ा और दुख देने के भारत ने हमारे साथ किया ही क्या है? हम क्यों परवाह करें?'

'क्योंकि चाहे जो हो, यह हमारा भी देश है।'

रानी गुस्से से गरजी, 'उन्हें अपनी औषधि देने का असली कारण मुझे बताओ। तुम जानते हो कि इसकी आपूर्ति बहुत कम है। हमें ब्रंगावालों को उनकी वार्षिक खेप भी भेजनी है। इस घृणित देश में वे ही एकमात्र सभ्य लोग हैं। एकमात्र लोग जो हम सब को मारना नहीं चाहते।'

'ब्रंगों को भेजा जाने वाला हिस्सा प्रभावित नहीं होगा, महारानी। मैंने मात्र अपना निजी हिस्सा दिया है।'

'भूमिदेवी के नाम पर बताओ, क्यों? तुम भी अचानक उस नीलकंठ में विश्वास तो नहीं करने लगे?'

'मैं क्या विश्वास करता हूं, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता है,महारानी। अंतर इससे पड़ता है कि भारत के लोग क्या विश्वास करते हैं।'

रानी ने तीखी नजर से नागा को घूरा, 'यह वास्तविक कारण नहीं है।'

'यही कारण है।'

'मुझसे झूठ मत बोलो।'

नागा चुप रहा।

'तुमने उस नीच औरत के लिए किया है ना,' रानी ने निष्कर्ष निकाला।

नागा परेशान था, लेकिन उसने अपना स्वर शांत रखा, 'नहीं। और कम से कम आपको तो उसके लिए ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए, महारानी।'

'क्यों नहीं?'

'क्योंकि मेरे अलावा, एकमात्र आप हैं जो सचाई जानती हैं।'

'कभी-कभी मेरा मन कहता है कि काश मैं नहीं जानती!'

'अब उसके लिए बहुत देर हो चुकी है।'

रानी ने खिल्ली उड़ाते हुए कहा, 'यह सच है कि ईश्वर एक व्यक्ति को सभी गुण नहीं देते। तुम सचमुच ही स्वयं के सबसे बड़े दुश्मन हो।'

दक्ष भूमि पर बैठे हुए थे। देवगिरि में महर्षि भृगु के अनियत प्रकट होने से वे हैरान थे। मेलूहा के सम्राट ने महर्षि से दर्शन देने की कोई प्रार्थना नहीं की थी।

भृगु ने दक्ष पर अप्रसन्नता से कठोर दृष्टि डाली, 'आपने एक सीधे-सादे निर्देश का उल्लंघन किया है, राजन।'

दक्ष सिर नीचे झुकाए शांत बने रहे। *महर्षि को यह कैसे पता चला? सती, वीरिनी और मैं, केवल हम तीन लोग ही तो उस वार्तालाप में थे। क्या वीरिनी मेरी गुप्तचरी कर रही है? सभी लोग मेरे विरुद्ध क्यों हैं? मैं ही क्यों?*

भृगु ने दक्ष के मन की बात पढ़ते हुए गहराई से देखा। महर्षि सदैव से ही जानते थे कि दक्ष दुर्बल है। लेकिन सम्राट ने सीधे आदेशों की कभी भी अवज्ञा नहीं की थी। और फिर भृगु ने अनेक आदेश दिए भी तो नहीं थे। वे मात्र एक बात से चिंतित थे। किसी अन्य मामले में उन्होंने दक्ष को वही करने दिया था, जो वे चाहते थे।

'आपको सम्राट किसी कारण से बनाया गया था,' भृगु ने कहा,'कृपया ऐसा कुछ ना करें जिससे मुझे स्वयं अपने निर्णय पर प्रश्न उठाना पड़

जाए।'

दक्ष अब भी शांत बने रहे, डरते हुए।

भृगु नीचे झुके और उन्होंने दक्ष के मुख को ऊपर उठाया, 'क्या आपने उसे स्थल के बारे में भी बताया, राजन?'

दक्ष धीमे से फुसफुसाया, 'नहीं, मुनिवर। मैं सौगंध खाकर कहता हूं।'

'मुझसे असत्य ना बोलें!'

'मैं सौगंध खाता हूं, मुनिवर।'

भृगु ने दक्ष के मन की बात पढ़ ली। वे संतुष्ट थे।

'आप इसकी चर्चा किसी से नहीं करेंगे। क्या यह स्पष्ट है?' दक्ष शांत बने रहे।

'राजन,' भृगु ने कहा। उनका स्वर ऊंचा था, 'क्या यह स्पष्ट है?'

'जी हां, मुनिवर,' भृगु के पांव पकड़े हुए भयभीत दक्ष ने कहा।

— ⚲ —

शिव अस्सी घाट पर खड़ा था। ब्रंगावालों द्वारा निर्मित पांच जलयानों में से एक को छोड़कर सभी के पाल मोड़ दिए गए थे। बंदरगाह के सबसे निकट वाले जलयान के पाल खोल दिए गए थे जिससे वहां उपस्थित सभी एक भव्य दृश्य का आनंद ले रहे थे।

'ये अच्छे लग रहे हैं, दिवोदास,' शिव ने कहा।

'धन्यवाद, प्रभु!'

'मैं यह विश्वास नहीं कर सकता कि आपके कबीले के लोगों ने इन्हें मात्र नौ महीनों में तैयार किया है।'

'हम ब्रंगावाले कुछ भी कर सकते हैं, प्रभु।' शिव मुस्कुराया।

अथिथिग्व, जो शिव के पास ही खड़े थे बोल उठे, 'दिवोदास, क्या तुम्हें विश्वास है कि जहाज चल पाएगा? यहां इस जहाज के सभी पाल खुले हुए हैं और हवा काफी तेज है। और फिर भी वह जहाज को रत्ती भर भी हिला नहीं पा रहा है।'

स्पष्ट था कि राजा को नौकायन के बारे में बहुत कम जानकारी थी।

'यह बहुत ही अच्छा बिंदु है, महाराज,' दिवोदास ने कहा,'लेकिन यह जहाज इसलिए आगे नहीं बढ़ रहा है क्योंकि हम नहीं चाहते कि वह बिना हमारे ही चल पड़े। पालों को इस प्रकार लगाया गया है कि वे हवा के ठीक विपरीत दिशा में हों। क्या आप मुख्य पाल को फड़फड़ाते हुए देख सकते हैं?'

अथिथिग्व ने सहमति में सिर हिलाया।

'इसका अर्थ है कि पाल हम पर हंस रहा है क्योंकि वह हवा को पकड़ नहीं पा रहा है।'

शिव मुस्कुराया, 'हंस रहा है?'

'हम यही कहते हैं जब पाल को गलत लगाया गया हो और वह फड़फड़ा रहा हो, प्रभु,' दिवोदास ने कहा।

'ठीक है,' शिव ने कहा, 'तो फिर मैं गंभीर हूं। हम ब्रंगा के लिए तीन दिनों में कूच कर रहे हैं। समस्त तैयारियां कर ली जाएं।'

— ⚲ —

सती अपने कक्ष की खिड़की से गंगा को एकटक निहार रही थी। उसने देखा कि राजा अथिथिग्व अपने अनुयायियों के एक छोटे दल के

साथ पूर्व तट पर निर्मित राजभवन की ओर जा रहे हैं।

वे वहां क्यों जाते रहते हैं? क्यों वे केवल अपने परिवार को लेकर जाते हैं?

'तुम क्या सोच रही हो, सती?'

शिव उसके पीछे खड़ा था। सती ने उसे बांहों में भर लिया,'आपकी बहुत याद आएगी।'

उसने सती के मुख को अपनी ओर किया, चूमा और मुस्कुराया,'यह वह बात नहीं है जो तुम सोच रही थीं।'

सती ने उसके सीने पर धीमे से थपकी मारते हुए कहा, 'क्या आप मेरे मन की बात भी पढ़ सकते हैं।'

'काश ऐसा हो पाता।'

'मैं कोई गंभीर बात नहीं सोच रही थी। यही सोच रही थी कि अथिथिग्व पूर्वी राजभवन में अक्सर क्यों जाते रहते हैं। और अजीब बात है कि वह भी केवल अपने परिवार को ही ले जाते हैं।'

'हां, मैंने भी यह अनुभव किया है। मुझे लगता है उनके पास इसका कोई अच्छा कारण होगा। पूर्वी घाट के बारे में ऐसा अंधविश्वास है कि वह अपशकुन है, क्या मैं सही हूं?'

सती ने अपने कंधे उचकाए, 'क्या यह निश्चित हो गया है कि आप तीन दिनों में जा रहे हैं?'

'हां।'

'आप कितने दिनों के लिए जाएंगे?'

'मैं नहीं जानता। आशा करता हूं कि अधिक लंबा समय नहीं लगेगा।'

'काश मैं भी चल पाती।'

'मैं समझ सकता हूं। लेकिन कार्तिक ऐसी यात्राओं के लिए अभी बहुत ही छोटा है।'

सती ने शय्या पर सोते हुए कार्तिक की ओर देखा। वह इतनी तेजी से बड़ा हो गया था कि अपने पलने में भी समा नहीं पा रहा था, 'यह आपकी तरह लगता है।'

शिव मुस्कुराया, 'केवल छह महीने ही हुए हैं, लेकिन यह दो वर्ष की आयु का बालक लगता है!'

सती को शिव की बात माननी पड़ी। एक मेलूहावासी होने के नाते, जो कभी मायका में नहीं रही, उसने कभी सोलह वर्ष से कम आयु का बालक नहीं देखा था।

'संभव है यह सोमरस का प्रभाव हो,' सती ने कहा।

'संभव है। आयुर्वती यह देखकर आश्चर्यचकित थी कि पहली बार सोमरस लेने पर यह बीमार नहीं हुआ।'

'वह सचमुच ही आश्चर्यजनक था। लेकिन हो सकता है कि यह इसलिए संभव हो क्योंकि वह एक विशेष बालक है!'

'वह तो यह है ही। मैंने आज तक ऐसे शिशु को नहीं देखा है जो छह महीने में चलने लगे।'

सती मुस्कुराई, 'यह हमें गर्व प्रदान करेगा।'

'मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि यह अवश्य ऐसा ही करेगा।'

सती ने ऊपर देखा और शिव को पुनः चूम लिया, 'केवल नागाओं के मार्ग खोज लें और मेरे पास शीघ्र आ जाएं।'

'मैं अवश्य आऊंगा, प्रिय।'

— ⅄◎Ʊ⇡⊛ —

जहाजों में समस्त प्रकार की रसद आदि सामग्रियों को लाद दिया गया था। रास्ते में किसी भी बंदरगाह पर उनके रुकने का इरादा नहीं था। गति ही सार था।

पर्वतेश्वर के आत्मसंयम के कारण सूर्यवंशियों एवं चंद्रवंशियों के एक संयुक्त दल की स्थापना हो सकी थी। पांच जलयानों में इससे अधिक सैनिकों को लेकर जाना कठिन था। गनीमत यह थी कि सेना का समग्र नेतृत्व द्रपकु के हाथ में था।

शिव ने अस्सी घाट की सीढ़ियों से उन जलयानों को देखा। अग्रनेता के रूप में द्रपकु अपने पिता पूर्वक के साथ अग्र मार्गदर्शी जलयान में था। नीलकंठ के जो महत्वपूर्ण साथी थे, उन्हें मुख्य जलयान में रखा गया था जो अन्य चार जलयानों से घिरा हुआ सबसे सुरक्षित क्षेत्र में यात्रा करेगा। पर्वतेश्वर, भगीरथ, आनंदमयी, आयुर्वती, नंदी और वीरभद्र उस जलयान के जंगले में खड़े हुए थे। उत्तंक को उस जलयान में पाकर शिव को विस्मय हुआ।

आनंदमयी ने अवश्य ही हठ किया होगा। यदि कोई ऐसी स्त्री थी जो पर्वतेश्वर को ब्रह्मचर्य तोड़ने के लिए प्रलोभित कर सकती थी, तो वह आनंदमयी ही थी।

'प्रभु,' अथिथिग्व ने शिव की विचारों में व्यवधान डालते हुए कहा।

काशी के राजा नीलकंठ के चरण स्पर्श करने के लिए झुके। शिव ने अथिथिग्व के सिर को हल्के से स्पर्श किया, 'आयुष्मान भव।'

अपने जुड़े हुए हाथों के साथ अथिथिग्व फुसफुसाया, 'मैं आपके शीघ्र ही काशी आगमन की विनती करता हूं, प्रभु। आपके बिना हम अनाथ हैं।'

'आपको मेरी आवश्यकता नहीं है, महाराज। आपको कभी भी किसी की भी आवश्यकता नहीं रही थी। उस एक व्यक्ति में आस्था रखें जो आपको सर्वाधिक प्रेम करता है, और वह आप स्वयं हैं।'

शिव नम आंखों वाली सती की ओर मुड़ा। वह कार्तिक का हाथ पकड़े हुए थी। कार्तिक हवा के थपेड़ों से कांप रहा था।

कार्तिक ने शिव की ओर ऊपर संकेत किया, 'बा-बा।'

शिव मुस्कुराया और उसने कार्तिक को अपनी बांहों में उठा लिया, 'बा-बा बहुत ही जल्द वापस आएंगे, कार्तिक। अपनी मां को अधिक परेशान मत करना।' कार्तिक ने शिव के बालों को खींचा और दोहराया, 'बा-बा।' शिव की मुस्कान और खिल पड़ी और उसने कार्तिक के माथे को चूम लिया। उसके बाद उसने कार्तिक को अपनी बांहों में एक ओर किया और सती को आलिंगनबद्ध करने के लिए आगे बढ़ा। कुछ सूर्यवंशी आदतों को तोड़ना कठिन था। सती ने शिव को हल्के से आलिंगनबद्ध किया क्योंकि वह लोगों के सामने प्रेम के ऐसे प्रदर्शन से लज्जित हो रही थी। शिव ने सती को जकड़े रखा था। शिव के प्रति प्रेम ने सती की सूर्यवंशी आदत पर आखिरकार विजय प्राप्त कर ली। उसने ऊपर की ओर देखा और शिव को चूम लिया,

'जल्दी वापस आएं।'

'अवश्य।'

अध्याय 10

ब्रंगा के द्वार

नाव में पानी बहुत ही तेजी से भर रहा था।

शिव हताशा भरे प्रयासों से नाव को नियंत्रित करने का प्रयत्न कर रहा था। अपनी पतवारों से उस उफनती नदी से युद्ध कर वह अपने मित्र के पास पहुंचने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा था।

बृहस्पति संघर्ष कर रहा था। अचानक आश्चर्य से उसकी आंखें खुली की खुली रह गईं। ऐसा प्रतीत हुआ कि एक रस्सी कहीं से आई और उसके पैरों में लिपट गई। वह तेजी से खींचा जाने लगा।

'शिव! सहायता! कृपया मेरी सहायता करें!'

शिव बहुत ही तीव्रता से नौका खे रहा था। बेतहाशा। 'रुकिए! मैं आ रहा हूं।'

अचानक एक तीन सिरों वाला विशालकाय सर्प पानी से बाहर निकला। शिव ने देखा कि बृहस्पति पर लिपटी हुई रस्सी रेंगती हुई ऊपर की ओर चढ़ी जा रही थी और उसे लपेटकर निर्दयता से कुचलती जा रही थी। वह सर्प था।

'नहीं ऽ ऽ ऽ!'

शिव हड़बड़ाकर जाग उठा। उसने विस्मय में चारों ओर देखा। उसका ललाट जोर से धमक रहा था। उसका गला असह्य रूप से ठंडा था। सभी लोग सो रहे थे। वह महसूस कर रहा था कि जलयान गंगा के पानी के साथ लयात्मक ढंग से हल्के-हल्के हिल रहा है। वह अपने कक्ष में बनी खिड़की तक चलकर गया ताकि हल्की ठंडी हवा उसकी हृदय गति को धीमा कर सके।

उसने अपनी मुट्ठी बांधी और जलयान की दीवार पर टिका दी,'मैं उसे अवश्य ढूंढ़ लूंगा, बृहस्पति। उस सर्प को इसका भुगतान करना ही पड़ेगा।'

शिव और उनके दल को काशी छोड़े हुए दो सप्ताह बीत चुके थे। चूंकि वे नदी के नीचे की धारा में चल रहे थे, इसलिए बहुत कम समय में ही दूर निकल गए थे और उन्होंने अभी-अभी मगध नगर को पार किया था।

'हम लोग ब्रंगा राज्य लगभग तीन सप्ताह में पहुंच जाएंगे, प्रभु,' पर्वतेश्वर ने कहा।

शिव काशी की ओर जाती नदी की धारा को एकटक देख रहा था। वह मुस्कुराता हुआ मुड़ा, 'आपने दिवोदास से बात की?'

'जी हां।'

'वह अभी कहां है?'

'वह मस्तूल के पास है, प्रभु। वह पालों को सही स्थिति में लाने का प्रयास कर रहा है ताकि हवा को अच्छी तरह से प्राप्त कर सके। स्पष्ट रूप से, वह भी ब्रंगा राज्य जल्दी से जल्दी पहुंचना चाहता है।'

शिव ने पर्वतेश्वर की ओर देखा, 'नहीं, मैं नहीं मानता। मैं समझता हूं कि वह मेरी इस खोज में अपनी भूमिका जल्द से जल्द पूरा कर लेना चाहता है ताकि वह अपनी पत्नी और बेटी के पास वापस जा सके। वह वास्तव में उन्हें याद करता रहता है।'

'जैसे आप सती और कार्तिक को याद करते हैं, प्रभु।'

शिव मुस्कुराया और उसने सहमति में सिर हिलाया। वे दोनों ही जलयान के जंगले पर झुके हुए थे और प्रशांत गंगा को देख रहे थे।

डॉल्फिन का एक दल नदी में उभरा और वे एक के बाद एक हवा में उछल गईं। बड़ी ही सुंदर ढंग से वापस पानी में गिरने के बाद, वे एक बार फिर से उछल गईं। वे एक-दूसरे से समकालिकता प्रदर्शित करते हुए इस प्रकार का सुंदर नृत्य करती रहीं। शिव को उन डॉल्फिनों को देखना बहुत अच्छा लग रहा था। वे सदैव ही खुश और चिंता मुक्त प्रतीत होती थीं, 'उन्मुक्त नदी में चिंतामुक्त मत्स्य! काव्यात्मक, है ना?'

पर्वतेश्वर मुस्कुराया, 'जी हां, प्रभु।'

'चिंतामुक्त एवं उन्मुक्त कहने से याद आया, आनंदमयी कहां है?'

'मेरे विचार से राजकुमारी उत्तंक के साथ हैं, प्रभु। वे उसके साथ अभ्यास कक्ष में अक्सर जाती रहती हैं। संभवतया वे एक अन्य नृत्य का अभ्यास कर रहे हैं।'

'हुऽम।'

पर्वतेश्वर नदी को देखता रहा।

'वह बहुत अच्छा नृत्य करती है, है ना?'

'जी हां, प्रभु।'

'सच कहें तो, आपवादिक रूप से अच्छा।'

'यह एक उचित टिप्पणी होगी, प्रभु।'

'आप उत्तंक की नृत्यकला के बारे में क्या सोचते हैं?'

पर्वतेश्वर ने शिव को देखा और एक बार पुनः नदी की ओर देखने लगा, 'मेरे विचार से सुधार की संभावना है, प्रभु। लेकिन मुझे विश्वास है कि राजकुमारी आनंदमयी उसे अच्छी तरह से सिखा देंगीं।'

शिव पर्वतेश्वर पर मुस्कुराया और उसने अपना सिर हिलाया,'हां, मैं समझता हूं, वह अवश्य ही ऐसा करेगी।'

— ⁂ —

'नीलकंठ एवं उसके दल को ब्रंगा राज्य की ओर जाते हुए एक महीना बीत चुका है, महारानी,' लोकाधीश नागा ने रानी से कहा।

वे दोनों रानी के निजी कक्ष में बैठे हुए थे।

'तुम्हें फिर से ध्यान देते देखकर अच्छा लग रहा है। राजा चंद्रकेतु को मैं चेतावनी का संकेत भेज देती हूं।'

नागा ने सहमति में सिर हिलाया। वह कुछ और बोलने वाला था, लेकिन चुप रहा। इसके बजाय उसने खिड़की से बाहर की ओर देखा। पंचवटी के इस स्थान से वह दूर प्रवाहित होती हुई शांत गोदावरी नदी को देख सकता था।

'और?' रानी ने पूछा।

'मुझे काशी जाने के लिए आपकी अनुमति चाहिए।'

'क्यों? तुम उनके साथ व्यापारिक संबंध बनाना चाहते हो?' रानी ने हंसते हुए कहा जैसे किसी ने गुदगुदी कर दी हो।

'वह नीलकंठ के साथ नहीं गई है।' रानी पूरी तरह से अकड़ गई।

'कृपा करें, महारानी। यह मेरे लिए महत्वपूर्ण है।'

'तुम क्या हासिल करना चाहते हो, मेरे बच्चे?' रानी ने पूछा,'यह एक दुस्साहसी खोज है।'

'मुझे उत्तर चाहिए।'

'उससे क्या अंतर पड़ जाएगा?'

'वह मुझे शांति प्रदान करेगा।'

रानी ने गहरी श्वास ली, 'यह खोज तुम्हारे पतन का कारण बनेगी।'

'यह मुझे पूर्ण करेगा, महारानी।'

रानी ने अपना सिर हिलाया, 'प्रतीक्षा करो, जब तक राज्यसभा खत्म नहीं हो जाती। यह सुनिश्चित करने के लिए मुझे तुम्हारी आवश्यकता है कि ब्रंगा को हमारा समर्थन देने वाला प्रस्ताव असफल ना हो जाए।'

नागा नीचे झुका और उसने रानी के पैर छुए, 'धन्यवाद, मौसी।'

'लेकिन तुम अकेले नहीं जाओगे। मुझे विश्वास नहीं है कि तुम अपना खयाल रख पाओगे। मैं तुम्हारे साथ आऊंगी।'

नागा धीमे से मुस्कुराया, 'धन्यवाद।'

— ⚲ —

शिव का दल ब्रंगा राज्य के द्वारों से केवल एक सप्ताह की दूरी पर था। जलयानों ने अपनी समय सारिणी के अनुसार ही यात्रा की थी। पर्वतेश्वर और दिवोदास ने द्रपकु को उसकी नेतृत्व नौका में एक किश्ती दी हुई थी जिससे द्वारों के पास पहुंचने पर वह उन्हें बता सके। पर्वतेश्वर ने यह स्पष्ट कर दिया था कि नीलकंठ कोई रक्तपात नहीं चाहते। ब्रंगा राज्य के प्रतिबंधित क्षेत्राधिकार में प्रवेश करने के लिए दिवोदास को समझौता वार्ता पूर्ण करनी थी। उसने समझ लिया था नीलकंठ को बिना दिखाए ब्रंगा की सीमा में प्रवेश करना असंभव था क्योंकि ब्रंगावाले भी पौराणिक गाथा में विश्वास रखते थे। पर्वतेश्वर ने उसे सुझाव दिया कि उसे यह करने से पहले ही वार्ता संपन्न करने का प्रयास करना होगा।

दिवोदास को द्रपकु के साथ पताका लहराने के लिए भी कह दिया गया था, जबकि पर्वतेश्वर मुख्य जलयान में वापस चला गया। वह प्रभु महादेव की सलाह लेना चाहता था कि ब्रंगावालों के सीमा प्रहरियों से कैसे निपटा जाए। पर्वतेश्वर झुकना नहीं चाहता था, फिर भी उद्देश्य की संवेदनशीलता को देखते हुए यह अनिवार्य था कि ब्रंगावाले उन पांच जलयानों को अपने लिए खतरा ना समझें।

पर्वतेश्वर के नौका चालक दलों ने तीव्र गति से चलने वाली नौका को मुख्य जलयान से बांध दिया था और वह स्वयं उस जलयान के पिछले हिस्से पर चढ़ा। वह तब आश्चर्यचकित रह गया जब उसने वहां आनंदमयी को देखा। आनंदमयी की पीठ उसकी ओर थी। छह चाकू उसके हाथ में थे। मानकीय लक्ष्य पट को हटा दिया गया था और उसके स्थान पर विशेषज्ञों वाले बहुत ही छोटे आकार वाले लक्ष्य पट को लगा दिया गया था। भगीरथ एवं उत्तंक उससे कुछ दूरी पर खड़े हुए थे।

उत्तंक आनंदमयी की ओर मुड़ा, 'याद रखें जो मैंने आपको सिखाया है, राजकुमारी। कोई देरी नहीं। एक के एक चाकुओं की बरसात।'

आनंदमयी ने अपनी आंखों को गोल-गोल घुमाया, 'जी हां ऽ गुरुजी। पहली बार में ही मैंने सुन लिया था। मैं बहरी नहीं हूं।'

'मुझे क्षमा करें, राजकुमारी।'

'अब एक ओर हट जाओ।'

उत्तंक एक ओर हट गया।

पर्वतेश्वर जो पीछे खड़ा था, वह यह देखकर भौचक्का था। आनंदमयी उचित तरीके से खड़ी थी। एक प्रशिक्षित लड़ाका की तरह। उसके पैर थोड़े फैले हुए थे ताकि मुद्रा स्थिर बनी रहे। उसका दायां हाथ बगल में विश्राम की स्थिति में लटका हुआ था। उसने अपने बाएं हाथ में छह चाकुओं को मूंठ से पकड़ रखा था जो उसके दाएं कंधे के निकट था। उसकी श्वास धीमी और शांत थी। आदर्श।

उसके बाद उसने अपने दाएं हाथ को उठाया। और बड़े ही नाटकीय ढंग से उसने अपने बाएं हाथ से एक चाकू निकाला और निशाना लगाया। लगभग उसी समय उसने दूसरा चाकू निकाला और उससे भी निशाना लगाया। और उसके बाद तीसरा, चौथा, पांचवां और छठा।

आनंदमयी के चाकू चलाने का तरीका इतना त्रुटिरहित था कि पर्वतेश्वर ने लक्ष्य पट को भी नहीं देखा। वह वहीं खड़ा होकर उसके इस अद्भुत कारनामे को प्रशंसा भरी दृष्टि से देखता रह गया था। उसका मुंह विस्मय से खुला था। फिर उसने देखा कि उत्तंक एवं भगीरथ

ताली बजा रहे थे। उसने लक्ष्य पट की ओर देखा। प्रत्येक चाकू ने पट के केंद्र में जगह पाई थी। आदर्श।

'महान प्रभु राम के नाम पर यह अद्भुत था!' पर्वतेश्वर ने अचंभित होकर कहा।

आनंदमयी खुलकर मुस्कुराती हुई घूमी, 'पर्व! आप कब आए?'

इस बीच पर्वतेश्वर का ध्यान कहीं और ही था। वह आनंदमयी के नंगे टांगों को घूर रहा था। या कम से कम ऐसा प्रतीत हो रहा था।

आनंदमयी ने अपने कूल्हों को ढिठाई से एक ओर करते हुए कहा, 'देखें, कुछ तो आपको पसंद आया, पर्व?'

पर्वतेश्वर ने धीमे से फुसफुसाकर आनंदमयी की कमर से लटके हुए एक म्यान की ओर संकेत करते हुए आश्चर्य से कहा,'वह एक लंबी तलवार है।'

आनंदमयी का चेहरा उतर गया, 'आपको सचमुच ही यह पता है कि एक स्त्री को कैसे धरातल पर लाया जा सकता है, है ना?'

'क्षमा करें?' पर्वतेश्वर ने पूछा।

आनंदमयी ने मात्र अपना सिर हिलाया।

'किंतु वह सचमुच ही लंबी तलवार है,' पर्वतेश्वर ने कहा,'आपने कब इसे चलाना सीखा?'

एक योद्धा के हाथ की लंबाई से भी लंबी तलवार को चलाना एक दुर्लभ कौशल होता है। इसमें दक्षता पाना बहुत ही कठिन है। लेकिन जिन्होंने इसमें दक्षता हासिल कर ली, वे किसी का वध करने में अधिक सक्षम हो जाते हैं।

भगीरथ और उत्तंक अब तक निकट आ चुके थे।

भगीरथ ने उत्तर दिया, 'उत्तंक पिछले एक महीने से उसे सिखा रहा है, सेनापति। वह बहुत ही जल्दी सीखने वाली शिष्या है।'

पर्वतेश्वर आनंदमयी की ओर मुड़ा और उसने सिर को थोड़ा झुकाया, 'आपके साथ द्वंद्वयुद्ध करना मेरे लिए सम्मान की बात होगी, राजकुमारी।'

आनंदमयी ने अपनी भौंहे उचकाई, 'आप मुझसे द्वंद्वयुद्ध लड़ना चाहते हैं? आप क्या प्रमाणित करना चाहते हैं?'

'मैं कुछ प्रमाणित नहीं करना चाहता हूं, राजकुमारी,' आनंदमयी के यह तेवर देखकर पर्वतेश्वर आश्चर्यचकित था, 'आपके साथ द्वंद्वयुद्ध करना मेरे लिए सम्मान की बात होगी और आपके कौशल को परखने का अवसर भी मुझे प्राप्त होगा।'

'मेरी कुशलता की परीक्षा? आप सोचते हैं कि इसके लिए ही मैं युद्ध की कला सीख रही हूं? ताकि आप मेरी परीक्षा ले सकें और स्वयं को मुझसे बेहतर साबित करे सकें? मैं पहले से ही जानती हूं कि आप बेहतर हैं। आप परिश्रम ना करें।'

पर्वतेश्वर ने अपने गुस्से को काबू में रखने के लिए एक गहरी श्वास भरी, 'देवी, मेरे कहने का तात्पर्य यह कदापि नहीं था। मैं तो बस...'

आनंदमयी ने उसे बीच में ही टोक दिया, 'एक स्फूर्तिवान व्यक्ति के लिए कभी-कभी आप आश्चर्यजनक रूप से मूर्ख हो सकते हैं, सेनापति? पता नहीं मैं क्या सोच रही थी।'

भगीरथ ने बीच-बचाव करने का प्रयास किया, 'अं ऽ ऽ सुनिए, मैं नहीं समझता कि कोई आवश्यकता...'

लेकिन आनंदमयी पहले ही पीछे मुड़ चुकी थी और तूफान की तरह वहां से जा चुकी थी।

— ⚹ —

बहुत ही सुंदर नारंगी सूर्य गंगा से ऊपर उग चुका था। नदी की ओर देखते हुए सती अपने कक्ष की खिड़की के पास बैठी हुई थी। कार्तिक पीछे कृत्तिका के साथ खेल रहा था। सती ने पीछे की ओर मुड़कर अपनी सखी और कार्तिक को देखा। वह मुस्कुराई।

कृत्तिका लगभग कार्तिक की दूसरी मां के समान है। मेरा बेटा बहुत भाग्यशाली है।

सती नदी की ओर पुनः मुड़ गई। उसने कुछ हरकत देखी। ध्यान से देखने पर, जो उसने देखा उससे उसकी त्योरियां चढ़ गईं। सम्राट अथिथिग्व अपने रहस्यमय राजभवन की ओर चल पड़े थे। प्रकट रूप से काशी के भविष्य के लिए एक और पूजा करने। उसे कुछ ठीक नहीं लगा।

उस दिन समस्त काशी नगर रक्षाबंधन का पर्व मना रहा था। यह दिन वह था, जब प्रत्येक बहन विपत्ति के समय सुरक्षा की आशा में अपने भाई की कलाई में रक्षा सूत्र बांधती थी। यह पर्व मेलूहा में भी मनाया जाता था। अंतर केवल इतना ही था स्वद्वीप में बहन अपने भाइयों से उपहार की मांग भी करती थी। और भाइयों के पास उपहार देने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं था।

क्या इस समय उन्हें काशी में नहीं होना चाहिए? मेलूहा में महिलाएं स्थानीय राज्यपाल को राखी बांधने जाती हैं। और उन्हें सुरक्षा प्रदान करना राज्यपाल का कर्तव्य था। प्रभु राम द्वारा यह स्पष्ट रूप से स्थापित किया जा चुका है। राजा अथिथिग्व इस परंपरा का पालन क्यों नहीं कर रहे हैं और उस राजभवन में क्यों जा रहे हैं? और भगवान राम के नाम पर वे इतना सामान क्यों लेकर जा रहे हैं? क्या ये किसी रस्म के संबंध में है कि पूर्वी तट के बुरे भाग्य से छुटकारा मिल सके? या ये उपहार हैं?

'आप क्या सोच रही हैं, राजकुमारी?'

सती पीछे की ओर मुड़ी तो उसने देखा कि कृत्तिका उसे ही एकटक देख रही थी, 'इस पूर्वी राजभवन का रहस्य मुझे जानना है।'

'किंतु, वहां किसी को जाने की अनुमति नहीं है। आप यह जानती हैं। यहां तक कि नीलकंठ को वहां नहीं ले जाने के लिए राजा ने कुछ विचित्र बहाने बनाए थे।'

'मैं जानती हूं। लेकिन कुछ है जो सही नहीं है। और राजा वहां आज इतने उपहार क्यों ले जा रहे हैं?'

'मुझे नहीं पता, राजकुमारी।'

सती कृत्तिका की ओर मुड़ी, 'मैं वहां जा रही हूं।'

कृत्तिका ने चौंककर सती की ओर देखा, 'देवी, आप नहीं जा सकती हैं। राजभवन के ऊंचे स्थानों पर पहरे लगाए गए हैं। यह दीवारों से घेरा हुआ है। वे किसी भी नौका को आते देख सकते हैं।'

'इसीलिए मेरा तैरकर जाने का इरादा है।'

कृत्तिका अब घबरा गई थी। गंगा को तैरकर पार करना कठिन था क्योंकि वह बहुत चौड़ी थी, 'देवी...'

'मैं पिछले कई सप्ताहों से योजना बना रही थी, कृत्तिका। मैंने कई बार अभ्यास भी किया है। नदी के बीच में रेत का एक तट है, जहां मैं बिना किसी को दिखाई दिए विश्राम कर सकती हूं।'

'किंतु आप राजभवन में प्रवेश कैसे करेंगी?'

'अपने कक्ष की ऊंचाई से मैंने संरचनात्मक बनावट का एक अनुमान लगा लिया है। पूर्वी राजभवन के प्रवेश में बहुत ही अधिक पहरेदार हैं। मैंने यह भी देख लिया है कि मुख्य महल में पहरेदारों को प्रवेश की अनुमति नहीं है। उस महल के दूर छोर पर एक जल-निकासी की बड़ी नाली है। बिना किसी के देखे, मैं उसे तैरकर पार कर सकती हूं।'

'किंतु...'

'मैं जा रही हूं। कार्तिक का ध्यान रखना। यदि सबकुछ ठीक-ठाक रहता है तो मैं रात होने के पहले वापस आ जाऊंगी।'

जहाज गंगा के अंतिम घुमाव पर मुड़ा तो वह ब्रंगा के प्रसिद्ध द्वारों से कुछ ही दूरी पर था।

'हे, पवित्र झील!' शिव विस्मय में फुसफुसाया।

यहां तक कि मेलूहा वाले जो अपनी प्रसिद्ध अभियांत्रिकी एवं विख्यात स्मारकों को देखने के आदि थे, वे भी अचंभित थे।

दिन की दोपहरी में वे द्वार चमक रहे थे जो नई खोजी गई धातु से ही बने हुए थे, अर्थात लोहे से। यह द्वार पूरी नदी के आर-पार बना हुआ था। इस अवरोध का निर्माण दुर्ग की दीवार के साथ-साथ सौ किलोमीटर तक था। यह इसलिए बनाया गया था ताकि कोई भी व्यक्ति छोटी नौका के टुकड़े-टुकड़े करके दूसरी ओर ले जाकर पुनः उन टुकड़ों को जोड़कर यात्रा ना कर सके। ब्रंगा की सीमा पर किसी सड़क मार्ग की व्यवस्था नहीं थी। गंगा ही एकमात्र मार्ग के रूप में उपलब्ध थी। और यदि कोई मूर्खतावश घने जंगल से होते हुए ब्रंगा में प्रवेश करने की कोशिश करता तो ब्रंगा राज्य के किसी व्यक्ति से मिलने से पूर्व निश्चित रूप से जंगली पशुओं और बीमारियों का शिकार बन जाता।

उस अवरोध का आधार लोहे से बने पिंजरे के समान था जो उस विशालकाय गंगा के पानी को बहने दे रहा था। जबकि किसी व्यक्ति या बड़ी मछली आदि को आर-पार जाने से रोक रहा था। उस अवरोधक पर पांच जगहों पर खाली स्थल छूटे हुए थे ताकि पांच जहाज एक साथ अंदर जा सकें। यह देखने में प्रथम दृष्टि में असंगत प्रतीत हो रहा था क्योंकि ऐसा लगता था मानो इससे पहले कि ब्रंगावाले कुछ प्रतिक्रिया दिखा पाते तीव्र गति से चलने वाली नौकाएं उन खुली जगहों से आसानी से अंदर जा सकती थीं।

'यह देखने में विचित्र प्रतीत होता है,' भगीरथ ने कहा, 'इतना बड़ा अवरोधक बनाकर बीच में खाली जगह छोड़ देना।'

'वे प्रवेशद्वार नहीं हैं, भगीरथ,' शिव ने कहा, 'वे फंदे हैं।'

शिव ने ब्रंगा के एक जहाज की ओर संकेत किया जो अभी-अभी द्वार में प्रविष्ट हुआ था। उस खुले भाग के प्रारंभ में एक गहरा तालाब बना हुआ था, जिसका तल जलरोधक सागौन की लकड़ी से बना हुआ था, जिसमें से वह जहाज तैरकर अंदर गया था। वहीं पर चतुरता से बनाई गई एक पंप व्यवस्था थी जो उस तालाब में गंगा के पानी को आने देती थी। यह जहाजों को एक उचित ऊंचाई प्रदान कर रहा था। और उसके बाद उन्होंने ब्रंगा के द्वारों का भयंकर जादू देखा। दो मोटे-मोटे लोहे के चबूतरे बहुत ही तेजी से तालाब की दोनों दिशाओं से विस्तार लेते हुए जहाज के निकट आए, तल के नीचे की ओर विस्तृत किए हुए खांचों में आकर जम गए। उन चबूतरों के किनारों पर पहिये लगे हुए थे जो जहाज के लोहे के आधार में बनी नालियों में समा गए।

शिव ने पर्वतेश्वर की ओर देखा, 'तो इसलिए दिवोदास ने हमारे जलयान के तल के नीचे वह आधार बनाया था।'

पर्वतेश्वर ने विस्मय में सिर हिलाया, 'वे चतूबरे इतने त्वरित बल से विस्तृत हुए कि यदि हमारे जलयान के नीचे लोहे का आधार नहीं बना होता तो नीचे का हिस्सा चकनाचूर हो गया होता।'

उस जहाज के तल में लोहे की जंजीरे लगाई जा रही थीं। उसके बाद वे जंजीरों को एक विचित्र प्रकार के यंत्र से जोड़ दिया गया जो विभिन्न प्रकार की मिश्रित घिरनियों वाला था।

'किंतु उन्होंने उन चबूतरों को इतनी गति से चलाने के लिए किस पशु का उपयोग किया है?' भगीरथ ने पूछा, 'यह बल तो किसी भी पशु के बूते की बात नहीं है। यहां तक कि हाथियों के एक झुंड की भी नहीं।'

शिव ने ब्रंगा के जहाज की ओर संकेत किया। वे घिरनियां बहुत ही तीव्र गति से चलने लगी थीं, जिसके कारण जंजीरों ने पहले जहाज को कसा और फिर उसे आगे की ओर खींचने लगा। चबूतरे पर लगे पहिये जहाज को बिना अधिक घर्षण बल के सामने की ओर जाने में सहायता करने लगे, जिसके कारण जहाज विस्मयकारी गति से चलने लगा।

'हे भगवान!' भगीरथ पुनः फुसफुसाया, 'उसे देखिए! कौन-सा पशु उन घिरनियों को इतनी गति से घुमा सकता है?'

'यह एक यंत्र है,' शिव ने कहा, 'दिवोदास ने मुझे बताया था कि कोई संकलनकर्ता यंत्र है जो विभिन्न प्रकार के पशुओं की ऊर्जा को घंटों तक संकलन करता है और उसके बाद कुछ ही सैकंड में उसे मुक्त कर देता है।'

भगीरथ ने अपनी त्योरी चढ़ा ली।

'देखें,' शिव ने कहा।

पत्थर की एक विशालकाय बेलनाकार वस्तु बड़ी गति से नीचे की ओर आ रही थी। उसके तुरंत बाद वैसी ही बेलनाकार वस्तु थी, जो घिरनियों द्वारा धीमे-धीमे ऊपर की ओर खींची जा रही थी क्योंकि बीस बैल जो उस यंत्र से जुड़े हुए थे वे धीरे-धीरे उस यंत्र का चक्कर लगा रहे थे।

'वे बैल घंटों की मेहनत से उस यंत्र को ऊर्जावान करते रहते हैं,' शिव ने कहा, 'वे विशालकाय पत्थर एक निश्चित ऊंचाई पर बांध दिए जाते हैं। जब उन चबूतरों को फैलाना होता है या किसी जलयान को खींचना होता है तो उस पत्थर का बंधन हटा देते हैं। वह तेजी से

नीचे की ओर गिरना है। उसका आवेग अत्यधिक बल मुक्त करता है जो उन चबूतरों को फैला देता है।'

'भगवान इंद्र के नाम पर,' भगीरथ ने कहा, 'यह बहुत ही सरल लेकिन शानदार बनावट है!'

शिव ने सहमति में सिर हिलाया। वह प्रवेशद्वार पर ब्रंगा कार्यालय की ओर देखने के लिए मुड़ गया।

उनके जलयानों ने प्रवेशद्वारों के निकट ही लंगर डाल दिया था। दिवोदास ब्रंगा के प्रभारी अधिकारी से बात करने के लिए पहले ही बाहर निकल चुका था।

— ⅄⦶Ṵ⍏⊛ —

'तुम इतनी जल्दी फिर से वापस क्यों आ गए? तुम्हारे पास इस साल तक के लिए पर्याप्त औषधियां हैं।'

दिवोदास पहरा प्रमुख उमा के बोलने के तरीके को सुनकर हैरान था। वह सदैव ही सख्त थी, लेकिन अक्खड़ नहीं थी। वह इस बात से खुश था कि उसकी नियुक्ति प्रवेशद्वार पर थी। यद्यपि वह उससे कई सालों से मिला नहीं था, फिर भी वे दोनों एक-दूसरे के लंबे समय से मित्र रहे थे। उसने सोचा था कि उसकी मित्रता का लाभ उठाकर वह ब्रंगा राज्य में प्रवेश पा सकता था।

'क्या बात है, उमा?' दिवोदास ने पूछा।

'मैं प्रमुख उमा हूं। मैं काम पर हूं।'

'मुझे क्षमा करें, प्रमुख। आपका अनादर करने का मेरा कोई इरादा नहीं था।'

'मैं तुम्हें वापस अंदर जाने नहीं दूंगी जब तक कि तुम कोई उचित कारण नहीं बताते।'

'मुझे मेरे ही देश में प्रवेश करने के लिए कारण की आवश्यकता क्यों होगी?'

'यह तुम्हारा देश अब नहीं रहा है। तुमने इसे छोड़ने का विकल्प चुना था। तुम्हारा देश काशी है। वहीं चले जाओ।'

'प्रमुख उमा, तुम जानती हो कि मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। ब्रंगा में मेरे बच्चे को जो खतरा था, वह तुम्हें पता है।'

'तुम्हें लगता है कि जो लोग ब्रंगा में रहते हैं उन्हें कोई खतरा नहीं है? तुम सोचते हो कि हम अपने बच्चों से प्यार नहीं करते? उसके बाद भी हमने अपने ही देश में रहने का विकल्प चुना है। तुम अपने चुने हुए विकल्प के परिणामों से पीड़ा पा रहे हो।'

दिवोदास ने महसूस कर लिया कि इस प्रकार की बातों का कोई अंत नहीं था, 'मुझे राजा से राष्ट्रीय महत्व की बात करनी है।'

उमा ने अपनी आंखें संकुचित कीं, 'सच में? मेरा अनुमान है कि राजा के पास काशी के साथ कुछ महत्वपूर्ण व्यावसायिक सौदे करने होंगे, है ना?'

दिवोदास ने गहरी श्वास ली, 'प्रमुख उमा, यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि मैं राजा से मिलूं। तुम्हें मुझ पर अवश्य भरोसा करना चाहिए।'

'यदि तुम अपने किसी एक जहाज में नागाओं की रानी को लेकर आ रहे हो, तब तो ठीक है, वरना मैं इतना महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं समझती कि तुम्हें अंदर आने दिया जाए।'

'मैं नागाओं की रानी से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति को लेकर जा रहा हूं।'

'काशी ने सचमुच ही तुम्हारी मसखरेपन को बढ़ा दिया है,' उमा ने उपहास करते हुए कहा, 'मेरा सुझाव है कि तुम सीधे पीछे मुड़ जाओ और अपनी दिव्यता को कहीं और दिखाओ।'

काशी के ऊपर व्यंग्य भरी द्विअर्थी बातों को सुनने के बाद दिवोदास को विश्वास हो चला था कि वह एक बदली हुई उमा का सामना कर रहा था। एक गुस्सैल और कसैली उमा का, जो तर्क सुनने में अयोग्य थी। उसके पास दूसरा कोई चारा नहीं बचा था। उसे नीलकंठ को बुलाना ही पड़ेगा। वह जानता था कि उमा को पौराणिक गाथा में विश्वास था।

'मैं अभी ऐसे व्यक्ति के साथ पुनः वापस आता हूं, जो नागाओं की रानी से बहुत अधिक महत्वपूर्ण हैं,' उसने जाने के लिए मुड़ते हुए

कहा।

— ⅄ⓄᑌᐱⓍ —

वह छोटा जहाज ब्रंगा के कार्यालय पर जाकर लगा। दिवोदास सबसे पहले उतरा। उसके बाद शिव, पर्वतेश्वर, भगीरथ, द्रपकु और पूर्वक थे।

कार्यालय के बाहर खड़ी हुई उमा ने गहरी श्वास ली, 'तुम आसानी से हार नहीं मानते हो, है ना?'

'यह बहुत ही महत्वपूर्ण है, प्रमुख उमा,' दिवोदास ने कहा।

उमा ने भगीरथ को पहचान लिया, 'क्या यही वह व्यक्ति है?तुम ऐसा सोचते हो कि मैं अयोध्या के राजकुमार के लिए नियम भंग करूं?'

'वे स्वद्वीप के राजकुमार हैं, प्रमुख उमा। इसे ना भूलें। हम अयोध्या को शुल्क देते हैं।'

'तो तुम अब अयोध्या के भी अधिक विश्वासी हो गए हो? तुम कितनी बार ब्रंगा का परित्याग करोगे?'

'प्रमुख उमा, अयोध्या के नाम पर मैं सम्मानपूर्वक आपसे कहता हूं कि हमें अंदर जाने दो,' भगीरथ ने अपने गुस्से को काबू में रखने का भरपूर प्रयास करते हुए कहा। वह जानता था कि नीलकंठ कोई रक्तपात नहीं चाहते थे।

'अश्वमेध समझौते की शर्तें बहुत स्पष्ट थीं, राजकुमार। हम आपको सालाना शुल्क देंगे और अयोध्या कभी ब्रंगा में प्रवेश नहीं करेगा। हमने अपने हिस्से के समझौते का पालन किया है। मुझे आदेश है कि अपने हिस्से के समझौते का पालन करने के लिए आपकी सहायता की जाए।'

शिव आगे बढ़ा, 'यदि मैं कुछ...'

उमा के धैर्य का अंत हो चुका था। वह आगे बढ़ी और उसने शिव को धक्का दे दिया, 'निकल जाओ यहां से।'

'उमा!' दिवोदास ने अपनी तलवार म्यान से बाहर निकाल ली।

भगीरथ, पर्वतेश्वर, द्रपकु और पूर्वक ने भी तत्काल ही अपनी-अपनी तलवारें निकाल लीं।

'इस ईश-निंदा के लिए मैं तुम्हारे समस्त परिवार का वध कर डालूंगा,' द्रपकु ने सौगंध ली।

'रुको!' शिव ने कहा। अपने आदमियों को रोकते हुए उसके हाथ दोनों ओर फैले हुए थे।

शिव उमा की ओर मुड़ा। उमा उसे ही घूर रही थी, हैरान। अंगवस्त्रम जो उसने शरीर को गर्म रखने के लिए लपेटा हुआ था, वह नीचे खिसक गया था। इसके कारण पूर्व में कहे अनुसार उसका नीला कंठ दिख रहा था। उमा के आस-पास के ब्रंगा सैनिक तत्काल ही अपने घुटनों पर आ गए थे। उनके सिर झुके हुए थे और आंखों से आंसू प्रवाहित हो रहे थे। उमा लगातार घूरती जा रही थी, उसका मुंह आधा खुला हुआ था।

शिव ने अपना गला साफ किया, 'मुझे अंदर प्रवेश करने की आवश्यकता है, प्रमुख उमा। क्या मैं आपसे सहयोग का निवेदन कर सकता हूं?'

उमा का चेहरा गर्म लोहे के समान लाल हो गया, 'आप कहां थे अब तक?'

शिव ने अपनी भृकुटि तान ली।

उमा आगे बढ़ी, उसकी आंखों में आंसू थे। वह अपनी छोटी-सी मुट्ठी को शिव के प्रबल सीने पर मारते हुए रोती हुई बोलती चली गई,'आप अब तक कहां थे? हम आपकी कब से प्रतीक्षा कर रहे हैं! हम दुख झेल रहे हैं! आप अब तक कहां थे?'

शिव ने उमा को आराम पहुंचाने के इरादे से पकड़ने का प्रयास किया, लेकिन वह शिव के पैर पकड़े हुए नीचे की ओर गिर गई, दर्दनाक आवाज करती हुई, 'आप अब तक कहां थे?'

चिंतित दिवोदास एक अन्य ब्रंगा मित्र की ओर मुड़ा, जो सीमा पर नियुक्त था। उसके मित्र ने धीमे स्वर में कहा, 'पिछले महीने, प्रमुख उमा ने अपनी एकमात्र संतान को महामारी में गंवा दिया। अनेक वर्षों की मन्नत के बाद उमा को गर्भ ठहरा था। वह पूरी तरह से टूट चुकी थी।'

दिवोदास ने उमा को सहानुभूति से देखा। वह उसके गुस्से को समझ रहा था। वह इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उसकी क्या स्थिति होती यदि वह अपनी संतान को खो बैठता।

शिव, जिसने पूरी बातें सुन ली थीं, वहीं बैठ गया। उसने उमा को अपनी बांहों में भर लिया, जैसे वह अपनी ताकत उसे प्रदान कर रहा हो।

'आप पहले क्यों नहीं आए?' उमा लगातार रोती जा रही थी, शोक में डूबकर।

अध्याय 11

पूर्वी महल का रहस्य

गंगा के मध्य में रेत के टीले पर सती आराम कर रही थी। वह नीचे झुकी हुई थी ताकि पूर्वी महल से उसे देखा ना जा सके। उसका भूरा परिधान एक छद्म आवरण था।

उसने अपनी श्वास को स्थिर करने का प्रयास किया और अपनी मांसपेशियों को आराम देने के लिए विश्राम किया। हाथ से उसने पीछे बंधी अपनी तलवार और ढाल की जांच की। वे उसकी पीठ पर सुरक्षित थे। वह नहीं चाहती थी कि वे गंगा में बह जाएं और जब वह महल में प्रवेश करे तो निस्सहाय हो जाए।

उसने अपनी बगल से एक छोटी-सी थैली निकाली। उसमें रखे फल को जल्दी से खाया। खाने के बाद उसने खाली थैली पीछे रख ली और फिर चुपचाप गंगा में उतर गई।

कुछ क्षणों बाद सती धीरे-धीरे पूर्वी घाट की ओर सरकती जा रही थी। महल के बहुत भारी पहरे लगे घाटों से दूर, जहां राजा की नौकाएं बंधी हुई थीं, एक जल निकासी की नाली थी। इसे काशी से या गंगा से देखना असंभव था। लेकिन अपने निवास से सती इसे देख सकती थी। उसके महल की ऊंचाई काशी में सबसे अधिक थी। यह सोचकर कि जलमार्ग पीछे की ओर होगा, वह पत्तियों के बीच धीमे-धीमे सरकती जा रही थी।

अंततः वह धीमे से उस जल निकासी की नाली में सरक गई और तेजी से शक्तिशाली हाथ चलाते हुए महल की ओर तैरने लगी। जल निकासी की नाली आश्चर्यजनक रूप से साफ थी। संभवतया महल में अधिक लोग नहीं थे। महल की दीवार के निकट वह नाली धरती के अंदर अदृश्य हो गई थी। सती ने पानी के अंदर डुबकी लगाई। धातुओं की छड़ों से महल के पास नाली को सुरक्षित किया गया था। सती ने अपनी थैली से एक रेती निकाली और एक छड़ को काटने लगी। जब उसका दम घुटने लगा तो अपने फेफड़े में प्राणवायु भरने के लिए बाहर निकल आई। उसने फिर से डुबकी लगाई और उस जंग लगी, पुरानी छड़ को काटने लगी। केवल पांच बार प्राणवायु के लिए बाहर निकलकर सती दो छड़ें काटने में सफल हो गई जिससे उसे अंदर प्रवेश करने के लिए पर्याप्त जगह मिल गई थी।

सती पश्चिमी दीवार के साथ-साथ पानी से बाहर निकली तो स्वयं को एक अति सुंदर उद्यान में पाकर ठगी-सी रह गई। वहां कोई भी नहीं था। संभवतया इस दिशा से किसी घुसपैठिए के आने की आशा नहीं की गई थी। वहां एक ओर उद्यान की भूमि पर सुंदर हरी घास और फूल लगे हुए थे, वहीं दूसरी ओर वृक्षों को जंगल की तरह अपने आप बढ़ने के लिए छोड़ दिया गया था। इससे वो उद्यान किसी जंगल सा प्रतीत हो रहा था। मनोहर और प्राकृतिक।

सती ने उस उद्यान को सूखे पत्तों पर पांव पड़ने से बचते-बचाते तेजी से पार किया। वह एक ओर के प्रवेशद्वार तक पहुंची और अंदर प्रवेश कर गई।

महल का डरावना वातावरण उसे प्रभावित करने लगा था। कहीं कोई आहट नहीं थी। कोई नौकर-चाकर इधर-उधर नहीं घूम रहा था। आनंद मनाते राजसदस्यों की कोई आवाज नहीं आ रही थी। उद्यान में किसी पक्षी का स्वर भी नहीं गूंज रहा था। कुछ भी नहीं। ऐसा लग रहा था जैसे उसने किसी शून्य स्थान में प्रवेश किया हो।

वह गलियारों से तेजी से निकल गई। कोई भी बाधा डालने या चुनौती देने वाला नहीं था। वह उस विलासितापूर्ण महल के अंदर बढ़ती गई। ऐसा लगा मानो वहां कोई रहता नहीं था।

अचानक ही उसने बहुत हौले से हंसने का स्वर सुना। वह उसी दिशा में सरक गई।

वह गलियारा एक खुले आंगन में जा खुला। सती एक स्तंभ के पीछे छुप गई। राजा अथिथिग्व मध्य में एक सिंहासन पर बैठे हुए थे। ठीक बगल में उनकी पत्नी खड़ी थी और एक बेटा भी। तीन पुरानी विश्वासपात्र सेविकाएं हाथ में पूजा की थाल लिए खड़ी थीं, जिन्हें सती ने इससे पहले कभी नहीं देखा था। उनकी थालियों में राखी पर्व से संबंधित सभी प्रकार की सामग्रियां पवित्र बंधन सहित रखी हुई थीं।

वे राखी यहां क्यों बंधवा रहे हैं?

और उसके बाद, एक स्त्री आगे आई।

सती की श्वास भय से थम गई।

नागा!

— ⅄◎Ʊ⍏⊛ —

पांचों जहाज का समस्त चालक दल पत्तन और जहाज के दाएं भाग में खड़ा हुआ था। वे सारा कार्यक्रम विस्मय एवं आश्चर्य से देख रहे थे। शिव के लोग ब्रंगा के द्वारों को देखकर बिल्कुल अचंभित थे। उन्होंने चबूतरों को भयभीत कर देने वाले उस बल के साथ अपने जहाज के निकट आते देखा। उसके बाद जंजीरों से कुंडियों को सुरक्षित किया गया। ब्रंगावालों ने संबंधित अधिपतियों से संकेत मिलने पर उनके जहाजी बेड़े को खींचना प्रारंभ कर दिया।

शिव जहाज के पिछले हिस्से में खड़ा होकर प्रवेशद्वार के कार्यालय को देख रहा था।

जो ब्रंगा यंत्र के साथ काम नहीं कर रहे थे, वे घुटनों के बल बैठे हुए नीलकंठ को सम्मान दे रहे थे। लेकिन शिव उस निराश हो चुकी स्त्री को देख रहा था, जो एक दीवार से सटी उकड़ूं बैठी हुई थी। वह अभी भी रोए जा रही थी।

शिव की आंखों में आंसू थे। वह जानता था कि उमा ने मान लिया था कि भाग्य ने उसकी बेटी को धोखा दिया। उसने ऐसा मान लिया था कि यदि नीलकंठ एक महीने पहले आए होते तो उसकी बच्ची आज भी जीवित होती। लेकिन स्वयं नीलकंठ भी इस बारे में निश्चित नहीं थे।

मैं क्या कर पाता?

वह लगातार उमा को देख रहा था।

पवित्र झील, मुझे शक्ति दो कि मैं इस महामारी से संघर्ष कर सकूं।

मैदानी कर्मचारियों को संकेत मिल गया था। उन्होंने संकलनकर्ता यंत्र को खोल दिया जिससे घिरनियां तेजी से घूमने लगीं और जहाज तीव्रता से आगे बढ़ने लगा।

तेजी से पीछे छूटती उमा की झलक को देख शिव फुसफुसाया,'मुझे क्षमा कर देना।'

— ⅄◎Ʊ⍏⊛ —

सती स्तब्ध थी। काशी के राजा के साथ एक नागा स्त्री!

नागा स्त्री वास्तव में एक ही शरीर में दो स्त्रियां थीं। छाती से नीचे का शरीर एक था। लेकिन दो-दो कंधे छाती के पास एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। दोनों कंधों से जुड़ा एक-एक हाथ विपरीत दिशा में झूल रहा था। उस नागा के दो सिर थे।

एक शरीर, दो हाथ, चार कंधे और दो सिर। प्रभु राम यह कैसी दुष्टात्मा है?

सती ने जल्दी ही यह समझ लिया था कि प्रत्येक सिर उस एक ही शरीर पर नियंत्रण करने के लिए संघर्ष कर रहा था। एक सिर थोड़ा सरलमना प्रतीत हुआ जो आगे बढ़कर राजा को राखी बांधना चाहता था। दूसरा सिर चंचल और शरारती था जो अपने भाई के साथ मसखरी करना चाहता था और शरीर को पीछे की ओर खींच रहा था।

'माया!' अथिथिग्व ने कहा, 'मसखरी करना बंद करो और मेरी कलाई पर राखी बांध दो।'

वह शरारती सिर हंसा और उसने अपने भाई की इच्छा का मान रखने के लिए शरीर को आदेश दिया। अथिथिग्व ने बड़े गर्व से बंधी राखी अपनी पत्नी और बेटे को दिखाई। उसके बाद उसने पास में खड़ी एक सेविका की थाली से कुछ मिठाइयां उठाईं और अपनी बहन को दीं। उसके बाद एक तलवार के साथ एक अन्य सेविका सामने आई। अथिथिग्व ने शरारती बहन को देखा और वह तलवार उसे दे दी, 'अच्छी तरह से अभ्यास करो। तुममें सचमुच सुधार हो रहा है!'

सेविका ने उसके बाद राजा को एक वीणा दी, जो एक प्रकार का तार वाद्य है। अथिथिग्व ने दूसरी बहन की ओर देखा और उसे वह वाद्य

दे दिया, तुम्हें बजाते हुए देखना मुझे अच्छा लगता है।'

हाथ असमंजस में दिखे कि किस उपहार को पकड़ें और किसे नहीं।

'अब उपहारों पर और उनके उपयोग पर झगड़ा मत करो। इन दोनों के लिए दिन में समय बांट लो।'

ठीक उसी समय एक सेविका ने सती को देख लिया। वह जोर से चिल्ला पड़ी।

सती ने तत्काल ही अपनी तलवार बाहर निकाल ली। माया ने भी वैसा ही किया। लेकिन उसके दोनों सिर एकमत नहीं हो पा रहे थे। वह स्वयं भी हिचकिचा रही थी। अंततः सीधा सिर जीत गया। वह अपने भाई के पीछे जाकर छुप गई। अथिथिग्व की पत्नी और उसका बेटा अपनी जगह पर जमे रहे।

उधर अथिथिग्व सती को गहरी दृष्टि से घूर रहे थे। उनकी आंखें निडर थीं और हाथ अपनी बहन को सुरक्षात्मक घेरे में लिए हुए थे।

'महाराज,' सती ने कहा, 'इसका क्या अर्थ है?'

'मैं मात्र अपनी बहन से राखी बंधवा रहा हूं, देवी,' अथिथिग्व ने कहा।

'आप एक नागा को शरण दे रहे हैं। आप अपने लोगों से यह छुपा रहे हैं। यह गलत है।'

'यह मेरी बहन है, देवी।'

'किंतु वह एक नागा है!'

'मैं परवाह नहीं करता। मैं केवल इतना ही जानता हूं कि वह मेरी बहन है। उसकी रक्षा करना मेरा कर्तव्य है।'

'किंतु उसे नागा के देश में होना चाहिए।'

'उसे उन राक्षसों के साथ क्यों होना चाहिए?'

'प्रभु रुद्र इसकी अवश्य अनुमति नहीं देते।'

'प्रभु रुद्र ने कहा था कि एक व्यक्ति को उसके कर्म से पहचाना जाना चाहिए ना कि उसके रूप से।'

सती चुप रही, परेशान।

माया अचानक ही आगे बढ़ी। उसका आक्रामक व्यक्तित्व सामने आ गया था। सरलमना व्यक्तित्व शरीर को पीछे की ओर खींचने में संघर्ष करता प्रतीत हो रहा था।

'मुझे जाने दो!' आक्रामक सिर ने कहा।

सरलमना ने अपने हथियार डाल दिए। माया आगे बढ़ी और उसने अपनी तलवार गिरा दी। वह किसी प्रकार के संकट का संदेश नहीं देना चाहती थी।

'आप लोग हमसे घृणा क्यों करती हैं?' उस नागा के आक्रामक सिर ने पूछा।

सती अचंभित खड़ी थी, 'मैं तुमसे घृणा नहीं करती... मैं मात्र इतना कह रही थी कि उन नियमों के पालन होने चाहिए...'

'सच में? तो जो नियम हजारों साल पहले किसी दूसरे देश में उन लोगों ने बनाए जो हमें नहीं जानते हैं या हमारी परिस्थितियों को, वे हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू पर लागू होंगी?'

सती चुप रही।

'आप सोचती हैं कि प्रभु राम इसे ऐसे पसंद करते?'

'प्रभु राम ने अपने अनुयायियों को नियमों का पालन करने का आदेश दिया था।'

'उन्होंने यह भी कहा था कि नियम पत्थर पर बनी लकीर नहीं हैं। एक समान एवं स्थिर समाज के लिए उनकी रचना की जाती है। लेकिन यदि नियम स्वयं ही अन्याय का कारण बनें तो आप प्रभु राम का अनुसरण कैसे करेंगी? उनका पालन करके या उनका उल्लंघन करके?'

सती के पास कोई उत्तर नहीं था।

'भाई ने प्रभु नीलकंठ और आपके बारे में बहुत कुछ बताया है,' माया ने कहा, 'आप भी तो विकर्म हैं?'

सती तन गई, 'मैंने उन नियमों के पालन किए जब तक वे लागू थे।'

'और विकर्म कानून क्यों बदले गए?'

'शिव ने उन्हें मेरे लिए नहीं बदला!'

'आप जो चाहती हैं उस पर विश्वास करें। लेकिन कानून के बदलाव ने आपकी भी सहायता की है, है ना?'

सती चुप रही, परेशान।

माया ने कहना जारी रखा, 'मैंने नीलकंठ के बारे में बहुत-सी कहानियां सुनी हैं। मैं आपको बताती हूं कि उन्होंने इसे क्यों बदला था। विकर्म कानून चाहे हजारों साल पहले बनाए गए हों, लेकिन आज के दिन और इस युग में अनुचित हैं। यह उन लोगों को दमित करने का एक उपकरण मात्र था जो इन्हें नहीं समझते थे।'

सती कुछ कहने ही वाली थी, किंतु चुप रही।

'और किसी विकलांग व्यक्ति से अधिक आज किसे सबसे गलत समझा जाता है? हमें नागा बुलाएंगे। हमें दैत्य कहेंगे। हमें नर्मदा के दक्षिण में फेंक देंगे, जहां हमारी उपस्थिति आपकी श्वेत कमल जैसी जिंदगी को दूषित ना करे।'

'इस प्रकार क्या तुम यह कहना चाह रही हो कि सभी नागा नैतिकता के आदर्श हैं?'

'हम नहीं जानते! और हम इसकी परवाह भी नहीं करते! नागाओं के लिए हम उत्तरदायी क्यों हों? केवल इसलिए कि हम जन्म से ही विकृत हैं? क्या आप किसी सूर्यवंशी की ओर से उत्तर देंगी जो नियम का उल्लंघन करता है?'

सती चुप रही।

'क्या यह पर्याप्त दंड नहीं है कि इस सूनी जगह में केवल तीन सेविकाओं के साथ हमें रहना पड़ता है? हमारे जीवन में एकमात्र सुखद क्षण हमारे भाई का कभी-कभार यहां आना होता है? इससे अधिक हमें और क्या दंड देना चाहती हैं? और क्या आप कृपा कर मुझे इसकी व्याख्या करेंगी कि हमें किसलिए दंडित किया जा रहा है?'

अचानक ऐसा लगा कि वह सरलमना दृढ़ निश्चयी हो गई थी और माया अचानक ही अथिथिग्व के पीछे छुप गई।

अथिथिग्व ने झुककर कहा, 'कृपा करें, देवी सती। मैं आपसे विनती करता हूं। कृपया किसी को इस बारे में ना बताएं।'

सती शांत बनी रही।

'वह मेरी बहन है,' अथिथिग्व ने अनुनय किया, 'मेरे पिता ने मरते समय मुझसे सौगंध ली थी कि मैं इसकी रक्षा करूंगा। मैं अपना वचन नहीं तोड़ सकता।'

सती ने माया को देखा और उसके बाद अथिथिग्व को। आज पहली बार उसका एक नागा के विचार से सामना हुआ था। वह देख सकती थी कि उनके साथ कितना अनुचित व्यवहार किया जा रहा था।

'मैं उससे स्नेह करता हूं,' अथिथिग्व ने कहा, 'कृपा करें।'

'मैं वचन देती हूं कि मैं चुप रहूंगी।'

'आप क्या प्रभु राम के नाम पर वचन दे सकती हैं, देवी?'

सती ने अपनी त्योरी चढ़ा ली, 'मैं एक सूर्यवंशी हूं, महाराज। हम अपनी प्रतिज्ञा कभी भी भंग नहीं करते। और हम जो भी करते हैं, वह प्रभु राम के नाम पर ही करते हैं।'

— ⅄ⓄƱϮ⊛ —

जैसे ही सभी जलयान द्वार से अंदर आ गए तो द्रपकु ने पालों को मस्तूल पर पूरा चढ़ा देने का आदेश दे दिया। उसने अन्य जलयानों को भी जल्दी से विशिष्ट नौसेना बनावट में आ जाने का आदेश भी दे दिया।

वे अभी थोड़ी ही दूर पहुंचे थे कि उन्होंने विशालकाय ब्रह्मपुत्र को गंगा में मिलने के लिए बहते हुए आते देखा। यह संभवतया विश्व में ताजे जल की सबसे बड़ी नदी थी।

'भगवान वरुण के नाम पर,' द्रपकु ने जल एवं समुद्र के देवता को याद करते हुए विस्मय से कहा, 'वह नदी तो समुद्र जैसी विशाल है।'

'हां,' दिवोदास ने गर्व से कहा।

पूर्वक की ओर मुड़ते हुए द्रपकु ने कहा, 'काश आप इसे देख सकते पिताजी। मैंने इतनी विशाल नदी आज तक नहीं देखी।'

'मैं तुम्हारी आंखों से उसे देख सकता हूं, बेटे।'

'ब्रह्मपुत्र भारत की सबसे लंबी नदी है, दलपति,' दिवोदास ने कहा, 'एकमात्र नदी जिसका नाम पुरुषवाचक है।'

द्रपकु ने कुछ क्षण के लिए सोचा, 'तुम सही हो। मैंने कभी सोचा ही नहीं था। अन्य सभी नदियों के नाम स्त्रीवाचक होते हैं। यहां तक कि महान गंगा भी जिसमें हम यात्रा करके आ रहे हैं।'

'हां। हमारा मानना है कि ब्रह्मपुत्र और गंगा हमारी भूमि ब्रंगा के पिता एवं मां समान हैं।'

पूर्वक ने कहना प्रारंभ किया, 'निस्संदेह! यह अवश्य ही तुम्हारे देश के नाम का भी स्रोत होगा। ब्रह्मपुत्र का *ब्र* और गंगा का *गा* मिलकर *ब्रंगा* बना होगा!'

'मनोरंजक बिंदु, पिताजी,' द्रपकु ने कहा। उसके बाद वह दिवोदास की ओर मुड़ा, 'क्या यह सच है?'

'हां।'

जलयान आगे बढ़े, ब्रंगा नदी के नीचे की ओर, राज्य की राजधानी ब्रंगरिदाई की ओर, जिसका शाब्दिक अर्थ था, ब्रंगा का हृदय।

— ⅄ⓄƱϮ⊛ —

पर्वतेश्वर जलयान के पिछले भाग पर खड़ा हुआ नेतृत्व नौका को देख रहा था। आनंदमयी ने जो व्यवस्था सुझाई थी कि नेतृत्व नौका से मुख्य जलयान को रस्सी के सहारे बांध दिया जाए, उसका अनुपालन किया जा रहा था। सेनापति अब भी इस विचार की अप्रतिम सरलता पर अचंभित था।

'सेनापति।'

पर्वतेश्वर पीछे मुड़ा तो उसने आनंदमयी को खड़ा पाया। ठंड होने के कारण उसने अंगवस्त्रम लपेटा हुआ था।

'क्षमा करें, राजकुमारी,' पर्वतेश्वर ने कहा, 'मैंने आपके आने की आहट नहीं सुनी।'

'कोई बात नहीं,' आनंदमयी ने हल्के से मुस्कुराते हुए कहा,

'मेरी आहट बहुत हल्की है ना।'

पर्वतेश्वर ने सहमति में सिर हिलाया। वह कुछ कहना चाहता था, लेकिन हिचकिचा गया।

'आप क्या कहना चाहते हैं, सेनापति?'

'राजकुमारी,' पर्वतेश्वर ने कहा, 'आपके साथ द्वंद्वयुद्ध करने के निवेदन का मेरा आशय आपका अनादर करना नहीं था। मेलूहा में यह मैत्री का एक प्रकार है।'

'मैत्री! आप हमारे संबंध को बहुत ही उबाऊ बना दे रहे हैं, सेनापति।'

पर्वतेश्वर शांत बना रहा।

'ऐसा है कि, यदि आपने मुझे अपना मित्र कहा है तो,' आनंदमयी ने कहा, 'संभवतया आप एक प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं।'

'निस्संदेह।'

'आपने आजीवन अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा क्यों ली थी?'

'वह एक लंबी कहानी है, राजकुमारी।'

'आपकी बातें सुनने के लिए मेरे पास बहुत समय है।'

'ढाई सौ साल से भी पहले की बात है, मेलूहा के कुलीन वर्ग ने श्रीराम की विधि में परिवर्तन के लिए मतदान किया था।'

'इसमें गलत ही क्या है? मैं ने सोचा था कि श्रीराम ने कहा था कि न्याय के उद्देश्य के लिए उनकी विधि को बदला जा सकता है।'

'हां, उन्होंने ऐसा कहा था, लेकिन वह परिवर्तन किसी प्रकार के न्याय के लिए नहीं था। आप मेलूहा के बच्चों के प्रबंधन में मयका व्यवस्था के बारे जानती हैं ना?'

'हां,' आनंदमयी ने कहा। एक मां कैसे अपने बच्चे का आत्म समर्पण कर सकती थी, जिसे दुबारा देखने का कोई अवसर नहीं था,यह उसकी समझ में नहीं आया था। लेकिन वह पर्वतेश्वर के साथ तर्क-वितर्क में नहीं पड़ना चाहती थी, 'तो फिर उसमें क्या परिवर्तन किया गया?'

'मयका व्यवस्था को शिथिल कर दिया गया ताकि कुलीन वर्ग के बच्चों को मयका नहीं जाना पड़े। उन्हें अलग से रखा जाता और उनकी देखभाल की जाती। जब वे सोलह साल के हो जाते तो उन्हें उनके जन्म देने वाले माता-पिता को वापस कर दिया जाता।'

'और आम लोगों के बच्चों के बारे में क्या होता?'

'वे इस शिथिलता में हिस्सेदार नहीं थे।'

'यह तो उचित नहीं था।'

'बिल्कुल सही और मेरे दादा श्री सत्यध्वज ने भी यही सोचा था। शिथिलता होना कोई गलत बात नहीं थी। लेकिन श्री राम का जो अपरिवर्तनीय नियम था वह था कि नियम सब के लिए समान होना चाहिए। कुलीन वर्ग एवं आम जनता के लिए अलग-अलग प्रकार के नियम नहीं होने चाहिए थे। वह गलत था।'

'मैं सहमत हूं। लेकिन क्या आपके पितामह ने इस बदलाव का विरोध नहीं किया?'

'उन्होंने किया। लेकिन वे एकमात्र इसका विरोध करने वाले व्यक्ति थे। इसलिए बदलाव उनके विरोध के बावजूद भी स्वीकार कर लिया गया।'

'यह तो बहुत बुरा हुआ।'

'इस भ्रष्टाचार के विरोध में मेरे पितामह ने प्रतिज्ञा की कि वे और उनके वंशज कोई संतान उत्पन्न नहीं करेंगे।'

आनंदमयी को आश्चर्य हुआ कि अपने समस्त वंशधारकों के लिए अनंत काल तक ऐसे निर्णय का अधिकार श्री सत्यध्वज को किसने दिया था! लेकिन उसने कुछ कहा नहीं।

पर्वतेश्वर ने गर्व से सीना फुलाकर कहा, 'और मैंने उस प्रतिज्ञा का सम्मान आज तक किया है।'

आनंदमयी ने गहरी श्वास ली और नदी के तट की ओर घूम गई। उसका ध्यान घने जंगलों की ओर था। पर्वतेश्वर भी ब्रंगा नदी को देखने के लिए मुड़ा। कीचड़ के कारण नदी का प्रवाह कम था।

'जीवन कैसे काम करता है, यह बड़ा ही विचित्र है,' पर्वतेश्वर की ओर बिना मुड़े आनंदमयी ने कहा, 'एक नेक व्यक्ति ढाई सौ साल से भी अधिक पहले किसी विदेशी भूमि में अन्याय का विरोध करते हैं। आज, वही विरोध मेरे लिए अन्याय का कारण...'

पर्वतेश्वर क्षणभर के लिए आनंदमयी की ओर मुड़ा। उसने आनंदमयी के अति सुंदर मुखड़े को ध्यान से देखा। पर्वतेश्वर के चेहरे पर हल्की मुस्कान थी। फिर उसने अपना सिर हिलाया और नदी की ओर पुनः मुड़ गया।

अध्याय 12

ब्रंगा का हृदय

ब्रंगा नदी में जल एवं कीचड़ की अत्यधिक मात्रा थी। इस कारण वह एक इकाई की तरह नहीं वह पा रही थी। वह पूर्वी समुद्र में विलीन होने से पूर्व बहुत तेजी से अनेक उपनदियों में विभक्त हो गई थी जो ब्रंगाओं की भूमि में अपनी प्रचुरता दिखा रही थीं। इसी के कारण विश्व के सबसे बड़े डेल्टा की रचना हुई थी। इस प्रकार की अफवाहें थीं कि बाढ़ से बहकर आई कछारी मिट्टी एवं पानी की प्रचुरता के कारण वह भूमि इतनी उपजाऊ थी कि किसानों को अपनी फसलों के लिए मेहनत करने की आवश्यकता नहीं थी। उन्हें बस बीजों को छितराना होता था और बाकी का काम वह मिट्टी कर देती थी।

ब्रंगरिदाई ब्रंगा नदी की मुख्य उपनदी पद्मा पर स्थित था।

ब्रंगा के द्वारों को पार करने के बाद दो सप्ताह से कुछ ही दिन अधिक हुए थे और शिव के जलयानों का समूह ब्रंगरिदाई के निकट पहुंच चुका था। वे संपन्न एवं समृद्धशाली भूमि से होकर गुजरे थे, लेकिन वहां मृत्यु और शोक का वातावरण था, वो भी अत्यधिक सघन।

ब्रंगरिदाई की चहारदीवारें एक हजार हेक्टेयर के क्षेत्र में फैली हुई थीं, जो देवगिरि के समान थीं। जहां देवगिरि तीन वेदिकाओं के ऊपर बनाया गया था, वहीं ब्रंगरिदाई को प्राकृतिक रूप से एक ऊंचे मैदान पर स्थापित किया गया था, जो पद्मा नदी से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर था ताकि बाढ़ से सुरक्षा की जा सके। ऊंची दीवारों से घिरी राजधानी किसी दीर्घकालीन योजना के परिदृश्य में चंद्रवंशी नगरों की तरह ही अवहेलना की शिकार थी। सड़कें जैसी-तैसी बनी हुई थीं ना कि मेलूहा की तरह व्यवस्थित एवं जालनुमा। लेकिन गलियां फिर भी चौड़ी थीं और किनारों पर पेड़ लगे हुए थे। ब्रंगाओं की समृद्धता के कारण उनके भवन बहुत ही अच्छे से बने हुए थे और उनका रख-रखाव भी अच्छा था जबकि उनके मंदिर गगनचुंबी और भव्य थे। आमजनों के उपयोग के लिए बहुसंख्य जनोपयोगी भवन एवं प्रतिष्ठान आदि सदियों से बने हुए थेः प्रदर्शनों के लिए रंगभूमि, उत्सवों के लिए सभागृह, उत्कृष्ट उद्यान और सार्वजनिक स्नानघर। अच्छी स्थिति में होने के बावजूद उन सार्वजनिक प्रतिष्ठानों का उपयोग दुर्लभ ही होता था। बार-बार की महामारी ने ब्रंगाओं के लिए प्रतिदिन मृत्यु का मुख देखना सुनिश्चित कर दिया था। जीवन के लिए उत्साह बहुत ही कम बचा रह गया था।

नगर के पत्तन पर कई स्तरों पर नौका लगाने की व्यवस्था थी क्योंकि साल के अलग-अलग समय पर पद्मा का जलस्तर बढ़ता-घटता रहता था। इस समय जब शीत ऋतु अपने चरम पर थी, पद्मा अपने प्रवाह के मध्यम स्तर पर थी। शिव और उसके अनुयायी दल के सदस्य पांचवें स्तर पर उतरे। शिव ने देखा कि पर्वतेश्वर, द्रपकु, पूर्वक और दिवोदास उसके लिए पत्तन के उस स्तर पर मिलने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे।

'यह बहुत ही विशालकाय पत्तन है, पूर्वक जी,' शिव ने कहा।

'मुझे बोध हो रहा है, प्रभु,' पूर्वक मुस्कुराया, 'मेरे विचार से संभवतया इन ब्रंगाओं में मेलूहा के समान दक्षता की योग्यता है।'

'मैं नहीं समझता कि वे दक्षता की कोई परवाह भी करते हैं, पिताजी,' द्रपकु ने कहा, 'मुझे बोध हो रहा है कि उनके लिए बड़ी चुनौती यह है कि वे जीवित कैसे रहें?'

ठीक उसी समय एक छोटे कद का गोल-मटोल ब्रंगा सीढ़ियों पर भागता हुआ नीचे की ओर आता दिखा। उसने अनेक प्रकार के अवर्णनीय स्वर्ण आभूषण पहने हुए थे। उसने पर्वतेश्वर को देखा और अपने घुटनों के बल बैठ गया। उसने अपना सिर उसके पैरों में रख दिया और बोला, 'प्रभु, आप आ गए हैं! आप आ ही गए! हम तर गए!'

पर्वतेश्वर ने नीचे झुककर उस व्यक्ति को रुखाई से ऊपर उठाया, 'मैं नीलकंठ नहीं हूं।'

उस ब्रंगा ने ऊपर की ओर देखा। वह हैरान-परेशान दिखा।

पर्वतेश्वर ने शिव की ओर संकेत किया, 'वास्तविक प्रभु के सामने नतमस्तक हो जाओ।'

वह व्यक्ति भागकर शिव के पैरों तक पहुंचा, 'मुझे क्षमा करें, प्रभु। मेरे इस कठोर अपराध के लिए कृपा कर ब्रंगावालों को दंड ना दें।'

'उठो, मित्र,' शिव मुस्कुराया, 'तुम मुझे कैसे पहचान सकते हो, जब तुमने मुझे पहले कभी देखा ही नहीं।'

वह ब्रंगा खड़ा हो गया। उसकी आंखों से लगातार आंसू बह रहे थे, 'ऐसी विनम्रता, इतनी सत्ता के बाद भी। ये केवल आप ही हो सकते हैं, हे महान महादेव।'

'मुझे लज्जित ना करो। तुम्हारा नाम क्या है?'

'मैं बप्पीराज हूं, ब्रंगा का प्रधानमंत्री, प्रभु। हमने आपके स्वागत समारोह की व्यवस्था भूमि स्तर पर की है, जहां राजा चंद्रकेतु आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

'कृपया मुझे अपने राजा के पास ले चलो।'

— ⅄ⓄUᛏ⊛ —

बप्पीराज बड़े गर्व से मैदानी स्तर की अंतिम सीढ़ी चढ़ गया, शिव ने अनुसरण किया। उनके पीछे भगीरथ, पर्वतेश्वर, आनंदमयी, आयुर्वती, दिवोदास, द्रपकु, पूर्वक, नंदी और वीरभद्र थे।

जैसे ही शिव वहां पहुंचे तो पंडितों के एक समूह ने तीव्र शंखध्वनि की। थोड़ी दूर पर खड़ा सुंदर स्वर्ण आभूषण मंडित हाथियों का एक झुंड जोर से चिंघाड़ा जो पूर्वक को विस्मित करने के लिए काफी था। मैदानी स्तर पर महीन कारीगरी किए गए पत्थरों का चबूतरा स्वर्ण आवरण के साथ महादेव के स्वागत के लिए तैयार किया गया था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि ब्रंगरिदाई नगर का समस्त जनमानस--4,00,000 जनसंख्या--नीलकंठ के स्वागत के लिए एकत्र हो गया था। उस भीड़ के आगे राजा चंद्रकेतु का मर्मस्पर्शी स्वरूप उपस्थित था।

वह एक मध्यम कद का, कांसे सी रंगत, उन्नत कपोलों और हिरणी सी आंखों वाला था। राजा चंद्रकेतु के काले बाल अधिकतर भारतीयों के समान ही थे और वे अच्छी तरह से तेल लगाकार सुघड़ता से काढ़े हुए थे। उसके छरहरे शरीर पर दूधिया सफेद रंग की धोती और अंगवस्त्रम थे। स्वर्ण के विख्यात भंडार एवं अत्यधिक समृद्ध साम्राज्य का राजा होने के बावजूद चंद्रकेतु के शरीर पर चुटकी भर भी स्वर्ण आभूषण नहीं था। उसकी आंखें पराजित सी दिख रही थीं मानो वह नियति से संघर्षरत था।

चंद्रकेतु घुटनों के बल बैठा और उसने हाथ आगे कर अपना सिर भूमि से स्पर्श कर दिया। वहां उपस्थित सभी ब्रंगावालों ने वैसा ही किया।

'आयुष्मान भव, महाराज,' शिव ने राजा को लंबी आयु का आशीर्वाद देते हुए कहा।

चंद्रकेतु ने ऊपर की ओर देखा। वह अब भी घुटनों के बल बैठा हुआ था। उसके हाथ नमस्ते की मुद्रा में जुड़े हुए थे। उसकी आंखों से धाराप्रवाह आंसू बह रहे थे। 'मैं जानता हूं कि मैं बहुत लंबी आयु तक जीवित रहूंगा, प्रभु। और हमारे ब्रंगा के लोग भी क्योंकि आप आ गए हैं!'

— ⅄ⓄUᛏ⊛ —

'हमें इस अविवेकी युद्ध को अवश्य रोक देना चाहिए,' नागा राज्यसभा में चारों ओर देखते हुए वासुकी ने कहा। सहमति में अनेक सिर हिले। वासुकी नागाओं के पूर्वजों में से एक विख्यात नागा राजा का वंशज था। उसकी वंशावली के कारण उसे सम्मान प्राप्त था।

'लेकिन युद्ध तो समाप्त हो चुका है,' रानी ने कहा, 'मंदार पर्वत का विध्वंस किया जा चुका है। रहस्य हमारे पास है।'

'तो फिर हम ब्रंगावालों को औषधियां क्यों भेज रहे हैं?' निषाद ने पूछा, 'अब हमें उनकी कोई आवश्यकता नहीं। उन्हें सहायता देकर दुश्मनों का वैमनस्य बेकार बना रहेगा।'

'क्या अब नागा लोग इसी प्रकार काम करेंगे?' रानी ने पूछा,'जब आवश्यकता नहीं तो मित्रों को त्याग देंगे?'

किसी पक्षी के समान प्रतीत होते चेहरे वाली सुपर्णा बोल उठी,'मैं रानी से सहमत हूं। ब्रंगावाले हमारे मित्र थे और आज भी हैं। वे ही एकमात्र हैं, जिन्होंने हमें समर्थन दिया। हमें उनकी सहायता जरूर करनी चाहिए।'

'लेकिन हम नागा हैं,' आस्तिक ने कहा, 'हमें अपने पूर्वजन्म के पापों के कारण सजा दी गई है। हमें भाग्य को स्वीकार लेना चाहिए और पश्चाताप में अपना जीवन बिताना चाहिए। साथ ही ब्रंगावासियों को भी यही परामर्श देना चाहिए।'

रानी ने अपना होंठ काट लिया। कर्कोटक ने गहरी दृष्टि से रानी को देखा। वह जानता था कि उसकी रानी इस प्रकार की हारी हुई प्रवृत्तियों से घृणा करती थी। लेकिन वह यह भी जानता था कि आस्तिक ने जो कहा, वह बहुसंख्यकों का मत था।

'मैं सहमत हूं,' इर्वत ने सुपर्णा की ओर देखने से पहले ही कहा, 'और मैं गरुड़ लोगों से यह समझने की अपेक्षा नहीं करता। वे लोग युद्ध के सदैव ही भूखे हैं।'

यह टिप्पणी चुभ गई। गरुड़ लोग या पक्षी से चेहरे वाले नागा शेप नागाओं के दुश्मन रह चुके थे। वे एक पौराणिक नगर नागापुर में रहा करते थे। वो पंचवटी से सुदूर पूर्व में था, लेकिन दंडक वन का ही हिस्सा था। लोकाधीश ने बहुत साल पहले मध्यस्थता की और तत्कालीन नेता सुपर्णा ने रानी के एक विश्वासी सहायक के तौर पर राज्यसभा में भाग लिया था। उसकी प्रजा अब पंचवटी में ही रहती थी।

रानी ने दृढ़ता से कहा, 'यह अनावश्यक है, श्री इर्वत। कृपया यह मत भूलें कि देवी सुपर्णा ने गरुड़ लोगों को नागाओं के परिवार का हिस्सा बनाया है। अब हम सभी सहोदर हैं। कोई भी देवी सुपर्णा का अपमान करता है तो उसे मेरे प्रचंड क्रोध को झेलना पड़ेगा।'

इर्वत ने तत्काल ही अपनी बात बंद कर दी। रानी का गुस्सा कुख्यात था।

कर्कोटक ने इधर-उधर चिंता से देखा। इर्वत चर्चा से हट गया था लेकिन इस चर्चा का कोई ओर-छोर नहीं था। जैसाकि रानी ने वचन दिया था, क्या वे लोग ब्रंगावालों को औषधियां भेजने में सक्षम होंगे? उसने लोकाधीश की ओर देखा, जो बोलने के लिए खड़ा हो चुका था।

'इस सभा के देवियों एवं सज्जनों, आपके मध्य बोलने की धृष्टता करने के लिए क्षमा करें।'

सभी लोग लोकाधीश की ओर मुड़ गए। हालांकि वह राज्यसभा का सबसे युवा सदस्य था, लेकिन वह सबसे अधिक सम्माननीय भी था।

'हम लोग इसे गलत तरीके से देख रहे हैं। यह हमारे युद्ध या हमारे मित्रों के बारे में नहीं है। यह भूमिदेवी के सिद्धांतों के प्रति सच्चे बने रहने के बारे में है।'

सभी लोगों ने त्योरियां चढ़ा लीं। प्राचीन काल में एक रहस्यात्मक गैर-नागा स्त्री भूमिदेवी उत्तर से आई थी और उसने नागाओं की वर्तमान जीवनशैली की स्थापना की थी। वह महिला एक देवी के रूप में सम्मानित थी। भूमिदेवी के सिद्धांतों पर सवाल उठाना धर्मद्रोह के समान था।

'उनका एक स्पष्ट दिशानिर्देश था कि एक नागा जो भी प्राप्त करे, बदले में उसका भुगतान करे। यही एक तरीका है जिससे हम अपने पापकर्मों को समाप्त कर सकते हैं।'

राज्यसभा के अधिकतर सदस्यों की त्योरियां चढ़ गईं। वे इस बात को नहीं समझ सके कि लोकाधीश इस बात से क्या सिद्ध करना चाहते थे। जबकि रानी, कर्कोटक और सुपर्णा हौले से मुस्कुराए।

'मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप अपनी थैलियों में

झांककर देखें कि आपकी थैली में कितने सिक्के हैं जिन पर राजा चंद्रकेतु की मुहर लगी हुई है। हमारे राज्य में कम से कम तीन चौथाई स्वर्ण ब्रंगा राज्य से ही आया है। उन्होंने एक मित्र होने के नाते हमें यह समर्थन में भेजा है। लेकिन इसे इस प्रकार समझें कि वे हमें किसलिए दिए गए हैं: औषधियों के लिए अग्रिम भुगतान।'

रानी अपने भांजे की बात पर मुस्कुरा उठी। यह उसी का विचार था कि राजा चंद्रकेतु बिना मुहर वाली स्वर्ण की सिल्लियां ना भेजें बल्कि अपने मुहर लगे सिक्के भेजें ताकि नागाओं को यह याद रहे कि ये सिक्के उन्हें कौन दे रहा है।

'मेरा साधारण आकलन बताता है कि हमने अगले तीस सालों की औषधियों की आपूर्ति करने लायक स्वर्ण प्राप्त कर लिया है।

यदि हमें भूमिदेवी के सिद्धांतों को सम्मान देना है तो मेरा कहना है कि हमारे पास उनको औषधियों की आपूर्ति करते रहने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है।'

राज्यसभा के पास कोई विकल्प नहीं था। भूमिदेवी के निर्देशों पर वे सवाल कैसे उठा सकते थे?

प्रस्ताव पारित कर दिया गया।

— ⅄ⵀ⋃⍏⊛ —

'प्रभु, हम महामारी को कैसे रोकें?' चंद्रकेतु ने पूछा।

शिव, चंद्रकेतु, भगीरथ, पर्वतेश्वर, दिवोदास और बप्पीराज ब्रंगरिदाई महल के राजा के निजी कक्ष में बैठे हुए थे।

'इसका मार्ग तो नागाओं से होकर जाएगा, महाराज,' शिव ने कहा, 'मेरा मानना है कि वे भारत में समस्याओं की जड़ हैं। और आपकी महामारी की भी। मैं जानता हूं, आपको पता है कि वे कहां रहते हैं। मुझे उनको खोजना है।'

चंद्रकेतु अकड़ गया। उसकी विषादपूर्ण आंखें कुछ समय के लिए बंद हुईं। उसके बाद वह बप्पीराज की ओर मुड़ा, 'कृपया हमें कुछ समय के लिए एकांत दे दें, प्रधानमंत्री।'

वप्पीराज ने तर्क करने का प्रयास किया, 'लेकिन, महाराज...'

राजा ने आंखें सिंकोड़ीं और अपने प्रधानमंत्री को घूरता रहा। वप्पीराज तत्काल ही कक्ष से वाहर चला गया।

चंद्रकेतु वगल की एक दीवार तक गया। उसने अपनी एक उंगली में से अंगूठी निकाली और एक निशान को उससे दबा दिया। खट की आवाज के साथ दीवार के अंदर से एक छोटा सा बक्सा बाहर निकल आया। राजा ने उसमें से एक चर्मपत्र उठाया और शिव की ओर बढ़ने लगा।

'प्रभु,' चंद्रकेतु ने कहा, 'यह एक पत्र है जो मुझे नागाओं की रानी से कुछ दिनों पूर्व ही प्राप्त हुआ है।'

शिव ने धीमे से अपनी भौंहें चढ़ाईं।

'मैं आपसे खुले मन से इसे सुनने की विनती करता हूं, प्रभु,' उस चर्मपत्र को उठाने एवं पढ़ने से पहले चंद्रकेतु ने कहा, *'मित्र चंद्रकेतु। इस साल की औषधियों की आपूर्ति में देरी के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूं। राज्यसभा के साथ समस्या अभी भी बनी हुई है। लेकिन, चाहे परिस्थिति जैसी भी हो, औषधियां बहुत ही जल्द पहुंचा दी जाएंगी। साथ ही मुझे सूचना मिली है कि एक धूर्त, जो स्वयं को नीलकंठ वताता है, आपके राज्य में आ रहा है। मेरा मानना है कि वह हमारे देश में आने की राह खोज रहा है। वह जो आपको दे सकता है, वह वचन मात्र होगा। हमसे आप औषधियां प्राप्त कर सकते हैं। आपका क्या विचार है कि आपके लोगों को क्या जीवित रखेगा? सूझ-बूझ से चुनें।'*

चंद्रकेतु ने सिर उठाकर शिव को देखा, 'इस पर नागा रानी की मुहर है।'

शिव के पास कोई उत्तर नहीं था।

दिवोदास बोल पड़ा, 'लेकिन, महाराज, मेरे विचार से नागाओं ने हमें शापित किया है। महामारी उनका ही किया धरा है। हमें इसके विरुद्ध लड़ना ही होगा। लेकिन उचित प्रकार से युद्ध करने के लिए हमें इसके स्रोत पर हमला करना होगा। नागाओं की राजधानी पंचवटी पर।'

'दिवोदास, यदि मैं तुमसे सहमत हो भी जाऊं तो भी हम इस बात को नहीं भूल सकते कि जो चीज हमें जीवित रख रही है, वह है उनकी औषधियां। जब तक महामारी का अंत नहीं हो जाता, हम नागाओं के बिना जीवित नहीं रह सकते।'

'लेकिन वे आपके शत्रु हैं, महाराज,' भगीरथ ने कहा, 'जो महामारी आपके राज्य पर उन्होंने थोपी है उसके लिए आप प्रतिशोध कैसे नहीं ले सकते?'

'अपने लोगों को जीवित रखने के लिए मैं प्रतिदिन संघर्ष कर रहा हूं, राजकुमार भगीरथ। प्रतिशोध मेरे लिए किसी विलासिता से कम नहीं, इसका भार मैं नहीं उठा सकता।'

'यह प्रतिशोध नहीं है। यह तो न्याय के बारे में है,' पर्वतेश्वर ने कहा।

'नहीं सेनापति,' चंद्रकेतु ने कहा, 'यह प्रतिशोध या न्याय के बारे में नहीं है। यह केवल एक चीज के बारे में है। मेरे लोगों को जीवित रखने के बारे में। मैं कोई मूर्ख नहीं हूं। मैं यह अच्छी तरह से जानता हूं कि यदि मैं आपको पंचवटी जाने के मार्ग के बारे में बताता हूं तो प्रभु एक विशालकाय सेना के साथ हमला कर देंगे। नागाओं का विध्वंस हो जाएगा। उनके साथ उनकी औषधियां भी, और इस प्रकार ब्रंगा के लोगों के जीवन की उत्तरजीविता भी ध्वस्त हो जाएगी। जब तक कि आप मुझे किसी अन्य आपूर्ति के स्रोत की प्रतिभूति नहीं देते, मैं नहीं बता सकता कि पंचवटी कहां स्थित है।'

शिव ने तीखी दृष्टि से चंद्रकेतु को घूरा। जो उसने सुना, वह उसे अच्छा नहीं लगा। लेकिन वह जानता था कि ब्रंगा का राजा जो कह रहा था वही उचित था। उसके पास कोई विकल्प नहीं था।

चंद्रकेतु ने अपने दोनों हाथ जोड़े जैसे विनती कर रहा हो, 'प्रभु,आप मेरे नेता हैं, मेरे प्रभु, मेरे रक्षक हैं। मैं आपकी पौराणिक गाथा में विश्वास रखता हूं। मैं जानता हूं कि आप सबकुछ ठीक कर देंगे। साथ ही, चाहे मेरे लोग विवरणों को भूल जाएं, लेकिन मुझे श्री रुद्र की कथाएं याद हैं। मुझे याद है कि पौराणिक गाथाओं को पूरा होने में समय लगता है। और समय ही एकमात्र ऐसी वस्तु है जो मेरे लोगों के पास नहीं है।'

शिव ने गहरी श्वास ली, 'आप बिल्कुल सही हैं, महाराज। अभी इसी समय मैं औषधियों की आपूर्ति की प्रतिभूति नहीं दे सकता। और जब तक मैं ऐसा नहीं कर सकता तब तक मुझे आपसे इस त्याग की मांग करने का अधिकार नहीं है।'

दिवोदास कुछ कहने लगा, लेकिन शिव ने हाथ हिलाकर उसे शांत कर दिया।

'मैं जाने की आज्ञा चाहता हूं, महाराज,' शिव ने कहा, 'मुझे सोचने की आवश्यकता है।'

चंद्रकेतु शिव के चरणों में गिर पड़ा, 'कृपा कर क्रोधित ना हों, प्रभु। मेरे पास कोई विकल्प नहीं है।'

शिव ने चंद्रकेतु को उठाकर खड़ा किया, 'मैं जानता हूं।'

शिव जाने को हुआ तो उसकी दृष्टि नागा रानी के पत्र पर पड़ी। जैसे ही उसने पत्र के नीचे लगी मुहर देखी तो तन गया। वहएक ओऽम का चिह्न था। लेकिन सर्वप्रचलित नहीं था। ऊपरी एवं निचले घेरे के मिलन विंदु पर दो सर्पों के सिर थे। तीसरा घेराव पूर्व की ओर निकल रहा था जिसका एक सर्प के नुकीले सिर से अंत होता था और उसकी द्विशाखित जीभ डराते हुए बाहर निकली हुई थी।



शिव धीमे से गरजा, 'क्या यह नागा रानी की मुहर है?'

'जी हां, प्रभु,' चंद्रकेतु ने कहा।

'क्या कोई अन्य नागा इसका उपयोग कर सकता है?'

'नहीं, प्रभु। केवल रानी इसका उपयोग कर सकती है।'

'मुझे सच वताएं। क्या कोई अन्य नागा इसे उपयोग कर सकता है?'

'नहीं, प्रभु। कोई नहीं।'

'यह सच नहीं है, महाराज।'

'प्रभु जो मुझे पता है...' अचानक चंद्रकेतु रुक गया, 'निस्संदेह, लोकाधीश भी इस मुहर का उपयोग करते हैं। नागा इतिहास में शासक के अलावा वे एकमात्र ऐसे हैं जिसे इस मुहर के उपयोग की अनुमति है।'

शिव ने चिड़चिड़ाते हुए कहा, 'लोकाधीश? उसका नाम क्या है?'

'मैं नहीं जानता, प्रभु।'

शिव ने अपनी आंखें संकुचित कीं।

'मैं अपने लोगों की सौगंध लेकर कहता हूं, प्रभु,' चंद्रकेतु ने कहा, 'मैं नहीं जानता। मुझे केवल इतना पता है कि उसकी औपचारिक उपाधि लोकाधीश है।'

'प्रभु,' भगीरथ ने कहा, 'हमें राजा चंद्रकेतु पर जोर डालना चाहिए।'

भगीरथ, पर्वतेश्वर और दिवोदास ब्रंगरिदाई महल के शिव के निजी कक्ष में बैठे हुए थे।

'मैं सहमत हूं, प्रभु,' दिवोदास ने कहा।

'नहीं,' शिव ने कहा, 'चंद्रकेतु की बात में दम है। इससे पहले कि हम पंचवटी पर आक्रमण करें हमें नागा औषधियों की आपूर्ति की प्रतिभूति देनी होगी।'

'लेकिन यह तो असंभव है, प्रभु,' पर्वतेश्वर ने कहा, 'केवल नागाओं के पास ही वह औषधि है। उन औषधियों को प्राप्त करने का एकमात्र तरीका यह है कि हम नागाओं के क्षेत्राधिकार पर नियंत्रण कर लें। और यदि ब्रंगा के राजा हमें पंचवटी का पता नहीं बताते तो हम नागाओं के क्षेत्र पर कैसे नियंत्रण कर पाएंगे?'

शिव दिवोदास की ओर मुड़ा, 'नागा औषधियों को प्राप्त करने का अवश्य कोई अन्य तरीका होगा।'

'एक बहुत ही विचित्र तरीका है, प्रभु,' दिवोदास ने कहा।

'क्या?'

'लेकिन यह अत्यंत ही खराब तरीका है, प्रभु।'

'मुझे उसका निर्णय करने दो। क्या है वह तरीका?'

'मधुमती नदी के उस पार जंगल में एक दस्यु है।'

'मधुमती?'

'वह भी ब्रंगा नदी की एक उपनदी है, प्रभु। यहां से पश्चिम की ओर।'

'मैं समझ रहा हूं।'

'ऐसी अफवाह है कि उस दस्यु के पास नागा औषधि बनाने का तरीका है। ऐसा पता चला है कि वह इसे एक गोपनीय पौधे की सहायता से तैयार करता है जो महानदी के उस पार कहीं मिलता है। यह नदी दक्षिण-पश्चिम में प्रवाहित होती है।'

'तो फिर यह दस्यु इसे बेचता क्यों नहीं? किसी दस्यु को धन में तो रुचि होती ही है।'

'वह एक विचित्र दस्यु है, प्रभु। ऐसी अफवाह है कि वह जन्म से ब्राह्मण है, लेकिन लंबे समय से उसने हिंसा के लिए ज्ञान के पथ को त्याग दिया है। हममें से अधिकतर लोगों का मानना है कि उसे गंभीर मानसिक समस्याएं हैं। वह धन कमाने से इंकार करता है। उसे क्षत्रियों से घृणा है और यदि कोई भी योद्धा उसके क्षेत्र में जाने की हिम्मत करता है तो वह उसे मार डालता है। यहां तक कि कोई क्षत्रिय यदि भूले-भटके भी वहां पहुंच जाता है तो उसे वह मार डालता है और नागा औषधि को किसी को भी देने से इंकार करता है। यहां तक कि उसे कितना भी स्वर्ण देने का वचन दिया जाए तब भी। वह उन औषधियों को केवल अपने अपराधी साथियों के लिए उपयोग करता है।'

शिव ने अपनी त्योरी चढ़ा ली, 'कितना विचित्र है!'

'वह एक दानव है, प्रभु। वह तो नागाओं से भी बुरा है। ऐसी अफवाह है कि उसने अपनी माता का भी सिर धड़ से अलग कर दिया था।'

'हे ईश्वर!'

'जी हां, प्रभु। आप उस जैसे पागल व्यक्ति से बात कैसे कर सकते हैं?'

'क्या इसके अलावा नागा औषधि प्राप्त करने का कोई अन्य तरीका है?'

'मुझे तो ऐसा नहीं लगता।'

'तो फिर विकल्प का चुनाव हो गया। हमें उस दस्यु को पकड़ना चाहिए।'

'उस दस्यु का नाम क्या है, दिवोदास?' भगीरथ ने पूछा।

'परशुराम।'

'परशुराम!' पर्वतेश्वर हैरानी से चिल्ला पड़ा, 'यह तो छठवें प्रभु विष्णु का नाम है जो हजारों साल पहले हुआ करते थे।'

'मैं जानता हूं, सेनापति,' दिवोदास ने कहा, 'लेकिन मेरा विश्वास करें। इस दस्यु में छठवें प्रभु विष्णु का एक भी गुण नहीं है।'

अध्याय 13

इच्छावड़ के नरभक्षी

'महर्षि भृगु! यहां?' आश्चर्यचकित दिलीप ने पूछा।

भारत के सभी कुलीन वर्गों को पता था कि भृगु मेलूहा के राजगुरु थे और वे सूर्यवंशी सत्ता के पक्के पक्षधर थे। अयोध्या में उनके अचानक ही प्रकट होने के कारण दिलीप आश्चर्यचकित थे। लेकिन साथ ही यह एक दुर्लभ सम्मान भी था क्योंकि भृगु इससे पहले दिलीप की राजधानी कभी नहीं पधारे थे।

'जी हां, महाराज,' स्वद्वीप के प्रधानमंत्री सियामंतक ने कहा।

दिलीप तत्काल ही उस कक्ष की ओर भाग पड़ा, जहां उस महान ऋषि को सियामंतक ने ठहराया हुआ था। जैसी आशा थी, भृगु का कक्ष ठंडा रखा गया था, पूरी तरह से कम प्रकाश और नमी वाला। ठीक वैसा ही जैसाकि उनका हिमालय का अपना निवास था।

दिलीप तत्काल ही भृगु के चरणों में गिर पड़ा, 'मुनिवर भृगु, मेरे नगर में, मेरे महल में। यह तो मेरे लिए अत्यंत सम्मान की बात है!'

भृगु धीमे से बोलते हुए मुस्कुराए, 'सम्मान मेरा है, हे महान सम्राट। आप भारत के प्रकाश हैं।'

दिलीप अब और भी अधिक आश्चर्यचकित हो गया। उसने अपनी भौंहों को ऊपर उठाया, 'मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं, गुरुजी?'

भृगु ने दिलीप को गहरी दृष्टि से देखा, 'मुझे निजी रूप से कुछ भी नहीं चाहिए, राजन। इस संसार में सबकुछ माया है, भ्रम है। जो असीम सत्य है वह इस बात का अनुभव करना कि हमें किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि किसी भ्रम को अपने पास रखना कुछ भी ना रखने के समान ही है।'

दिलीप मुस्कुराया। उसे यह समझ में तो नहीं आया कि भृगु ने क्या कहा, लेकिन उस प्रभावशाली ब्राह्मण से असहमति जताने से वह बहुत भयभीत था।

'आपका स्वास्थ्य अब कैसा है?' भृगु ने पूछा।

दिलीप ने एक नम सूती कपड़े से अपने होंठों को पोंछा जिसके कारण राजवैद्य द्वारा लगाई गई औषधि पुंछ गई। पिछली सुबह स्वद्वीप के सम्राट को खांसी में रक्त आया था। वैद्यों ने उसे बताया कि उसके पास अब कुछ ही महीने शेष थे, 'आपसे कुछ भी छुपा नहीं है, मुनिवर।'

भृगु ने सिर हिलाया, पर कुछ कहा नहीं।

दिलीप बहादुरी से मुस्कुराया, 'मुझे कोई खेद नहीं है, मुनिवर। मैंने अपना पूरा जीवन जी लिया है। मैं संतुष्ट हूं।'

'सत्य है। वैसे आपका पुत्र कैसा है?'

दिलीप ने अपनी आंखें संकुचित कीं। झूठ बोलने का कोई लाभ नहीं था। वे महर्षि भृगु थे जिन्हें सप्तर्षि उत्तराधिकारी माना जाता था, 'ऐसा लगता है कि उसे मेरा वध करने की आवश्यकता नहीं है। भाग्य उसके लिए स्वयं यह कार्य करेगा। वैसे भी प्रारब्ध से कौन लड़ सकता है?'

भृगु आगे की ओर झुके, 'भाग्य मात्र निर्बलों को नियंत्रित करता है, राजन। जबकि शक्तिशाली अपनी इच्छानुसार विधाता के लिखे को ढाल लेता है।'

दिलीप ने अपनी त्योरी चढ़ा ली, 'यह आप क्या कह रहे हैं, गुरुजी?'

'आप अभी और कितने वर्ष तक जीवित रहना चाहते हैं?'

'क्या यह मेरे हाथ में है?'

'नहीं। मेरे हाथ में है।'

दिलीप धीरे से हंसा, 'सोमरस का प्रभाव नहीं होगा, मुनिवर। मैंने मेलूहा से बहुत अधिक मात्रा में इसकी तस्करी की थी। मैंने इस बात को बहुत कठिनता से जाना कि यह रोगों का उपचार नहीं कर सकता है।'

'सोमरस सप्तर्षियों का सबसे महानतम आविष्कार था, राजन। लेकिन वह एकमात्र नहीं था।'

'आप कहना चाहते हैं कि...'

'हां।'

दिलीप थोड़ा पीछे हटा। जल्दी-जल्दी सांसे भरते हुए बोला,'और बदले में?'

'बस एक ऋण की तरह याद रखें।'

'यदि आप मुझे यह आशीर्वाद देंगे, गुरुजी तो मैं सदैव के लिए आपका ऋणी रहूंगा।'

'मेरा नहीं,' भृगु ने कहा, 'भारत का ऋणी बनकर रहें। और, मैं आपको तब याद दिलाऊंगा जब उचित समय आएगा कि आप इस देश की सेवा कर सकें।'

दिलीप ने सहमति में सिर हिलाया।

कुछ दिनों के बाद शिव, भगीरथ, पर्वतेश्वर, आनंदमयी, दिवोदास, द्रपकु, पूर्वक, नंदी और वीरभद्र को लेकर एक जहाज पद्मा में ऊपर की दिशा की ओर चल पड़ा। उनके साथ पांच सौ आदमी भी थे, जो उस दल के आधे थे जो काशी से उनके साथ चले थे। वे केवल सूर्यवंशी थे। शिव को उस भयानक दस्यु एवं उसके दल से निपटने के लिए अनुशासित योद्धाओं की आवश्यकता थी। उसे शंका थी कि बहुत अधिक मात्रा में सेना उस दस्यु दल को बाहर निकालने में एक बाधा सिद्ध हो सकती थी। चार जहाज और पांच सौ चंद्रवंशी सेना को ब्रंगरिदाई की आवभगत में छोड़ दिया गया था।

निस्संदेह आयुर्वती भी उस जहाज पर थी। उसकी स्वास्थ्य संबंधी दक्षता की निश्चित ही आवश्यकता थी। क्योंकि दिवोदास ने विशेषकर एक भीषण रक्तपात वाले टकराव की चेतावनी दी हुई थी।

कुछ दिनों की यात्रा के बाद जहाज ब्रंगा नदी के उस हिस्से में पहुंचा जहां से मधुमती निकलती थी। वे मधुमती की निचली धारा में चले गए। यह ब्रंगा राज्य का सबसे पश्चिमी किनारा था जो बहुत ही कम जनसंख्या वाला प्रदेश था। नदी के दोनों तटों पर घने जंगलों के साथ भूमि कुछ अधिक ही निर्जन हो गई थी।

'किसी दस्यु के लिए एक आदर्श स्थान,' शिव ने कहा।

'जी हां, प्रभु,' द्रपकु ने सहमति में सिर हिलाया, 'यह भूमि सभ्यता के इतनी निकट है कि छापा मारा जा सके। लेकिन फिर भी इतनी अभेद्य कि शीघ्रता से छुपा जा सके। मैं कल्पना कर सकता हूं कि ब्रंगावालों को इस व्यक्ति को बंदी बनाने में क्यों कठिनाई हो रही है।'

'हमें वह जीवित चाहिए, द्रपकु। हमें नागा औषधि का मार्ग चाहिए।'

'मैं जानता हूं, प्रभु। सेनापति पर्वतेश्वर ने पहले से ही हम सब को ये निर्देश दे दिए हैं।'

शिव ने सहमति में सिर हिलाया। डॉल्फिनें जल में नृत्य कर रही थीं। घने सुंदरी वृक्षों पर पक्षी चहक रहे थे। नदी के एक किनारे पर बड़ा सा एक शेर आलस में सुस्ता रहा था। वह बहुत ही सुंदर प्राकृतिक दृश्य था। प्रत्येक पशु गंगा और ब्रह्मपुत्र के उपहार का आनंद ले रहा था।

'यह बहुत ही सुंदर प्रदेश है, प्रभु,' द्रपकु ने कहा।

शिव ने उत्तर नहीं दिया। वह तटों को गहरी दृष्टि से एकटक देख रहा था।

'प्रभु,' द्रपकु ने कहा, 'आपने कुछ देखा?'

'कोई हमें देख रहा है। मैं महसूस कर सकता हूं। हमें कोई देख रहा है।'

— ⅄ⓄƱ⇡⊛ —

पूर्वी महल में अनधिकार प्रवेश के बाद से सती का संबंध अथिथिग्व से बहुत अधिक गहरा लगभग सहोदर जैसा बन चुका था। रहस्यों की साझेदारी आत्मीयता की रचना करने का एक माध्यम है। सती अपने वचन पर टिकी हुई थी। उसने किसी को माया के बारे में फुसफुसाया तक नहीं था। यहां तक कि कृत्तिका को भी नहीं।

उधर अथिथिग्व प्रत्येक मामले में नियम से सती का सुझाव लिया करता था, चाहे वह कितना ही महत्वहीन क्यों ना हो। सती के सुझाव सदैव ही बुद्धिमानी भरे होते थे। उसके सुझाव चंद्रवंशियों की निरंकुश स्वतंत्रता एवं अस्त-व्यस्तता की ओर झुकाव में कुछ सुधार और नियंत्रण ला रहे थे।

इस बार जो समस्या आई थी, हालांकि वह जटिल थी।

'केवल तीन शेर इतनी अस्त-व्यस्तता कैसे फैला सकते हैं?' सती ने पूछा।

अथिथिग्व ने अभी-अभी उसे इच्छावड़ के ग्रामीणों की ओर से आए सहायता के आग्रह के बारे में बताया था। वे लोग पिछले कई महीनों से नरभक्षी शेरों के जानलेवा खतरे के भय में जी रहे थे। काशी तक उनके आग्रह बहुत समय से आ रहे थे। काशी ने अयोध्या से सहायता करने का अनुरोध किया क्योंकि वे काशी के अधिपति थे। चंद्रवंशी प्रशासनिक अधिकारी अब तक अश्वमेध समझौते की शर्तों के बारे में ही विचार-विमर्श कर रहे थे; सबसे प्रमुख मुद्दा यह उभरकर आया था कि अयोध्या द्वारा सुरक्षा प्रदान करने में किस प्रकार पशुओं के हमले सम्मिलित नहीं होते। इसमें कोई संदेह नहीं था कि काशी में कोई ऐसा उल्लेखनीय योद्धा नहीं जो उन कुछ शेरों के विरुद्ध भी उन्हें नेतृत्व प्रदान कर सके।

'हम क्या करें, देवी?'

'किंतु आपने तो काशी पुलिस का एक दल महीनेभर पहले भेजा था, है ना?'

'जी हां, देवी,' अथिथिग्व ने कहा, 'उन्होंने अपनी ओर से पूरी कोशिश की। ग्रामीणों द्वारा अपने ढोल-नगाड़ों को बजा हो-हल्ला कर उन्हें जाल में फंसाने की एक शानदार योजना भी बनाई ताकि वे शेर एक अच्छी तरह से ढके हुए गड्ढे में गिर जाएं जिसमें बड़े-बड़े नुकीले भाले लगे हों। लेकिन उन्हें तब आश्चर्य हुआ जब अधिकतर शेर बच गए और उन्होंने एक विद्यालय पर हमला कर दिया, जहां ग्रामीण बच्चे सुरक्षा की दृष्टि से एक साथ रखे गए थे।'

सती ने हैरान रह जाने वाली नजरों से देखा।

अथिथिग्व ने आंसू भरी आंखों से देखकर फुसफुसाते हुए कहा,'पांच बच्चे मारे गए थे।'

'श्री राम दया करें,' सती फुसफुसाई।

'वे पशु बच्चों के शरीर को कहीं बाहर खींचकर भी नहीं ले गए। हो सकता है कि वे बदला लेना चाहते थे क्योंकि एक शेर जाल में फंसकर मारा गया था।'

'वे मानव नहीं हैं, महाराज,' सती ने झुंझलाते हुए कहा, 'वे ना तो क्रोध अनुभव करते हैं ना बदले की आवश्यकता ही। पशु केवल दो ही कारण से लोगों की जान लेते हैं: भूख या आत्मसुरक्षा।'

किंतु वे क्यों मारेंगे और उसके बाद मृत शरीरों को वहीं क्यों छोड़ देंगे?

'इसमें आंखों देखी के अलावा भी कुछ है?'

'मैं नहीं जानता, देवी। मैं नहीं कह सकता।'

'आपके आदमी कहां हैं?'

'वे अभी भी इच्छावड़ में ही हैं। लेकिन ग्रामीण उन्हें कोई और जाल बुनने से रोक रहे हैं। वे कह रहे हैं कि जब शेरों को फांसने की कोशिश की जाती है तो उनके जीवन और भी अधिक खतरे में पड़ जाते हैं। वे चाहते हैं कि मेरी पुलिस को जंगल में जाकर उन शेरों का शिकार करना चाहिए।'

'जो वे करना नहीं चाहते?'

'ऐसा नहीं है कि वे यह नहीं करना चाहते, देवी। वे नहीं जानते कि कैसे करें? वे काशी के नागरिक हैं। हम शिकार नहीं करते।'

सती ने ठंडी श्वास ली।

'लेकिन वे लड़ाई करने के लिए तैयार हैं,' अथिथिग्व ने कहा।

'मैं जाऊंगी,' सती ने कहा।

'निस्संदेह नहीं, देवी,' अथिथिग्व ने कहा, 'मैं आपसे यह नहीं चाहता। मैं केवल इतना चाहता था कि आप सम्राट दिलीप को एक संदेश भेज दें। वे आपके संदेश को ठुकरा नहीं सकते।'

'उसमें समय लगेगा, महाराज। मैं जानती हूं कि स्वद्वीपवासियों की नौकरशाही कैसे काम करती है। और आपके लोग मरते रहेंगे। मैं जाऊंगी। काशी पुलिस की दो पलटन मेरे साथ यात्रा करने के लिए नियुक्त कर दें।'

साठ सैनिक, चालीस मेरे साथ जाएंगे और बीस पहले से ही इच्छावड़ में हैं। इनसे काम हो जाना चाहिए।

अथिथिग्व नहीं चाहते थे कि सती जंगल में कोई जोखिम उठाए। वह सती को एक बहन सा प्रेम करने लगा था, 'देवी, मैं आपको कुछ होते नहीं देख सकता...'

'मुझे कुछ नहीं होगा,' सती ने बीच में ही बात काट दी, 'आप काशी की दो पलटनें नियुक्त कर दें। दो शेरों के लिए साठ आदमी पर्याप्त होने चाहिए। मैं चाहती हूं कि संयुक्त पलटन का वही व्यक्ति नेतृत्व करे जिसने ब्रंगावालों की रक्षा करने में सेनापति पर्वतेश्वर की सहायता की थी। उसका नाम कावस था, है ना?'

अथिथिग्व ने सहमति में सिर हिलाया, 'देवी, ऐसा बिल्कुल भी ना सोचें कि मुझे आपकी योग्यता को लेकर कोई संशय है... लेकिन आप मेरी बहन समान हैं। मैं आपको ऐसा संकट मोल लेने की अनुमति नहीं दे सकता। मैं नहीं समझता कि आपको जाना चाहिए।'

'और मैं सोचती हूं कि मुझे अवश्य जाना चाहिए। निर्दोष लोग मारे जा रहे हैं। श्री राम मुझे यहां रहने की अनुमति नहीं देंगे। या तो मैं काशी अकेले जाऊं या फिर चालीस सैनिकों के साथ। आप किस विकल्प को चुनना पसंद करेंगे?'

जहाज मधुमती नदी के साथ-साथ चल रहा था। परशुराम की ओर से कोई हमला नहीं हुआ। कोई दानवी नौका नहीं आई जो शिव के जहाज पर आग बरसाए। पहरेदारों को घायल करने वाले कोई तीर भी नहीं। कुछ भी नहीं।

पर्वतेश्वर और आनंदमयी जहाज के पिछले हिस्से में जंगले का सहारा लेकर खड़े हुए थे। वे मंदगति से बहती हुई मधुमती में सूर्य के उदय होने के प्रतिबिंब को एकटक निहार रहे थे।

'प्रभु सही हैं,' पर्वतेश्वर ने कहा, 'वे हमें देख रहे हैं। मैं महसूस कर सकता हूं। इससे मुझे चिढ़ होती है।'

'सच में?' आनंदमयी मुस्कुराई, 'पूरे जीवन में लोग मुझे घूरते रहे हैं। मुझे कभी चिढ़ नहीं हुई!'

पर्वतेश्वर आनंदमयी की ओर मुड़ा जैसे वह अपने कहे का वर्णन करना चाहता हो। लेकिन जैसे ही उसे मसखरी समझ में आई तो मुस्कुरा उठा।

'हे भगवान इंद्र!' आनंदमयी ने पुकारकर कहा, 'मैंने आपको मुस्कुराने पर विवश कर दिया! क्या बड़ी उपलब्धि है!'

पर्वतेश्वर की मुस्कान और खिल गई, 'हां, ऐसा है कि मैं तो केवल यह बताना चाह रहा था कि ये दस्यु लोग हम पर आक्रमण क्यों नहीं...'

'अव इस क्षण को तो नप्ट ना करें,' आनंदमयी ने कहा। उसने पर्वतेश्वर की कलाई पर अपने हाथ के पिछले हिस्से से हल्के से चपत लगाई, 'जानते हैं कि जब आप मुस्कुराते हैं तो बहुत अच्छे लगते हैं। आपको ऐसा अक्सर करना चाहिए।'

पर्वतेश्वर शर्म से लाल हो गया।

'और आप जब शर्म से लाल हो जाते हैं तो और भी अच्छे लगते हैं,' आनंदमयी हंस पड़ी।

पर्वतेश्वर अव और भी लाल हो गया, 'राजकुमारी जी...'

'आनंदमयी।'

'क्षमा करें?'

'मुझे आनंदमयी बुलाएं।'

'यह मैं कैसे कह सकता हूं?'

'वहुत सरल है। कहें आनंदमयी।' पर्वतेश्वर चुप हो गया।

'आप मुझे आनंदमयी क्यों नहीं बुला सकते?'

'मैं नहीं बुला सकता, राजकुमारी। यह उचित नहीं है।'

आनंदमयी ने गहरी श्वास ली, 'मुझे वताएं पर्वतेश्वर। उचित को कौन परिभाषित करता है?'

पर्वतेश्वर ने अपनी भौंहों को ऊपर उठाया, 'प्रभु श्री राम के नियम।'

'और प्रभु श्री राम का एक अपराध के लिए दंड देने का वह मौलिक नियम क्या था?'

'एक भी निर्दोप व्यक्ति दंडित नहीं किया जाना चाहिए। एक भी अपराधी दंड से बचना नहीं चाहिए।'

'तो फिर आप उनके नियमों का उल्लंघन कर रहे हैं।'

पर्वतेश्वर की त्योरी चढ़ गई, 'वह कैसे?'

'एक स्त्री को दंड देकर जिसने कोई अपराध ही नहीं किया।'

पर्वतेश्वर की त्योरी ज्यों की त्यों चढ़ी रही।

'कई कुलीन लोगों ने ढाई सौ साल पहले प्रभु श्री राम के नियमों को तोड़कर एक अपराध किया था। उन्हें उस अपराध का कोई दंड नहीं मिला। उन्हें किसी ने भी दंडित नहीं किया। और, मुझे देखें। मेरा उस अपराध से कुछ भी लेना-देना नहीं। तब मेरा जन्म भी नहीं हुआ था। और उसके वाद भी आप मुझे आज उसके लिए दंडित कर रहे हैं।'

'मैं आपको दंडित नहीं कर रहा, राजकुमारी। मैं कैसे कर सकता हूं?'

'हां, आप मुझे दंडित कर रहे हैं। आप जानते हैं कि आप कर रहे हैं। मैं जानती हूं कि आप कैसा महसूस करते हैं। मैं अंधी नहीं हूं। जानवूझकर मूर्ख बनने का बहाना ना करें। यह अपमानजनक है।'

'राजकुमारी जी...'

'यदि प्रभु श्री राम होते तो आपसे क्या करने को कहते?' आनंदमयी ने बीच में ही टोक दिया।

पर्वतेश्वर ने अपनी मुट्ठी भींच ली। गहरी श्वास लेते हुए उसने नीचे की ओर देखा, 'आनंदमयी। कृपया समझने का प्रयत्न करें। यदि मैं चाहूं तो भी मैं नहीं कर सकता...'

ठीक उसी समय द्रपकु वहां आ पहुंचा, 'सेनापति जी, प्रभु नीलकंठ आपकी उपस्थिति का निवेदन करते हैं।'

पर्वतेश्वर अपने स्थान पर जड़ बना रहा। वह अब भी आनंदमयी को घूर रहा था।

'सेनापति जी...' द्रपकु ने दुवारा कहा।

पर्वतेश्वर फुसफुसाया, 'मुझे क्षमा करें, राजकुमारी जी। मैं आपसे बाद में बात करूंगा।'

मेलूहा का सेनापति मुड़ा और वहां से चला गया। द्रपकु उसके पीछे था।

आनंदमयी ने द्रपकु के आकार को जाते हुए देखकर फुफकार मारी, 'क्या सही समय पर आ टपका!'

— ⁂ —

'क्या आपको जाना ही पड़ेगा, देवी?' कार्तिक को हल्की-हल्की थपकी देते हुए कृत्तिका ने पूछा।

सती ने कृत्तिका की ओर हतबुद्धि हो देखा, 'निर्दोष लोग मारे जा रहे हैं, कृत्तिका। क्या मेरे पास कोई विकल्प है?'

कृत्तिका ने कार्तिक की ओर देखने से पहले सहमति में सिर हिलाया।

'मेरा बेटा समझ जाएगा,' सती ने कहा, 'वह भी ऐसा ही करेगा। मैं एक क्षत्राणी हूं। दुर्बलों की सुरक्षा करना मेरा धर्म है। धर्म सबसे पहले आता है, उसके बाद ही कुछ और।'

कृत्तिका ने एक गहरी श्वास भरी और फुसफुसाई, 'मैं आपसे सहमत हूं, देवी।'

सती ने बड़े लाड़ से कार्तिक के मुख पर हल्के से अपना हाथ फेरा, 'मैं आशा करती हूं कि तुम इसकी अच्छी देखभाल करोगी। यह मेरा जीवन है। मैंने कभी मातृत्व सुख को ना जाना था। मैंने कभी यह कल्पना भी नहीं की थी कि मैं किसी अन्य को इतना प्यार करूंगी जितना मैं शिव को करती हूं। लेकिन इस अल्पकाल में ही कार्तिक...'

कृत्तिका ने सती की ओर मुस्कुराते हुए देखा। उसके हाथ को स्पर्श करते हुए बोली, 'मैं इसकी देखभाल अच्छे से करूंगी। यह मेरा भी तो जीवन है।'

— ⁂ —

लोकाधीश चंबल नदी के ठंडे पानी में घुटनों के बल बैठा हुआ था। उसने अंजुलि भरकर पानी उलीचा और धीरे-धीरे बह जाने दिया। वह धीमे-धीमे कुछ बड़बड़ा रहा था। उसके बाद उसने अपनी हथेलियों को मुख पर फेरा।

नागा रानी उसके बगल में घुटनों के बल बैठी थी, उसने अपनी एक भौंह ऊपर की, 'प्रार्थना?'

'मुझे नहीं पता, यदि प्रार्थना का कोई प्रभाव पड़े तो। मैं नहीं समझता कि ऊपर कोई ऐसा है जिसे सचमुच ही मुझमें कुछ रुचि है।'

रानी मुस्कुराई और उसने फिर से नदी की ओर देखा।

'लेकिन कुछ ऐसे क्षण होते हैं, जब आप उस असीम की कृपा से इंकार नहीं कर सकते,' नागा फुसफुसाया।

रानी उसकी ओर मुड़ी और उसने सहमति में अपना सिर हिलाया। धीमे-धीमे उठते हुए उसने अपना मुखौटा फिर से पहन लिया, 'मुझे सूचना मिली है कि वह काशी से निकल कर इच्छावड़ की ओर चल दी है।'

नागा ने गहरी श्वास भरी। वह धीमे से उठा और अपना मुखौटा लगा लिया।

'वह केवल चालीस सैनिकों के साथ जा रही है।'

नागा की श्वास तेजी से चलने लगी। कुछ दूरी पर एक सौ ब्रंगा सैनिकों के साथ विश्वद्युम्न बैठा हुआ था। यह वह क्षण हो सकता था। दो लाख लोगों की जनसंख्या वाले नगर में उसे बंदी बनाना लगभग असंभव ही था। इच्छावड़ की दूरी ने उसके अवसर को नाटकीय ढंग से बढ़ा दिया था। और अंततः पहली बार उन्हें संख्या का लाभ भी था। उस नागा ने धीमे-धीमे अपनी सांसों को सामान्य कर लिया। अपनी आवाज को शांत करने के प्रयास में वह फुसफुसाया, 'यह तो एक अच्छी खबर है।'

रानी मुस्कुराई और उसने नागा के कंधे पर हल्की थपकी दी,'घबराओ नहीं, मेरे बच्चे। तुम अकेले नहीं हो। मैं तुम्हारे साथ हूं। हर कदम पर।'

नागा ने सहमति में सिर हिलाया। उसकी आंखें संकुचित थीं।

— ⚹ —

वह दूसरे प्रहर का प्रारंभ था, जब सती कावस के साथ अपनी पलटन का नेतृत्व करते हुए इच्छावड़ गांव के अंदर प्रविष्ट हुई। गांव से दूर एक-विशालकाय चिता को देख वह हैरान रह गई। उसने तेज गति से अपना अश्व दौड़ाया। उसके सैनिक उसके पीछे दौड़ पड़े।

एक आदमी उनकी ओर भागता हुआ आया। उसकी श्वास फूल रही थी, चेहरे पर भय था और वह हाथ हिला रहा था, 'कृपयायहां से चले जाएं! कृपया यहां से चले जाएं!'

सती ने उसे अनसुना कर दिया और उस विशाल चिता की ओर बढ़ती चली गई।

'आप मुझे अनदेखा नहीं कर सकते! मैं इच्छावड़ का प्रधान हूं!'

सती ने ग्रामीणों के चेहरे देख लिए थे। हर एक व्यक्ति के चेहरे पर भय की गहरी लकीरें स्पष्ट दिखाई दे रहीं थीं।

'जब से आप लोग यहां आए हैं, परिस्थितियां और भी अधिक बिगड़ गई हैं!' वह प्रधान चिल्लाया।

सती ने उस ब्राह्मण को देखा जिसने मरने वालों की आत्मा की शांति के लिए अभी-अभी पूजा समाप्त की थी। वही एकमात्र व्यक्ति था जो नियंत्रण में प्रतीत हो रहा था।

वह उसके पास पहुंची, 'काशी के सैनिक कहां हैं?'

ब्राह्मण ने उस विशाल चिता की ओर संकेत करते हुए कहा,'वहां हैं।'

'बीस के बीस, सभी?' सती ने हैरानी से पूछा।

उस ब्राह्मण ने सहमति में सिर हिलाया, 'कल रात शेरों ने उन्हें मार दिया। हमारे इन गांव वालों की तरह ही आपके सैनिकों को भी कुछ पता नहीं था कि वे क्या कर रहे हैं।'

सती ने चिता के आस-पास देखा। वह गांव से थोड़ी दूर पर एक खुला क्षेत्र था, जो सीधा जंगल से लगा हुआ था। बाईं ओर थोड़ी दूरी पर कुछ कंबल और जली हुई लकड़ियां पड़ी हुई थीं, जो निश्चित रूप से शिविर के अवशेष थे। उस स्थान पर हर ओर रक्त ही रक्त बिखरा पड़ा था।

'वे यहां सोए थे?' सती ने दहशत से पूछा।

ब्राह्मण ने सहमति में सिर हिलाया।

'नरभक्षी शेरों के होते यह तो आत्मघाती क्षेत्र है! प्रभु श्री राम के नाम पर रात में वे यहां क्यों सो रहे थे?'

ब्राह्मण ने ग्राम प्रधान की ओर देखा।

'यह उनका निर्णय था!' ग्राम प्रधान ने सुरक्षात्मक लहजे में कहा।

'झूठ ना बोलें,' ब्राह्मण ने कहा, 'यह उनका निर्णय नहीं था।'

'मुझे झूठा कहने की हिम्मत मत करना, सूर्याक्ष!' ग्राम प्रधान ने कहा, 'मैंने उनसे बस इतना कहा था कि किसी भी घर में उनकी उपस्थिति शेरों को आकर्षित करती और जिसके कारण लोग मारे जाते। किसी घर में ना रुकने का निर्णय उनका था।'

'क्या आप वास्तव में ऐसा सोचते हैं कि शेरों की रुचि केवल सैनिकों में है?' सूर्याक्ष ने पूछा, 'आप बिल्कुल गलत हैं।'

सती ने सुनना छोड़ दिया था। वह उस पूरे क्षेत्र का सर्वेक्षण कर रही थी, जहां काशी के सैनिक मारे गए थे। अत्यधिक मात्रा में रक्त एवं रक्त पिंडों के बाद भी वह स्पष्ट रूप से शेर और संभवतया कुछ शेरनियों के मार्ग को देख पा रही थी। कम से कम सात अलग-अलग निशान दिख रहे थे। उनके पास जो सूचना थी, वह निश्चित रूप से गलत थी। वह पीछे मुड़ी और गरजी, 'कितने शेर हैं यहां?'

'दो,' ग्राम प्रधान ने कहा, 'हमने दो से अधिक कभी नहीं देखे हैं। तीसरा शेर जाल में फंसकर मर चुका है।'

सती ने उसे अनदेखा कर दिया और सूर्याक्ष की ओर देखा। ब्राह्मण ने प्रतिक्रिया दी, 'उनके पदचिह्नों को देखते हुए कहा जा सकता है कि वे कम से कम पांच से सात रहे होंगे।'

सती ने सहमति में सिर हिलाया। सूर्याक्ष एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो यह जानता था कि वह क्या बोल रहा है। गांव की ओर मुड़ते हुए सती ने सूर्याक्ष से कहा, 'मेरे साथ आएं।'

सात। इसका अर्थ है कम से कम पांच शेरनियां। शेरों का एक मानकीय झुंड। किंतु जो मर चुका, यदि उसे गिनें तो इस झुंड में तीन शेर थे? यह विचित्र बात है। सामान्यतया एक झुंड में केवल एक ही शेर रहता है। कुछ है जो ठीक नहीं है!

'जितना हमें बताया गया, वह उससे भी अधिक चालाक है,' शिव ने कहा, 'गत सप्ताहों से अब तक हमने जो चालें चलीं, वे असफल रहीं।'

सूरज सीधा सिर पर चढ़ा हुआ था। जहाज को एक तट के निकट लंगर डालकर रोक दिया गया था। नदी अत्यधिक कीचड़ साथ बहा लाई थी, जो जगह-जगह जमा होकर प्राकृतिक बांध से बन गए थे। इसी कारण मधुमती अक्सर अपने प्रवाह का मार्ग बदलती रही थी। इसी का परिणाम था कि वर्तमान में बहने वाली नदी के प्रवाह के मध्य में कई स्थानों पर रेत के टीले बन चुके थे। ये वनस्पतिहीन क्षेत्र पर्याप्त रूप से ऐसे स्थान उपलब्ध कराते थे जहां भयानक युद्ध लड़ा जा सकता था। शिव ने अपने जहाज को ऐसे ही एक तट के किनारे लगा रखा था। वह यह मानकर एक वृक्ष पर तीर चला रहा था कि इससे उत्तेजित होकर परशुराम खुले में आ जाएगा। लेकिन योजना अब तक सफल नहीं हो पाई थी।

'जी हां, प्रभु,' पर्वतेश्वर ने सहमति दी, 'केवल अंधी घृणा के कारण उसे आक्रमण करने के लिए उकसाया नहीं जा सकता।'

शिव ने नदी के किनारे को घूरकर देखा।

'मेरे विचार से इसका कारण यह जलयान है,' पर्वतेश्वर ने कहा। हैं।'

'हां, वह यह नहीं जान सकता कि हमारे पास कितने आदमी पर्वतेश्वर सहमत हुआ, 'प्रभु, हमें उसे लुभाने के लिए कुछ

अधिक जोखिम उठाना पड़ेगा।'

'मेरे पास एक योजना है,' शिव धीमे से फुसफुसाया, 'इससे आगे भी एक तट है। वहां मैं एक सौ आदमियों के साथ जाने की योजना बना रहा हूं। जब मैं सैनिकों को घने जंगल में अंदर ले जाऊं तो जहाज को पीछे लौटना होगा ताकि परशुराम को ऐसा लगे कि हम लोगों के बीच में अनबन है। जलयान हमें छोड़कर ब्रंगा राज्य को लौट रहा है। मैं जंगल में और अंदर चला जाऊंगा और उसे किनारे पर आ जाने के लिए विवश करूंगा। और जब मैं उसे वहां पहुंचा दूंगा तो एक अग्निबाण चलाकर संकेत दे दूंगा।'

'उसके बाद भगीरथ जल्दी से जलयान को वापस यहां ला सकता है। तीव्र गति से चलने वाली छोटी नौकाओं को उतारकर चार सौ लोगों के साथ वह तट पर आकर उन्हें कुचल सकता है। केवल दो मुख्य बिंदुओं को याद रखने की आवश्यकता है, प्रभु। उनकी पीठ नदी की ओर होनी चाहिए ताकि जब छोटी नौकाएं तट पर पहुंचें तो वे भाग ना पाएं। और निस्संदेह, जहाज को केवल पालों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए बल्कि पतवारों पर भी। यहां पर गति का ही महत्व है।'

शिव मुस्कुराया, 'बिल्कुल सही। एक और बात। *हम* तट पर नहीं होंगे। केवल मैं होऊंगा। मुझे जहाज पर आपकी आवश्यकता है।'

'प्रभु!' पर्वतेश्वर चीख उठा, 'मैं आपको यह संकट मोल नहीं लेने दूंगा।'

'पर्वतेश्वर, मैं उस कमीने को उकसा लूंगा। लेकिन मैं चाहता हूं, आप पीछे से मेरी सहायता करें। यदि छोटी नौकाएं तेजी से नहीं आईं तो हम सब का संहार निश्चित है। हम लोग उसे बंदी बनाने का प्रयत्न कर रहे होंगे, ना कि उसे जान से मारने का। लेकिन वह हम पर ऐसा संयम नहीं बरतेगा।'

'लेकिन प्रभु...' पर्वतेश्वर ने कहा।

'मैंने निर्णय ले लिया है, पर्वतेश्वर। मुझे आपकी आवश्यकता जलयान पर है। मैं मात्र आप पर विश्वास कर सकता हूं। कल निकलना होगा।'

— ⅄◎ᘮ↟⊗ —

'हम अपना शिविर यहां लगाएंगे,' सती ने विद्यालय के उस भवन की ओर संकेत करते हुए कहा जहां कोई नहीं रहता था। उसमें दरवाजे नहीं थे और शेरों से कोई सुरक्षा नहीं थी। लेकिन सुरक्षात्मक ऊंचाई पर एक छत बनी हुई थी जिस तक सीढ़ियां जाती थीं।

तीसरा प्रहर आधा बीत चुका था। रात का अंधेरा बस छाने ही वाला था। शेर अक्सर रात को ही हमला करते थे। सभी ग्रामीण अपने-अपने घरों के अंदर बंद थे। पिछली रात हुए काशी के सैनिकों के नरसंहार ने सब को हिला दिया था। उन्होंने सोचा कि संभवतया उनका ग्राम प्रधान सही था। काशी के सैनिकों की उपस्थिति ही अपशकुन थी।

ग्राम प्रधान सती के पीछे-पीछे चल रहा था और उसके पीछे सूर्याक्ष था, 'आप को यहां से चले जाना चाहिए। बाहर के लोगों का यहां रहना प्रेतात्माओं को गुस्सा दिला रहा है।'

सती ने उसे अनसुना कर दिया और कावस की ओर मुड़ी,'अपने लोगों को छत पर ले जाओ। अश्वों को भी छत पर चढ़ा लो।'

कावस ने सहमति में सिर हिलाया और तेजी से आदेश का पालन करने चला गया।

ग्राम प्रधान बोलता जा रहा था, 'देखें, वे लोग अब तक केवल पशुओं को मार रहे थे। अब वे मनुष्यों को भी मारने लगे हैं। केवल आपके सैनिकों के कारण। आप यहां से चले जाएं और प्रेतात्माएं शांत हो जाएंगीं।'

सती ग्राम प्रधान की ओर मुड़ी, 'उन्होंने मानव रक्त का स्वाद चख लिया है। अब इससे बचना संभव नहीं। या तो तुम इस गांव को त्याग दो या फिर हमें यहां तब तक रहना पड़ेगा जब तक कि सभी शेर मारे नहीं जाते। मेरा सुझाव है कि तुम सारे ग्रामवासियों को एकत्र करो और कल गांव छोड़ने की तैयारी करो।'

'हम अपनी मातृभूमि का त्याग नहीं कर सकते!'

'मैं तुम्हें अपने गांव वालों की मृत्यु का कारण बनने की अनुमति नहीं दे सकती। मैं कल रवाना होऊंगी और तुम्हारे लोगों को भी अपने साथ लेकर जाऊंगी। तुम जो चाहो कर लो।'

'मेरे लोग इच्छावड़ का त्याग नहीं कर सकते। कभी नहीं!'

सूर्याक्ष बोल पड़ा, 'यदि ग्रामवासियों ने मेरी बात सुनी होती तो हम लोग बहुत पहले ही यहां से चले गए होते! और यह संताप कभी नहीं हुआ होता।'

'यदि आपमें अपने पिता की तुलना में आधा पंडित्य होता,' ग्राम प्रधान ने गुस्से में कहा, 'तो आप प्रेतात्माओं को शांत करने और शेरों को भगाने के लिए पूजा कर चुके होते।'

'पूजा-प्रार्थना उन्हें नहीं भगा सकता, हे मूर्ख प्रधान! क्या आपको इसकी गंध नहीं आती? उन शेरों ने इस जगह को चिह्नितकर दिया है। वे सोचते हैं कि हमारा गांव उनका क्षेत्र है। अब हमारे पास केवल दो विकल्प हैं। लड़ें या मरें। स्पष्ट है कि हम लड़ना नहीं चाहते। हमें भागना ही पड़ेगा।'

'बहुत हो गया!' झुंझलाते हुए सती ने कहा, 'इसमें आश्चर्य की बात नहीं है कि शेरों ने आप लोगों को निशाना बनाया है। अपने-अपने घर

जाएं। हम लोग कल मिलेंगे।'

सती उस विद्यालय के भवन में ऊपर जाने वाली सीढ़ियों की ओर चल पड़ी। बीच रास्ते में जलावन लकड़ियों का ढेर देख उसे प्रसन्नता हुई। वह ढेर के ऊपर से उछलकर निकल गई और ऊपर चढ़ती रही। जैसे ही वह छत पर पहुंची तो उसने अत्यधिक मात्रा में जलावन लकड़ियों को रखा देखा।

वह कावस की ओर मुड़ी। 'रात भर के लिए पर्याप्त है?'

'जी हां, देवी।'

सती ने एक बार जंगल को ध्यान से देखा और धीमे स्वर में बोली, 'जैसे ही सूर्य डूबे, सीढ़ियों पर रखी लकड़ियों में आग लगा दो।'

उसने दूर सामने की ओर देखा। वहीं एक बकरा बंधा हुआ था, जहां काशी के सैनिकों को शेरों ने मारा था। उस ऊंचाई से वह स्थान स्पष्ट दिख रहा था, जिससे तीर चलाया जा सकता था। उसने अनुमान लगा लिया था कि वह कम से कम कुछ शेरों के ऊपर तीर चला सकती थी। इस आशा में कि चारा काम करेगा, सती छत पर बैठ गई और प्रतीक्षा करने लगी।

अध्याय 14

मधुमती का युद्ध

शिव, पर्वतेश्वर, भगीरथ, द्रपकु और दिवोदास जहाज के पिछले हिस्से में वैठे हुए थे। आकाश में चंद्रमा नहीं निकला था जिसके कारण पूरा क्षेत्र अंधकारमय था। झिंगुरों के किटकिटाते स्वरों के अलावा जंगल पूरी तरह से शांत था। इसलिए वे आपस में धीरे-धीरे वातें कर रहे थे।

'समस्या यह है कि हम उसको कैसे विश्वास दिलाएं कि हमारे वीच विद्रोह हो गया है और उसे समस्त जहाजियों से नहीं वल्कि मात्र सौ लोगों से ही लड़ना है,' शिव फुसफुसाया।

'उसके गुप्तचर सदैव हमारी निगरानी करते होंगे,' दिवोदास ने हल्के से कहा, 'हमारा नाटक विश्वसनीय होना चाहिए। हम एक मिनट के लिए भी भटक नहीं सकते।'

शिव अचानक ही चौंका। उसने हाथ से उन सव को बातें करते रहने का इशारा किया। वह धीमे से उठा, रेंगकर जहाज के वाड़े तक गया, अपना धनुष उठाया और उस पर तीर चढ़ाया। फिर सहसा ही विजली सी फुर्ती से वाड़े से ऊपर खड़े होकर उसने तीर चला दिया। पीड़ा भरी एक तेज चीख सुनाई दी क्योंकि दस्यु दल का वह सदस्य जो जहाज की ओर तैरता हुआ आ रहा था, अव डूव गया।

'अरे कायर वाहर निकल!' शिव ने चिल्लाकर कहा, 'बहादुर की तरह लड़।'

इस अचानक आई वाधा से पशु आदि चीखने-चिल्लाने लगे और जंगल में हो-हल्ला मच गया। लकड़बघ्घा चीखा, बाघ दहाड़ा,हिरण मिमियाए। नदी में छपाक की आवाजें हुईं। संभवतया कोई घायल साथी को वचाने का प्रयास कर रहा था। शिव ने सोचा कि पेड़ों की शाखाएं टूटने का स्वर उसने सुना जैसे किसी ने उन्हें तोड़कर पीछे हटने का उपक्रम किया हो।

जैसे ही उसके अनुयायी उसके पास भागे हुए आए तो शिव ने फुसफसाकर कहा, 'वह जानलेवा घाव नहीं था। हमें परशुराम जीवित चाहिए। याद रहे। यह हमारे कार्य को और कठिन बनाता है। लेकिन हमें वह जीवित चाहिए।'

और उसके वाद उन्होंने एक बहुत ही ताकतवर आवाज उस जंगल से सुनी, 'तुम उस जहाज से बाहर क्यों नहीं निकल आते,डरपोक कीड़े? तव मैं दिखाता हूं कि वहादुर कैसे जंग करता है!'

शिव मुस्कुराया, 'यह बड़ा ही मनोरंजक होने वाला है।'

ॐ

सती चौंककर उठी। अचानक किसी कोलाहल से नहीं, बल्कि कोलाहल के थम जाने से।

उसने वाईं ओर देखा। आग की लपटें अत्यधिक तीव्रता से उठ रही थीं। दो सैनिक सबसे ऊपर की सीढ़ियों पर खड़े थे। वे अपनी तलवार निकाले रखवाली कर रहे थे।

'और लकड़ी डालो,' सती फुसफुसाई।

एक सैनिक तत्काल उन जलावन लकड़ियों तक गया और कुछ लकड़ियां उठाकर सीढ़ियों के बीच जल रही आग में डाल दीं। इस बीच सती पंजे के वल चलकर मुंडेर के पास चली गई थी। बकरा मायूस हो पूरी रात मिमियाता रहा था। लेकिन अब चुप था।

उसने जंगले के ऊपर सावधानी से देखा। रात के घने अंधेरे से आस-पास सब घुप्प था। लेकिन विद्यालय में जल रही आग की लपटों से कुछ प्रकाश फैल रहा था। वह वकरा अभी भी वहीं था। वह अब खड़ा नहीं था। उसकी पिछली टांगें थक चुकी थीं। और वह हताश हो कांप रहा था।

'क्या वे यहां हैं, देवी?' चुपके से रेंगकर सती के पास आते हुए कावस ने पूछा।

'हां,' सती फुसफुसाई।

उन्होंने बहुत धीमे से आती एक भारीभरकम दहाड़ सुनी। ऐसी आवाज जो जंगल में किसी भी जीवित जंतु को भयभीत कर दे। कावस ने जल्दी से पलटन के शेष जवानों को जगा दिया। उन्होंने अपनी तलवारें निकाल लीं और सीढ़ियों की तरफ वाले रास्ते की ओर रेंगकर चले गए ताकि उस एकमात्र स्थल की सुरक्षा कर सकें जहां शेर हमला कर सकते थे। उसके बाद सती ने कुछ धीमे से घसीटे जाने जैसी आहट सुनी।

उसने अपनी आंखों पर जोर देकर देखा। एक, दो, तीन, चार।

यह उनका पूरा झुंड नहीं था। चौथा शेर कुछ घसीटता हुआ ले जा रहा था।

'हे प्रभु,' सती दहशत में फुसफुसाई।

जो शरीर घसीटा जा रहा था, वह गांव के पंडित सूर्याक्ष का था। उसका हाथ थोड़ा-थोड़ा छटपटा रहा था। वह अभी भी जीवित था। लेकिन नाममात्र का ही।

सबसे बड़ा शेर जो स्पष्ट रूप से उनका नेता था, वह पूरा का पूरा दिखा। वह असाधारण रूप से विशाल था। आज तक सती ने इतना बड़ा शेर नहीं देखा था। फिर भी उसका अयाल घना नहीं था। वह स्पष्ट रूप से किशोर था। संभवतया एक साल से अधिक बड़ा नहीं था।

उसके बाद एक चिंतित कर देने वाला विचार उसके मन में उभरा। उसने नेतृत्व करने वाले पशु की त्वचा को ध्यान से देखा। उसके शरीर पर बाघों वाली धारियां थीं। वह किशोर कदापि नहीं था! उसने चकित होकर देखा तो उसका दिल धक से रह गया। 'बब्बर शेर!'

'क्या?' कावस फुसफुसाया।

'एक दुर्लभ पशु। शेर एवं बाघिन से जन्मा एक पशु। यह अपने माता-पिता से दोगुना बड़ा होता है। और उसमें उनके मुकाबले कई गुना उग्रता होती है।'

वह बब्बर शेर चहलकदमी करता हुआ उस बकरे के पास पहुंचा। उस बकरे के अगले पैर भी झुक गए। वह निश्चित मृत्यु की प्रतीक्षा में आतंक से भूमि पर गिर पड़ा। लेकिन उस बब्बर शेर ने उस पर हमला नहीं किया। अपनी पूंछ से उस पर प्रहार करता हुआ वह उसके चारों ओर घूमा। वह चारे के साथ खेल रहा था।

जो शेर सूर्याक्ष को घसीटता हुआ ले जा रहा था, उसने उसके शरीर को नीचे गिरा दिया। वह उसके पैर को अपने दांतों से काटने के लिए झुका। सूर्याक्ष को पीड़ा से चिल्लाना चाहिए था। लेकिन उसकी गर्दन से रक्त का तेजी से रिसाव हो रहा था। उसके पास शक्ति नहीं बची थी। अचानक ही बब्बर शेर सूर्याक्ष के पैर को चबाने वाले उस दूसरे शेर पर गुर्राया। वह शेर भी प्रतिक्रिया में गुर्राया, लेकिन पीछे हट गया। बब्बर शेर निश्चित रूप से सूर्याक्ष को अभी खाना नहीं चाहता था।

यह बब्बर शेर इस समूह का नेता हाल ही में बना है। दूसरे शेरों में अभी इतनी ताकत है कि विरोध प्रकट कर सकें।

बब्बर शेर फिर से उस बकरे के पास गया। शेरनियां उसके पीछे थीं। उस बब्बर शेर ने अपनी पिछली टांग उठाई और अपना क्षेत्र चिह्नित करते हुए वहां पेशाब की। उसके बाद वह दहाड़ा। वह दहाड़ बहुत जोरदार और शक्तिशाली थी।

संदेश स्पष्ट था। वह उसका क्षेत्राधिकार था। वहां यदि कोई भी आता है तो उसे इसकी चुनौती स्वीकारनी पड़ेगी।

सती ने चुपचाप अपने धनुष को उठा लिया। यदि बब्बर शेर मर जाए तो उस झुंड की आक्रामकता कम हो जाएगी। दुर्भाग्यवश जब उसने तीर छोड़ा तभी वह बब्बर शेर सूर्याक्ष के शरीर की ओर झुक गया। तीर उसके पास से होता हुआ पीछे खड़ी शेरनी की आंख में जा घुसा। वह पीड़ा में अजीब-सी आवाज निकालते हुए जंगल की ओर दौड़ पड़ी। अन्य शेर एवं शेरनी भी उसके पीछे भाग खड़े हुए। लेकिन बब्बर शेर भागा नहीं, बल्कि पीछे मुड़ा। इस दखल पर गुर्राते हुए उसने अपने दांतों को खूंखार रूप से खोला। उसने अपने पंजे से सूर्याक्ष के चेहरे पर एक करारा प्रहार किया। प्राणघातक प्रहार। सती ने फिर से तीर चढ़ाया और चला दिया। वह तीर बब्बर शेर के कंधे में जा घुसा। वह दहाड़ा और पीछे हट गया।

'शेरनी बहुत ही जल्द मर जाएगी,' सती ने कहा।

'लेकिन वह बब्बर शेर फिर से आएगा,' कावस ने कहा,

'अत्यधिक गुस्से के साथ, जितना पहले कभी नहीं था। वेहतर होगा कि हम लोग गांव वालों के साथ कल यहां से निकल जाएं।'

सती ने सहमति में सिर हिलाया।

— ⅄⦶Ʊ⍏⊛ —

रात के अंधेरे को चीरता हुआ सूरज बस अभी निकला ही था।

'आप लोगों को यहां से जल्द से जल्द चला जाना चाहिए। आपके पास कोई विकल्प नहीं है,' सती ने कहा। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि इतने स्पष्ट संकेत पर भी उसे गांव वालों से तर्क करना पड़ रहा है।

द्वितीय प्रहर आरंभ हो रहा था। वे सूर्याक्ष की जलती हुई चिता के समीप खड़े हुए थे। दुर्भाग्यवश, उस वीर व्यक्ति के लिए कोई प्रार्थना करने वाला नहीं था।

'वे अब वापस नहीं आएंगे,' एक ग्रामवासी ने कहा, 'जो हमारे प्रधान कह रहे हैं वह सही है। शेर वापस नहीं आएंगे।'

'क्या बकवास है!' सती ने तर्क किया, 'बब्बर शेर ने अपना क्षेत्राधिकार चिह्नित कर दिया है। या तो आप उसे मार डालें या फिर यह स्थान छोड़ दें। इसके अलावा कोई तीसरा विकल्प नहीं है। वह आप लोगों को इस भूमि पर स्वछंद घूमने नहीं देगा। वह अपने झुंड पर नियंत्रण खो बैठेगा।'

एक ग्रामीण महिला तर्क करने के लिए आगे आई, 'सूर्याक्ष के रक्त से प्रेतात्माएं अंशतः प्रसन्न हो चुकी हैं। अधिक से अधिक हमें एक और बलिदान देना पड़ेगा और वे चले जाएंगे।'

'एक और बलिदान?' अचंभित सती ने पूछा।

'हां,' ग्राम प्रधान ने कहा, 'पूरे गांव की भलाई के लिए गांव का मेहतर स्वयं अपने परिवार के साथ बलिदान देने का इच्छुक है।'

सती मुड़ी तो उसने देखा कि वह एक छोटे कद का दुबला-पतला लेकिन स्वस्थ व्यक्ति था। इसी के पास जलावन लकड़ियां एकत्र करने और पिछले कई दिनों से दाह-संस्कार करने का कष्टसाध्य कार्य भी था। पीछे उस जैसी नाटी और कमजोर उसकी पत्नी खड़ी थी, जिसके चेहरे पर असाधारण संकल्प भाव था। दो बच्चे उसकी धोती पकड़े हुए खड़े थे, जिनकी उम्र दो या तीन साल से अधिक की नहीं होगी। वे मात्र लंगोटियां पहने हुए थे। जो भाग्य माता-पिता ने उनके लिए चुन रखा था, उससे वे बिल्कुल ही अनजान थे।

सती प्रधान की ओर मुड़ी। उसकी मुट्ठियां भिंची हुई थीं। 'तुम इस गरीब और इसके परिवार का बलिदान देना चाहते हो क्योंकि वे शक्तिहीन हैं! यह अनुचित है!'

'नहीं, देवी,' उस मेहतर ने कहा, 'यह मेरा चयन है। मेरा भाग्य है। पूर्व जन्म के मेरे कर्मों के कारण इस जन्म में मेरा जीवन नीची जाति में हुआ है। मेरा परिवार और मैं गांव की अच्छाई के लिए अपनी इच्छा से बलिदान देंगे। वह सर्वशक्तिमान हमारे अच्छे कर्मों को देखेगा और अगले जन्म में हमें आशीर्वाद देगा।'

'मैं तुम्हारी वीरता की कद्र करती हूं,' सती ने कहा, 'लेकिन

यह शेरों को रोक नहीं पाएगा। वे तब तक नहीं रुकेंगे जब तक कि वे आप सब को यहां से भगा नहीं देते या फिर एक-एककर मार नहीं डालते।'

'हमारे रक्त उन्हें संतुष्ट करेंगे, देवी। प्रधान ने ऐसा कहा है। मुझे इस पर पूरा भरोसा है।'

सती ने उस मेहतर को घूरकर देखा। अंधा अंधविश्वास कभी भी तर्क से पराजित नहीं किया जा सकता। उसने उन बच्चों की ओर देखा। वे एक-दूसरे को कुछ चुभो रहे थे और ठिठोली कर रहे थे।

वे अचानक ही रुक गए और सती की ओर देखने लगे। वे अचरज कर रहे थे कि वह बाहर से आई स्त्री उन्हें ऐसे क्यों घूर रही थी।

मैं ऐसा होने नहीं दे सकती।

'मैं यहीं रहूंगी। मैं यहां तब तक रहूंगी जब तक कि प्रत्येक शेर मारा नहीं जाता। लेकिन तुम स्वयं का या अपने परिवार का बलिदान नहीं

दोगे। क्या यह स्पष्ट है?'

उस मेहतर ने सती को गहरी दृष्टि से देखा। यह विचित्र सुझाव उसके समझ में नहीं आ रहा था। सती कावस की ओर मुड़ी। कावस तत्काल ही सैनिकों को विद्यालय की ओर लेकर चल पड़ा। कुछ सैनिक तर्क कर रहे थे। स्पष्ट था कि वे इस घटना से प्रसन्न नहीं थे।

— ⅄ⓄƱ⇞⊛ —

परशुराम के गुप्तचर, पेड़ों पर बहुत ऊंचाई से निगरानी कर रहे थे। शिव और भगीरथ जहाज के ऊपरी हिस्से पर थे। ऐसा लग रहा था कि वे बहस कर रहे थे। मधुमती में उतर चुकीं तीन छोटी नौकाएं हल्के-हल्के हिल-डुल रही थीं।

अंततः शिव ने गुस्से की मुद्रा बनाई और एक छोटी नौका की ओर उतरने लगा, जिसमें द्रपकु, नंदी, वीरभद्र और तीस सैनिक थे। उसने उनके पीछे की ओर दो और छोटी नौकाओं को देखा जिनमें सैनिक भरे हुए थे। शिव ने संकेत दिया और वे तट की ओर चल पड़े।

दूसरी ओर ऐसा प्रतीत हुआ कि जहाज अपना लंगर निकालने की तैयारी कर रहा था।

एक गुप्तचर ने दूसरे को मुस्कुराते हुए देखा, 'सौ सैनिक। चलो चलकर परशुराम को बताते हैं।'

— ⅄ⓄƱ⇞⊛ —

मधुमती की भरपूर जलराशि और ब्रंगा की उर्वर भूमि ने षड्यंत्र कर अत्यंत ही सघन और भयंकर जंगल का निर्माण कर लिया था। शिव ने ऊपर आकाश की ओर देखा। उन सघन पत्तियों के मध्य से बहुत कम धूप छन-छनकर आ पा रही थी। किरणों की दिशा से शिव ने भांप लिया कि सूर्य अस्ताचल की यात्रा आरंभ कर चुका था।

उसके दल ने अभेद्य से जंगल को काट-काटकर उस दस्यु की खोज में आठ घंटों की पैदल यात्रा पूरी कर ली थी। दो घंटे पहले शिव ने मध्याह्न भोजन के लिए विश्राम लिया था। यद्यपि शारीरिक रूप से सभी सैनिक भली प्रकार थे, किंतु वे बेचैन थे। उन्हें किसी घटनाक्रम की प्रतीक्षा थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि परशुराम यहां भी मुठभेड़ से बच रहा था।

अचानक ही शिव ने अपना हाथ ऊपर उठाया। उसका दल वहीं रुक गया। द्रपकु तेजी से शिव के पास पहुंचा और फुसफुसाकर बोला, 'क्या बात है, प्रभु?'

शिव ने अपनी आंखों से संकेत किया और फुसफुसाया, 'यह क्षेत्र चिह्नित किया हुआ है।'

द्रपकु ने ध्यान से देखा। वह समझ ना सका।

'इस झाड़ी पर वह काटने का निशान देखो,' शिव ने कहा। द्रपकु ने और ध्यानपूर्वक देखा, 'वे लोग इधर से गुजरे हैं। इस मार्ग में काट-छांट की गई है।'

'नहीं,' शिव ने आगे की ओर देखते हुए कहा, 'यह उधर जाने के लिए काटा नहीं गया है। यह दाईं ओर से काटा गया है ताकि हमें ऐसा विश्वास हो जाए कि वे इस ओर से गए हैं। अवश्य ही इस रास्ते पर हमारे लिए जाल बिछाया गया है।'

'क्या आपको पक्का विश्वास है, प्रभु?' शिव को धीरे से अपना धनुष निकालते देख द्रपकु ने पूछा।

शिव अचानक ही मुड़ा। उसने शीघ्रता से तीर निकालकर अपने धनुष पर चढ़ाया और तत्काल एक पेड़ के ऊपर चला दिया। दिल को दहलाती चीख उभरी और एक आदमी जमीन पर धड़ाम से आ गिरा।

'इस रास्ते से!' शिव ने दाईं ओर दौड़ते हुए कहा।

हमला करने की स्थिति समझते हुए उसके सैनिक उसके पीछे दौड़ पड़े। वे कुछ मिनट ही तेजी से भागे थे कि नदी के एक तट के समीप निकल आए। और वहीं थम गए।

सामने कोई सौ मीटर की दूरी पर परशुराम के नेतृत्व में उसका दल खड़ा था। कम से कम एक सौ आदमी तो थे ही, जो संख्या में सूर्यवंशियों जितने थे। शिव के सैनिक जंगल से बाहर की ओर दौड़ते हुए आ कर एक विशिष्ट आकार में खड़े होते जा रहे थे।

'मैं प्रतीक्षा करूंगा!' परशुराम ने व्यंग्यपूर्वक कहा। उसकी तीखी दृष्टि शिव पर टिकी थी, 'अपने आदमियों को तैयार कर लो।'

शिव ने भी उसकी आंखों में देखा। परशुराम शक्तिशाली था। यद्यपि वह शिव से ऊंचाई में थोड़ा कम था, लेकिन उसकी मांसपेशियां गजब की थीं। उसके कंधे चौड़े थे और उसका ढाल जैसा सीना श्वास की गति के साथ कंपित हो रहा था। उसके बाएं हाथ में एक विशालकाय धनुष था, जो किसी भी सामान्य आदमी की दृष्टि से काफी बड़ा था। लेकिन स्पष्ट था कि उसकी शक्तिशाली भुजाएं धनुष की प्रत्यंचा को खींच सकने में सक्षम थीं। उसके पीछे तरकश में तीर भरे हुए थे। लेकिन दूसरी ओर एक ऐसा हथियार था जिसने उसे प्रसिद्ध किया था। वह हथियार जिससे वह दयनीय पीड़ितों के सिर धड़ से अलग कर देता था। वह था उसका फरसा। उसने केसरिया रंग की एक साधारण धोती पहन रखी थी और उसके शरीर पर कोई कवच नहीं था। ब्राह्मण के वंशज होने के प्रमाणस्वरूप चोटी को छोड़कर उसका पूरा सिर मुंडित था और जनेऊ उसके बाएं कंधे से होता हुआ दाईं ओर लटका था। उसके चेहरे पर एक लंबी दाढ़ी थी।

शिव ने अपनी बगल में देखा। वह अपने सैनिकों के पंक्ति में आ जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे कुछ गंध आई।

वह क्या है?

ऐसा प्रतीत हुआ कि वह मिट्टी का तेल था जो मेलूहावासी प्रहर कंदील जलाने में उपयोग करते थे। उसने नीचे की ओर देखा। रेत साफ थी। उसके सैनिक सुरक्षित थे। शिव ने अपनी तलवार निकाल ली और गर्जना की, 'अभी भी समय है, परशुराम, आत्म-समर्पण कर दो। तुम्हारे साथ न्याय किया जाएगा।'

परशुराम ठहाका मारकर हंस पड़ा, 'न्याय?! इस घृणित देश में?'

शिव ने अपने अगल-बगल देखा। उसके सैनिक अपने स्थान पर आ चुके थे। तैयार। 'तुम या तो न्याय के सामने अपना सिर झुका दो या फिर उसकी ज्वाला को अपने भीतर महसूस करोगे! तुम क्या चाहते हो?'

परशुराम भद्दी तरह हंसा और उसने अपने एक आदमी को सिर हिलाकर संकेत किया। उस आदमी ने अपने तीर को बाहर निकाला, उसमें आग लगाई और धनुष पर चढ़ाकर ऊपर आकाश की ओर चला दिया। वह तीर सूर्यवंशियों से बहुत पीछे की ओर चला गया।

अरे यह क्या था?

सूर्य की किरणों के कारण शिव को वह तीर कुछ क्षणों के लिए नहीं दिखा। वह शिव के सैनिकों से बहुत दूर पीछे की ओर गिरा और उससे मिट्टी के तेल में आग लग गई। आग की ज्वाला तेजी से फैल गई और उसके इस घेरे ने एक अभेद्य सीमा बना दी। सूर्यवंशी उस तट पर पूरी तरह से फंस गए थे। वहां से पीछे हटना संभव नहीं था।

'तुम अपने तीर बर्बाद कर रहे हो, मूर्ख!' शिव चिल्लाया।

'यहां से कोई भी पीछे नहीं हटने वाला!'

परशुराम मुस्कुराया, 'तुम्हें मारने में मुझे आनंद आएगा।' शिव को उस समय आश्चर्य हुआ जब परशुराम का वह तीरंदाज पीछे की ओर मुड़ा और उसने एक और तीर में आग लगाई और नदी की ओर चला दिया।

ओह, गए काम से!

परशुराम के आदमियों ने पतली नौकाओं को एक-दूसरे से सटाकर नदी से बने उस घुमावदार तट के आर-पार बांध रखा था। उनमें बहुत अधिक मात्रा में मिट्टी का तेल डाला हुआ और जैसे ही उस तीर ने एक को स्पर्श किया तो विस्फोट के साथ वे जल उठीं। ऐसा प्रतीत हुआ कि उस विशालकाय ज्वाला ने पूरी नदी को ही आग में झोंक दिया हो। उसकी लपटें इतनी ऊंची थीं कि सहायता के लिए पर्वतेश्वर की छोटी नौकाओं का वहां पहुंचना असंभव हो गया था।

परशुराम ने शिव की ओर भय से कंपकंपा देने वाली व्यंग्यात्मक हंसी हंसते हुए देखा, 'इन आमोद-प्रमोदों को हम अपने तक ही रखें?'

शिव मुड़ा और उसने द्रपकु को सहमति में सिर हिलाया, जिसने तत्काल ही आदेश दे दिया। एक तीर आकाश की ओर छोड़ दिया गया जो ऊपर जाकर नीली लपटों में फट पड़ा। पर्वतेश्वर को बुला लिया गया था। लेकिन शिव को समझ में नहीं आ रहा था कि मेलूहा का सेनापति मधुमति नदी के इस अग्नि द्वार को लांघकर कैसे उन तक पहुंच पाएगा। छोटी नौकाएं उसे पार नहीं कर सकती थीं। और जहाज तट के उतने निकट नहीं आ सकता था क्योंकि वह जमीन से टकरा जाता।

कोई नहीं आ रहा। हमें ही इसे समाप्त करना होगा।

'यह तुम्हारा अंतिम अवसर है, बर्बर!' अपनी तलवार उसकी ओर साधते हुए शिव चीखा।

परशुराम ने अपना धनुष नीचे गिरा दिया। उसी प्रकार सभी तीरंदाजों ने भी किया और उन्होंने अपने-अपने *अंग* हथियार निकाल लिए। परशुराम ने अपना फरसा निकाल लिया। वह स्पष्ट रूप से क्रूर एवं निकट की भिड़ंत चाहता था, 'नहीं, ब्रंगावालों! यह *तुम्हारा* अंतिम अवसर था। मैं तुम्हारा अंत बहुत ही धीमा और पीड़ादायक बनाने वाला हूं।'

शिव ने अपना धनुष गिरा कर ढाल आगे कर ली। और अपने सैनिकों से बोला, 'तैयार हो जाओ! उनकी तलवार वाली बांहों पर हमला करो। घायल करो, लेकिन जान से मत मारना। वे हमें जीवित चाहिए।'

सूर्यवंशियों ने अपनी ढालें आगे की ओर कीं और अपनी तलवारें निकाल लीं। फिर वहीं प्रतीक्षा करने लगे।

परशुराम ने हमला बोल दिया। उसके दल के लोग उसके पीछे थे।

दस्यु दल के सदस्य शिव के सैनिकों की ओर आश्चर्यजनक गति और फुर्ती से बढ़ चले थे। परशुराम सबसे आगे था। उसके पास स्वयं की सुरक्षा के लिए ढाल नहीं थी। भारी फरसे को चलाने के लिए उसे दोनों हाथों की आवश्यकता थी। वह सीधे शिव की ओर हमला करने के लिए दौड़ रहा था। लेकिन, द्रपकु बाईं ओर उछला और उसने हमला कर दिया। वह दस्यु क्षण भर के लिए द्रपकु के हमले से चकराया। वह झटके से पीछे की ओर मुड़ा और तलवार के प्रहार से अपना बचाव किया। फिर उसी गति में उसने अपना फरसा उठाकर घुमा दिया। द्रपकु ने अपनी ढाल आगे कर दी, जो उसके नकली बाएं हाथ की खूंटी में उसकी सुरक्षा के लिए फंसी हुई थी। वह दहला देने वाला फरसा कांसे की बनी उस ढाल के थोड़े हिस्से को काटता हुआ अंदर घुस गया। अचंभित से द्रपकु ने ढाल पीछे की ओर उछाली और अपनी तलवार नीचे की। उसने परशुराम के निमंत्रण देते से खुले बाएं कंधे की ओर देखा।

इस बीच शिव एक दस्यु की तलवार की खतरनाक वार से बचने के लिए तेजी से घूमा। उसने अपनी ढाल से उसकी तलवार को एक ओर धक्का दे दिया। जैसे ही वह दस्यु असंतुलित हुआ तो शिव ने अपनी तलवार बहुत ही सधे हुए चक्कर में घुमाई, जिससे उस दस्यु का तलवार वाला हाथ कोहनी से अलग हो गया। वह ठग धाराशायी हो गया। अक्षम, लेकिन जीवित। शिव तत्काल मुड़ा और उसने दूसरे आदमी के प्रहार को नाकाम करने के लिए अपनी तलवार ऊपर उठाई।

नंदी ने अपने शत्रु के दाहिने कंधे में भोंकी हुई अपनी तलवार बाहर निकालकर अपनी ढाल से उसे धक्का दे दिया। उसे आशा थी कि वह दस्यु नीचे गिर जाएगा और आत्म-समर्पण कर देगा। लेकिन उसे तब आश्चर्य हुआ जब दस्यु ने अपनी ढाल गिरा दी और बड़ी सफाई से तलवार उस हाथ में ले ली जो घायल नहीं था। वह फिर से हमला करने के लिए उछल पड़ा। नंदी ने मन ही मन उसकी बहादुरी की प्रशंसा की। लेकिन उसने अपनी ढाल आगे कर उसके वार को बचा लिया और अपनी तलवार फिर से उसके घायल कंधे में भोंक दी और चिल्लाया, 'आत्म-समर्पण कर दो, ऐ मूर्ख!'

उधर वीरभद्र अपने शत्रुओं को जीवित रखने में उतना भाग्यशाली नहीं रह पाया था। उसने अब तक दो को मौत के घाट उतार दिया था और तीसरे को मृत्यु से बचाने की कोशिश में लगा हुआ था। लेकिन वह तीसरा दृढ़ प्रतिज्ञ था। उसने अपने घायल हुए हाथ को भुला बाएं हाथ में तलवार उठा ली। हांफते हुए वीरभद्र ने अपनी ढाल दस्यु के सिर पर, उसे गिराने की आशा में, पूरे बल से दे मारी। उस ठग ने अपने कंधे को घुमाकर टेढ़ा किया और अपने कंधे पर उस प्रहार को लेते हुए अपनी तलवार से वीरभद्र की ओर एक क्रूर प्रहार कर दिया। उस प्रहार से वीरभद्र के धड़ पर एक चीरा लग गया। इसके बाद क्रोध में भन्नाए वीरभद्र ने उस दस्यु के खुले धड़ पर सीधी तलवार भोंक दी जिससे वह उसके दिल के आर-पार हो गई।

'लानत है!' झुंझलाहट से वीरभद्र ने कहा, 'तुमने आत्म-समर्पण क्यों नहीं किया?'

युद्ध के मैदान के एक अन्य किनारे पर शिव ने अपनी ढाल बगल से उस आदमी पर चलाई जिससे वह मुठभेड़ कर रहा था। उस दस्यु ने अपना सिर पीछे की ओर कर लिया, जिसके कारण उसे हल्की चोट तो लगी लेकिन वह एक घातक प्रहार से बच निकला था।

अब शिव चिंतित होने लगा था। बहुत से लोग मारे जा रहे थे। जिनमें अधिकतर परशुराम के दल के थे। वह उन्हें जीवित चाहता था। नहीं तो नागा औषधि का रहस्य उनके साथ ही नष्ट हो जाने वाला था। तभी सहसा उसने एक बहुत तीव्र ध्वनि सुनी। वह पर्वतेश्वर के शंख की ध्वनि थी।

वे आ रहे हैं!

तलवार से अपने शत्रु को निर्दयता से घायल करते हुए शिव ने अपनी ढाल उस दस्यु के सिर पर दे मारी। इस बार सफलतापूर्वक उसने उसे पूरी तरह से ठंडा कर दिया। फिर उसने ऊपर देखा और मुस्कुराया।

उस विशालकाय सूर्यवंशी जहाज ने उन जलती हुई नौकाओं को बीच से तोड़ते हुए तट की ओर कदम बढ़ा दिया था। उसका तला कड़क रहा था। मधुमती के ऊपर उठती हुई लपटें छोटी नौकाओं के लिए तो ऊंची थीं, लेकिन एक बड़े जहाज के लिए नहीं। परशुराम ने आस

लगा रखी थी कि सूर्यवंशी अपने जहाज को बेकार नहीं करेंगे क्योंकि उसका अर्थ था कि वे ब्रंगा वापस नहीं जा पाएंगे। उसने सूर्यवंशी दल के बारे में और उसके सेनापति पर्वतेश्वर की वीरता के बारे में गलत आकलन किया था।

जहाज अत्यधिक तेजी से उस तट से आकर टकराया जिसके कारण परशुराम के अनेक साथी उससे दबकर तत्काल ही मरते चले गए।

जैसे ही वह जहाज उस रेत के तट पर रुका तो जहाज के अग्रभाग पर खड़े हुए पर्वतेश्वर ने ऊपर से ही छलांग लगा दी। उसकी कमर में बंधी रस्सी ने उस ऊंचाई से उसके धरती पर गिरने की गति की तीव्रता को तोड़ दिया। जैसे ही वह धरती के निकट पहुंचा तो उसने अपनी तलवार ऊपर की ओर हवा में लहराई, जिससे वह रस्सी कट गई और वह सुरक्षित धरती पर खड़ा हो गया। चार सौ सूर्यवंशी सैनिक सेनापति के पीछे थे।

जहाज के आ जाने से क्षणभर के लिए द्रपकु का ध्यान बंट गया। जब उसने परशुराम के फरसे पर अपनी तलवार चलाई तो यह नहीं देखा कि उस दस्यु ने पीछे से अपना चाकू निकाल लिया था। परशुराम ने अपने बाएं हाथ से एक सधे हुए योद्धा की तरह चाकू द्रपकु की गर्दन में घोंप दिया। पीड़ा ने क्षणभर के लिए सूर्यवंशी दलपति को गतिहीन कर दिया। परशुराम ने चाकू को और नीचे धंसाते हुए उसकी मूंठ तक अंदर घुसेड़ दी। द्रपकु लड़खड़ाते हुए पीछे हटा किंतु वीरतापूर्वक उसने तलवार पर अपनी पकड़ बनाई हुई थी।

इस बीच परशुराम के दस्यु दल की संख्या के मुकाबले पांच गुना बड़ा सूर्यवंशी सैनिक दल बड़ी तेजी से स्थिति पर नियंत्रण पाता जा रहा था। उस परिस्थिति की निरर्थकता को भांपते हुए अंततः अनेक दस्यु आत्म-समर्पण कर रहे थे।

युद्ध भूमि के मध्य में परशुराम ने डगमगाते हुए द्रपकु की गर्दन से चाकू को खींच लिया। उसने अपने फरसे को दोनों हाथों से पकड़ा, उसे पीछे की ओर ले गया और बड़ी क्रूरतापूर्वक लहराया। वह फरसा द्रपकु के कवच को काटते हुए धड़ से बहुत जोर से टकराया। वह काफी गहरा धंस चुका था। वह त्वचा और मांस को चीरता हुआ हड्डी तक पहुंच गया था। वह पराक्रमी दलपति जमीन पर गिर गया। परशुराम ने उस फरसे को बाहर निकालने की कोशिश की लेकिन वह पूरी तरह से धंसा हुआ था। उसने बहुत जोर का झटका दिया। द्रपकु के सीने को चीरते हुए वह फरसा बाहर निकल आया। परशुराम को लोहा मानना पड़ा कि सूर्यवंशी अब भी जीवित था। दलपति ने तब भी संघर्ष के प्रयास हेतु बुरी तरह से कमजोर हुई तलवार वाली बांह को उठाने का प्रयास किया।

परशुराम आगे बढ़ा और उसने द्रपकु के हाथ को नीचे दबा दिया। वह दलपति के अंगों की कमजोर होती गतियों को समझ पा रहा था। मरते हुए व्यक्ति द्वारा हार ना मानने के प्रयास का वह सटीक उदाहरण था कि उसकी तलवार अब भी कसी हुई ऊंची उठी हुई थी। परशुराम विस्मित था। उसे अपने विरोधी की जान लेने के लिए अपने फरसे से एक से अधिक प्रहार करने की कभी भी आवश्यकता नहीं पड़ी थी। उसके सैनिक बहुत ही तेजी से युद्ध हारते जा रहे थे, लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे इसका अनुमान नहीं था। वह अपने पैरों के निकट उस शानदार व्यक्ति को मरते हुए देख स्तंभित था।

परशुराम ने अपना सिर उसके सम्मान में थोड़ा झुकाया और फुसफुसाया, 'तुम्हारा वध करना मेरे लिए सम्मान की बात है।'

उस दस्यु ने अपना फरसा उठाया और सिर काटने के लिए अभी तैयार ही हुआ था कि उसी समय आनंदमयी ने कुछ दूरी से अपना चाकू उछाल दिया। वह चाकू सीधा जाकर परशुराम के बाएं हाथ में धंस गया, जिसके कारण उसका फरसा सुरक्षित नीचे गिर गया। भगीरथ ने दिवोदास एवं दो सूर्यवंशी सैनिकों की सहायता से उस दस्यु को जमीन पर गिराकर बिना किसी अतिरिक्त चोट के काबू में कर लिया।

शिव और पर्वतेश्वर द्रपकु की ओर दौड़ पड़े। उसके शरीर से बहुत अधिक रक्त बह रहा था। वह मुश्किल से ही जीवित जान पड़ रहा था।

शिव पीछे की ओर मुड़ा और चिल्लाया, 'आयुर्वती को बुलाओ! जल्दी!'

सूर्य के डूबने में अब भी कुछ घंटों का समय बचा हुआ था। सती विद्यालय की छत पर थी और तात्कालिक रूप से बनाए जा रहे धनुषों एवं बाणों का पर्यवेक्षण कर रही थी। काशी के सैनिक ना तो निकट से शेरों से संघर्ष में पूरी तरह सक्षम थे और ना ही वे तीर चलाने में ही दक्ष थे। सती यह आशा कर रही थी कि यदि वे एक ही दिशा में तीर चला सकेंगे तो कुछ तो लक्ष्य पर गिरेंगे ही।

सती ने सीढ़ियों के पास की लकड़ियों की मात्रा का दुबारा परीक्षण किया। सैनिकों ने लकड़ियां लाकर रख दी थीं, जो रात भर के लिए काफी होतीं।

उसने आशा की थी कि वह उस छत से झुंड के कुछ शेरों को मारने में सफल हो जाएगी। यदि भाग्य उसका साथ देता है तो उसकी आशा थी कि वह बब्बर शेर को भी मार डालेगी, जिससे उस कष्ट का स्रोत ही समाप्त हो जाएगा। उसके बाद कुछ दिनों की निगरानी से उस समस्या का हल सदैव के लिए हो जाएगा। आखिरकार वे मात्र सात पशु ही थे। बहुत बड़ा झुंड नहीं।

उसने ऊपर आकाश की ओर देखा और प्रार्थना की कि कुछ भी अघटित ना घटे।

अध्याय 15

लोकाधीश

क्षितिज पर चढ़ा सूरज बहुत तेजी से नीचे डूबता जा रहा था। गोधूलि बेला आकर्षक गेरुए रंग में रंगी हुई थी। सूर्यवंशी शिविर में उत्तेजना का अभूतपूर्व संचार हो रहा था।

भगीरथ सबसे प्रमुख कार्य अर्थात बंदियों को अपनी गिरफ्त में लेने के कार्य का पर्यवेक्षण कर रहा था। जहाज में उपलब्ध कांस्य जंजीर से परशुराम के दल के सदस्यों को हाथ-पैर जकड़कर रेतीले तट पर बैठाया गया था। उन जंजीरों के एक सिरे को जमीन में गहरे गाड़े गए खूंटे से बांध दिया गया था। वह भी संभवतया पर्याप्त ना हो ऐसा सोचकर एक जंजीर सब के पादांगदों में फंसाकर सभी को एक-दूसरे से बांध दिया गया था। सूर्यवंशी सैनिकों को उनके चारों ओर खड़ा कर दिया गया था। वे निरंतर उनकी निगरानी कर रहे थे। परशुराम और उनके आदमियों के लिए भागना असंभव था।

दिवोदास भगीरथ के पास आया, 'राजकुमार, मैंने जहाज का निरीक्षण कर लिया है।'

'और?'

'उसकी मरम्मत करने में हमें कम से कम छह महीने का समय लगेगा।'

भगीरथ चिंतित हो उठा, 'तो फिर हम लोग वापस कैसे जा पाएंगे?'

तट के दूसरे किनारे पर आयुरालय के तंबू लगाए गए थे। आयुर्वती और उसके दल के सदस्य सूर्यवंशी एवं दस्यु लोगों को बचाने का भरसक प्रयास कर रहे थे। वे संभवतया अधिकतर को बचाने में सफल भी हो जाएंगे। लेकिन आयुर्वती अभी एक ऐसे तंबू में थी, जहां ऐसी कोई आशा नहीं थी।

शिव अपने घुटनों के बल बैठा द्रपकु का हाथ थामे हुआ था। आयुर्वती जानती थी कि कुछ भी नहीं किया जा सकता था। चोटें अत्यधिक गहरी थीं। वह नंदी और पर्वतेश्वर के साथ पीछे खड़ी थी। द्रपकु का पिता पूर्वक उसकी दूसरी ओर घुटनों के बल बैठा था। वह एक बार फिर से निराशा में डूबा हुआ सा लग रहा था।

द्रपकु अपना मुंह बार-बार खोल कुछ कहने का प्रयास कर रहा था।

शिव आगे की ओर झुका, 'क्या बात है, मेरे मित्र?'

द्रपकु बोल नहीं पाया। उसके मुंह से रक्त लगातार रिसता जा रहा था। वह पहले अपने पिता की ओर मुड़ा और फिर शिव की ओर। ऐसे हिलने-डुलने के कारण उसके हृदय से रक्त पिचकारी की धार सा बह निकला और उस प्रवाह से ऊपर ओढ़ाई गई सफेद चादर लाल हो गई।

शिव की आंखें नम थीं। वह फुसफुसाया, 'मैं इनका खयाल रखूंगा, द्रपकु। मैं इनका खयाल रखूंगा।'

और फिर द्रपकु ने एक लंबी श्वास ली। वह जो चाहता था, उसे सुन लिया था। फिर उसने स्वयं को शांति से मृत्यु की गोद में समाने के लिए अंततः मुक्त कर दिया।

पूर्वक का दिल धक से रह गया। उसका सिर अपने मृत बेटे के कंधे पर जा गिरा। उसका शरीर अब कांप रहा था। शिव ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और पूर्वक के कंधे को स्पर्श किया। पूर्वक ने सिर उठाकर ऊपर देखा। उसका पूरा चेहरा अपने पुत्र के रक्त से रंजित हो चुका था। उसकी आंखों से धाराप्रवाह आंसू बह रहे थे। शिव ने जब वह दृश्य देखा तो उसका हृदय चकनाचूर हो गया। एक गर्वीला और आत्मविश्वासी पूर्वक कहीं खो चुका था। अब वह मेलूहा के कोटद्वार में उससे मिला वही टूटा हुआ व्यक्ति बन चुका था। उसके जीवित रहने का एकमात्र कारण उससे बलात् छीन लिया गया था। शिव का दिल डूब गया। इस पूर्वक को वह देख ना सका। और फिर उसके हृदय में क्रोध का ज्वालामुखी फट पड़ा। क्रोध की विकराल ज्वाला!

शिव उठ खड़ा हुआ।

पर्वतेश्वर को तव आश्चर्य हुआ जब नंदी ने तत्काल ही आगे बढ़कर शिव को पकड़ लिया, 'नहीं, प्रभु! यह गलत है।'

शिव ने गुस्से से नंदी को एक ओर धकेला और तेजी से बाहर निकल गया। वह उस ओर दौड़ गया जहां परशुराम को बांधकर रखा गया था।

नंदी उसके पीछे भागता हुआ चिल्ला रहा था, 'नहीं, प्रभु! वह एक बंदी है। यह अनुचित है।'

भगीरथ जो दूसरी ओर खड़ा था, वह भी चिल्लाया, 'नहीं, प्रभु! हमें वह जीवित चाहिए।'

लेकिन शिव उन्मत्त था। वह अपने हाथ में तलवार लिए उस दस्यु का सिर धड़ से अलग करने के विचार से परशुराम की ओर चिल्लाते हुए भागा जा रहा था।

परशुराम संज्ञाशून्य सा एकटक देख रहा था। उसके चेहरे पर लेशमात्र भय नहीं था। और फिर उसने अपनी आंखें बंद कीं और वे शब्द कहे जिन्हें उच्चारित कर वह मरना चाहता था, 'जय गुरु विश्वामित्र! जय गुरु वशिष्ठ!'

हैरान शिव मार्ग में ही रुक गया। वह पूरी तरह गतिहीन हो गया था।

अपनी गर्दन पर तलवार का प्रहार ना पा परशुराम ने अपनी आंखें खोलीं। उसे कुछ भी समझ ना आया।

शिव के हाथ से तलवार छूट गई, 'वासुदेव?'

परशुराम भी उतना ही हैरान दिखा, जितना शिव। अंततः उसे शिव का गला दिखाई पड़ा जो गुलूबंद से जानबूझकर ढका गया था। उसे वोध हो गया, 'हे प्रभु! यह मैंने क्या कर डाला? नीलकंठ! प्रभु नीलकंठ!'

परशुराम ने अपना सिर शिव के चरणों में झुका दिया। उसकी आंखों से आंसू बह निकले, 'क्षमा करें, प्रभु। क्षमा करें। मैं नहीं जानता था कि वे आप थे।'

शिव वहीं का वहीं थम गया। गतिहीन।

— ⚹ —

आधी नींद में सती ने भारी-भरकम दहाड़ें सुनीं। वह तत्काल ही सावधान हो गई।

वे यहां आ गए हैं।

उसने सीढ़ी की ओर देखा। आग पूरे जोर से धधक रही थी। दो सैनिक पहरे पर बैठे हुए थे।

'कावस, वे यहां आ गए हैं। सब को जगा दो।'

सती छत के जंगले तक रेंगकर गई। वह अभी तक किसी भी शेर को नहीं देख पाई थी। आज चांदनी में कुछ-कुछ दिखाई पड़ रहा था। वह केवल आग पर निर्भर नहीं थी।

फिर उसने पेड़ों के झुरमुट से बब्बर शेर को निकलते देखा। जो तीर सती ने उस पर चलाया था वह अब भी उसके कंधे में धंसा हुआ था, वस उसकी मूंठ टूटी हुई थी। जिसके कारण वह अपना अगला पंजा थोड़ा घसीटते हुए चल रहा था।

'एक दूसरा शेर भी है,' कावस संकेत करते हुए फुसफुसाया।

सती ने सहमति में सिर हिलाया। उसने अपने धनुष को सामने कर लिया। लेकिन इससे पहले कि वह तीर चला पाती, जोदृश्य उसके सामने था, उससे वह हैरान रह गई।

अनेक शेरनियां उस बब्बर शेर के पीछे से बाहर निकलती चली आ रही थीं। उसने जो सात पशुओं का झुंड होने का अनुमान लगाया, वह उससे कहीं वड़ा था। वह आतंक से सहमी हुई उन पशुओं को एक के बाद एक बाहर आते देख रही थी। एक के बाद दूसरी शेरनी

निकलती रही, और उनकी संख्या तीस तक पहुंच गई।

प्रभु श्री राम कृपा करें!

पिछली रात के हमले के बाद बब्बर शेर ने अपनी पूरी सेना को उस संकट से निबटने के लिए बुला लिया था। और अब वह एक विशालकाय झुंड था।

यह तीन शेर होने से स्पष्ट होता है। बब्बर शेर ने वस्तुतः तीन झुंडों को मिलाकर उसका नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया था।

सती चुपके से पीछे मुड़ गई। वह इतनी सारी शेरनियों को नहीं मार सकती थी। उसने अपने आस-पास देखा। काशी के सैनिकों की आंखों में डर स्पष्ट झलक रहा था।

सती ने सीढ़ी से आने वाले रास्ते को देखा, 'दो और आदमी वहां लगा दो। और आग में और लकड़ियां झोंक दो।'

काशी के सैनिक दौड़कर आज्ञा का पालन करने चले गए। सती का दिमाग तेजी से घूम रहा था, लेकिन कोई हल नहीं सूझ रहा था। ठीक उसी समय उसने कुछ आवाजें सुनीं।

वह तत्काल ही पीछे मुड़ी और रेंगकर जंगले के पास पहुंची। अब वह आवाजें स्पष्ट सुन पा रही थी। दो बच्चे रो रहे थे। अपने जीवन की रक्षा के लिए चिल्ला रहे थे।

सती की आंखें घबराहट में खुली की खुली रह गईं।

नहीं... ऐसा मत करो...

गांव का मेहतर और उसकी पत्नी पूरे दृढ़ निश्चय के साथ शेरों के झुंड की ओर चले जा रहे थे। अपनी अंतिम यात्रा की पहचान स्वरूप, बलिदान के अभिप्राय को प्रकट करते हुए उन्होंने गेरुए रंग के वस्त्र धारण किए हुए थे। लगभग नंगे बच्चों का एक-एक हाथ पकड़कर उनके माता-पिता ले जा रहे थे। वे पागलपन की हद तक जोर-जोर से चीख-चिल्ला रहे थे।

वह बब्बर शेर उस दंपत्ति की ओर मुड़ा और गुर्राया।

सती ने अपनी तलवार निकाल ली, 'न ऽ ऽ हीं ऽ ऽ!'

'नहीं, देवी नहीं!' कावस चीखा।

लेकिन सती तब तक कूदकर जमीन पर पहुंच चुकी थी। वह शेरों की ओर हमला करने के लिए दौड़ पड़ी थी। उसकी तलवार ऊंची थी।

सभी शेर उसकी ओर मुड़ गए। वे आश्चर्यचकित थे। मेहतर और उसके परिवार को भूलकर बब्बर शेर ने सती को देखा। वह जोर से दहाड़ा और उसका झुंड हमला कर बैठा।

काशी के सैनिक सती के पीछे जमीन पर कूद पड़े, वो अपनी नेता की वीरता से प्रेरित हो चुके थे। लेकिन प्रेरणा दक्षता का स्थान तो नहीं ले सकती।

जब सती शेरनियों के निकट पहुंची तो उसने तलवार लहराई। बहुत ही सधी हुई तलवारबाज की तरह उछल-उछलकर वह उन पशुओं की नाकों और आंखों को काटती जा रही थी। जैसे ही शेरनियां चीख के साथ पीछे की ओर हटीं तो सती ने अपनी उसी सधी हुई चाल में अपने सामने वाले शेर पर हमला कर दिया। उसी बीच जब एक दूसरी शेरनी बगल से सती की ओर प्रहार करने बढ़ी तो काशी का एक वीर सैनिक बीच में ही कूद पड़ा। उस शेरनी ने उस दुर्भाग्यशाली सैनिक को गर्दन से पकड़ कर किसी गुड़िया सा झुला दिया। हालांकि इससे पहले वह सैनिक अपनी तलवार उस शेरनी की छाती में गहरे घुसा पाने में सफल हो गया था। जैसे ही वह सैनिक मरा तो साथ वह शेरनी भी धरती पर आ गिरी। कावस एक शेरनी से बड़ी बेचैनी के साथ संघर्ष कर रहा था। शेरनी ने उसके एक पैर में अपने दांत गड़ा रखे थे और उसका मांस खींच रही थी। वह अपनी तलवार से उसके कंधे पर बार-बार प्रहार कर रहा था लेकिन कोई घातक प्रहार नहीं कर पा रहा था।

काशीवासी दुस्साहस के साथ युद्ध लड़ रहे थे। बड़ी ही बहादुरी से। लेकिन कुछ क्षणों की ही बात थी जब वे पूरी तरह पराजित हो मारे जाने वाले थे। उस अत्यंत ही समन्वय से संचालित झुंड से संघर्ष करने के लिए ना तो वे अच्छी तरह प्रशिक्षित थे और ना ही उनमें इतनी दक्षता ही थी। सती जानती थी कि अब बस कुछ देर की ही बात है, जब वे उन पशुओं द्वारा मारे जाएंगे।

हे श्री राम, बस इतनी कृपा करना कि मेरी मृत्यु सम्मानजनक हो!

फिर उस मार-काट के वीच जोरदार शोर उभरा। कोई सौ से अधिक सैनिक पेड़ों के झुरमुट से वाहर निकल आए और उस भिड़ंत की ओर दौड़ पड़े। उनमें से एक शंख वजा रहा था। नागाओं के हमले की भयंकर दुंदुभी!

हैरान सती अपने सामने वाली शेरनी से जूझती जा रही थी लेकिन उसकी सोच में बाधा पड़ चुकी थी। वह सोचे जा रही थी कि ये सैनिक इस गांव में आखिर उसकी सहायता करने के लिए क्यों आए।

युद्ध की धारा तत्काल पलट गई। नए सैनिक स्पष्ट रूप से अपने काशी के साथियों की तुलना में कहीं अधिक दक्ष थे और उन्होंने निर्दयता से शेरों पर हमला बोल दिया था।

सती ने सामने वाली शेरनी का वध कर इधर-उधर देखा तो उसके आस-पास अनेक शेरों के शव पड़े हुए थे। उसने अपनी बाईं ओर कुछ हिलता-डुलता अनुभव किया। बब्वर शेर ने उसके ऊपर एक ऊंची छलांग लगा दी थी। अचानक कहीं से मुखौटा पहने चोगाधारी उछल कर उनके वीच आ गया। उसने वब्वर शेर को हवा में ही रोक लिया और एक ओर उछाल दिया। लेकिन शेर का एक पंजा उस मुखौटा पहने चोगाधारी के कंधे पर जा लगा था और उसके कंधे को गहराई से चीरता गया था। जैसे ही वब्वर शेर संतुलित हो मुड़कर नए खतरे का सामना करने के लिए तैयार हुआ तो वह मुखौटा पहने चोगाधारी सती के सामने सुरक्षात्मक ढंग से अपनी तलवार निकाले खड़ा हो गया।

सती ने अपने निडर रक्षक की पीठ की ओर देखा।

यह आदमी कौन है?

मुखौटा पहने चोगाधारी ने बब्बर शेर पर हमला कर दिया। ठीक उसी समय एक शेरनी ने सती पर हमला वोल दिया। सती नीचे झुकी और अपनी तलवार को निर्दयता से पशु के दिल को चीरते हुए उसके सीने में गहरा भोंक दिया। मृत हो वह शेरनी सती के ऊपर ही गिर पड़ी। उसने शेरनी को अपने शरीर के ऊपर से खिसकाने का प्रयास किया और अपने सिर को दाईं ओर मोड़ा। वह देख सकती थी कि मुखौटा पहने चोगाधारी अकेले ही उस विशालकाय बब्बर शेर से संघर्ष कर रहा था। उसके बाद वह चीखी, 'सावधान, उधर देखो!'

एक दूसरी शेरनी ने दाईं ओर से मुखौटा पहने चोगाधारी पर हमला बोल दिया और उसका एक पैर अपने जबड़े से दबोच लिया था। वह व्यक्ति गिर पड़ा, लेकिन गिरने से पहले उसने शेरनी की आंख में अपनी तलवार भोंक दी। वह बब्बर शेर एक वार फिर उस मुखौटा पहने चोगाधारी पर उछला।

'नहीं!' सती चीखी और हताश हो अपने ऊपर गिरी शेरनी को हटाने का प्रयास करने लगी।

उसके वाद उसने देखा कि अनेक सैनिक वब्बर शेर की ओर बड़ी दक्षता से अपनी तलवार लहराते हुए हमला कर चुके थे। वह बब्बर शेर अचानक हुए इस हमले को देख घबराकर पीछे मुड़ा और भाग खड़ा हुआ। उस झुंड के तीस पशुओं में से केवल तीन ही बच पाए थे। शेष सभी उस गांव के मैदान में मृत पड़े हुए थे। उनके साथ ही काशी के दस बहादुर सैनिकों के शव भी पड़े हुए थे।

एक सैनिक सती की सहायता करने के लिए आया और उसने शेरनी के मृत शरीर को उसके ऊपर से हटा दिया। वह तत्काल ही उठी और उस मुखौटा पहने चोगाधारी की ओर दौड़ पड़ी जिसे खड़ा करने के लिए सहायता दी जा रही थी।

उसके वाद वह रुक गई। हतप्रभ।

चोगाधारी का मुखौटा गिर चुका था।

नागा!

नागा का माथा अत्यधिक चौड़ा था। उसकी आंखें चेहरे के दोनों छोरों पर स्थित थीं। लगभग विपरीत दिशा में देखती हुईं। उसकी नाक असाधारण रूप से लंबी थी जो आगे निकलकर इतनी बढ़ी हुई थी जैसे हाथी की सूंड़। दो दांत बाहर की ओर निकले हुए थे, जिसमें से एक आधा टूटा हुआ था। संभवतया किसी पुरानी चोट की विरासत थी वह। उसके कान लटके हुए बड़े-बड़े से थे, जो अपने-आप ही हिल रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उस अभागे के धड़ पर किसी हाथी का सिर रख दिया गया हो।

नागा अपनी मुट्ठियां भींचे और उंगलियों को हथेली में गड़ाए खड़ा हुआ था। वह इसी क्षण का बहुत लंबे समय से सपना देख रखा था। उसकी आत्मा में भावनाएं हिलोरें ले रही थीं। क्रोध। विश्वासघात। भय। प्रेम।

'कुरूप, मैं कुरूप हूं न?' वह नागा फुसफुसाया। उसकी आंखें नम थीं, दांत भिंचे हुए थे।

'क्या? नहीं तो!' सती चीख पड़ी। वह अपनी हैरानी को नियंत्रित करने का प्रयास कर रही थी। वह उस व्यक्ति का अपमान कैसे कर कर सकती थी, जिसने उसके प्राणों की रक्षा की थी? 'मैं क्षमाप्रार्थी हूं। वह तो केवल...'

'क्या इसी कारण तुमने मुझे त्याग दिया था?' वह नागा फुसफुसाया। उसने सती की वात को अनसुना कर दिया। उसका शरीर कांप रहा था। उसकी मुट्ठियां कसकर वंधी हुई थीं।

'क्या?'

'क्या इसी कारण तुमने मुझे त्याग दिया था?' हल्के से आंसू नागा की गाल पर बह निकले, 'क्योंकि तुम मुझे देख भी नहीं सकती थीं?'

सती ने नागा को गहरी दृष्टि से देखा। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था, 'तुम कौन हो?'

'निर्दोष होने का दिखावा छोड़ दे, ऐ अपने वाप की विगड़ैल वेटी!' पीछे से एक शक्तिशाली स्त्री स्वर चीखा।

सती पीछे मुड़ी और चकित रह गई।

उसके बहुत ही निकट बाईं ओर जो खड़ी थी, वह नागा रानी थी। उसका पूरा का पूरा धड़ हड्डियों का सख्त कंकाल था। हड्डियों से बनी छोटी-छोटी गेंदें उसके कंधे से पेट तक आई हुई थीं जो उस कंकाल पर किसी माला समान लग रही थीं। उसके कंधों के ऊपर दो छोटे अतिरिक्त अंग जुड़े हुए थे जो तीसरे और चौथे हाथ के समान कार्य कर रहे थे। उनमें से एक चाकू पकड़े हुए था और सती की ओर फेंकने के लिए उतारू हो रहा था। लेकिन जो सवसे अधिक परेशान करने वाली बात थी, वह थी नागा स्त्री का चेहरा। उसका रंग कोयले के समान काला था, लेकिन नागा रानी का चेहरा लगभग सती की ही प्रतिकृति थी।

'तुम लोग कौन हो?' हैरान सती ने पूछा।

'मुझे इस पाखंडी को इस क्लेश से बाहर निकालने दो, मेरे बच्चे?' नागा रानी का चाकू वाला हाथ कांप रहा था, 'यह सच को कभी स्वीकार नहीं करेगी। यह भी अपने कपटी बाप की तरह ही है!'

'नहीं, मौसी।'

सती ने पहले नागा को देखा और फिर उसने तीखी दृष्टि से नागा रानी को देखा, 'तुम कौन हो?'

'वकवास! तुम मुझसे यह विश्वास करने की आशा रखती हो कि तुम मुझे नहीं जानतीं?!'

सती नागा रानी को उलझन भरी दृष्टि से देखती रही।

'मौसी...,' नागा ने फुसफुसाकर कहा। वह अपने घुटने के बल बैठ चुका था और बहुत हताश हो रो रहा था।

'मेरे वच्चे!' नागा रानी रो पड़ी और दौड़कर उसके निकट गई। उसने अपना चाकू नागा को देने का प्रयास किया, 'मार डालो इसे! मार डालो इसे! यही एक उपाय है जिससे तुम शांति पा सकते हो।'

नागा कांप रहा था, अपना सिर हिलाए जा रहा था। आंसू उसके चेहरे पर धाराप्रवाह बहते जा रहे थे। कुछ दूरी पर विश्वद्युम्नऔर ब्रंगा सैनिक काशी के सैनिकों को वंधक बनाए हुए थे।

सती ने फिर से पूछा, 'तुम लोग कौन हो?'

'वहुत हो गया अब!' अपना चाकू उठा नागा रानी चीख पड़ी।

'नहीं मौसी,' रोते हुए नागा फुसफुसाया, 'यह नहीं जानती है।

यह नहीं जानती है।'

सती ने नागा रानी को एकटक देखा, 'मैं सौगंध खाकर कहती हूं, मुझे पता नहीं कि तुम लोग कौन हो?'

नागा रानी ने अपनी आंखें बंद कीं और एक गहरी श्वास ली। उसके बाद हरसंभव व्यंग्यभरे हावभाव में उसने बताया, 'तो फिर सुनो, हे गौरवान्वित राजकुमारी। मैं तुम्हारी जुड़वां बहन काली हूं। वह जिसे तुम्हारे दोमुंहे बाप ने बचपन में ही त्याग दिया था!'

सती ने काली को अपलक देखा। उसका मुंह अधखुला रह गया। वह इतनी हैरान हुई कि कुछ भी कहने में असमर्थ थी।

मेरी एक बहन भी है?

'और यह दुखियारा,' काली ने *लोकाधीश* की ओर संकेत करते हुए कहा, 'तुम्हारा त्यागा हुआ बेटा है, *गणेश।*'

हैरानी से सती की श्वास थम गई।

मेरा बेटा जीवित है?

उसने गणेश पर एक गहरी दृष्टि डाली।

मेरा बेटा!

गणेश के चेहरे पर क्रोध के कारण आंसू बह निकले। उसका शरीर दुख से बुरी तरह थरथरा रहा था।

मेरा बेटा...

सती का हृदय मातृत्व की पीड़ा से छटपटा उठा।

लेकिन... लेकिन पिताजी ने तो कहा था कि मेरा बेटा मृत पैदा हुआ था।

वह लगातार गणेश को घूरे जा रही थी।

मुझे झूठ बताया गया था।

सती ने अपनी श्वास रोक ली। उसने अपनी जुड़वां बहन को देखा। वह बिल्कुल उसी की प्रतिकृति थी। उस संबंध का एक स्पष्ट प्रमाण। वह गणेश की ओर मुड़ी।

'मेरा बेटा जीवित है?'

गणेश ने उसकी ओर देखा। उसकी आंखों से अब भी धाराप्रवाह आंसू बह रहे थे।

'मेरा बेटा जीवित है,' सती फुसफुसाई। उसकी आंखों से भी आंसू बह निकले।

सती घुटने के बल बैठे हुए गणेश की ओर लड़खड़ाते हुए बढ़ी। उसके चेहरे को हाथों में थामे वह अपने घुटनों के बल बैठ गई,'मेरा बेटा जीवित है...'

उसने गणेश के चेहरे पर अपना हाथ फेरते हुए कहा, 'मैं नहीं जानती थी, मेरे बच्चे। मैं सौगंध खाकर कहती हूं, मैं नहीं जानती थी।'

गणेश ने अपनी बाहें नहीं उठाईं।

'मेरे बच्चे,' सती फुसफुसाई। उसने नीचे झुककर गणेश के माथे को चूम लिया। गणेश को सती कसकर लिपटाए रही, 'मैं तुम्हें कहीं नहीं जाने दूंगी। कभी नहीं।'

गणेश की आंखों से अश्रुधारा बह निकली। उसने अपनी मां को कसकर जकड़ लिया और सबसे जादुई शब्द कहे, 'मां...'

सती फिर से रोने लगी, 'मेरे बेटे। मेरे बच्चे।'

गणेश बिलख-बिलखकर वैसे ही रोने लगा जैसे कोई सुरक्षित नन्हा सा बच्चा रोता है, जैसा वह सदैव से रोना चाहता था। वह सुरक्षित था। अंततः वह सुरक्षित था। अपनी प्यारी मां की बांहों में सुरक्षित था।

— ⅄◎Ʊ♆⊛ —

परशुराम प्रतीक्षा कर रहा था।

जब ब्रंगावालों का जहाज तट से टकराया था तो पीने के पानी का भंडार नष्ट हो गया था। सूर्यवंशियों के पास मधुमती के जल को पीने के अलावा और कोई चारा नहीं था। दिवोदास ने सब से कह दिया था कि वह जल बिना उबाले नहीं पिया जा सकता। लेकिन परशुराम जानता था कि मधुमती का जल पहली बार पीने वाला निश्चित रूप से कुछ घंटों के लिए अचेत हो जाता है, यदि पहले से ही विष नाशक औषधि ना ली हो तो।

जब तक जल अपना प्रभाव दिखाता तब तक वह धैर्य से प्रतीक्षा करता रहा। उसके बाद उसे एक कार्य करना था।

जब शिविर में सब सो गए तब परशुराम अपने कार्य की तैयारी करने लगा। उसने बंधी हुई जंजीर में एक कमजोर कड़ी ढूंढ़ी और उसे पत्थर से मारकर स्वयं को मुक्त कर लिया। उसके उपनायक को आशा थी कि परशुराम जंजीर को खुला छोड़ देगा, लेकिन परशुराम ने पुनः जंजीर को धरती में गाड़ दिया।

'कोई यहां से भागेगा नहीं। यह स्पष्ट है? कोई भी भागने का साहस करेगा तो मैं उसे ढूंढ़कर मृत्युलोक पहुंचा दूंगा।'

उसके उपनायक ने त्योरी चढ़ा ली। वह पूरी तरह से उलझन में था, लेकिन वह अपने उस भयानक सरदार से प्रश्न करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। परशुराम तट पर स्थित रसोईघर की ओर मुड़ गया। उसका फरसा चंद्रमा की रौशनी में चमक उठा। वह जानता था कि उसे क्या करना था।

यह उसे करना ही था। उसके पास कोई विकल्प नहीं था।

अध्याय 16

विपरीत आकर्षण

अग्नि तीव्रता से प्रचंड होती जा रही थी।

शिव ने मानसरोवर झील में इतनी ऊंची लपटें कभी नहीं देखी थीं। सांय-सांय करती हवा, खुला मैदान, गुणवालों की शक्ति, उसके कबीले ने कभी किसी आग को लंबे समय तक जलने नहीं दिया था।

उसने अपने चारों ओर देखा। उसका गांव खाली था। एक भी व्यक्ति दिखाई नहीं दे रहा था। उसके टोले की दीवारों को लपटें चूम रही थीं।

वह झील की ओर मुड़ा, 'हे पवित्र झील, मेरे लोग कहां हैं? क्या प्रकृतिवालों ने उन्हें बंधक बना लिया?'

'शि ऽ व! सहायता करें!'

शिव पीछे मुड़ा तो उसने देखा कि रक्त से लथपथ बृहस्पति उस विशालकाय आग के घेरे से होता हुआ गांव के प्रवेशद्वार से बाहर आ रहा था। उसे एक दानवी आकार का मुखौटा पहने चोगाधारी खदेड़ रहा था। उसकी चाल डरावने ढंग से अत्यधिक नियंत्रित थी।

शिव ने बृहस्पति को खींचकर अपने पीछे कर लिया और मुखौटा पहने चोगाधारी नागा के निकट आने की प्रतीक्षा करने लगा। जब वह निकट आ गया तो शिव चिल्लाया, 'तुम उसके पास फटक भी नहीं सकते। जब तक मैं जीवित हूं, तब तक तो बिल्कुल भी नहीं।'

उस नागा का मुखौटा जैसे स्वयं जीवित हो उठा हो। वह कृत्रिम हंसी हंसा, 'मैंने उसे पहले ही पकड़ लिया है।'

शिव तेजी से पीछे घूमा। उसके पीछे तीन विशालकाय सर्प थे। एक सर्प बृहस्पति के शिथिल शरीर को घसीटता हुआ ले जा रहा था, जिस पर अनेक सर्पदंश दिख रहे थे। अन्य दो सर्प पहरे पर थे जो अपने मुंह से आग उगल रहे थे, जिसके कारण शिव उनके निकट नहीं जा पा रहा था। शिव असहाय सा देख रहा था। उन सर्पों ने बृहस्पति को घसीटकर नागा के पास पहुंचा दिया। अत्यधिक क्रोधित शिव नागा की ओर मुड़ा।

'प्रभु श्री रुद्र कृपा करें!' शिव फुसफुसाया।

बुरी तरह घायल द्रपकु नागा के पास अपने घुटनों के बल झुका हुआ था। पराजित, असहाय, मृत्यु की प्रतीक्षा में।

द्रपकु के बगल में ही घुटनों के बल एक स्त्री बैठी हुई थी। उसकी बांह से रक्त रिस रहा था। लहराते केश उसके झुके चेहरे को ढके हुए थे। फिर हवा के प्रवाह से वह अनावृत्त हो गया। उसने ऊपर की ओर देखा।

यह वही थी। वही स्त्री जिसे शिव बचा नहीं पाया था। वही जिसका बचाव उसने नहीं किया था। वह स्त्री जिसे बचाने तक का उसने प्रयास नहीं किया था, 'सहायता! कृपा कर मेरी सहायता करें!'

'ऐसा दुस्साहस मत करना!' शिव ने नागा को चेतावनी देते हुए कहा।

नागा ने बहुत ही शांति से अपनी तलवार उठाई और एक क्षण को भी बिना हिचकिचाए उस स्त्री का सिर धड़ से अलग कर दिया।

शिव ठंडे पसीने से नहाया हुआ उठ बैठा। उसका मस्तक पुनः जल रहा था। मधुमती की लहरों की आवाज सुनते हुए उसने तंबू के अंदर फैले अंधकार को देखा। उसने अपने हाथ पर दृष्टि डाली। उसमें सर्प बना हुआ वह बाजूबंद था। उसने बाजूबंद को जमीन पर फेंक दिया और अपनी शय्या पर लेट गया। उसका सिर भारी था। बहुत भारी।

मधुमती उस रात शांति से बह रही थी। परशुराम ने ऊपर की ओर देखा। चांदनी उसे अपना कार्य करने के लिए प्रकाश दे रही थी।

उसने एक छोटी सी अंगीठी के ऊपर रखे हुए सपाट तवे के ताप का परीक्षण किया। बहुत अधिक। होना ही था। मांस को तत्काल ही झुलसा देना होगा, वरना रक्त का बहना नहीं रुकेगा। वह पुनः कुल्हाड़ी की धार तेज करने में जुट गया।

उसने एक बार फिर उसकी धार का परीक्षण किया। धार अत्यधिक पैनी थी। उससे बहुत ही सफाई से प्रहार किया जा सकता था। उसने पीछे मुड़कर देखा। वहां कोई नहीं था।

उसने अपना लवादा फेंक दिया और एक गहरी श्वास भरी।

'प्रभु रुद्र, मुझे शक्ति प्रदान करें।'

उसने अपने बाएं हाथ को घुमाकर मोड़ा। वही पापी हाथ जिसने नीलकंठ के प्रिय व्यक्ति के वध करने का साहस किया था। उसने उस पेड़ के तने के निकले हुए भाग को पकड़ा। उसे कसकर पकड़ लिया जिससे अपना कंधा खींच पाया।

वह तना इससे पहले उसके कई शत्रुओं के सिर धड़ से अलग करने में प्रयुक्त हो चुका था। उस पेड़ पर उन दुर्भाग्यशाली पीड़ितों का रक्त गिरकर गहरे लाल-लाल दाग बन गए थे। अब वहीं उसका रक्त उनसे मिलने जा रहा था।

उसने अपने दाहिने हाथ से फरसा और ऊंचा उठा लिया। परशुराम ने अंतिम बार सिर ऊठाकर ऊपर की ओर देखा और

एक गहरी श्वास ली, 'मुझे क्षमा करें, मेरे प्रभु।'

वह फरसा भनभनाता हुआ हवा में लहराया, तेजी से नीचे आ गिरा और बिना चूक हाथ काटकर अलग कर दिया।

— ⚹ —

'पवित्र झील के नाम पर यह बताएं कि वह कैसे भाग निकला?'

शिव चिल्लाया, 'आप लोग क्या कर रहे थे?'

पर्वतेश्वर एवं भगीरथ दृष्टि नीचे किए हुए थे। प्रभु का क्रोध न्यायोचित था। वे शिव के तंबू में थे। वह प्रथम प्रहर का अंतिमघंटा था। सूर्य अभी-अभी उदय हुआ था। और उसी के साथ परशुराम के अदृश्य होने पर प्रकाश पड़ा।

बाहर होने वाले शोरगुल से शिव का ध्यान उस ओर चला गया। वह तेजी से बाहर.निकला तो उसने देखा कि दिवोदास एवं कुछ अन्य सैनिक परशुराम की ओर तलवार ताने खड़े थे। वह शिव को घूरता हुआ लड़खड़ाते हुए उसी की ओर बढ़ रहा था। वह और किसी को नहीं देख रहा था।

शिव ने अपना बायां हाथ ऊंचा उठा अपने आदमियों से परशुराम को ना रोकने के लिए कहा। पता नहीं किस कारण उसे अपनी तलवार तक को उठाने की आवश्यकता अनुभव नहीं हुई। परशुराम ने अपना लबादा कसकर लपेटा हुआ था। भगीरथ परशुराम के पास गया ताकि परीक्षण कर सके कि उसने कहीं कोई हथियार छुपा ना रखा हो। शिव ने जोर से पुकारकर कहा, 'कोई बात नहीं,भगीरथ। उसे आने दो।'

परशुराम लड़खड़ाता हुआ शिव की ओर बढ़ा। वह बहुत ही कमजोर लग रहा था। उसकी आंखें बंद होती प्रतीत हो रही थीं।

परशुराम शिव के सामने अपने घुटनों के बल गिर पड़ा।

'तुम कहां गए थे?'

परशुराम ने ऊपर की ओर देखा। उसकी आंखें विषादपूर्ण थीं,'मैं...प्रायश्चित...प्रभु...'

शिव की भृकुटि तन गई।

उस दस्यु ने अपना लबादा नीचे गिरा दिया और अपने दाहिने हाथ से अपना बायां कटा हुआ हाथ शिव के चरणों में रख दिया, 'इस हाथ ने...पाप किया...प्रभु...मुझे क्षमा करें...'

शिव ने दहशत से अपनी श्वास रोक ली।

परशुराम गिर पड़ा। वह अचेत हो चुका था।

— ⅄ⵍⵓⴷⴰ —

आयुर्वती ने परशुराम के घाव की मरहम-पट्टी कर दी थी। उसने उसे फिर से दागकर संक्रामक होने से रोक दिया था। खुले हुए मांस पर नीम का रस लगा दिया गया था। कटे हुए भाग पर नीम के पत्तों की पट्टी बनाकर उसे हाथ से कसकर बांध दिया गया था।

उसने शिव की ओर देखा, 'यह मूर्ख भाग्यशाली है कि कुल्हाड़ी की धार तेज थी और वह साफ थी। इस प्रकार के घाव से हुई रक्त की कमी और संक्रमण प्राणघातक सिद्ध हो सकते हैं।'

'मैं नहीं समझता कि सफाई या अस्त्र की तेज धार अनायास ही थी,' भगीरथ फुसफुसाया, 'उसने ही यह किया था। वह जानता था कि वह क्या कर रहा है।'

पर्वतेश्वर परशुराम को एकटक घूर रहा था। विस्मित।

यह विचित्र व्यक्ति कौन है?

शिव ने अभी तक एक शब्द भी नहीं कहा था। वह केवल परशुराम को घूर रहा था। उसका चेहरा भावहीन था। उसकी आंखें अत्यधिक संकुचित थीं।

'हम लोग अब इसका क्या करें, प्रभु?' पर्वतेश्वर ने पूछा।

'हम लोग इसका उपयोग करें,' भगीरथ ने सुझाव दिया, 'हमारे जहाज को ठीक होने में छह महीने का समय लग जाएगा। हम लोग इतने लंबे समय तक यहां नहीं रह सकते। मेरा सुझाव है कि हम एक छोटी नाव में इसे ब्रंगा के सबसे निकट सीमांत चौकी तक लेकर चलते हैं और उनके हवाले कर देते हैं। हम लोग ब्रंगा के सबसे बड़े वांछित अपराधी को उन्हें सौंपकर इसके बदले में उनसे जहाज ले लेंगे। वे लोग जबरन इससे औषधि बनाने का तरीका ले लेंगे और हमें नागाओं तक पहुंचने का मार्ग मिल जाएगा।'

शिव ने कुछ नहीं कहा। वह लगातार परशुराम को घूरे जा रहा था।

पर्वतेश्वर को भगीरथ का सुझाव अच्छा नहीं लगा। लेकिन वह यह भी जानता था कि इस समय यही सबसे व्यावहारिक उपाय था। उसने शिव की ओर देखा, 'प्रभु?'

'हम लोग इसे ब्रंगावालों के हवाले नहीं करेंगे,' शिव ने कहा।

'प्रभु?' भगीरथ हैरान हो चीख पड़ा।

शिव ने भगीरथ को देखा, 'हम नहीं कर रहे।'

'लेकिन प्रभु, हम कैसे नागाओं के पास पहुंचेंगे? हमने ब्रंगाओं को औषधियां देने का वचन दिया है।'

'परशुराम हमें औषधियां देगा। जब वह होश में आएगा तो मैं उससे पूछूंगा।'

'लेकिन, प्रभु,' भगीरथ ने कहना जारी रखा, 'यह एक अपराधी है। वह तब तक कोई सहायता नहीं करेगा जब तक कि उस पर दबाव नहीं डाला जाएगा। मैं स्वीकार करता हूं कि इसने त्याग किया है। लेकिन हमें यहां से बाहर निकलने के लिए जहाज की आवश्यकता है।'

'मैं जानता हूं।'

भगीरथ शिव को लगातार देखता रहा। उसके बाद वह पर्वतेश्वर की ओर मुड़ा। मेलूहा के सेनापति ने उसे चुप रहने का इशारा किया।

लेकिन भगीरथ नहीं रुका। जो नीलकंठ सोच रहे थे, वह व्यावहारिक नहीं था, 'कृपया दुबारा कहने के लिए क्षमा करें, प्रभु। लेकिन जहाज प्राप्त करने का एकमात्र तरीका यही है कि परशुराम को ब्रंगावालों के हवाले कर दिया जाए। और ऐसा करने का यह एकमात्र कारण भी नहीं है। परशुराम एक अपराधी है, एक नरसंहारी। हम उसे ब्रंगावासियों को उचित दंड के लिए क्यों नहीं सौंप सकते?'

'क्योंकि मैंने कहा है।'

यह कहकर शिव बाहर निकल गया। भगीरथ बिना कुछ बोले पर्वतेश्वर की ओर देखता रह गया।

परशुराम की आंखें हल्की-सी खुलीं। वह दुर्बलता से मुस्कुराया। और उसके बाद पुनः सो गया।

— ⅄ⓄⅡ⇞⊗ —

दूसरा प्रहर निकट आते ही सूर्य सिर चढ़ चमचमाने लगा।

ब्रंगा और काशी के सैनिक बहुत परिश्रम से कार्य में जुटे हुए थे और विश्वद्युम्न ने उनकी कमान संभाल रखी थी। योग्य ब्रंगाओं का आदेश मानने में कावस को कोई दुविधा नहीं हो रही थी। ब्रंगा के साथ आए वैद्यों ने सभी घायलों का उपचार कर दिया था। अब सभी स्वास्थ्य लाभ करने लगे थे। सारे मृतकों की अंत्येष्टि इच्छावड़ के मैदान में कर दी गई थी। हालांकि किसी को भी शेरनियों और बब्बर शेर के पुनः उस गांव में आने की आशा नहीं थी, फिर भी सावधानी के तौर पर गांव के चारों ओर खाई खोद दी गई थी। ब्रंगा और काशी के सैनिक विद्यालय के भवन में अस्थायी तौर पर निवास कर रहे थे। गांव वालों को भोजन की आपूर्ति करने के लिए कह दिया गया था।

यद्यपि गांव वाले शेर के झुंड के नष्ट होने पर प्रसन्न थे, तथापि भय के कारण अभी भी सैनिकों आदि से दूरी बनाए हुए थे और विश्वद्युम्न के आदेशों का पालन चुपचाप कर रहे थे। उनके जीवन की रक्षा हुई थी, इस तथ्य के बावजूद भी नागाओं का जानलेवा आतंक उन्हें दमित किए हुए था।

वैसे मेहतर के बच्चे काली के साथ खेल कर आनंदित हो रहे थे। वे उसके बाल खींचते, उस पर उछलते-कूदते और जब वह नकली गुस्सा करने के लिए अपना मुंह बनाती तो वे खिलखिलाकर हंस पड़ते थे।

'बच्चों!' उनकी मां ने कड़ाई से कहा। वे मुड़े और अपनी मां की ओर भाग गए। उसकी धोती पकड़ ली। मेहतरानी ने काली से कहा, 'इसके लिए मुझे क्षमा करें, रानी जी। वे आपको अब तंग नहीं करेंगे।'

काली का चेहरा एक वयस्क व्यक्ति से बात करने पर पुनः गंभीर हो गया। उसने केवल अपना सिर हिलाया और कुछ नहीं बोली।

वह दाईं ओर मुड़ी तो देखा कि गणेश सती की गोद में सिर रखे चैन की नींद सो रहा था। उसका चेहरा परमानंद का प्रतीक बना हुआ था। उसके घावों पर पट्टियां लगा दी गई थीं। वैद्य उसके पैर के शेरनी के काटे घाव के बारे में अधिक चिंतित था। उसे भलीभांति साफ करके पट्टियों से कसकर बांध दिया गया था।

सती ने काली की ओर देखा और मुस्कुराई। उसने अपनी बहन का हाथ पकड़ लिया।

काली नम्रता से मुस्कुराई, 'मैंने आज तक इसे इतने चैन से सोते नहीं देखा।'

सती मुस्कुराई और उसने बड़े लाड़ से गणेश के चेहरे पर अपना हाथ फेरा, 'इतने लंबे समय तक इसका ध्यान रखने के लिए तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद।'

'यह तो मेरा कर्तव्य था।'

'हां, लेकिन सभी लोग अपने कर्तव्य का पालन नहीं करते हैं। धन्यवाद।'

'वास्तव में, मुझे इसमें आनंद मिला।'

सती मुस्कुराई, 'मैं कल्पना कर सकती हूं कि तुम्हारे लिए जीवन कितना कठिन रहा होगा। मैं उसकी पूर्ति करूंगी। मैं वचन देती हूं।'

काली ने अपनी भौंहों को हल्के से ऊपर चढ़ाया, लेकिन चुप रही।

सती ने ऊपर देखा जैसे उसे कोई विचार सूझा हो, 'तुमने पिताजी के बारे में कुछ कहा था। क्या तुम निश्चित तौर पर ऐसा कह सकती हो? वे कमजोर हैं, लेकिन वे अपने परिवार से स्पष्ट रूप से प्रेम करते हैं। मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकती कि वे जानबूझकर हममें से किसी को हानि पहुंचा सकते हैं।'

काली का चेहरा सख्त हो गया। अचानक गणेश की आवाज सुन दोनों ने बातें रोक दीं। सती ने अपने पुत्र की ओर देखा।

गणेश ने मुंह फुलाया, 'मुझे भूख लगी है!'

सती ने अपनी भौंहें उठाईं और खिलखिलाकर हंस पड़ी। उसने गणेश के ललाट को धीमे से चूमा, 'मुझे देखने दो कि अभी क्या मिल सकता है।'

जव सती वहां से चली गई तो काली इस प्रकार के व्यवहार पर डांटने के लिए उसकी ओर मुड़ी। लेकिन गणेश स्वयं भी तेजी से उठ चुका था, 'आप उन्हें नहीं बताएंगी, मौसी।'

'क्या?'

'आप उन्हें नहीं बताएंगी।'

'वह मूर्ख नहीं है, यह तुम जानते हो। वह पता लगा लेगी।'

'चाहे वे पता लगा लें, लेकिन उन्हें आपसे यह सूचना नहीं मिलनी चाहिए।'

'उसे सच जानना चाहिए। वह क्यों ना जाने?'

'क्योंकि कुछ सच केवल पीड़ा देते हैं, मौसी। अच्छा हो यदि वे दवे ही रहें।'

— ⅄ⓄⓊ⍏⊛ —

'प्रभु,' परशुराम फुसफुसाया।

शिव, पर्वतेश्वर और भगीरथ उस छोटे से तंबू में जमघट लगाए हुए थे। वह तीसरे प्रहर का अंतिम घंटा था। क्षितिज पर सूर्य डूब रहा था और मधुमती के पानी को गुलाबी-भूरी आभा प्रदान कर रहा था। दिवोदास और उसके आदमी जहाज की मरम्मत के काम में जुट चुके थे। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य था।

'क्या है, परशुराम?' शिव ने पूछा, 'तुम मुझसे मिलना क्यों चाहते थे?'

परशुराम ने ताकत जुटाने के लिए अपनी आंखें बंद कर लीं। 'मैं अपने एक आदमी से ब्रंगा लोगों को नागा औषधि बनाने की विधि की सूचना उपलब्ध करा दूंगा, प्रभु। हम उनकी सहायता करेंगे। हम उन्हें कलिंग में महेंद्र पर्वत तक ले जाएंगे, जहां हमें औषधि को स्थिर करने का तत्व प्राप्त होता है।'

शिव मुस्कुराया, 'धन्यवाद।'

'आपको मुझे धन्यवाद कहने की आवश्यकता नहीं है, प्रभु।

यह आपको चाहिए। आपके लिए काम आना मेरे लिए सम्मान की बात है।'

शिव ने सिर हिलाया।

'आपको जहाज की भी आवश्यकता है,' परशुराम ने कहा।

भगीरथ खड़ा हो गया।

'मेरे पास मेरा अपना एक बड़ा जहाज है,' पर्वतेश्वर की ओर मुड़ने से पहले परशुराम ने कहा, 'आप अपने कुछ आदमी मुझे दें, वीर सेनापति। मैं उन्हें बताऊंगा कि वह कहां है। वे उसे यहां ला सकते हैं और हम यहां से प्रस्थान कर सकते हैं।'

आश्चर्यचकित पर्वतेश्वर शिव की ओर देखते हुए मुस्कुराया।

शिव ने सिर हिलाया। वह दस्यु थका हुआ लग रहा था। शिव परशुराम के कंधे को स्पर्श करने के लिए झुका, 'तुम्हें आराम की आवश्यकता है। हम बाद में बातें कर सकते हैं।'

'एक और वस्तु, प्रभु,' परशुराम ने हठ करते हुए कहा,'ब्रंगावाले तो केवल माध्यम हैं।'

शिव ने त्योरी चढ़ा ली।

'आपका अंतिम लक्ष्य नागाओं की खोज करना है।' शिव ने अपनी आंखें संकुचित कर लीं।

'मैं जानता हूं कि वे कहां रहते हैं,' परशुराम ने कहा।

शिव की आंखें आश्चर्य में चौड़ी हो गई।

'दंडक वन के उस मार्ग को मैं जानता हूं, प्रभु,' परशुराम कहता गया, 'मैं जानता हूं कि नागाओं का नगर कहां है। मैं आपको वता सकता हूं कि वहां कैसे पहुंचा जा सकता है।'

शिव ने परशुराम के कंधे पर थपकी दी, 'धन्यवाद।'

'लेकिन मेरी एक शर्त है, प्रभु।'

शिव ने अपनी त्योरी चढ़ा ली।

'मुझे अपने साथ ले चलें,' परशुराम फुसफुसाया।

शिव ने आश्चर्य से अपनी भौंहें उठाईं, 'लेकिन क्यों...'

'आपका अनुसरण करना मेरा कर्तव्य है। कृपा कर मेरे इस दयनीय जीवन को कम से कम थोड़ा अर्थ प्रदान करने का अवसर दें, प्रभु।'

शिव ने सहमति में सिर हिलाया, 'तुम्हारे साथ यात्रा करना मेरे लिए सम्मान की वात होगी।'

— ⅄ⓄƱ⇑⊗ —

मधुमती का युद्ध समाप्त हुए तीन दिन बीत चुके थे। पर्वतेश्वर के लोगों ने परशुराम के जहाज को ढूंढ़ लिया था। यह उससे भी वड़ा था जिसमें वे यात्रा करके यहां आए थे। वह स्पष्ट रूप से एक ब्रंगा जहाज था क्योंकि उसके तल में वह अतिरिक्त हिस्सा वना हुआ था जिससे वे ब्रंगा के द्वारों से होकर आसानी से अंदर जा सकते थे। वह जहाज अवश्य ही परशुराम के लोगों ने, उन्हें पकड़ने के लिए वहां आए, किसी ब्रंगा दल से छीना होगा।

सभी सैनिक जहाज पर चढ़ चुके थे। परशुराम के आदमी अब बंदी नहीं थे। उन्हें सूर्यवंशियों के समान ही सुविधाएं प्रदान की गई थीं।

शिव ने निजी रूप से पूर्वक एवं परशुराम दोनों की सुविधाओं का ध्यान रखा था। आयुर्वती ने अपने सहायक मस्त्रक को परशुराम के साथ रखा हुआ था। परशुराम अत्यधिक रक्त के बह जाने के कारण अभी भी बहुत दुर्बल था।

जहाज मधुमती की उल्टी धारा में आराम से चल रहा था। जब वे ब्रंगा नदी के निकट पहुंचेंगे तो एक अति तीव्र चालित नौका राजा चंद्रकेतु के मार्गदर्शन के लिए भेज दी जाएगी, जिससे नागाओं की औषधि प्राप्त करने वाले वैकल्पिक स्रोत को ढूंढ़ा जा सके। वह आदमी ब्रंगरिदाई में शिव के लोगों को भी सूचना देता जाएगा कि वे तत्काल शिव से वहां आकर मिलें जहां मधुमति ब्रंगा नदी से पृथक होती है।

उसके बाद उनका दल काशी की ओर वापस चल पड़ेगा। सती और कार्तिक से मिलने के लिए शिव वेताब हो रहा था। उसे अपने परिवार की याद आ रही थी। उसके बाद उसने सेना के गठन और नागाओं की खोज के लिए जल्दी ही दक्षिण की ओर कूच कर देने की एक योजना बनाई थी।

शिव जहाज के अगले हिस्से में वीरभद्र के साथ बैठा गांजे का कश लगा रहा था। नंदी उनकी बगल में खड़ा था। वे मधुमती के भंवरदार जल को देख रहे थे।

'यह अभियान तो आशा से अधिक अच्छा रहा, प्रभु,' नंदी ने कहा।

'हां, बात तो सही है,' चिलम की ओर संकेत करते हुए शिव ने कहा, 'दुर्भाग्य से, उत्सव उतना आनंददायक नहीं रहा।'

वीरभद्र मुस्कुराया, 'मुझे काशी पहुंचने दें। वहां सही तरीके से लोग गांजा मिलाना जानते हैं।'

शिव जोर से हंसा। नंदी भी हंस पड़ा। शिव ने नंदी की ओर चिलम बढ़ाई, लेकिन मेलूहा के उपसेनापति ने इंकार कर दिया। शिव ने अपने कंधे उचकाए और एक कश और लिया। उसके बाद उसने चिलम वीरभद्र को पकड़ा दी।

शिव का ध्यान भंग हो गया क्योंकि उसने देखा कि पर्वतेश्वर उनके निकट आया, झिझका और फिर मुड़ गया।

'ना जाने अभी मुझसे वे क्या बात करना चाहते हैं,' शिव ने त्योरी चढ़ाकर कहा।

'यह तो स्पष्ट है, है ना?' वीरभद्र मुस्कुराया।

नंदी ने दृष्टि नीचे की और मुस्कुराया, लेकिन कुछ बोला नहीं।

'तुम दोनों मूर्ख मुझे क्षणभर के लिए अकेला क्यों नहीं छोड़ देते?' शिव मुस्कुराया और अपने मित्रों को छोड़ वहां से चल पड़ा।

पर्वतेश्वर थोड़ी दूर पर ही खड़ा था। वह किसी गहरी सोच में डूबा हुआ था।

'सेनापति? कुछ बोलूं, सेनापति।'

पर्वतेश्वर ने तत्काल ही पीछे मुड़कर सैनिक अभिवादन किया,'आप आज्ञा करें, प्रभु।'

'आज्ञा नहीं, पर्वतेश्वर, एक निवेदन है।'

पर्वतेश्वर ने अपनी त्योरी चढ़ा ली।

'पवित्र झील के नाम पर,' शिव ने कहा, 'बस एक बार अपने हृदय की सुनें।'

'प्रभु।'

'आप जानते हैं कि मैं क्या कह रहा हूं। वह आपको प्रेम करती है। आप उसे प्रेम करते हैं। इसके अलावा आप और किस बारे में सोच रहे हैं?'

पर्वतेश्वर सुर्ख हो गया, 'क्या यह इतना स्पष्ट हो गया है?'

'यह सभी के लिए बहुत स्पष्ट हो चुका है, सेनापति!'

'लेकिन प्रभु, यह अनुचित है।'

'कैसे? क्यों? आप सोचते हैं कि प्रभु राम ने उद्देश्यपूर्ण ढंग से आपको दुखी करने के लिए यह विधि बनाई थी?'

'फिर मेरे पितामह की प्रतिज्ञा...'

'आप पर्याप्त समय तक उसका सम्मान कर चुके। मुझ पर विश्वास करें, उनकी भी यही इच्छा होती।'

पर्वतेश्वर ने दृष्टि नीचे की, निशब्द।

'मैंने उनके एक दिशानिर्देश के बारे में सुना है कि कानून महत्वपूर्ण नहीं होते; महत्वपूर्ण होता है, न्याय। यदि न्याय का उद्देश्य कानून तोड़ने से पूर्ण होता है तो उसे तोड़ दें।'

'प्रभु राम ने ऐसा कहा था?' आश्चर्य से पर्वतेश्वर ने पूछा।

'मुझे विश्वास है कि उन्होंने ऐसा कहा होगा,' शिव मुस्कुराया,'वे अपने अनुयायियों को कभी दुखी नहीं देखना चाहते थे। आप आनंदमयी के साथ रहकर किसी अन्य को हानि नहीं पहुंचा रहे। आपके पितामह के आरंभ किए विरोध को आप कोई हानि नहीं पहुंचा रहे। आपने उस उद्देश्य की पर्याप्त पूर्ति कर ली। अब आप अपने हृदय को किसी अन्य उद्देश्य की पूर्ति करने दें।'

'क्या आप निश्चित तौर पर ऐसा कह सकते हैं, प्रभु।'

'मैं इतना निश्चित तो किसी अन्य वस्तु के लिए कभी नहीं हुआ। प्रभु श्री राम के नाम पर उसके पास जाएं!'

शिव ने पर्वतेश्वर की पीठ पर जोर से एक मुक्का दे मारा।

पर्वतेश्वर इस वारे में लंवे समय से सोच ही रहा था। शिव के शब्द उसके बिखरते साहस को एकत्र करने में सहायक हुए। उसने शिव को सैनिक अभिवादन किया और मुड़ गया। वह व्यक्ति एक विशेष कार्य करने जा रहा था। वह दावं लगाने को तैयार।

— ⅄ⵀⵡⵜⵙ —

आनंदमयी जहाज के जंगले से टिकी ठंडी हवा का आनंद ले रही थी।

'राजकुमारी जी?'

आनंदमयी अपने स्थान पर ही घूम गई और पर्वतेश्वर को वहां देख आश्चर्यचकित रह गई, जो लज्जित सा खड़ा था। अयोध्या की राजकुमारी कुछ वोलने ही वाली थी कि पर्वतेश्वर ने स्वयं को सुधारा।

'मेरा आशय है आनंदमयी,' पर्वतेश्वर फुसफुसाया।

आनंदमयी आश्चर्यचकित सी ज्यों की त्यों खड़ी रह गई।

'हां सेनापति? आपको कुछ चाहिए?' आनंदमयी ने पूछा। उसका हृदय तेजी से धड़क रहा था।

'अ ऽ ऽ म... आनंदमयी... मैं सोच रहा था...'

'हां?'

'ऐसा है कि, यह इस तरह से है... यह जिसके वारे में हम लोग वातें कर रहे थे...'

आनंदमयी उत्तेजित हो उठी। हृदय की गहराई से मुस्कुराई, 'हां सेनापति।'

'अ ऽ ऽ म... मैंने कभी सोचा नहीं था कि कोई ऐसा दिन भी आएगा। तो... अ ऽ ऽ म...'

आनंदमयी ने सिर हिलाया। वह चुप थी, पर्वतेश्वर को पूरा समय दे रही थी। वह समझ चुकी थी कि पर्वतेश्वर क्या कहना चाहते हैं। लेकिन वह भलीभांति जानती थी कि मेलूहा के सेनापति के लिए वैसा कुछ भी कहना बहुत ही कठिन था।

'मेरी प्रतिज्ञा और सूर्यवंशी कानून मेरे जीवन की आधारशिला रहे हैं,' पर्वतेश्वर ने कहा, 'निर्विवाद एवं अपरिवर्तनीय। मेरा प्रारब्ध, मेरे जीवन का लक्ष्य एवं उसमें मेरी भूमिका अब तक स्पष्ट रूप से परिभाषित रही है। यह पूर्वअनुमान दिलासा देता है, बल्कि दिलासा देता रहा है, विगत कई दशकों से।'

आनंदमयी ने सिर हिलाया। वह चुप थी।

'लेकिन,' पर्वतेश्वर ने कहा, 'पिछले कुछ वर्षों से मेरा जीवन पूरी तरह बदल गया है। सबसे पहले प्रभु आए, एक ऐसा व्यक्ति जिनकी ओर मैं आशा भरी दृष्टि से देख सकता था। एक ऐसे व्यक्ति जो कानूनों से परे हैं। मैंने सोचा, यह मेरे जीवन का सबसे बड़ा परिवर्तन होगा जिसे मेरे सरल हृदय को वलात् झेलना पड़ा था।'

आनंदमयी लगातार अपनी सम्मति जता रही थी। वह त्योरी चढ़ाने या हंसने से बचने का पूरा प्रयास कर रही थी। इस गर्वीले व्यक्ति को अपना दिल खोलते देख वह द्रवित हुई। उसने तो सोचा था कि यह इतिहास में प्रेमालाप का सबसे भावहीन प्रयास होने वाला था। लेकिन वह यह समझने के लिए पर्याप्त बुद्धिमती थी कि उसके पर्वा को अपने हिस्से के बोल बोलने ही थे। अन्यथा वह अपने जीवन में या जो जीवन आशानुरूप वह उसके साथ बिताने वाला था, उसमें कभी सहज ना रह पाता।

'लेकिन उसके बाद... अकस्मात ही एक ऐसी स्त्री मिली मैं जिससे मित्रता कर सकता था, जिसकी प्रशंसा कर सकता था और जिससे प्रेम कर सकता था। मैं एक ऐसे चौराहे पर पहुंच चुका हूं, जहां से मेरा लक्ष्य धुंधला गया है। मैं नहीं जानता कि मेरे जीवन में क्या होने वाला है। आगे का मार्ग नितांत अस्पष्ट है। लेकिन आश्चर्य है कि ऐसे में भी मैं प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूं। बहुत प्रसन्न, जब तक कि तुम इस मार्ग पर मेरे साथ चलती रहोगी...'

आनंदमयी मूक बनी रही। वह मुस्कुरा रही थी। उसकी आंखों में प्रसन्नता के आंसू छलछला रहे थे। आखिरकार उसने वह कह ही दिया।

'यह निश्चित ही एक अत्यंत आनंददायक यात्रा होगी।'

आनंदमयी आगे की ओर झुकी और उसने पर्वतेश्वर को कसकर चूम लिया। एक गहरा, कामुक चुंबन। पर्वतेश्वर ठगा सा खड़ा रह गया। उसकी बाहें लटकी रह गईं। वह उस अकल्पनीय आनंद को ग्रहण करने का प्रयास कर रहा था। मानो एक युग बीता और आनंदमयी पीछे हट गई। उसकी आंखें कामुकता में अधखुली उसे घूर रही थीं। पर्वतेश्वर लड़खड़ाया। उसका मुंह भी अधखुला था। वह यह भी तय नहीं कर पा रहा था कि कैसी या किस प्रकार से प्रतिक्रिया दी जाए।

'प्रभु राम कृपा करें,' सेनापति फुसफुसाया।

आनंदमयी पर्वतेश्वर के निकट आ पहुंची और उसने अपने हाथ उसके चेहरे पर फेरते हुए कहा, 'आपको पता नहीं कि अब तक आप किस सुख से अछूते रहे हैं।'

पर्वतेश्वर उसे हैरानी से घूर रहा था। वह पूरी तरह से हक्का-बक्का था।

आनंदमयी ने पर्वतेश्वर का हाथ पकड़ा और उसे अपनी ओर खींच लिया, 'मेरे साथ आएं।'

उस बब्बर शेर के साथ संघर्ष के बाद एक सप्ताह का समय बीत चुका था। बची हुई शेरनियां और बब्बर शेर दुबारा नहीं आए। वे अब भी अपने घावों को चाट रहे थे। इच्छावड़ के ग्रामवासी इस शांति के समय का सदुपयोग कर अगले फसल की तैयारी में जुट गए। यह समय प्रसन्नता और राहत का था।

चंद्रवंशी सैनिक स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे। गणेश का घाव गहरा था। पैर में लगी गंभीर चोट के कारण वह अभी भी लंगड़ाकर चल रहा था। लेकिन वह जानता था कि कुछ ही समय की बात थी और वह पूरी तरह स्वस्थ हो जाएगा। उसे अवश्यंभाव्य के लिए तैयारी करनी थी।

'मां,' गणेश फुसफुसाया।

सती ने खाना पकाते समय व्यंजन को थाली से ढकते हुए गणेश की ओर देखा। पूरे सप्ताह उसने काली से गणेश के बचपन की सारी बातें सुनीं कि वह कैसे अपने दुख और सुख में जीता, उसका व्यक्तित्व और चरित्र कैसा था और उसका पसंदीदा व्यंजन क्या था। जो कुछ भी उसने जाना, उससे वह अपने बेटे की क्षुधा और आत्मा संतृप्त कर रही थी, 'क्या है मेरे लाल?'

गणेश के कहते ही काली निकट आ गई।

'मैं सोचता हूं कि हमें यहां से प्रस्थान करने की तैयारी शुरू कर देनी चाहिए। एक सप्ताह के अंदर मैं यात्रा करने के लिए स्वस्थ हो जाऊंगा।'

'मैं जानती हूं। जो भोजन मैं तुम्हें दे रही हूं उसमें पुनर्जीवनदान देने वाली जड़ी-बूटियां हैं। वे तुम्हें शक्ति दे रही हैं।'

गणेश घुटने के बल झुक गया और उसने अपनी मां का हाथ पकड़ा, 'मैं जानता हूं।'

सती ने अपने पुत्र के चेहरे पर हल्की-सी थपकी दी।

गणेश ने एक गहरी श्वास ली, 'मैं जानता हूं कि आप पंचवटी नहीं चल सकतीं। वह आपको दूषित कर देगा। मैं आपसे मिलने काशी नियमित रूप से आता रहूंगा। मैं छुपकर आऊंगा।'

'तुम यह क्या कह रहे हो?'

'मैंने काशी के सैनिकों को भी जान का भय देकर इसके बारे में कुछ ना कहने की शपथ दिलवा दी है,' गणेश ने उपहास करते हुए कहा, 'वे लोग हम नागाओं से बहुत डरते हैं। वे इस शपथ को भंग करने की हिम्मत नहीं करेंगे! आपके साथ जो मेरे संबंध का रहस्य है, वह कभी भी बाहर नहीं आएगा।'

'गणेश, प्रभु राम के नाम पर तुम ये कैसी बातें कर रहे हो?'

'मैं आपको शर्मिंदा नहीं करूंगा। आपका मुझे स्वीकार करना ही मेरी आत्मा के लिए पर्याप्त है।'

'तुम मुझे कैसे शर्मिंदा कर सकते हो? तुम मेरा गर्व हो, मेरी प्रसन्नता हो।'

'मां...' गणेश मुस्कुराया।

सती ने अपने पुत्र के चेहरे को अपने हाथों में ले लिया, 'तुम कहीं नहीं जा रहे हो।'

गणेश ने अपनी त्योरी चढ़ा ली।

'तुम मेरे साथ ही रहोगे।'

'मां!' गणेश ने भयभीत होकर कहा।

'मैं आपके साथ कैसे रह सकता हूं? आपका समाज क्या कहेगा?'

'मैं परवाह नहीं करती।'

'लेकिन आपका पति...'

'वे तुम्हारे पिता हैं,' सती ने कड़ाई से कहा, 'उनके बारे में सम्मान से बात करो।'

'मेरा उनका अपमान करने का इरादा नहीं था, मां। लेकिन वे मुझे स्वीकार नहीं करेंगे। आप इस बात को अच्छी तरह से जानती हैं। मैं एक नागा हूं।'

'तुम मेरे बेटे हो। तुम उनके भी बेटे हो। वे तुम्हें स्वीकार करेंगे। तुम अपने पिता के हृदय को नहीं जानते हो। समस्त संसार उसमें समा सकता है।'

'लेकिन सती...,' काली ने बीच में बोलने की कोशिश की।

'कोई विवाद नहीं काली,' सती ने कहा, 'तुम दोनों काशी चल रहे हो। जब तुम ठीक हो जाओगे तो हम रवाना होंगे।'

काली ने सती को घूरकर देखा। उसके पास शब्द नहीं थे।

'तुम मेरी बहन हो। मैं इसकी परवाह नहीं करती कि समाज क्या कहेगा। यदि वे मुझे स्वीकार करते हैं तो वे तुम्हें भी स्वीकार करेंगे। यदि वे तुम्हें अस्वीकार करते हैं तो मैं भी यह समाज छोड़ दूंगी।'

काली धीमे से मुस्कुराई। उसकी आंखें भर आई थीं, 'तुम्हारे बारे में मैं बहुत गलत थी, दीदी।'

यह पहला अवसर था जब काली ने अपनी बड़ी बहन सती को दीदी कहा था। सती मुस्कुराई और उसने काली को गले लगा लिया।

अध्याय 17

प्रतिष्ठा का शाप

मधुमती के युद्ध को समाप्त हुए दस दिन बीत चुके थे। पहले एक-दूसरे के शत्रु रहे अब मित्र हो चुके सूर्यवंशियों एवं परशुराम के आदमियों को लेकर जा रहा जहाज लंगर डाले हुआ था, जहां मधुमती ब्रंगा नदी से निकलकर अलग हो जाती थी। वे लोग अपने साथियों की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो ब्रंगरिदाई से नदी मार्ग से उनसे मिलने आ रहे थे।

एक ब्रंगा पंडित को पर्वतेश्वर एवं आनंदमयी का विवाह करवाने के लिए जहाज पर बुलवा लिया गया था। भगीरथ चाहता था कि अयोध्या पहुंचने तक प्रतीक्षा की जाए ताकि वह अपनी बहन के विवाह का आयोजन एक राजकुमारी की भांति भव्यता के साथ कर सके, लेकिन आनंदमयी इस बात के लिए तैयार नहीं थी। वह यह अवसर गंवाना नहीं चाहती थी। पर्वतेश्वर ने हां कहने में ही इतनी देर लगा दी थी और वह चाहती थी कि जितनी जल्दी हो सके उनका संबंध सुदृढ़ हो जाए। जैसे ही शिव ने नव-दंपत्ति को आशीर्वाद दिया तो जल्दीबाजी को लेकर होने वाले सभी तर्क-वितर्क समाप्त हो गए।

शिव जहाज के जंगले के पास वीरभद्र के साथ चिलम से कश लगा रहा था।

'प्रभु!'

शिव पीछे मुड़ गया।

'हे पवित्र झील! तुम यहां क्या कर रहे हो, परशुराम?' भयभीत शिव ने पूछा, 'तुम्हें तो विश्राम करना चाहिए।'

'मैं ऊब गया था, प्रभु।'

'लेकिन तुम तो कल भी विवाह के लिए लंबे समय तक जागे हुए थे। दो दिनों की वे गतिविधियां तुम्हारे लिए बहुत थकाऊ रही होंगीं। आयुर्वती का क्या कहना है?'

'मैं कुछ ही देर में चला जाऊंगा, प्रभु,' परशुराम ने कहा, 'मुझे कुछ देर के लिए अपने निकट खड़ा रहने दें। इससे मुझे शांति मिलती है।'

शिव ने अपनी भौंहें चढ़ाईं, 'मैं कोई विशेष नहीं हूं। यह बस तुम्हारे मन में है।'

'मैं असहमत हूं, प्रभु। लेकिन यदि यह सत्य है तो भी आप मुझे अपने हृदय का कहा मानने दें।'

शिव ठठाकर हंस पड़ा, 'तुम बातें तो बड़ी अच्छी बनाते हो,

एक...'

शिव अचानक ही रुक गया।

'एक दस्यु होकर भी,' परशुराम बनावटी हंसी हंसा।

'मेरा आशय अनादर करने का नहीं था। क्षमा करना।'

'आपको क्षमा मांगने की कोई आवश्यकता नहीं है, प्रभु। यह सच है। मैं एक डाकू था।'

इस विचित्र डाकू की बातों में वीरभद्र की रुचि लगातार बढ़ती जा रही थी। बुद्धिमान, परेशान और शिव की भक्ति में उग्र रूप से तल्लीन। उसने विषय बदलते हुए कहा, 'सेनापति पर्वतेश्वर एवं आनंदमयी के विवाह से आप बहुत प्रसन्न थे। मुझे वह बहुत रुचिकर लगा।'

'ऐसा है कि वे दोनों एक-दूसरे से नितांत उलट हैं,' परशुराम ने कहा, 'व्यक्तित्व में, सोच में, आस्था एवं तर्क में। वास्तव में, लगभग सभी चीजों में। वे तो दो विपरीत ध्रुव हैं। दोनों ही सूर्यवंशी एवं चंद्रवंशी विचारों के चरम बिंदु हैं। परंपरागत रूप में उन्हें एक-दूसरे का शत्रु

होना चाहिए था। परंतु वे एक-दूसरे के प्रेम में लिप्त हो गए। मैं ऐसी कथाएं पसंद करता हूं। ये मुझे मेरे माता-पिता का स्मरण कराते हैं।'

शिव ने त्योरी चढ़ा ली। उसने वह भयानक अफवाह सुनी हुई थी कि परशुराम ने अपनी मां का सिर धड़ से अलग कर दिया था,'तुम्हारे माता-पिता?'

'जी हां, प्रभु। मेरे पिता, जमदग्नि, एक ब्राह्मण विद्वान थे। मेरी मां, रेणुका, क्षत्रिय कुल की थी। शासक जो ब्रंगों के दास थे।'

'तो फिर उनमें विवाह कैसे हुआ?' शिव मुस्कुराया।

'मेरी मां के कारण,' परशुराम मुस्कुराया, 'वह बहुत ही दृढ़ चरित्र की स्त्री थी। मेरे माता-पिता में प्रेम था। लेकिन यह मेरी मां के चरित्र और निष्ठा का बल था जिसने उनके प्रेम को एक तर्कयुक्त निष्कर्ष तक पहुंचाया।'

शिव मुस्कुराया।

'वह उनके गुरुकुल में कार्य करती थी, जो उनके कुल की मर्यादा के भी विरुद्ध था।'

'विद्यालय में कार्य करना कैसे विद्रोह है?'

'क्योंकि उनके कुल में स्त्री का बाहर जाना और कार्य करना प्रतिबंधित था।'

'वे कार्य नहीं कर सकती थीं? क्यों? मैं कुछ जातियों के बारे में जानता हूं, जिनके ऐसे नियम हैं कि उनकी स्त्रियां युद्ध के मैदान में प्रभावी नहीं हो सकतीं। यहां तक कि गुणवालों में भी ऐसा नियम था। लेकिन साधारण कार्य के बारे में ऐसा नियम क्यों?'

'क्योंकि इस ब्रह्मांड में सर्वथा मूर्खों में से एक मेरी मां का कुल था,' परशुराम ने कहा, 'मेरी मां के लोगों का मानना था कि स्त्रियों को घर पर ही रहना चाहिए। उन्हें किसी अपरिचित व्यक्ति से नहीं मिलना चाहिए।'

'क्या बकवास है!' शिव ने कहा।

'बिल्कुल सच। चाहे जो भी हुआ हो, जैसा मैंने बताया कि मेरी मां हठी थी, साथ ही अपने पिता की दुलारी भी। इस प्रकार उसने मेरे पिता के गुरुकुल में कार्य करने के लिए अपने पिता को मना लिया था।'

शिव मुस्कुराया।

'निस्संदेह, मेरी मां के मन में कुछ और ही था,' परशुराम ने कहा, 'वह प्रेम में पागल थी। उसे मेरे पिता को मनवाने के लिए समय चाहिए था कि वे अपनी प्रतिज्ञा छोड़ उससे विवाह कर लें।'

'प्रतिज्ञा को छोड़ दें?'

'मेरे पिता वासुदेव ब्राह्मण थे। और एक वासुदेव ब्राह्मण विवाह नहीं कर सकता था। अन्य जातियों के वासुदेव विवाह कर सकते थे, लेकिन ब्राह्मण नहीं।'

'ब्राह्मण के अलावा अन्य जाति के वासुदेव भी होते हैं?'

'निस्संदेह। लेकिन ब्राह्मण ही समुदाय को चलाते हैं। वासुदेव के उद्देश्यों के प्रति सचाई सुनिश्चित करने के लिए उन्हें धन, प्रेम, परिवार आदि जैसे सांसारिक बंधनों को त्यागना पड़ता है। इसलिए उनकी एकमात्र प्रतिज्ञा होती है, आजीवन ब्रह्मचर्य।'

शिव ने अपनी त्योरी चढ़ा ली। *भारतीयों के बीच में सांसारिक आसक्तियों को छोड़ने का यह कैसा पागलपन है? पवित्र झील के नाम पर, यह कैसे सुनिश्चित हो सकता है कि कोई इसके कारण एक बेहतर व्यक्ति बन जाएगा?*

'इस प्रकार,' परशुराम ने कहना जारी रखा। उसकी आंखों के नीचे सिलवटें पड़ गईं, 'मेरी मां ने अंततः मेरे पिता को नियम तोड़ने के लिए मना ही लिया। वे भी मेरी मां से प्रेम करते थे, लेकिन मेरी मां ने अपने साथ जीवन बिताने के लिए उन्हें वासुदेव के नियमों को भंग करने का साहस प्रदान किया। यही नहीं, मां ने अपने इस संबंध को आशीर्वाद देने के लिए अपने पिता को भी मना लिया। जैसाकि मैंने पहले ही बताया था, उन्होंने जो कुछ चाहा उसे प्राप्त करके दिखा दिया। मेरे माता-पिता का विवाह हुआ और उनके पांच पुत्र हुए। मैं सबसे छोटा था।'

शिव ने परशुराम की ओर देखा, 'सच, तुम्हें अपनी माता पर गर्व है, है ना?'

'आपने बिल्कुल सही कहा, प्रभु। वह एक संपूर्ण स्त्री थीं!'

'तो फिर तुमने क्यों...'

शिव बोलते-बोलते बीच में ही रुक गया। *मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था।*

परशुराम गंभीर हो गया, 'मैंने उसका... सिर क्यों काट दिया?'

'तुम्हें उस संदर्भ में कुछ बोलने की आवश्यकता नहीं। मैं उस पीड़ा की कल्पना भी नहीं कर सकता।'

परशुराम ने एक गहरी श्वास भरी और बेचैन सा जहाज की छत पर बैठ गया। शिव झुककर पंजों के बल बैठ गया और परशुराम के कंधे को स्पर्श किया। वीरभद्र खड़ा रहा और परशुराम की दर्दभरी आंखों में सीधा देखता रहा।

'तुम्हें कुछ बताने की आवश्यकता नहीं है, परशुराम,' शिव ने कहा।

अपना दाहिना हाथ हृदय पर रखते हुए परशुराम ने अपनी आंखें बंद कर लीं। वह *प्रभु रुद्र को सिर नवाकर* लगातार मंत्रोच्चार कर रहा था। *ओऽम रुद्राय नमः। ओऽम रुद्राय नमः।*

शिव ने उस ब्राह्मण योद्धा को शांति से देखा।

'मैंने इसके बारे में आज तक किसी को नहीं बताया है, प्रभु,' परशुराम ने कहा, 'यह वह चिंगारी थी जिसने मुझे यह मार्ग चुनने के लिए विवश किया।'

शिव ने अपना हाथ बढ़ाकर परशुराम के कंधे को स्पर्श किया।

'लेकिन, मुझे आपको अवश्य बताना चाहिए। यदि कोई ऐसा व्यक्ति है जो मेरा उद्धार कर सकता है, तो वे आप हैं। मैंने अपनी शिक्षा तभी पूरी की थी और अपने पिता के समान ही वासुदेव बनने का इच्छुक था। वे ऐसा नहीं चाहते थे। वे अपने किसी भी पुत्र को वासुदेव नहीं बनना चाहते थे। जब उन्होंने मेरी माता के साथ विवाह का चयन किया तो उन्हें जाति से बहिष्कृत कर दिया गया था। वे नहीं चाहते थे कि हमारे साथ भी कुछ ऐसा हो।'

वीरभद्र भी अब बैठ गया था। वह भी परशुराम की कहानी में रम गया था।

'लेकिन मुझमें मेरी मां की दृढ़ता थी। मेरे भाइयों से भिन्न, मैं दृढ़ निश्चयी था। मैंने सोचा कि मैं एक क्षत्रिय रहकर वासुदेव बनूंगा ताकि इस प्रकार के सांसारिक बंधन मुझ पर लागू नहीं होंगे। मैंने एक योद्धा की भांति प्रशिक्षण प्राप्त किया। मेरे पिता ने वासुदेव की राजधानी उज्जैन में कुछ वरिष्ठ लोगों को एक पत्र लिखा। कई लोग ऐसे थे जिनकी सहानुभूति मेरे पिता के साथ थी। पिता ने उनसे निवेदन किया कि मुझे स्वीकार किया जाए। जब वे माने तो मैं एक निकटतम वासुदेव मंदिर में परीक्षा देने के लिए गया।'

इसका इसकी मां से क्या लेना-देना था?

'जब मैं निकला तो मुझे मालूम नहीं था कि मेरे नानाजी का निधन हो चुका था। वही एकमात्र थे जिन्होंने मेरी मां के उस परिवार के बर्बर समूह को रोका हुआ था। जैसे ही उनका प्रभाव समाप्त हुआ तो उन लोगों ने वह निर्णय लिया जो वे सदैव से लेना चाहते थे। प्रतिष्ठा हेतु हत्या।'

'प्रतिष्ठा हेतु हत्या?'

परशुराम ने शिव की ओर देखा। 'जब कुल में लोग ऐसा विश्वास कर लेते हैं कि उनके समुदाय में एक स्त्री ने उनके परिवार की प्रतिष्ठा को हानि पहुंचाई तो उस कुल को अपने इस अपमान के लिए उस स्त्री एवं उसके परिवार के लोगों का वध करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है।'

शिव ने एकटक देखा। वह हैरान था।

इस बर्बरता में कैसी प्रतिष्ठा हो सकती है?

'मेरे मां के परिवार के पुरुषों ने, उनके अपने भाइयों और चाचाओं ने, मेरे पिता के गुरुकुल पर हमला कर दिया।'

परशुराम ने बोलना बंद कर दिया। बहुत ही लंबे समय से रोके आंसू उसकी आंखों से झर-झर बह निकले।

'उन्होंने...' परशुराम ने अपनी श्वास रोकी और उसके बाद बोलने की ताकत जुटाई, 'उन्होंने मेरे भाइयों को और मेरे पिता के सभी शिष्यों को मार डाला। उन्होंने मेरी मां को एक पेड़ से बांध दिया और मेरे पिता को दिनभर प्रताड़ित करते रहे। ऐसी प्रताड़ना कि उनके बारे में बोला भी नहीं जा सकता है। उन्होंने मेरी मां को यह सब देखने के लिए विवश किया। और उसके बाद उनका सिर धड़ से अलग कर दिया।'

इस प्रकार के पागलपन और उस निर्दयता की कल्पना करके ही वीरभद्र को छटपटाहट हो रही थी।

'लेकिन उन्होंने मेरी मां का वध नहीं किया। उन्होंने उससे कहा कि वे उन्हें जीवित रखना चाहते थे ताकि उसे वह दिन बार-बार जीना पड़े। उसे एक उदाहरण बनकर जीना था ताकि फिर कोई भी स्त्री उनके परिवार को अपमानित करने की हिम्मत ना जुटा सके। मैं वापस पहुंचा तो देखा कि मेरे पिता का गुरुकुल नष्ट हो चुका था। मेरी मां मेरे पिता का सिर अपनी गोद में लिए घर के बाहर बैठी हुई थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसकी आत्मा को जीवित ही आग में जला दिया गया था। उसकी आंखें चौड़ी खुली हुई थीं। वह स्त्री जिस तरह की हिम्मतवाली थी, उसे पूरी तरह से छिन्न-भिन्न कर दिया गया था। निर्दयता से उसे जीवित ही लाश बना दिया गया था।'

परशुराम ने बोलना बंद कर दिया और नदी की ओर देखने लगा। उस भयावह दिन के बाद आज पहली बार वह अपनी मां के बारे में बातें कर रहा था। 'उसने मुझे ऐसे देखा जैसे कि मैं कोई अपरिचित व्यक्ति हूं। और उसके बाद उसने जो शब्द बोले, वे मुझे जीवन भर सताते रहे हैं। उसने कहा थाः "तुम्हारे पिता की मृत्यु मेरे कारण हुई है। यह मेरा ही पाप है। मैं भी उन्हीं की तरह मरना चाहती हूं।"'

शिव का मुंह हैरानी से खुला का खुला रह गया। उसका हृदय उस अभागे ब्राह्मण के लिए पिघल गया।

'पहले मैं कुछ समझ नहीं सका। और उसके बाद उसने आदेश दियाः "मेरा सिर धड़ से अलग कर दो!" मैं नहीं जानता था कि मुझे क्या करना चाहिए। मैं झिझका। उसके बाद उसने एक बार फिर से कहाः "मैं तुम्हारी मां हूं। मैं तुम्हें आदेश देती हूं कि मेरा सिर धड़ से अलग कर दो।"'

शिव ने परशुराम के कंधे को दबाया।

'मेरे पास विकल्प नहीं था। मेरी मां अपना मानसिक संतुलन खो बैठी थी। मेरे पिता के प्रेम के बिना वह एक खाली कवच समान थी और कुछ नहीं। जैसे ही मैंने उसके आदेश का पालन करने के लिए कुल्हाड़ी उठाई तो उसने सीधा मेरी आंखों में देखाः "अपने पिता का प्रतिशोध लो। ईश्वर की रचनाओं में वे सर्वश्रेष्ठ थे। उनका प्रतिशोध लो। उनमें से प्रत्येक का वध कर दो! प्रत्येक का!"'

परशुराम चुप हो गया। शिव एवं वीरभद्र इतने हैरान थे कि कोई प्रतिक्रिया देने की स्थिति में ही नहीं थे। नीरवता छा गई। एकमात्र ध्वनि जहाज से टकराते निद्रालु मधुमती के पानी की लहरों की थी।

'मैंने वही किया जो उसने कहा था। मैंने उसके सिर को धड़ से अलग कर दिया,' परशुराम ने एक गहरी श्वास लेते हुए और अपने आंसू पोंछते हुए कहा। उसके बाद उसे यादकर क्रोध में दांत पीसते हुए उसने कहा, 'उसके बाद मैंने उन सभी हरामियों को खोज-खोज कर मार डाला। मैंने उनमें से प्रत्येक के सिर को धड़ से अलग कर दिया। एक-एक के सिर को काट डाला। वासुदेवों ने मुझे निष्कासित कर दिया। उन्होंने कहा कि मैंने उनके कुल की अनुमति के बिना ही लोगों के वध कर डाले थे। उन्होंने कहा कि मैंने गलत किया था। क्या मैंने गलत किया था, प्रभु?'

शिव ने सीधा परशुराम की आंखों में देखा। उसका दिल भारी था। वह उस ब्राह्मण के संताप को अनुभव कर रहा था। वह जानता था कि प्रभु राम ठीक वैसी प्रतिक्रिया करते जैसी वासुदेव ने की। महान सूर्यवंशी अपराधियों को उचित दंड प्रक्रिया के अनुसार विचार करने के उपरांत ही दंडित करने का पक्ष लेते। लेकिन वह यह भी जानता था कि यदि किसी ने उसके अपने परिवार के साथ ऐसा करने की हिम्मत की होती तो वह उनके पूरे संसार को भस्म कर देता,'नहीं। तुमने कुछ भी गलत नहीं किया। तुमने जो किया वह न्याय था।'

परशुराम ने गहरी श्वास छोड़ी और उसके आंसुओं का वेग टूट गया।

जो मैंने किया था, वह न्याय था।

शिव ने परशुराम के कंधे को सहारा दिया हुआ था। परशुराम अपने हाथों से अपना मुंह ढके हुए था। वह सिसक-सिसककर रो रहा था। बहुत देर के बाद अंततः उसने अपना सिर हल्के से हिलाया और ऊपर की ओर देखा, 'इसके बाद ब्रंगा राजा ने क्षत्रियों के अनेक दलों को

मुझे वंदी वनाने के लिए भेजा। वे मुझे अपने पसंदीदा जागीरदारों को मारने के अपराध के लिए दंड देना चाहते थे। उन्होंने इक्कीस बार मुझे पकड़ने के लिए इन दलों को भेजा और इक्कीस वार मैंने उन्हें पराजित किया। उसके बाद वे रुक गए।'

'लेकिन तुमने व्रंगाओं से अकेले कैसे युद्ध किया?' वीरभद्र ने पूछा।

'मैं अकेला नहीं था। कुछ देवदूतों को यह पता था कि मैं किस अन्याय से गुजरा था। उन्होंने मुझे इस स्वर्ग में पहुंचा दिया। उन्होंने मुझे कुछ दुर्भाग्यशाली, वहिष्कृत दस्युओं से मिला दिया जो यहां पहले से ही रहते थे। मैंने अपनी सेना का निर्माण किया। उन्होंने मुझे औषधि दी ताकि मैं अस्वच्छ पानी एवं भोजन के वावजूद तव तक जीवित रहूं जब तक कि मैं अपने लोगों को जंगल में स्थापित ना कर लूं। उन्होंने मुझे लड़ाई करने के लिए हथियार उपलब्ध कराए। और विना मुझसे कोई आशा किए उन्होंने ये सब किया। व्रंगरिदाई से युद्ध को समाप्त कर दिया गया क्योंकि अंततः उन्होंने व्रंगा राजा को धमकी दी। और चंद्रकेतु उन्हें इंकार नहीं कर सकते थे। वे हममें से सबसे अच्छे लोग हैं। ऐसे देवदूत जो उत्पीड़ितों के लिए संघर्ष करते हैं।'

शिव ने त्योरी चढ़ाई, 'कौन?'

'नागा लोग,' परशुराम ने उत्तर दिया।

'क्या?!'

'जी हां, प्रभु। इसी कारण आप उनकी खोज कर रहे हैं, है ना?

यदि आपको वुराई का पता करना है तो आपको अच्छाई से मित्रता करनी पड़ेगी, है ना प्रभु?'

'यह तुम कैसी वातें कर रहे हो?'

'वे किसी भी निर्दोष की हत्या नहीं करते। अपने प्रति हुए अन्यायों का सामना करते हुए भी वे न्याय के लिए संघर्ष करते हैं। जहां भी और जैसे भी संभव हो वे उत्पीड़ितों की सहायता करते हैं। वे सच में ही हम सब में श्रेष्ठ हैं।'

शिव ने विना कुछ वोले, पूरी तरह से विचलित होकर परशुराम को गहरी दृष्टि से देखा।

'आप उनके रहस्य को जानना चाहते हैं, है ना?' परशुराम ने पूछा।

'क्या रहस्य?'

'मैं नहीं जानता। लेकिन मैंने सुना है कि नागाओं का रहस्य बुराई से गहरा संबंध रखता है। क्या यह वही कारण नहीं है, जिसके लिए आप उनकी खोज कर रहे हैं?'

शिव ने उत्तर नहीं दिया। वह क्षितिज की ओर देख रहा था और गहरी सोच में डूब गया था।

— ⅄Ⓘ𐌵⅌⊛ —

उस वव्वर शेर के झुंड के साथ हुए संघर्ष को दो सप्ताह हो चुके थे। सभी घायल सैनिक स्वस्थ होने लगे थे। लेकिन गणेश के पैर का घाव अभी भी पूरी तरह से भरा नहीं था।

सती इच्छावड़ गांव की परिधि में भविष्य में होने वाले पशुओं के हमले से बचाव के लिए बनाए जा रहे बाड़े के निर्माण का पर्यवेक्षण कर रही थीं। वह शिविर में वापस आई तो देखा कि काली गणेश के घाव की पट्टी को बदल रही थी।

काली और गणेश दोनों ही संभवतया सती की उनके स्वरूप की स्वीकृति से प्रोत्साहित होकर पिछले दो सप्ताह से मुखौटा नहीं पहन रहे थे। हालांकि चंद्रवंशी सैनिक अभी भी उनसे दृष्टि मिलाने में घवराते थे।

काली ने नीम की पट्टी वांधकर अपना काम समाप्त कर दिया। उसने गणेश के सिर पर थपकी दी और जलती हुई आग की ओर वढ़ गई। सती उसका अर्थ समझ मुस्कुराई। वह कावस की ओर मुड़ी और उसे काम को चालू रखने का आदेश दिया। उसके वाद वह काली के पास गई।

'घाव कैसा है?'

'एक सप्ताह और लगेगा, दीदी। पिछले सप्ताह से घाव का भरना कम हो गया है।'

सती ने अप्रसन्नता से मुंह विचकाया, 'वेचारे वच्चे ने वहुत रक्त वहाया है।'

'चिंता मत करो, दीदी,' काली ने कहा, 'वह वहुत ताकतवर है। वह जल्दी ही ठीक हो जाएगा।'

सती मुस्कुराई। काली ने पट्टी को आग में फेंक दिया। जो लेप पट्टी पर लगा था उसने वहुत संक्रमण सोख लिया था, इसलिए जलते हुए नीली पड़ गई।

सती ने काली की ओर देखा और एक गहरी श्वास लेते हुए पूछा कि जव से वे मिले थे तो वह परेशान लग रही थी।

'क्यों?' काली ने त्योरी चढ़ा ली।

'तुम लोग अच्छे लोग हो। मैंने देखा है कि तुम कैसे गणेश और अपने आदमियों की देखभाल करती हो—कठोर लेकिन पक्षपात रहित। तो फिर तुम लोगों ने ऐसे भयानक कार्य क्यों किए?'

काली ने अपनी श्वास कुछ क्षण के लिए रोकी। उसने आकाश की ओर ऊपर देखा और फिर अपना सिर हिलाया, 'एक वार फिर से सोचो दीदी। हमने कुछ भी गलत नहीं किया है।'

'काली, हो सकता है कि तुमने और गणेश ने निजी रूप से कुछ गलत ना किया हो, लेकिन तुम्हारे लोगों ने गंभीर अपराध किए हैं। उन्होंने निर्दोपों की जानें ली हैं।'

'मेरे लोग मेरे आदेश के अनुसार काम करते हैं, दीदी। यदि तुम उन लोगों को दोप देती हो तो तुम मुझे भी निरपराध नहीं वता सकतीं। एक वार फिर सोचो। किसी भी हमले में कोई भी निर्दोप नहीं मारा गया है।'

'मुझे क्षमा करना, काली, लेकिन यह सत्य नहीं है। तुम लोगों ने निहत्थों पर भी आक्रमण किए हैं। मैं वहुत लंवे समय से यह सोच रही हूं। मैं इस वात को मानती हूं कि नागाओं के साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार हुआ है। जिस प्रकार से मेलूहा एक नागा शिशु के साथ व्यवहार करता है वह अन्यायपूर्ण है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि प्रत्येक मेलूहावासी जिसने तुम्हारे साथ कोई अन्याय नहीं किया है, वह भी तुम्हारा शत्रु है।'

'दीदी क्या आपका मानना है कि हम लोग उन पर हमला केवल इसलिए करेंगे क्योंकि वे एक ऐसी व्यवस्था के हिस्सा हैं जिसने हमें अपमानित और चोटिल किया है? यह गलत है। हमने किसी ऐसे व्यक्ति पर हमला नहीं किया, जिसने हमें सीधे तौर पर हानि ना पहुंचाई हो।'

'नहीं, तुमने किया है। तुम लोगों ने मंदिरों पर आक्रमण किए हैं। निर्दोषों की जानें लीं हैं। वेधनीय ब्राह्मणों को भी तुम लोगों ने मारा है।'

'नहीं। हमने प्रत्येक हमले में मंदिर के ब्राह्मणों को छोड़कर सब को भागने का मौका दिया है। सब को। कोई निर्दोष नहीं मारा गया है। कभी नहीं।'

'लेकिन तुमने मंदिर के ब्राह्मणों की हत्याएं की हैं। वे योद्धा नहीं हैं। वे निर्दोष हैं।'

'मैं असहमत हूं।'

'क्यों?'

'क्योंकि वे सीधे तौर पर हमें हानि पहुंचाते हैं।'

'क्या? कैसे? मंदिर के ब्राह्मणों ने तुमलोगों के साथ क्या गलत किया है?'

'मैं वताती हूं।'

— ⸻ —

शिव के जहाजों का काफिला वैशाली पर रुका हुआ था, जो गंगा नदी पर बसा ब्रंगा राज्य का एक सुंदर पड़ोसी नगर था। परशुराम से

मित्रता करके शिव को तीन सप्ताह का समय बीत चुका था। वैशाली में एक विशालकाय विष्णु मंदिर था जो विख्यात मत्स्य देवता को समर्पित था। परशुराम ने नागाओं के बारे में जो कुछ भी कहा था, उससे शिव बहुत परेशान था। वह किसी वासुदेव से बात करना चाहता था जो उस बहिष्कृत ब्राह्मण-क्षत्रिय वासुदेव से भिन्न हो। समय और स्थान ने उस जाति के विरुद्ध उसके क्रोध को मलिन कर दिया था।

नगर के पत्तन से वह मंदिर बहुत निकट था। वहां राजा सहित विशाल जनसमूह शिव के स्वागत के लिए खड़ा था। लेकिन शिव ने निवेदन किया कि वे उनसे बाद में मिलेंगे। वह सीधा मत्स्य मंदिर की ओर बढ़ गया। वह मंदिर सत्तर मीटर से कुछ ही अधिक ऊंचा था, जो वासुदेवों के रेडियो तरंगों को प्रसारित करने के लिए पर्याप्त होता है।

वह मंदिर गंगा के तट पर निर्मित था। सामान्यतया मंदिरों में बाहर की ओर मैदान हुआ करते थे जिनमें उद्यान एवं प्रांगण बनाए जा सकें। यह मंदिर भिन्न था। बाहर का हिस्सा नहरों से भरापूरा था। गंगा का पानी नहरों द्वारा मुख्य मंदिर के चारों ओर प्रवाहित हो रहा था। वे नहरें अलौकिक तरह से निर्मित थीं, जैसा शिव ने पहले कभी नहीं देखा था। वह प्राचीन भारत का एक मानचित्र प्रस्तुत कर रहा था जो उस समय का था जब समुद्र का स्तर काफी नीचे हुआ करता था। यह श्री मनु की कथा का चित्रण करता था कि कैसे उन्होंने संगमतमिल के अपने निवास से अपने अनुयायियों को बाहर निकाला था। वासुदेव से मिलने की अतिशीघ्रता के बावजूद शिव उन सुंदर दृश्यों को देखकर आनंदित हुआ। बहुत देर के बाद उसने अपनी आंखें हटाईं और प्रमुख मंदिर की सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। नीलकंठ के निवेदन के अनुसार भीड़ बाहर ही प्रतीक्षा करने लगी।

शिव ने मंदिर के एक दूर छोर पर गर्भगृह को देखा। वह बहुत बड़ा था। आज तक उसने जितने भी मंदिर देखे थे, वह उन सब मंदिरों से बड़ा था। संभवतया अपने ईश्वर की अत्यधिक विशाल प्रतिमा को रखने के लिए यह आवश्यक था। एक ऊंचे चबूतरे पर प्रभु मत्स्य विराजमान थे--एक विशाल मत्स्य जिन्होंने श्री मनु और उनके अनुचरों को संगमतमिल से एक सुरक्षित स्थान पर पहुंचने में सहायता की थी। वैदिक सभ्यता के संस्थापक मनु ने अपने उत्तराधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया था कि प्रभु मत्स्य को सदैव प्रथम विष्णु के रूप में सम्मान दिया जाएगा और उनकी पूजा की जाएगी।

प्रभु मत्स्य उन डॉल्फिनों की तरह ही लगते हैं, जिन्हें मैंने नदी में देखा था। अंतर बस इतना है कि ये उनसे बहुत विशाल हैं।

शिव झुक गया और उसने प्रभु को सम्मान दिया। उसने जल्दी से पूजा की और एक स्तंभ से सटकर बैठ गया। और उसके बाद मन ही मन में सोचा।

वासुदेव? क्या आप यहां हैं?

किसी ने भी उत्तर नहीं दिया। उस मंदिर से भी कोई उसे देखने नहीं आया।

क्या यहां कोई वासुदेव नहीं?

निःशब्दता छाई रही।

क्या यह वासुदेव मंदिर नहीं है? क्या मैं गलत स्थान पर आ गया हूं?

शिव ने सिवाय मंदिर के प्रांगण में चलते हुए फव्वारे की धीमी खनकती ध्वनि के कुछ भी नहीं सुना।

लानत है!

शिव ने महसूस किया कि संभवतया उसने गलती कर दी थी। वह मंदिर संभवतया वासुदवों का स्थल नहीं था। उसकी सोच उस सुझाव की ओर गई जो सती ने उसे दी थी।

हो सकता है कि जो सती ने कहा था, वह सही हो। संभवतया वासुदेव मेरी सहायता करने का प्रयत्न कर रहे थे। उन्होंने मेरी सहायता की भी! यदि कार्तिक को कुछ हुआ होता तो मैं पूरी तरह से ध्वस्त हो चुका होता।

एक शांत और स्पष्ट स्वर उसके सिर में गूंज उठा। *आपकी पत्नी बहुत बुद्धिमान है, हे महान महादेव। किसी व्यक्ति में ऐसी सुंदरता और बुद्धिमत्ता का होना दुर्लभ है।*

शिव ने इधर-उधर अपने चारों ओर देखा। वहां कोई नहीं था। वह स्वर किसी अन्य मंदिर के वासुदेव का था। उसने पहचान लिया था। यह वह स्वर था जिसने काशी के वासुदेव को नागा औषधि देने के लिए आदेश दिया था। *क्या आप अगुआ हैं, पंडितजी?*

नहीं, मित्र। अगुआ तो आप हैं। मैं तो मात्र आपका अनुयायी हूं। और मैं वासुदेवों को अपने साथ लाता हूं।

आप कहां हैं? उज्जैन में?

शांति बनी रही।

आपका नाम क्या है, पंडितजी?

मेरा नाम गोपाल है। मैं वासुदेवों का प्रमुख मार्गदर्शक हूं। मैं उस प्रमुख कार्य को करता हूं जो प्रभु राम ने हमें करने के लिए कहा था: आपके कर्म में आपको सहायता करना।

मुझे आपके सुझाव की आवश्यकता है, पंडितजी।

आपकी जैसी इच्छा, हे महान नीलकंठ। आप क्या बात करना चाहते हैं?

— ⚹ —

सती, काली, गणेश और ब्रंगा-काशी के सैनिक काशी की ओर चल पड़े थे। उनके बीच में होने वाले जोर-जोर के वार्तालाप ने जंगल की शांति को भंग कर दिया था।

विश्वद्युम्न गणेश की ओर मुड़ा, 'प्रभु, क्या आपको जंगल कुछ अजीब-सा शांत प्रतीत नहीं हो रहा है?'

गणेश ने अपनी भौंहें ऊपर उठाई क्योंकि सैनिक कुछ अधिक ही शोर कर रहे थे, 'क्या तुम सोचते हो कि हमारे सैनिकों को और भी अधिक जोर से बातें करनी चाहिए?!'

'नहीं, प्रभु। हम लोग बहुत अधिक शोर कर रहे हैं! वह तो मैं शेष जंगल के बारे में बात कर रहा हूं जो अत्यधिक शांत है।'

गणेश ने अपना सिर झुकाया। विश्वद्युम्न सही था। किसी एक भी पक्षी या पशु का स्वर सुनाई नहीं पड़ रहा था। उसने अपने चारों ओर देखा। उसके बोध ने उसे जता दिया था कि कहीं कुछ गड़बड़ अवश्य था। उसने जंगल में घूरकर देखा। उसके बाद अपना सिर हिलाकर उसने सामने देखा और अपने अश्व पर उछलकर चढ़ता हुआ उस दिशा में सरपट भागा।

कुछ ही दूरी पर एक विशालकाय घायल पशु जिसका घाव आंशिक रूप से भर चुका था धीरे से आगे बढ़ा। एक टूटे हुए तीर की डंडी उसके कंधे में गहरी धंसी हुई थी, जिसके कारण वह बब्बर शेर लंगड़ाकर चल रहा था। दो शेरनियां शांति से उसके पीछे चल रही थीं।

अध्याय 18

बुराई की भूमिका

यह देश बहुत भ्रामक है।

गोपाल ने नम्रता से सोचाः *आप ऐसा क्यों कह रहे हैं, मित्र?*

नागा लोग स्पष्ट रूप से बुरे हैं, है ना? लगभग सभी लोग इसे स्वीकार करते हैं। उसके बाद भी नागाओं ने न्याय की रक्षा के लिए एक ऐसे व्यक्ति की सहायता की जिसे इसकी आवश्यकता थी। बुराई से ऐसा अपेक्षित नहीं।

यह बहुत ही अच्छा बिंदु है, हे महान नीलकंठ।

जो गलती मैंने पहले की है, उसे देखते हुए मैं किसी पर भी आक्रमण नहीं करूंगा, जब तक मुझे पक्का विश्वास नहीं हो जाता।

एक अत्यंत ही बुद्धिमानी भरा निर्णय है।

तो क्या आप भी ऐसा सोचते हैं कि नागा लोग बुरे नहीं हैं?

इसका उत्तर मैं कैसे दे सकता हूं, मित्र? मेरे पास इस उत्तर को प्राप्त करने का विवेक नहीं है। मैं नीलकंठ नहीं हूं।

शिव मुस्कुराया। *किंतु आपका अपना मत तो है, क्या नहीं है?*

शिव ने गोपाल के बोलने की प्रतीक्षा की। जब वासुदेव पंडित ने कुछ उत्तर नहीं दिया तो फिर एक खिली हुई मुस्कान उसके मुख पर उभरी। उसने इस चर्चा को समाप्त कर दिया। उसके बाद एक परेशान करने वाले विचार ने उसे घेर लिया। *कृपया यह ना कहें कि नागा लोग भी नीलकंठ की पौराणिक गाथा में विश्वास रखते हैं।*

गोपाल कुछ क्षण के लिए चुप रह गया।

शिव ने दुबारा अपनी त्योरी चढ़ाकर कहा। *पंडितजी? कृपया* मुझे उत्तर दें। क्या नागा लोग नीलकंठ की पौराणिक गाथा में विश्वास करते हैं?

जो मुझे पता है, हे महान महादेव, उनमें से अधिकतर नीलकंठ में विश्वास नहीं रखते। लेकिन क्या आप सोचते हैं यह उन्हें बुरा बना देता है?

शिव ने सिर हिलाया। *नहीं। निस्संदेह नहीं।*

कुछ समय तक चुप्पी छाई रही।

शिव ने गहरी श्वास ली। *तो फिर उत्तर क्या है? मैंने भारत के प्रत्येक हिस्से में यात्रा की। नागाओं के सिवा लगभग सभी समुदायों से मिला। और यदि कोई भी बुरे नहीं हैं तो बुराई ने अपना सिर नहीं उठाया है। संभव है कि मेरी आवश्यकता ही नहीं है।*

क्या आप निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि केवल मानव ही बुरे हो सकते हैं, मित्र? कुछ लोगों की बुराई में आसक्ति हो सकती है। संभव है कि उनमें बुराई का एक छोटा अंश ही हो। किंतु एक बड़ी बुराई जिसका समाधान केवल नीलकंठ के पास हो, वह मानवीय सत्ता से परे औरों में भी हो सकती है?

शिव ने अपनी त्योरी चढ़ाई। *मैं समझा नहीं।*

जब बुराई इतनी बड़ी है तो क्या वह कुछ ही लोगों में संकेंद्रित रह सकती है?

शिव चुप रहा।

प्रभु मनु ने कहा था कि लोग बुरे नहीं हैं। सच्ची बुराई का अस्तित्व उनसे परे है। वह लोगों को आकर्षित करती है। वह अपने शत्रुओं के मध्य में गड़बड़ी उत्पन्न करती है। लेकिन बुराई स्वयं में इतनी बड़ी है कि इसे कुछ लोगों तक ही सीमित नहीं किया जा सकता है।

शिव ने त्योरी चढ़ाई। *आपके कहने से कुछ ऐसी अनुभूति हो रही है कि बुराई एक शक्ति है जो अच्छाई के समकक्ष है। और यह स्वयं ही कार्य नहीं करती, बल्कि लोगों को अपना माध्यम बनाती है। संभव है कि अच्छे लोग भी किसी उद्देश्य के चलते बुराई की सेवा करते हैं।* यदि बुराई किसी उद्देश्य को पूरा करती है तो उसे कैसे नष्ट किया जा सकता है?

बुराई एक उद्देश्य की सेवा करती है, यह बहुत ही मनोरंजक विचार है, हे नीलकंठ।

कैसा उद्देश्य? विध्वंस का उद्देश्य? ब्रह्मांड उसकी योजना क्यों बनाएगा?

चलिए इसे दूसरे प्रकार से देखते हैं। क्या आप मानते हैं कि ब्रह्मांड में कुछ भी अनियमित नहीं है? और प्रत्येक वस्तु जो अस्तित्व में है उसका कोई कारण है। साथ ही प्रत्येक वस्तु का एक उद्देश्य है।

हां। यदि कोई वस्तु अनियमित प्रतीत होती है तो इसका अर्थ है कि हमने अभी तक उसके उद्देश्य को आविष्कृत नहीं किया है।

तो इस प्रकार बुराई क्यों अस्तित्व में है? उसे एक बार में ही सदैव के लिए क्यों नहीं नष्ट कर सकते? जब वह नष्ट हुई प्रतीत होती है तब भी पुनः प्रकट हो जाती है। संभव है वह बहुत दिनों के बाद आए, संभवतया किसी दूसरे स्वरूप में आए, किंतु बुराई पुनः प्रकट अवश्य होती है और बार-बार हमारे मध्य प्रकट होती रहती है। क्यों?

गोपाल के शब्दों को पूरी तरह से समझते हुए शिव ने अपनी आंखें संकुचित कीं। *क्योंकि बुराई भी किसी ना किसी उद्देश्य की सेवा करती है...*

यही प्रभु मनु का भी मानना था। और महादेव की व्यवस्था को इसके संतुलन हेतु कार्य करना है, उस उद्देश्य के नियंत्रण के लिए। उचित समय पर उस समीकरण से बुराई को बाहर निकालने के लिए।

समीकरण से बाहर निकालने के लिए? आश्चर्यचकित शिव ने पूछा।

हां। यही प्रभु मनु ने कहा था। उनके धर्मादेश में यह एक पंक्ति मात्र थी। उन्होंने कहा था कि बुराई के विनाशक को इसका अर्थ समझ में आएगा। इसके संबंध में मेरी समझ यह है कि बुराई को पूर्णतः नष्ट नहीं किया जा सकता और उसे पूर्णतया नष्ट करना भी नहीं चाहिए। उचित समय में इसे समीकरण से बाहर निकाल देने की आवश्यकता है, उस समय जब यह पूर्ण विध्वंस हेतु खड़ी हो जाती है। क्या आप ऐसा सोचते हैं कि वही बुराई किसी अन्य समय में किसी अच्छाई के उद्देश्य को पूर्ण कर सकती है?

मैं यहां उत्तर पाने के लिए आया था, मित्र। किंतु आप तो मुझ पर प्रश्नों की बौछार कर रहे हैं।

गोपाल धीमे से हंसा। *मुझे क्षमा करें, मित्र। हमारा कार्य आपको उन संकेतों के बारे में बताना है जो हम जानते हैं। हम आपके निर्णय में हस्तक्षेप नहीं कर सकते। क्योंकि उसमें बुराई की जीत होने की संभावना है।*

मैंने मनु के बारे में उन्हें यह कहते सुना है कि अच्छाई और बुराई एक ही सिक्के के दो पहलू हैं?

हां, उन्होंने ऐसा अवश्य कहा था। वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। उन्होंने इसके आगे इसकी व्याख्या नहीं की थी।

विचित्र। इसका कोई अर्थ नहीं निकलता है।

गोपाल मुस्कुराया। *यह सुनने में विचित्र अवश्य लगता है। किंतु मैं जानता हूं कि जब उचित समय होगा आप इसका सही अर्थ निकाल लेंगे।*

शिव कुछ समय के लिए चुप रहा। उसने मंदिर के स्तंभों के बाहर देखा। वैशाली के लोग कुछ दूर बने मंदिर के द्वार पर खड़े थे। वे नीलकंठ के दर्शन के लिए धैर्य से प्रतीक्षा कर रहे थे। शिव ने उन्हें घूरकर देखा और उसके बाद पुनः प्रभु मत्स्य की प्रतिमा को देखा। *गोपाल, मेरे मित्र, वह कौन-सी बुराई थी जिसे प्रभु रुद्र ने समीकरण से बाहर निकाला था। मैं जानता हूं कि असुर बुरे नहीं थे। उन्होंने किस बुराई को नष्ट किया था?*

आप उत्तर जानते हैं।

नहीं, मैं नहीं जानता।

हां, आप जानते हैं। इसके संबंध में सोचें, प्रभु नीलकंठ। प्रभु रुद्र की चिरस्थायी विरासत क्या है?

शिव मुस्कुराया। उत्तर स्पष्ट था। *धन्यवाद, पंडितजी। मैं सोचता हूं कि आज के लिए आपने पर्याप्त बातें कर ली हैं।*

आपके पहले प्रश्न पर क्या मैं अपनी राय दे सकता हूं?

शिव चकित हो गया। *नागाओं के संबंध में? हां।*

निस्संदेह! कृपा कर बताएं।

यह स्पष्ट है कि आप ये महसूस करते हैं कि आपका ध्यान नागाओं की ओर जानबूझकर खींचा गया है। शायद आप मानते हैं कि बुराई का मार्ग उनके मध्य से ही गुजरता है।

हां।

यह दो कारणों से हो सकता है। या तो वही मार्ग आपको बुराई तक ले जाएगा।

अथवा?

अथवा बुराई ने उस मार्ग में अपना सबसे बड़ा प्रहार किया है।

शिव ने एक गहरी श्वास ली। *आपके कहने का अर्थ है कि नागा लोग वे हैं जो बुराई के हाथों सबसे अधिक पीड़ित हुए हैं?*

संभव है।

शिव स्तंभ से टिक गया। उसने अपनी आंखें बंद कर लीं। *संभव है कि नागा लोगों का पक्ष भी सुना जाए। संभव है कि अन्य सभी ने उनसे अन्याय किया हो। उन्हें एक अवसर तो दिया जाना चाहिए। किंतु उनमें से किसी एक को तो मुझे उत्तर देना होगा। बृहस्पति की हत्या के लिए कोई एक तो अवश्य दंड की प्रतीक्षा कर रहा है।*

गोपाल जानता था कि शिव किसके बारे में सोच रहे थे। वह चुप रहा।

— ★ —

अथिथिग्व के निजी कक्ष में उनके सामने सती खड़ी थी। उसके साथ ही काली और गणेश खड़े थे। विस्मित काशी नरेश नहीं जानते थे कि कैसी प्रतिक्रिया की जाए।

उसी दिन प्रातः सती इच्छावड़ से सत्ताईस शेरों की खालों के साथ नरभक्षी झुंड के विध्वंस का प्रमाण लेकर वापस लौटी थी। काशी के जो वीर सैनिक वहां मारे गए थे, उनके लिए काशी विश्वनाथ मंदिर में विशेष पूजा की गई थी। कावस को प्रोन्नति देकर मुख्य दलपति बना दिया गया था। ब्रंगा के पलटन के साहस की भी सराहना की गई थी। काशी के ब्रंगावालों को तीन महीने के लिए कर में छूट प्रदान कर दी गई थी। किंतु यह विशिष्ट समस्या अथिथिग्व के लिए जटिल थी। सती की बगल में खड़े दो नागाओं पर वह किस प्रकार प्रतिक्रिया करे, यह वे नहीं जानते थे। नीलकंठ की पत्नी के संबंधियों को काशी नगर से निष्कासित करने की उनकी हिम्मत नहीं थी। दूसरी ओर, वे उन्हें काशी में सार्वजनिक रूप से निवास करने की अनुमति भी नहीं दे सकते थे। उसकी प्रजा इसे एक अपराध मानेगी। नागाओं के बारे में गहरा अंधविश्वास था।

'देवी,' अथिथिग्व ने सावधानीपूर्वक कहा, 'हम इसकी अनुमति कैसे दे सकते हैं?'

काली अथिथिग्व को घूर रही थी। वह भी एक रानी थी, किंतु जो अपमान उसका किया जा रहा था, उस पर वह बहुत अधिक नाराज थी। उसने सती की वांह को छू कर कहा, 'दीदी, भूल जाओ इसे...'

सती ने मात्र अपना सिर हिलाया, 'महाराज अथिथिग्व, भारत के अंदर काशी सहनशीलता का दीप्तिमान प्रकाश है। यह सभी भारतीयों को

स्वीकार करता है, चाहे उसकी आस्था कुछ भी हो या उसकी जीवनशैली कुछ भी हो। कुछ अच्छे और वीर लोगों को इसलिए स्वीकार ना करना क्योंकि वे नागा हैं, यह उन तथ्यों के विरुद्ध नहीं है? यह नगर प्रताड़ितों और हाशिए पर रहने वालों को आशा देता है।'

अथिथिग्व ने नीचे की ओर देखा, 'किंतु, देवी, मेरी प्रजा...'

'महाराज, क्या आप अपने लोगों के पक्षपात का साथ देंगे या फिर उन्हें एक अच्छे मार्ग पर चलने का नेतृत्व प्रदान करेंगे?'

काशी नरेश अस्थिर लेकिन शांत बैठा रहा।

'कृपया यह ना भूलें, महाराज कि आज यदि काशी के सैनिक वापस आए हैं और इच्छावड़ गांव के लोग जीवित हैं तो वे काली, गणेश और उनके सैनिकों की वीरता के कारण ही हैं। हम सभी लोग उन शेरों द्वारा मार डाले गए होते। उन्होंने हमारी रक्षा की है। क्या वे इसके वदले में सम्मान के पात्र नहीं हैं?'

अथिथिग्व ने हिचकिचाते हुए सहमति में सिर हिलाया। उन्होंने अपने निजी कक्ष की खिड़की से वाहर देखा। पूर्वी महल का प्रतिबिंब लिए दूर गंगा नदी उत्साहहीन प्रवाहित हो रही थी। वहां उसकी प्यारी वहना माया किसी वंदी के समान एक निकृष्ट जीवन जी रही थी। वे अपने लोगों में नागाओं के प्रति भय को हटाना चाहते थे। आज जव उनके सामने नीलकंठ की पत्नी अपने परिवार के साथ खड़ी थी तो उनको साहस मिला। क्योंकि नीलकंठ को चुनौती देने की हिम्मत कौन करेगा? सभी लोग जानते थे कि शिव ने कैसे अनुचित विधानों के एक समूह को समाप्त कर दिया था। तो इस प्रकार नागाओं के लिए भी ऐसा ही क्यों नहीं हो सकता?

राजा सती की ओर मुड़े, 'आपका परिवार रह सकता है, देवी। मेरा विश्वास है कि प्रभु नीलकंठ के लिए नियत किए गए काशी महल के हिस्से में वे आरामपूर्वक रह सकेंगे।'

'मेरा विश्वास है कि ऐसा ही होगा,' मुस्कुराती हुई सती ने उत्तर दिया, 'बहुत-बहुत धन्यवाद, महाराज।'

— ⅄ⓄⅡ⍋⊛ —

शिव जहाज के अग्रभाग पर खड़ा था। पर्वतेश्वर साथ था।

'मैंने अग्रणी जलयान की गति को दोगुना कर दिया है, प्रभु,' पर्वतेश्वर ने कहा।

शिव ने पर्वतेश्वर से आग्रह किया था कि उनके जलयानों के समूह को शीघ्र ही काशी पहुंचा दिया जाए। उसे अपने परिवार से अलग रहते दो वर्ष वीत चुके थे। यह एक लंबा समय था और वह उनसे मिलने के लिए बेचैन था।

'धन्यवाद, सेनापति,' शिव मुस्कुराया।

पर्वतेश्वर सम्मान में झुका और गंगा नदी को देखने के लिए पुनः मुड़ गया।

शिव मुस्कुराते हुए वोला, 'तो फिर आपका वैवाहिक जीवन कैसा है, सेनापति?'

पर्वतेश्वर ने एक चौड़ी मुस्कान के साथ शिव को देखा, 'स्वर्ग, प्रभु स्वर्ग। पूर्णतः स्वर्ग। यद्यपि अत्यधिक प्रचंड स्वर्ग।'

शिव मुस्कुराया, 'सामान्य नियम लागू होता प्रतीत नहीं होता है, है ना?'

पर्वतेश्वर ठहाका मारकर हंस पड़ा, 'आनंदमयी प्रतिदिन नियम परिवर्तित करती रहती है और मैं मात्र उनका अनुसरण करता हूं!'

शिव भी ठहाका मारकर हंस पड़ा और उसने अपने मित्र के कंधे पर थपकी दी, 'उन नियमों का अनुसरण करो मित्र, उन नियमों का अनुसरण करो। वह आपसे प्रेम करती है। आप उसके साथ बहुत सुखी रहेंगे।'

पर्वतेश्वर ने हृदय से सहमत होते हुए सिर हिलाया।

'आनंदमयी ने मुझे वताया कि उसने एक तेज चलने वाली नौका को सम्राट दिलीप के पास भेजा है, ताकि आपके विवाह-संस्कार संबंधी जानकारी उन्हें दी जा सके,' शिव ने कहा।

'जी हां, उसने भेजा था,' पर्वतेश्वर ने कहा, 'महाराज हमारे स्वागत के लिए काशी पधार रहे हैं। उन्होंने वचन दिया है कि काशी में हमारे

आगमन के दस दिनों के भीतर ही एक भव्य समारोह का आयोजन करेंगे।'

'यह तो वहुत ही आनंददायक होगा।'

— ⅄ⵀⰀ⁂ —

'जी प्रभु?' नंदी ने पूछा।

हैं?'

नंदी और भगीरथ शिव के कक्ष में थे।

'जव हम काशी पहुंचें तो राजकुमार भगीरथ के निकट रहना।'

'क्यों, प्रभु?' भगीरथ ने पूछा।

शिव ने अपना हाथ ऊपर उठाया। 'मेरा विश्वास करें।' भगीरथ ने अपनी आंखें संकुचित कीं, 'मेरे पिता काशी आ रहे शिव ने सहमति में सिर हिलाया।

'मैं राजकुमार की परछाईं बनकर रहूंगा, प्रभु,' नंदी ने कहा।

'जव तक मैं जीवित हूं, उन्हें कुछ नहीं होगा।'

शिव ने उसकी ओर देखा, 'तुम्हें भी कुछ नहीं होना चाहिए, नंदी। आप दोनों ही अपनी आंखें खुली रखें और सावधान रहें।'

— ⅄ⵀⰀ⁂ —

'मेरे बेटे!' सती ने कार्तिक को अपनी बांहों में लेते हुए कहा।

कार्तिक मात्र तीन वर्ष का था, किंतु सोमरस के प्रभाव के कारण वह छह वर्ष का प्रतीत हो रहा था। वह चिल्लाया, 'मां।'

सती ने उसे अपनी बांहों में लेकर चारों ओर घुमा दिया, 'मुझे तुम्हारी बहुत याद आई।'

'मुझे भी याद आई,' कार्तिक ने बहुत ही नम्रता से कहा। वह अब भी अप्रसन्न था कि उसकी मां उसे छोड़कर चली गई थी।

'मुझे क्षमा करना, मुझे जाना पड़ा था, मेरे बच्चे। किंतु मुझे बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य करना था।'

'अगली बार, मुझे भी अपने साथ ले चलना।'

'मैं प्रयत्न करूंगी।'

कार्तिक मुस्कुराया। ऐसा लगा कि जैसे यह सुनकर वह मान गया था। उसके बाद उसने अपनी लकड़ी की तलवार म्यान से बाहर निकाली, 'मां, इसे देखो।'

सती ने त्योरी चढ़ा ली, 'यह क्या है?'

'जिस दिन आप मुझे छोड़कर गई थीं, उसी दिन से मैंने सीखना प्रारंभ कर दिया था कि युद्ध कैसे करें। यदि मैं एक अच्छा सैनिक होता तो आप मुझे भी साथ लेकर जातीं, ना?'

सती की मुस्कान खिल गई और उसने कार्तिक को उठाकर अपनी गोद में बिठा लिया, 'तुम तो जन्मजात सैनिक हो, बेटे।'

कार्तिक मुस्कुराया और अपनी मां से लिपट गया।

'तुम्हें याद है ना कि तुम कैसे एक भाई के लिए पूछा करते थे, कार्तिक?'

कार्तिक ने जोर-जोर से सिर हिलाकर कहा, 'हां-हां!'

'तो ऐसा है कि मुझे तुम्हारे लिए एक बहुत अद्‌भुत सा भाई मिल गया। एक बड़ा भाई जो सदैव तुम्हारा ध्यान रखेगा।'

कार्तिक ने त्योरी चढ़ा ली और द्वार की ओर देखा। उसने एक दैत्याकार व्यक्ति को कक्ष में प्रवेश करते देखा। उसने एक साधारण धोती धारण की हुई थी और अंगवस्त्रम उसके कंधे पर ढीला लटका हुआ था। उसका विशालकाय उदर प्रत्येक श्वास के साथ थिरक रहा था। किंतु उसके मुख ने कार्तिक को विस्मित कर दिया। मानव शरीर पर एक हाथी का सिर रखा हुआ था।

गणेश खुल के मुस्कुराया। उसका हृदय अनिश्चितता से धड़क रहा था कि कार्तिक उसे स्वीकार करेगा या नहीं, 'कैसे हो कार्तिक?'

सामान्यतया निडर कार्तिक अपनी मां के पीछे छुप गया।

'कार्तिक,' सती उसके *बड़े भाई* की ओर संकेत करती हुई मुस्कुराई, 'तुम अपने *दादा* को नमस्ते क्यों नहीं कहते?'

वह बालक लगातार गणेश को घूरता जा रहा था, 'क्या तुम मनुष्य हो?'

'हां। मैं तुम्हारा भाई हूं,' गणेश मुस्कुराया।

कार्तिक ने कुछ नहीं कहा। किंतु सती ने गणेश को बहुत अच्छी सीख दे रखी थी। नागा ने अपना हाथ बाहर निकालकर कार्तिक का सबसे पसंदीदा फल--रसीला आम--उसे दिखाया। बालक तत्काल ही प्रसन्न हो गया और उस बेमौसम आम को देखकर चकित भी हुआ। वह थोड़ा आगे बढ़ा।

'क्या तुम्हें यह चाहिए, कार्तिक?' गणेश ने पूछा।

कार्तिक ने अपनी लकड़ी की तलवार निकालकर त्योरी चढ़ाई।

'तुम इसे देने के लिए मुझसे युद्ध तो नहीं करोगे ना?'

गणेश हंस पड़ा, 'नहीं, नहीं कदापि नहीं। किंतु इसके बदले में तुम्हें मुझे गले लगाना होगा।'

कार्तिक हिचका और उसने सती की ओर देखा।

सती ने सिर हिलाया और मुस्कुराई, 'तुम इस पर विश्वास कर सकते हो।'

कार्तिक धीरे से आगे बढ़ा और उसने आम छीन लिया। गणेश ने अपने भाई को अपनी छाती से लगा लिया जो तत्काल ही अपने पसंदीदा फल को चूसने में व्यस्त हो गया। उसने गणेश की ओर देखा और मुस्कुराया। वह उस आम को खाते हुए फुसफुसाया, 'वाह... धन्यवाद... दादा।'

गणेश पुनः मुस्कुराया और उसने कार्तिक के सिर को धीमे से थपकी दी।

— ⅄ⓌƱ↑⊛ —

अग्रणी जहाज दशाश्वमेध घाट पर रुका। जब जहाज से उतरने के लिए संकरी सीढ़ी लगाई जा रही थी तो शिव की उत्तेजित आंखें सती की खोज कर रही थीं। वह अपने परिवार के साथ सम्राट दिलीप और राजा अथिथिग्व को राजसी वेदिका पर देख सकता था। काशी के नागरिकों के झुंड के झुंड घाट पर एकत्र होते जा रहे थे, किंतु...

'वह कहां है?'

'मैं उन्हें ढूंढ़कर लाता हूं, प्रभु,' भगीरथ ने जहाज से उतरते ही कहा। उसके पीछे ही नंदी था।

'और, भगीरथ...'

'जी हां, प्रभु,' भगीरथ ने रुकते हुए पूछा।

'जब सब समाप्त हो जाए तो कृपया पूर्वक को राजा के महल में ले जाएं। महल के मेरे पारिवारिक क्षेत्र में उनके आराम की व्यवस्था करें।'

'जी हां, प्रभु,' भगीरथ ने कहा और अपने पिता दिलीप और स्वद्वीप के सम्राट को अनदेखा करता हुआ वहां से निकल गया। किंतु नंदी सम्राट में परिवर्तन को देखकर आश्चर्यचकित था। दिलीप कम से कम दस वर्ष युवा दिख रहे थे और उनका मुख अच्छे स्वास्थ्य के कारण दीप्तिमान हो रहा था। भगीरथ की ओर दौड़कर चलने से पहले नंदी ने अपनी त्योरी चढ़ाई।

शिव जहाज की सीढ़ियों से उतरने लगा।

दिलीप ने शिव की ओर मुड़ने से पहले अपने पुत्र को जाते हुए देखा और अपना सिर हिलाया। उसने नीचे झुककर शिव के चरण स्पर्श किए।

'आपका राजवंश निरंतर यश प्राप्त करे, महाराज,' शिव ने सिर झुकाकर दिलीप को नमस्ते किया।

इस बीच वीरभद्र कृत्तिका से मिला और उसे अपनी बांहों में भर लिया। अत्यधिक आनंदित हुई कृत्तिका शर्मा गई। उसने अपने पति की बांहों से छूटने का असफल प्रयास किया, यह कहते हुए कि वे इस प्रकार प्रेम का प्रदर्शन ना करें।

अथिथिग्व भी आगे बढ़े और उन्होंने शिव का आशीर्वाद प्राप्त किया। औपचारिकताओं को पूर्ण कर नीलकंठ अपने परिवार की खोज में घूमे, 'मेरा परिवार कहां है, महाराज?'

'बाबा!'

शिव एक चौड़ी मुस्कान के साथ मुड़ा। कार्तिक दौड़ता हुआ उसकी ओर आ रहा था। उसने अपने पुत्र को अपनी बांहों में उठाते हुए कहा, 'पवित्र झील की सौगंध, आप तो बहुत बड़े हो गए हो, कार्तिक।'

'मुझे आपकी बहुत याद आई!' अपने पिता से कसकर लिपटते हुए कार्तिक ने कहा।

'मुझे भी तुम्हारी बहुत याद आई,' शिव ने कहा। अपने पुत्र को देखने का आनंद उस समय आश्चर्य में बदल गया जब उसे मुंह में पानी ला देने वाले पके हुए आम की सुगंध आई, 'इस मौसम में आपको किसने आम दिए?'

ठीक उसी समय सती शिव के सामने प्रकट हुई। मुस्कुराते हुए शिव ने अपने दाहिने हाथ में कार्तिक को थामा और बाएं हाथ से सती को अपने घेरे में ले लिया, अत्यधिक निकट, पूरी तरह से अनजान बनते हुए कि सहस्रों लोग उन्हें घूर रहे थे, 'मुझे तुम दोनों की बहुत य़ाद आई।'

'और हमें आपकी भी बहुत याद आई,' सती ने अपना सिर पीछे कर अपने पति को देखते हुए कहा।

शिव ने उसे फिर से अपने निकट खींच लिया। उसकी आंखें बंद थीं। वह अपने परिवार के स्पर्श का सुख ले रहा था और उसकी पत्नी और बेटा उसके कंधे पर अपने सिर रखे हुए थे, 'चलो घर चलते हैं।'

— ⅄ⓄՄ↟⊛ —

काशी के पवित्र मार्ग से शिव की सवारी धीमे-धीमे चल रही थी। अयोध्या के सम्राट और काशी के राजा की सवारियां उनके पीछे थीं, जबकि वह दल जिसने शिव के साथ यात्रा की थी वह उन सबके पीछे चल रहा था। ढाई वर्षों के बाद अपने प्रभु की एक झलक पाने के लिए काशी के नागरिक गलियों में पंक्तिबद्ध थे। रथ पर सवार शिव लोगों का अभिवादन कर रहा था। सती उसके बगल में थी और कार्तिक गोद में था।

शिव और सती दोनों ने एक ही साथ कहा, 'मुझे कुछ कहना है...'

शिव हंसने लगा, 'तुम पहले बताओ।'

'नहीं, नहीं। आप पहले,' सती ने कहा।

'मैं आग्रह करता हूं कि तुम पहले बताओ।'

सती ने थूक निगला, 'आपने नागाओं के संबंध में क्या जानकारी प्राप्त की, शिव?'

'वास्तव में देखा जाए तो बहुत ही आश्चर्यजक जानकारियां। संभव है, मैंने उनके बारे में गलत अनुमान लगाया था। हमें उनके बारे में और

अधिक जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता है। संभव है कि वे सभी बुरे ना हों। अन्य समुदायों के समान ही संभव है कि उनमें कुछ गलत तत्व सम्मिलित हों।'

सती ने एक गहरी श्वास छोड़ी। एक सर्प के समान जो तनाव उसके भीतर कुंडली मार कर बैठा था, उससे थोड़ी राहत मिली।

'क्या हुआ?' अपनी पत्नी को घूरकर देखते हुए शिव ने पूछा।

'ह ऽ म, मैंने भी हाल ही में कुछ जाना है। ऐसा कुछ जो वहुत ही आश्चर्यजनक है। ऐसा कुछ जो मुझसे अब तक छुपाया गया था।

यह नागाओं के संवंध में है।'

'क्या?'

'मुझे पता चला... कि...'

सती को इतना घबराते देखकर शिव चकित हुआ, 'क्या वात है, प्रिय?'

'मुझे पता चला है मैं उनसे संबंधित हूं।'

'क्या?!'

'हां।'

'यह कैसे हो सकता है? तुम्हारे पिता नागाओं से घृणा करते हैं!'

'यह घृणा से अधिक अपराध बोध हो सकता है।'

'अपराध बोध?'

'मेरा जन्म अकेले नहीं हुआ था।' शिव ने त्योरियां चढ़ा लीं।

'मेरे साथ मेरी जुड़वां वहन का भी जन्म हुआ था। मेरी एक बहन है।'

शिव स्तब्ध था, 'कहां है वह? किसने उसका अपहरण किया?

यह मेलूहा में कैसे हुआ?'

'उसका अपहरण नहीं हुआ था,' सती फुसफुसाई, 'उसे त्याग दिया गया था।'

'त्याग दिया गया था?' शिव ने अपनी पत्नी को देखा। उसे प्रतिक्रिया देने के लिए शब्द नहीं मिल पा रहे थे।

शिव ने सती का हाथ थाम लिया, 'तुमने उसे कहां ढूंढ़ा? क्या वह ठीक है?'

सती ने शिव की ओर देखा। उसकी आंखें नम थीं, 'मैंने उसे नहीं ढूंढ़ा, बल्कि उसने मुझे ढूंढ़ा। उसने मेरी जान बचाई।'

शिव मुस्कुराया। नागाओं की एक और वीरता और दयालुता के बारे में सुनकर वह आश्चर्यचकित नहीं हुआ, 'उसका नाम क्या है?'

'काली, रानी काली।'

'रानी?'

'हां, वह नागाओं की रानी है।'

शिव की आंखें आश्चर्य से फटी की फटी रह गईं। हो सकता है कि वह काली ही हो जो वृहस्पति के हत्यारे को ढूंढ़ने में उसकी सहायता कर सकती है। संभव है इसी कारण भाग्य ने इन दोनों को मिलाने का षड्यंत्र रचा होगा। 'वह कहां है?'

'यहीं काशी में। हमारे महल के बाहर। आपसे मिलने की प्रतीक्षा कर रही है। आपके स्वीकार करने की प्रतीक्षा कर रही है।' शिव मुस्कुराया। उसने सिर हिलाया और सती को अपने निकट खींच लिया, 'वह तुम्हारा परिवार है। इस कारण वह मेरा भी परिवार है। मेरे स्वीकार ना करने का प्रश्न ही कहां उठता है?' शिव के कंधे पर अपने सिर को विश्राम देते हुए सती धीमे से मुस्कुराई, 'किंतु वह एकमात्र नागा नहीं है जो आपकी स्वीकृति के लिए प्रतीक्षारत है।'

शिव ने त्योरी चढ़ा ली।

'एक अन्य, इससे भी दर्दनाक रहस्य मुझसे छुपाकर रखा गया था,' सती ने कहा।

'क्या?'

'नब्बे वर्ष पहले मुझे बताया गया था कि मेरा प्रथम शिशु मृत पैदा हुआ है। किसी बुत सा।'

शिव ने सिर हिलाया। वह अच्छी तरह समझ रहा था कि सती का संकेत किस ओर था। अतः उसने अपनी पत्नी का हाथ कसकर पकड़ लिया।

'वह एक झूठ था,' सती सुबकते हुए बोली, 'वह...'

'वह जीवित है?!'

'वह अभी भी जीवित है!'

शिव का मुंह हैरानी से खुला रह गया, 'तुम्हारे कहने का अर्थ... मेरा दूसरा पुत्र भी है?'

सती ने शिव की ओर देखा। उसकी आंखें मुस्कुरा रही थीं।

'पवित्र झील के नाम पर! मेरा दूसरा पुत्र भी है।'

सती ने सहमति में सिर हिलाया। वह शिव के आनंद को देखकर प्रसन्न थी।

'भद्र! तेजी से चलाओ। मेरा पुत्र मेरी प्रतीक्षा कर रहा है!'

अध्याय 19

नीलकंठ का क्रोध

शिव की सवारी अथिथिग्व के महल के द्वार पर तेजी से मुड़ी। जैसे ही सवारी केंद्रीय उद्यान का चक्कर काटकर द्वार के निकट रुकी तो शिव ने तत्पर कार्तिक को अपनी बांहों में उठा लिया और द्वार के निकट पहुंच गया। यहां उसने कार्तिक को नीचे उतारा, उसका हाथ पकड़ा और तेजी से अंदर की ओर जाने लगा। सती उसके पीछे थी।

जैसे ही उसने काली को देखा तो वह मार्ग में ही रुक गया। स्वागत के लिए काली पूजा की थाल पकड़े सामने खड़ी थी।

'अरें यह क्या...!'

शिव के सामने सती का प्रतिरूप खड़ी थी। उसकी आंखें, मुख, उसका आकार--सबकुछ सती के समान ही था। मात्र उसके शरीर का रंग काला था जबकि सती का गेहुआं। सती अपने बालों को अच्छी तरह से जूड़े में बांध लिया करती थी जबकि उससे भिन्न काली के बाल खुले हुए थे। वह स्त्री राजसी वस्त्र और आभूषण पहने हुए थी। एक दूधिया श्वेत एवं लाल रंग का अंगवस्त्रम उसके पूरे बदन को ढके हुए था। उसके बाद उसने उसके कंधे पर दो अतिरिक्त हाथ देखे।

घबराई हुई काली शिव को अनिश्चित होकर घूर रही थी। उसे तब आश्चर्य हुआ जब शिव आगे बढ़ा और उसे नम्रता से इस प्रकार गले लगा लिया कि पूजा की थाली को कुछ ना हो।

'तुमसे मिलकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई,' शिव ने चौड़ी मुस्कान के साथ कहा।

काली हल्के से मुस्कुराई। वह शिव के इस गर्मजोशी भरी मुद्रा से स्तब्ध थी और उसे बोलने के लिए शब्द नहीं सूझ रहे थे।

शिव ने पूजा की थाली की ओर संकेत करते हुए कहा, 'स्वागत हेतु यह थाली तुम्हें शायद मेरे मुख के चारों ओर छह या सात बार घुमानी होगी।'

काली हंस पड़ी, 'मुझे क्षमा करें। बस मैं थोड़ी घबराई हुई हूं।'

'घबराने की कोई बात ही नहीं है,' शिव ने अपने दांत निपोरते हुए कहा, 'बस थाली को चारों ओर घुमाओ, फूलों को मेरे ऊपर फेंको और एक बात का ध्यान रखो कि दीपक नीचे नहीं गिरे। आग की जलन बहुत पीड़ देती है!'

काली और खिलखिलाकर हंस पड़ी और उसने शिव की ललाट पर लाल तिलक लगाते हुए अनुष्ठान को संपन्न किया।

'और अब,' शिव ने कहा, 'मेरा दूसरा पुत्र कहां है?'

काली एक ओर हो गई। शिव ने गणेश को दूर अथिथिग्व के मुख्य महल की ओर जाने वाली ऊपर की सीढ़ी पर खड़े देखा।

'वह मेरा दादा है!' कार्तिक ने प्रसन्न होकर पिता की ओर देखते हुए कहा।

शिव कार्तिक को देखकर मुस्कुराया, 'चलो चलकर मिलते हैं।'

गणेश लाल धोती और श्वेत अंगवस्त्रम पहने हुए महल में अपनी मां के कक्ष के द्वार के पास लगभग पहरेदार की भांति खड़ा था। जैसे ही शिव उसके पास पहुंचा तो गणेश अपने पिता के चरण स्पर्श करने के लिए झुका।

शिव ने गणेश के सिर को धीमे से छुआ और उसके कंधों को पकड़कर अपनी ओर खींचते हुए आशीर्वाद दिया, 'आयुष्मान भव, मेरे...'

जैसे ही उसने बादाम के आकार वाली उसकी आंखों को देखा तो वह चुप हो गया। उसके हाथ गणेश के कंधे पर जम गए थे और उसकी आंखें संकुचित थीं।

गणेश ने अपने भाग्य को कोसा और अपनी आंखें बंद कर लीं।

वह जानता था कि उसे पहचान लिया गया था। शिव की आंखें गणेश के मुख पर गढ़ी हुई थीं।

सती आश्चर्य करते हुए फुसफुसाई, 'क्या बात है, शिव?'

शिव ने सती को अनसुना कर दिया और गणेश को लगातार दबे हुए क्रोध के साथ घूरता रहा। उसने अपनी थैली में हाथ डाला,'मेरे पास कुछ है जो तुम्हारा है।'

गणेश शांत बना रहा। शिव को एकटक देखते हुए उसकी आंखें विषादपूर्ण थीं। उसे वह देखने की आवश्यकता नहीं थी जो शिव अपनी थैली से निकाल रहा था। वह जानता था कि यह उसका वही बाजूबंद था जो टूट गया था और मंदार पर्वत पर कहीं खो गया था। उसके किनारे घिसे हुए थे और अग्नि की लपटों ने उसे झुलसा दिया था। उस पर कढ़ाई किया हुआ ओम का प्रतीक अभी भी ज्यों का त्यों था। किंतु वह सामान्य ओम का प्रतीक नहीं था। प्राचीन पवित्र शब्द के प्रतीक की रचना सर्पों से की गई थी। वह सर्प वाला ओऽम था!



गणेश ने शांतिपूर्वक वह बाजूबंद शिव के हाथ से ले लिया।

सती ने अविश्वासपूर्ण आंखों से शिव की ओर देखा, 'शिव! यह क्या हो रहा है?'

शिव की आंखों से भयंकर क्रोध फूट रहा था।

'शिव...' अपने पति के कंधे को चिंतित होकर स्पर्श करते हुए सती ने कहा।

शिव ने सती के हाथ का झटक दिया, 'तुम्हारे पुत्र ने मेरे भाई की हत्या की है,' शिव गरजा।

सती स्तब्ध थी। उसे विश्वास नहीं हो रहा था।

शिव ने दुबारा कहा। इस बार उसका स्वर कड़ा और भयंकर था, 'तुम्हारे पुत्र ने बृहस्पति की हत्या की है!'

काली उछलकर सामने आई, 'किंतु वह तो...'

गणेश के संकेत के कारण नागाओं की रानी चुप हो गई।

नागा एकटक शिव की ओर देख रहा था। वह कोई स्पष्टीकरण नहीं दे रहा था। वह नीलकंठ के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा था, अपने दंड की।

शिव गणेश के बहुत निकट आया। अत्यधिक निकट, उसकी क्रोध से गर्म श्वास गणेश को झुलसा गई, 'तुम मेरी पत्नी के पुत्र हो। यह एकमात्र कारण है जो मैं तुम्हें प्राणदंड नहीं दे रहा।'

गणेश ने अपनी दृष्टि नीची कर ली। उसके हाथ याचना में जुड़े हुए थे। वह कुछ भी बोलने को तैयार नहीं था।

'मेरे घर से बाहर निकल जाओ,' शिव ने गर्जना की, 'इस भूमि से बाहर निकल जाओ। मुझे अपना मुख फिर कभी नहीं दिखाना। अगली बार मैं इतना क्षमाशील नहीं रहूंगा।'

'किंतु... किंतु शिव। वह मेरा पुत्र है!' सती ने याचना की।

'उसने बृहस्पति की हत्या की है।'

'शिव...'

'उसने बृहस्पति की हत्या की है!' यह स्वर निर्णायक एवं पूर्ण ब्रह्मांड को सुनाई देने वाला था।

सती ने भावशून्य दृष्टि से देखा। उसके गाल पर आंसू झर-झर बहते जा रहे थे, 'शिव, वह मेरा पुत्र है। मैं उसके बिना नहीं रह सकती।'

'तो फिर मेरे बिना रहो।'

सती भौचक्की रह गई, 'शिव, ऐसा ना करें। आप मुझसे ऐसे चयन के बारे में कैसे कह सकते हैं?'

गणेश ने अंततः चुप्पी तोड़ी, 'पिताजी, मैं...'

शिव ने बीच में ही गुस्से में उसे टोक दिया, 'मैं तुम्हारा पिता नहीं हूं!'

गणेश ने सम्मान में अपना सिर झुकाया। उसने एक गहरी श्वास ली और पुनः कहा, 'हे महान महादेव, आप अपनी निष्पक्षता के लिए जाने जाते हैं। आप न्याय के लिए पहचाने जाते हैं। अपराध मेरा है। मेरे पाप के लिए मेरी माता को दंड ना दें,' गणेश ने एक चाकू निकाल लिया। यह वही चाकू था जो सती ने अयोध्या में उस पर फेंका था, 'मेरा जीवन समाप्त कर दें। किंतु मेरी माता को ऐसा शाप ना दें जो मृत्यु से भी अधिक दर्दनाक है। वह आपके बिना जीवित नहीं रह सकतीं।'

'नहीं!' सती चिल्लाई और उछलकर गणेश के सामने आ गई,'कृपा करें, शिव। यह मेरा पुत्र... यह मेरा पुत्र...'

शिव का क्रोध बर्फ की भांति जम चुका था, 'ऐसा प्रतीत होता है कि तुमने चयन कर लिया है।'

उसने कार्तिक को अपनी गोद में उठा लिया।

'शिव...' सती ने अनुनय किया, 'कृपा कर मत जाएं। कृपा करें...'

शिव ने सती की ओर देखा। उसकी आंखें नम थीं, किंतु उसका स्वर निष्ठुर था, 'मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता, सती। बृहस्पति मेरे भाई के समान था।'

शिव कार्तिक को अपने साथ लेता हुआ सीढ़ियों से नीचे उतर गया। काशी के नागरिक स्तब्ध थे।

'शिव को सारा सत्य पता नहीं है। तुमने उन्हें बताया क्यों नहीं?'

क्षुब्ध काली ने कहा।

अथिथिग्व के महल में काली और गणेश सती के कक्ष में बैठे हुए थे। लंबे समय बाद मिले अपने पुत्र के मोह और पति के प्रति भक्ति के मध्य सती फंस गई थी। वह शिव को मनाने ब्रंगाओं के भवन में गई जहां शिव ने अस्थायी निवास बना रखा था।

'मैं नहीं बता सकता। मैंने वचन दिया है, मौसी,' गणेश ने उत्तर दिया। शांत स्वर उसके भीतर दबे दुख को छुपा रहा था।

'लेकिन...'

'नहीं, मौसी। यह आपके और मेरे मध्य ही रहेगा। केवल एक ही स्थिति है जब मंदार पर्वत पर आक्रमण के रहस्य को खोला जा सकता है। मैं ऐसा होते निकट भविष्य में नहीं देख पा रहा हूं।'

'लेकिन कम से कम अपनी मां को तो बता सकते हो।'

'वचन का सम्मान मां के समक्ष भी किया जाना चाहिए।'

'दीदी पीड़ा में है। मैंने सोचा था कि तुम उसके लिए किसी भी सीमा तक जा सकते हो, कुछ भी कर सकते हो।'

'मैं करूंगा। वे मेरे बिना रह सकती हैं, लेकिन महादेव के बिना नहीं। वे मुझे इसलिए रोके हुए हैं क्योंकि वे अपराध बोध से ग्रसित हैं।'

'यह तुम क्या कह रहे हो? तुम जा रहे हो?'

'हां। अगले दस दिनों में। जब मेलूहा के सेनापति और चंद्रवंशी राजकुमारी के विवाह का उत्सव समाप्त हो जाता है। उसके बाद पिताजी

घर वापस लौट सकते हैं।'

'तुम्हारी मां इसकी अनुमति नहीं देगी।'

'इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। मैं चला जाऊंगा। मैं अपने माता-पिता के वियोग का कारण नहीं बनूंगा।'

— ⅄◎Ʊ⇞⊛ —

'महाराज,' मेलूहा के प्रधानमंत्री कनखला ने कहा, 'बिना औपचारिक आमंत्रण के स्वद्वीप के लिए आपका जाना उचित नहीं है। यह नयाचार के विरुद्ध है।'

'क्या बकवास है,' दक्ष ने कहा, 'मैं भारत का सम्राट हूं। मैं कहीं भी जा सकता हूं, जहां मेरी इच्छा हो।'

कनखला एक निष्ठावान प्रधानमंत्री थी। किंतु वह अपने सम्राट को ऐसा कोई काम नहीं करने देना चाहती थी जिससे समस्त साम्राज्य को लज्जित होना पड़े, 'किंतु अयोध्या समझौते की शर्तों के अनुसार स्वद्वीप हमारी जागीर नहीं है। अपनी भूमि पर उनका अधिकार है। नयाचार कहता है कि हमें उनकी अनुमति लेनी चाहिए। वे इस अनुमति से इंकार नहीं कर सकते हैं। आप उनके स्वामी हैं। किंतु यह एक औपचारिकता है, जिसे पूर्ण करना चाहिए।'

'किसी औपचारिकता की आवश्यकता नहीं है। मैं एक पिता हूं और अपनी प्यारी पुत्री से मिलने जा रहा हूं।'

कनखला ने अपनी त्योरी चढ़ा ली, 'महाराज, आपकी मात्र एक पुत्री है।'

'हां-हां, मुझे पता है,' दक्ष ने अपना हाथ अहंकार से लहराकर कहा, 'देखें, मैं तीन सप्ताह में प्रस्थान कर रहा हूं। आप एक संदेशवाहक को स्वद्वीप अनुमति हेतु भेज सकती हैं। ठीक है?'

'महाराज, अयोध्या में अभी तक पक्षी संदेशवाहक की व्यवस्था स्थापित नहीं हुई है। आप तो जानते ही हैं कि वे कितने अक्षम लोग हैं। इस प्रकार यदि संदेशवाहक आज भी निकल पड़ता है तो वह तीन महीने में अयोध्या पहुंचेगा। तब तक आप स्वयं काशी पहुंच जाएंगे।'

दक्ष मुस्कुराया, 'हां, अवश्य मैं पहुंच जाऊंगा। जाएं और जाकर मेरे प्रस्थान करने की व्यवस्था करें।'

कनखला ने लंबी श्वास छोड़ी, सिर झुककर सम्मान किया और कक्ष से बाहर निकल गई।

— ⅄◎Ʊ⇞⊛ —

स्वद्वीप के सम्राट दिलीप ने अपनी पुत्री आनंदमयी और पर्वतेश्वर के विवाह के अवसर पर अनेक उत्सवों को मनाने का निर्णय लिया था। किंतु महादेव और उनकी पत्नी के मध्य में हुए विवाद ने माहौल बिगाढ़ दिया था। हालांकि अनुष्ठानों को रोका नहीं जा सकता था। वह ईश्वर का अनादर होता। जबकि सभी प्रकार के आनंदोत्सवों को कुछ समय के लिए टाल दिया गया था, किंतु प्राथमिक देवताओं अग्नि, वायु, पृथ्वी, वरुण, सूर्य और सोम की पूजा को तय कार्यक्रम के अनुसार ही किया जा रहा था।

अस्सी घाट से थोड़ा दक्षिण की ओर पवित्र मार्ग पर स्थापित सूर्य मंदिर में सूर्य देवता की पूजा का आयोजन किया जा रहा था। मंदिर के रास्ते में एक विशालकाय वेदिका का निर्माण किया गया था। शिव और सती अपने विशेष शेरासन पर बैठे हुए थे, जो उनके लिए नियत किए गए थे। वे दोनों ही एक-दूसरे से दूरी बनाए बैठे हुए थे। शिव सती की ओर देख नहीं रहा था। क्रोध स्पष्ट रूप से उसके रोम-रोम से झलक रहा था। वह मात्र पूजा के लिए आया था और पूजा समाप्त होते ही ब्रंगाओं के भवन में अपने निवास को प्रस्थान कर जाने वाला था।

शिव के क्रोध से अब तक अनभिज्ञ काशी के नागरिक अंदर ही अंदर परेशान थे। किंतु कार्तिक से अधिक नहीं। वह अपने माता-पिता से पुनः एक साथ हो जाने के लिए लगातार अनुनय-विनय कर रहा था। यह जानते हुए कि जब वह शिव और सती को एक साथ देखेगा तो वह इस बात पर अधिक बल देगा, इसलिए शिव ने कृत्तिका से कार्तिक को निकट के संकट मोचन मंदिर के उद्यान में ले जाने के लिए कहा था।

शिव के साथ ही उस वेदिका पर काली, भगीरथ, दिलीप, अथिथिग्व और आयुर्वती के लिए सिंहासन लगे हुए थे। पर्वतेश्वर और आनंदमयी मंदिर की वेदिका पर थे, जहां सूर्य पंडित उन्हें सूर्य देवता के आशीर्वाद से अपने प्रेम को प्रतिष्ठित करने में सहायता प्रदान कर रहा था।

असहज स्थिति से वचने के लिए गणेश ने बुद्धिमत्ता से पूजा का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया था।

जवकि समस्त काशी पूजा स्थल पर था, गणेश संकट मोचन मंदिर में अकेला ही वैठा हुआ था। सर्वप्रथम वह मंदिर से सटे हुए उस उद्यान में अपने भाई से मिलने गया। वे दस दिनों से नहीं मिले थे। वह कार्तिक के लिए एक थैली में पके आम भी लेकर गया था। उसके साथ तीस मिनट बिताने के वाद गणेश पुनः मंदिर में आ गया। उसने कार्तिक को कृत्तिका के साथ पांच अंगरक्षकों की निगरानी में छोड़ दिया था। श्री राम के भक्त श्री हनुमान को ध्यान से देखते हुए गणेश शांतिपूर्वक बैठा हुआ था।

हनुमान जी को *संकट मोचन* किस कारण कहा जाता है। लोगों का मानना था कि वे *अपने भक्त की संकट में* सदैव ही सहायता करते थे। गणेश को लगा कि इस विकट स्थिति को सुलझाने में स्वयं हनुमान जी को भी समस्या होगी। वह अपनी माता के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकता था और साथ ही वह अपने माता-पिता के विलगाव का कारण भी नहीं बनना चाहता था। उसने अगले दिन ही काशी छोड़ने का निर्णय ले लिया था। किंतु वह जानता था कि उसका शेप जीवन अपनी माता के लिए तरसते हुए ही बीतेगा क्योंकि उसने अपनी मां की ममता का अनुभव कर लिया था।

जव उसने उद्यान से कार्तिक का हुड़दंग भरा कोलाहल सुना तो वह मुस्कुराया।

आत्मा की वह उन्मुक्त हंसी जो अपनी मां की ममता से पालित-पोपित हो।

गणेश ने एक लंबी श्वास भरी। वह जानता था कि ऐसी उन्मुक्त हंसी उसके जीवन में कभी नहीं आने वाली। उसने अपनी तलवार निकाल ली। एक सपाट पत्थर खींचा और वह किया जो कोई क्षत्रिय अपने खाली समय में करता है, अर्थात तलवार की धार को तेज करना।

अपने विचारों में गणेश इतना डूबा हुआ था कि उसे बहुत देर में इसका भान हुआ। उद्यान में कुछ विचित्र हो रहा था। उसने अपनी श्वास रोकी और सुना। और उसके वाद उसे वोध हुआ। कार्तिक,कृत्तिका और उनके साथियों की हंसी को क्या हो गया था?

गणेश तेजी से उठ खड़ा हुआ। उसने अपनी तलवार म्यान में रखी और उद्यान की ओर तेजी से वढ़ चला। तव उसने सुना। एक धीमी गुर्राहट और उसके वाद एक कानफोड़ू गर्जना। जानलेवा आक्रमण निकट था।

शेर!

गणेश ने अपनी तलवार निकाली और दौड़ना प्रारंभ कर दिया। एक आदमी लड़खड़ाता हुआ उसकी ओर आ रहा था। वह काशी का एक सैनिक था जिसकी एक वांह पर चीरा लग गया था। वह स्पष्ट रूप से पंजों का निशान था।

'कितने हैं?' गणेश इतनी जोर से बोला कि उस काशी के सैनिक को दूर से भी सुनाई पड़ सकता था।

किंतु काशी के उस सैनिक ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वह स्तब्ध-सा लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था।

गणेश क्षण भर में ही उसके पास था। उसने उसे जोर से झंकझोरा और दुबारा पूछा, 'कितने हैं?'

'ती...न,' सैनिक ने कहा।

'महादेव को बुला लाओ!'

सैनिक अभी भी स्तव्ध दिख रहा था।

गणेश ने उसे जोर से दुवारा हिलाया, 'महादेव को बुलाओ! अभी, इसी समय!'

वह सैनिक सूर्य मंदिर की ओर दौड़ने लगा और गणेश उद्यान की ओर मुड़ गया।

काशी के सैनिक को पता था कि वह किससे पीछा छुड़ाकर भाग रहा था और फिर भी उसके पैर उखड़ रहे थे। गणेश जानता था कि वह किस ओर दौड़ रहा था, किंतु उसकी गति निश्चित और दृढ़ थी।

उसने वगल में पड़े एक पत्थर का सहारा लिया और बिना कोई ध्वनि किए बाड़े के ऊपर से उस उद्यान में पहुंच गया।

वह दूसरी दिशा में पहुंचा जहां एक शेरनी निकट में ही एक सैनिक के टूटे हुए गले को अपने जबड़ों के मध्य दबाकर उसका दम निकालने का प्रयत्न कर रही थी जो पहले ही मर चुका था। गणेश ने तत्परता से अपनी तलवार से उस पर वार किया। उसकी तलवार ने शेरनी के

कंधे पर गहरा घाव कर दिया जिससे रक्त तेजी से बहने लगा। इसी बीच गणेश कृत्तिका, काशी के एक अन्य सैनिक और कार्तिक के पास पहुंच गया, जो उस उद्यान के मध्य में खड़े थे। दूर कोने में दो सैनिकों के मृत शरीर पड़े थे। उनकी स्थिति को देखते हुए कहा जा सकता था कि वे पहले दो सैनिक थे जो काल का ग्रास बने।

गणेश उछलकर कृत्तिका की दिशा में हो गया। वे लोग एक ओर से एक शेरनी और बब्बर शेर द्वारा घेरे जा चुके थे।

भूमिदेवी कृपा करें! ये लोग इच्छावड़ से ही हमारा पीछा करते आए हैं!

दूसरी ओर से उस शेरनी ने उनका रास्ता रोक रखा था जिसे गणेश के प्रहार ने घायल कर दिया था और जिसके कंधे से तेजी से रक्त-प्रवाह हो रहा था।

कार्तिक ने अपनी लकड़ी की तलवार बाहर निकाल रखी थी और वह युद्ध करने के लिए तैयार था। गणेश जानता था कि यह कार्तिक की बचकानी बहादुरी थी जो वह बब्बर शेर पर अपनी लकड़ी की तलवार मात्र से हमला करने को तैयार है। वह अपने भाई के सामने खड़ा था। कृत्तिका बगल में थी, जबकि वह अकेला सैनिक दूसरी ओर था।

'कोई रास्ता नहीं है,' अपनी तलवार निकाले हुए कृत्तिका ने कहा।

गणेश जानता था कि कृत्तिका एक प्रशिक्षित योद्धा नहीं है। उसके मातृत्व का बोध उसे कार्तिक की सुरक्षा करने के लिए प्रेरित करेगा, किंतु संभवतया वह किसी भी शेर को मार सकने में समर्थ नहीं हो पाएगी। दूसरी ओर खड़ा सैनिक कांप रहा था। वह भी उसकी सहायता करने की स्थिति में नहीं था।

गणेश ने सिर हिलाकर घायल शेरनी को दिखाते हुए बोला जो लंगड़ाते हुए उनकी ओर ही आ रही थी, 'वह अधिक समय तक संघर्ष नहीं कर पाएगी। मैंने उसकी मुख्य नस काट दी है।'

इस मध्य बब्बर शेर उन्हें सामने की ओर से घेर रहा था और दोनों शेरनियां दोनों ओर से उन्हें घेर रही थीं। गणेश जानता था कि बस कुछ ही समय की बात थी। वे उन पर हमला करने की तैयारी कर रहे थे।

'पीछे हट जाएं,' गणेश फुसफुसाया, 'धीरे-धीरे।'

उनके पीछे बरगद के पेड़ के मुख्य तने में खोह सा बना हुआ था। गणेश ने कार्तिक को उसमें डालकर उन शेरों से उसे बचाने की योजना बना ली थी।

'हम अधिक देर तक जीवित नहीं रह सकेंगे,' कृत्तिका ने कहा,'मैं उन्हें भटकाने का प्रसास करती हूं। आप कार्तिक को लेकर भाग जाएं।'

गणेश कृत्तिका की ओर नहीं मुड़ा, क्योंकि वह बब्बर शेर को लगातार घूर रहा था। किंतु वीरभद्र की पत्नी के लिए उसका सम्मान और बढ़ गया था। वे उसके छोटे भाई के लिए जान देने के लिए तैयार थीं।

'यह संभव नहीं है,' गणेश ने कहा, 'कार्तिक को साथ में लेकर मैं इतनी तेज दौड़ नहीं लगा सकता कि इनसे बचकर निकल पाऊं। दीवार भी ऊंची है। हमारी सहायता आने वाली है। महादेव आ रहे हैं। हमें मात्र इन शेरों को कुछ समय तक रोके रखना है।'

कृत्तिका और उस सैनिक ने गणेश के कहे अनुसार काम किया और धीरे-धीरे पीछे की ओर खिसकने लगे। कार्तिक उनके पीछे था। बब्बर शेर और शेरनियां आगे बढ़ते चले आ रहे थे। उनका सीधा-सपाट आक्रमण अब कुछ बिखर सा गया था क्योंकि उनके सामने एक दैत्याकार आदमी रक्त-रंजित तलवार लेकर खड़ा हो गया था।

कुछ ही देर बाद कार्तिक को बरगद के तने में बने खोह में डाल दिया गया था और पेड़ की जड़ों से उसे इस प्रकार घेर दिया गया था कि वह किसी भी प्रकार से आक्रमण करने के उद्देश्य से बाहर की ओर ना निकल पाए। वह सुरक्षित था। कम से कम तब तक जब तक कि गणेश वहां खड़ा था।

उन बिल्लियों ने आक्रमण कर दिया। गणेश उस लंगड़ाती शेरनी को आगे बढ़ता देख आश्चर्यचकित था। कृत्तिका उस ओर से मैदान संभाले हुए थी।

'नीचे की ओर झुककर रहिए,' गणेश चिल्लाया। वह कृत्तिका की सहायता करने के लिए वहां से हट नहीं सकता था क्योंकि बब्बर शेर इस मध्य खुली जगह देखकर कार्तिक पर हमला कर सकता था,'कृत्तिका जी, झुकी रहें! वह घायल है। वह हवा में ऊंचा नहीं उछल सकती!'

कृत्तिका ने अपनी तलवार नीचे कर रखी थी और उस घायल शेरनी को अपने तक आ जाने की प्रतीक्षा कर रही थी। किंतु उसे तव आश्चर्य हुआ जव वह शेरनी अचानक ही दिशा बदलते हुए बाईं ओर घूम गई। जैसे ही कृत्तिका उसके पीछे आक्रमण करने के लिए दौड़ने वाली थी कि उसने रक्त जमा देने वाली चीख सुनी।

दूसरी ओर वाली शेरनी ने इस भटकाव का लाभ उठाया और काशी के सैनिक के निकट पहुंच गई थी। वह पीड़ा से चिल्ला रहा था क्योंकि उस शेरनी ने उसके शरीर को पीछे की ओर धक्का दे दिया था और उसके शरीर पर अपने पंजे से काट कर घाव बना दिया था। वह सैनिक चिल्लाता हुआ, अपनी तलवार के दुर्वल प्रहारों से उस शेरनी को दूर करने के प्रयास में प्रहार करता जा रहा था। वह लगातार उसे काटती जा रही थी। और अंततः शेरनी ने उस सैनिक का गला दबा दिया। कुछ क्षण के बाद ही वह मर चुका था।

वब्वर शेर गणेश के सामने स्थिर वना हुआ उसके भागने के मार्ग को रोके हुए था। उस दूसरी शेरनी ने मृत सैनिक के शरीर को वहीं छोड़ दिया और पुनः अपनी पुरानी स्थिति में आ चुकी थी।

गणेश ने धीमे से श्वास ली। वह उन पशुओं के झुंड के शिकार करने की बुद्धिमत्ता की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सका।

'झुककर रहिए,' गणेश ने कृत्तिका से कहा, 'मैं इस बब्बर शेर और शेरनी को इस ओर से रोकूंगा। आपको मात्र उस घायल शेरनी पर ध्यान केंद्रित करना है। मैं इन तीनों को एक साथ नहीं देख सकता। ये पशु झुंड में शिकार करते हैं। जो भी क्षण भर के लिएइध्यान हटाएगा है वह मारा जाएगा।'

कृत्तिका ने सिर हिलाया और उस घायल शेरनी को देखने लगी, जो मंथर गति से उसकी ओर वढ़ने लगी थी। अपनी चोट के कारण उसका बहुत रक्त बह चुका था। वह अपनी चाल में धीमी पड़ गई थी। अचानक ही उसने कृत्तिका पर आक्रमण कर दिया।

निकट आ शेरनी ने हवा में छलांग लगाई। उतनी ही ऊंची छलांग जितना कि उसका घायल कंधा अनुमति देता था। वह छलांग दुर्वल थी। कृत्तिका नीचे झुक गई और उसने अपनी तलवार ऊंची कर ली। शेरनी गिरते हुए उसकी तलवार का शिकार हो गई। वह शेरनी कृत्तिका के ऊपर आ गिरी और शीघ्र ही अपने प्राण गंवा बैठी।

गणेश ने अपनी आंखों के किनारे से कृत्तिका को देखा। मरकर गिरने से पहले उस शेरनी ने कृत्तिका के कंधे पर अपना प्रहार कर दिया था और उसके कंधे का एक हिस्सा काट दिया था। कृत्तिका के कंधे से रक्त बह निकला। वह उस शेरनी के मृत शरीर के नीचे गतिहीन हो चुकी थी। उस शेरनी का मृत शरीर उसके ऊपर था, जिसे हटाना कठिन था। किंतु वह जीवित थी। वह गणेश को देख सकती थी।

गणेश ने अपनी ढाल पीठ के पीछे सरका ली। उसने अपनी छोटी तलवार निकाल ली और उस बरगद के पेड़ के पास खड़ा रहा। वह एक दोधारी तलवार थी जो शत्रु के शरीर में भुंककर कैंची की तरह चलती थी। यह एक भयानक हथियार था क्योंकि वह बार-बार काटता चला जाता था।

गणेश रुका रहा। वह महादेव के आने की प्रतीक्षा में था। बब्बर शेर गणेश के दाईं ओर गया। शेरनी बाईं ओर। दोनों के

मध्य पर्याप्त दूरी थी। अतः गणेश को दोनों पर नजर रखने में कठिनाई हो रही थी। दोनों पशुओं ने एक सुरक्षात्मक स्थान स्थापित करके आगे की दिशा में साथ-साथ बढ़ने लगे।

शेरनी ने अचानक ही आक्रमण कर दिया। गणेश ने अपने बाएं हाथ को घुमाया, लेकिन छोटी तलवार से इतनी पहुंच नहीं थी कि शेरनी पर प्रहार हो सके। इस आक्रमण ने उसे बाईं ओर देखने पर विवश कर दिया था। बब्बर शेर ने इसका लाभ उठाते हुए गणेश पर आक्रमण कर दिया और उसके दाहिने पैर पर शक्तिशाली चोट मारी, ठीक उसी जगह पर जहां इच्छावड़ में गणेश को चोट लगी थी।

गणेश दर्द से चिल्ला पड़ा और उसने दाहिने हाथ से अपनी तलवार हवा में लहराकर बब्बर शेर के चेहरे पर प्रहार किया। बब्बर शेर पीछे हट तो गया, किंतु इससे पहले वह गणेश की जांघ से मांस का टुकड़ा काट चुका था।

गणेश का रक्त वह रहा था। वह वरगद के पेड़ पर झुकता हुआ पीछे हटा। उसका नन्हा-सा भाई पीछे से चीख-चिल्ला रहा था। वह शोर कर रहा था कि उसे भी बाहर निकलकर शेर से युद्ध करना है। गणेश टस से मस तक ना हुआ। और उन शेरों ने पुनः हमला कर दिया।

इस वार वब्बर शेर पहले आया। उनके आक्रमण में एक निश्चित तरीका देखकर गणेश ने अपनी आंखें मध्य में टिकाई हुई थीं, जिसके कारण वह अव वब्बर शेर और उस शेरनी दोनों को एक साथ देख पा रहा था। उसने अपने दाहिने हाथ की तलवार को सामने कर रखा था ताकि वब्बर शेर उसके बहुत निकट ना आ सके। वब्बर शेर धीमा हो गया और वह शेरनी तेजी से आई। गणेश ने अपनी छोटी तलवार सीधे उसके कंधे में गड़ा दी, लेकिन इससे पहले उस शेरनी ने गणेश के एक अंग को काट खाया। छोटी तलवार के कंधे में पूरी धंसी होने पर भी शेरनी गणेश के बाएं हाथ में अपने दांत गड़ाने के बाद ही पीछे हटी।

गणेश जानता था कि अब वह बहुत देर तक टिक नहीं सकता। उसका रक्त तेजी से बह रहा था। वह इधर-उधर गिरना नहीं चाहता था क्योंकि तब कार्तिक दृष्टि में आ जाता। वह पीछे की ओर गिरा और उस पेड़ से टिककर बैठ गया। उसने उस खोह को अपने शरीर से ढक लिया। उसके भाई तक पहुंचने के लिए उन पशुओं को उसे मारना होगा।

रक्त के बहुत अधिक बह जाने के कारण गणेश की दृष्टि धुंधलाने लगी थी। लेकिन फिर भी वह देख सकता था कि शेरनी का घाव गहरा था। वह उससे कुछ दूरी पर ही अपने घाव से जूझ रही थी। अपनी चोट को चाटने का प्रयास कर रही थी और सीधा खड़ी होने में अक्षम हो रही थी। उसके हिलने पर वह दोधारी तलवार कैंची की तरह कंधे की हड्डियों को काटती चली गई। उसने देखा कि बब्बर शेर दाईं ओर से बढ़ता हुआ बहुत निकट आ चुका था। बब्बर शेर उसे घेर लिया और अपने पंजे से उस पर झपट्टा मारा। तभी गणेश ने अपनी तलवार हवा में लहराकर उस पर प्रहार किया। बब्बर शेर के पंजे ने गणेश का चेहरा चीर दिया। इससे गणेश की लंबी नाक पर गहरा घाव हो गया। ठीक उसी समय गणेश के प्रहार ने बब्बर शेर की बाईं आंख को भेद डाला। वह पशु पीड़ा में चिल्लाता हुआ पीछे हट गया।

लेकिन जो कार्तिक ने देखा वह गणेश ने नहीं देखा था। वह अपनी लकड़ी की तलवार से पहुंचने का प्रयास कर रहा था। लेकिन वह उतनी दूर तक नहीं पहुंच सकता था। 'दादा! उधर देखो!'

शेरनी ने गणेश के इस ध्यान भंग होने का लाभ उठाकर उसके निकट पहुंचने में सफलता पा ली थी। उसने आगे की ओर झपट्टा मारा और गणेश के सीने को काट खाया। गणेश ने अपनी तलवार से उसके चेहरे को घायल किया। वह शेरनी भी पीड़ा से छटपटाती हुई पीछे हटी। लेकिन जाते-जाते उसने गणेश के धड़ का मांस चीरकर बाहर निकाल लिया था। नागा का हृदय जो शरीर के पोषण के लिए रक्त प्रवाहित करता था अब व्यर्थ में घावों से रक्त बाहर की ओर फेंक रहा था।

गणेश जानता था कि उसका अंत निकट है। वह बहुत देर तक जीवित नहीं रह सकता। और उसके बाद उसने युद्ध की तीव्र गर्जना सुनी।

'हर हर महादेव!'

एक नर्म, आरामदायक अंधकार गणेश को अपनी ओर खींच रहा था। उसे जागने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा था।

लगभग पचास भयानक सूर्यवंशी योद्धाओं ने उद्यान में आक्रमण कर दिया। वे उन दो अत्यधिक बड़े शेरों पर कूद पड़े थे। पहले से ही दुर्बल उन पशुओं के लिए कोई अवसर ना था और वे बहुत ही जल्द अपने प्राण से हाथ धो बैठे।

आंखों के सामने अंधेरा छाने के बावजूद गणेश को ऐसा लगा कि उसने एक बहुत ही सुंदर स्वरूप वाले को अपनी ओर दौड़ते हुए देखा, जो एक रक्तरंजित तलवार लिए हुए था। उसका गला चमकदार नीला था। उस स्वरूप के पीछे एक कांसई रंग की स्त्री दौड़ती हुई आ रही थी जिसे वह बहुत ही कम देख पा रहा था। एक योद्धा राजकुमारी जिसके ऊपर उस बब्बर शेर का रक्त छितरा हुआ था।

नागा मुस्कुराया। यह सोचकर वह बहुत प्रसन्न था कि उसके संसार के सबसे महत्वपूर्ण लोगों के लिए उसके पास एक शुभ समाचार है।

'आप चिंता ना करें... बाबा,' गणेश ने अपने *पिता* से कहा,

'आपका पुत्र सुरक्षित है... वह छुपा हुआ है... मेरे पीछे।' इतना कहकर गणेश गिर पड़ा। अचेत।

अध्याय 20

तुम अकेले नहीं हो, दादा

गणेश को लगा कि उसे पीड़ा का अनुभव होगा। लेकिन ऐसा कुछ नहीं था।

उसने अपनी आंखें खोलीं। वह मुश्किल से आयुर्वती को देख पा रहा था।

उसने अपने क्षत-विक्षत शरीर पर एक दृष्टि डाली; त्वचा फटकर अलग हो गई थी, शरीर के कई हिस्सों से मांस लटक गया था। शरीर पर जगह-जगह रक्त के थक्के जमे हुए थे, हाथ की हड्डी बाहर निकल आई थी, सीने में गहरा गड्ढा बना हुआ था, छाती की हड्डियां टूट गई थीं और बाहर से दिख रही थीं।

भूमिदेवी कृपा करें। मेरे जीवित रहने का कोई अवसर नहीं।

गणेश अंधकार में फिर डूब गया।

— ⚘ —

उसके सीने में तीव्र पीड़ा हुई। उसने धीरे से अपनी आंखें खोलीं। कठिनाई से।

संकरी सी दरार से आयुर्वती को पट्टी बदलते देख सका।

वह पुनः अनुभव कर सकता था।

एक अच्छी बात। है ना?

वह स्वप्न-जगत में पुनः लौट गया।

— ⚘ —

हल्के से ममता भरा स्पर्श। फिर वह हाथ दूर चला गया। नींद के गोते लगाते गणेश ने सिर हिलाया। वह उस हाथ का स्पर्श पुनः चाहता था। अब वह हाथ उसके मुख को सहला रहा था। उसे धीमे-धीमे थपकी दे रहा था।

गणेश ने अपनी आंखें खोलीं, नाममात्र को। सती उस पर झुकी हुई थी। उसकी आंखें सूजी हुई थीं। लाल।

मां।

किंतु सती ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। संभवतया उसे गणेश की आवाज नहीं सुनाई पड़ी।

गणेश सती के पीछे खिड़की से बाहर देख सकता था। बारिश हो रही थी।

मानसून? मैं कितने समय तक अचेत पड़ा रहा?

गणेश ने खिड़की के निकट ही दीवार पर झुके हुए एक व्यक्ति को देखा। वह एक बहुत ही शक्तिशाली व्यक्ति था, जिनकी साधारणतया चंचल आंखें भावशून्य थीं। एक नीले गले वाला व्यक्ति। एक व्यक्ति जो उसे गहरी दृष्टि से देख रहा था। वह व्यक्ति उसे जानने का प्रयास कर रहा था।

नींद ने गणेश को एक बार फिर अपने आंचल में समेट लिया।

— ⅄ⓄƱ⇑⊛ —

उसकी बांह पर एक गर्म स्पर्श। कोई उसके शरीर पर लेप लगा रहा था।

नागा ने अपनी आंखें धीमे से खोलीं। और वह शरीर पर लेप लगाते उस हाथ को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। वह हाथ जो इतनी कोमलता से उस पर लेप लगा रहा था, किसी स्त्री का नहीं बल्कि किसी शक्तिशाली पुरुप का था।

उसने उस दयावान वैद्य को देखने के लिए अपनी आंखें धीरे से घुमाईं। उसका धड़ सबल और मांसल था। किंतु उसका गला! वह बिलकुल ही भिन्न था। उससे दिव्य नीला प्रकाश प्रस्फुटित हो रहा था।

गणेश भौचक्का रह गया। उसके मुंह से एक निःश्वास निकल गई।

औपधि लगाने वाले हाथ रुक गए। गणेश महसूस कर सकता था कि एक जोड़ी आंखें उसे घूर रही थीं। और उसके बाद नीलकंठ उठे और उस कक्ष से बाहर निकल गए।

गणेश ने अपनी आंखें पुनः मूंद लीं।

— ⅄ⓄƱ⇑⊛ —

अंततः गणेश एक लंबे अंतराल के बाद पुनः जगा। इस बार उसे फिर से निद्रा का आश्रय लेने की आवश्यकता नहीं पड़ी। वह बारिश की बूंदों की टप-टप सुन रहा था।

उसे मानसून बहुत पसंद था। जीवनदान देने वाली धरती की सौंधी सुगंध उसे बहुत पसंद थी। साथ उसे पसंद था बारिश के गिरने का मधुर संगीत।

उसने अपने सिर को हल्का सा बाईं ओर घुमाया।

सती को जगाने के लिए इतना बहुत था। वह तत्काल ही उस कक्ष में एक छोर पर लगी अपनी शय्या से उठी और गणेश के पास पहुंची। उसने एक कुर्सी खींच ली और गणेश के पास बैठ गई।

'तुम कैसे हो, पुत्र?'

गणेश धीरे से मुस्कुराया। उसने अपना सिर थोड़ा और घुमाया। सती मुस्कुराई और उसने अपने पुत्र के चेहरे पर उंगलियां

फेरीं। वह जानती थी कि गणेश को यह बहुत पसंद है।

'कृत्तिका जी?'

'वह अब बहुत अच्छी है,' सती ने कहा, 'वह तुम्हारी तरह

घायल नहीं हुई थी। वास्तव में, वह आयुरालय से स्वस्थ होकर शीघ्र ही चली गई थी। मात्र दो सप्ताह में ही।'

'कितने समय से...'

'तुम यहां कितने समय से हो?'

गणेश ने उत्तर में अपना सिर हिलाया।

'साठ दिन। चेतनावस्था से कभी अंदर कभी बाहर।'

'बारिश...'

'मानसून लगभग समाप्त हो चुका है। नमी ने जटिलता बढ़ा दी थी। इसके कारण उपचार में देरी हुई।'

गणेश ने गहरी श्वास ली। वह थक चुका था।

'तुम सो जाओ,' सती ने कहा, 'आयुर्वती जी का कहना है कि अव तुम स्वस्थ्य हो जाओगे। तुम शीघ्र ही यहां से जा सकोगे।'

गणेश मुस्कुराया और पुनः नींद की गोद में चला गया।

— ⅄@Ʊ4⊛ —

गणेश को अचानक ही जगाया गया। आयुर्वती उसे घूरकर देख रही थी।

'मैं कितनी देर से सो रहा हूं?'

'पिछली वार से? कुछ घंटे। मैंने तुम्हारी माता को घर भेज दिया है। उन्हें आराम की आवश्यकता है।'

गणेश ने सहमति में सिर हिलाया।

आयुर्वती ने तैयार किया हुआ लेप अपेन हाथ में लिया, 'अपना मुंह खोलो।'

गणेश ने उस लेप की खराव गंध पर नाक-भौं सिकोड़ा, 'यह क्या है, आयुर्वती जी?'

'यह पीड़ा को हर लेगा।'

'लेकिन मुझे कोई पीड़ा नहीं है।'

'जव मैं मरहम लगाऊंगी तव पीड़ा होगी। इसलिए अपना मुंह खोलो और इसे अपनी जीभ के नीचे दबाकर रखो।'

आयुर्वती ने औपधि के प्रभावी होने की प्रतीक्षा की। उसके बाद उसने गणेश के सीने की पट्टी खोल दी। उसका घाव नाटकीय ढंग से भर गया था। हड्डियों पर मांस की नई परत आने लगी थी।

'कुछ दिनों में त्वचा साफ हो जाएगी,' संयत स्वर में आयुर्वती ने कहा।

'मैं एक योद्धा हूं,' गणेश मुस्कुराया, 'हमारे शरीर पर साफ त्वचा की तुलना में घावों के निशान अधिक स्वागत योग्य हैं।'

आयुर्वती ने गणेश को गहरी दृष्टि से भाव शून्य होकर देखा। उसके बाद उसने एक कटोरी उठाई।

जैसे ही आयुर्वती ने औपधि का लेप लगाना प्रारंभ किया तो गणेश ने अपनी सांसें रोक लीं। निश्चेतक के बावजूद भी औपधि का लेप चुभ रहा था। आयुर्वती ने शीघ्रता से लेप लगाया और नीम की पत्तियों की पट्टी से उसे तत्काल ही बांध दिया।

आयुर्वती स्फूर्तिवान, प्रभावशाली और दृढ़ता से कार्य करती थी और उसके इन गुणों से गणेश प्रभावित था।

लोकाधीश ने अपनी शक्ति को एकत्र करते हुए एक गहरी श्वास भरी, 'मैंने सोचा भी नहीं था कि मैं जीवित रहूंगा। आपकी प्रतिष्ठा सचमुच ही योग्य है, आयुर्वती जी।'

आयुर्वती ने अपनी त्योरी चढ़ा ली, 'तुमने मेरे बारे में कहां सुना?'

'मैं इच्छावड़ में भी घायल हो गया था और मां ने मुझे बताया था कि आपने मुझे उनसे दोगुना गति से ठीक कर दिया होता। उन्होंने मुझसे कहा था कि आप विश्व की सवसे अच्छी वैद्य हैं।'

आयुर्वती ने अपनी भौंहें ऊपर कीं, 'तुम्हारी जिह्वा में जादू है।

वह किसी को भी मुस्कुराने पर विवश कर सकती है। बिलकुल नीलकंठ की तरह। किंतु यह बड़े खेद की बात है कि तुम्हारा हृदय निष्कलंक नहीं है।'

गणेश मौन साधे रहा।

'मैं बृहस्पति का बहुत सम्मान करती थी। वे ना केवल एक अच्छे व्यक्ति थे, बल्कि वे ज्ञान के स्रोत भी थे। समय से पहले जब उनकी मृत्यु हुई तो पूरा विश्व इससे पीड़ित हुआ है।'

गणेश ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसकी संतप्त आंखें वैद्य की आंखों में गहरे देख रही थीं।

'अब मुझे वह बाजू देखने दो,' आयुर्वती ने कहा।

उसने झटका देकर पट्टी को खोल दिया। इतनी कड़ाई से कि वह चुभे, किंतु इतनी कोमलता से कि वह कोई गंभीर हानि ना पहुंचा सके।

गणेश के मुख पर पीड़ा की शिकन तक नहीं आई।

— ⅄⦶Ʊ⇡⊛ —

दूसरे दिन गणेश उठा तो उसने अपनी मां और मौसी को उस कक्ष में फुसफुसाते हुए देखा।

'मां, मौसी,' गणेश फुसफुसाया।

दोनों ही बहनें उसकी ओर मुड़कर मुस्कुराईं।

'क्या तुम्हें खाने या पीने के लिए कुछ चाहिए?' सती ने पूछा।

'हां, मां। किंतु क्या मैं आज टहलने के लिए बाहर जा सकता हूं? मैं पिछले साठ दिनों से सो रहा हूं। यह बहुत ही कष्टदायक है।'

काली मुस्कुराई, 'मैं आयुर्वती जी से बात करूंगी। अभी लेटे रहो।'

जब काली आयुर्वती से बात करने के लिए बाहर निकल गई तो सती ने एक कुर्सी खींची और गणेश के निकट बैठ गई।

'मैं तुम्हारे लिए पराठे लेकर आई हूं,' सती ने गजदंत का एक छोटा सा बक्सा खोलते हुए कहा जो वह अपने साथ लेकर आई हुई थी।

गणेश का चेहरा खिल उठा। उसकी मां के हाथ से बने हुए भरवां पराठे उसे बहुत पसंद थे। लेकिन उसकी मुस्कुराहट उतनी ही तेजी से चली गई जितनी तेजी से वह आई थी क्योंकि उसे याद हो आया था कि उसके सौतेले पिता शिव को भी वे बहुत पसंद थे।

आयुर्वती ने गणेश के खाना खाने के पहले कुल्ला करने के लिए जिस द्रव्य को निर्धारित किया था, उसे ढूंढ़ने के लिए सती उठी।

'क्या पिताजी आपके महल में लौट आए हैं, मां?'

सती ने औषधियों की आलमारी के पास से गणेश को देखा,'अब तुम इन सब चीजों के बारे में चिंता मत करो।'

'उन्होंने आपसे बोलना शुरू किया है या नहीं?'

'तुम्हें इसके बारे में चिंता करने की आवश्यकता नहीं है,' सती ने गणेश की ओर आते हुए कहा।

नागा छत को घूर रहा था। अपराध बोध से उसका हृदय छलनी हुआ जा रहा था। उसने अपनी आंखें संकुचित कीं, 'क्या उन्होंने...'

'हां, वे आए थे,' सती ने उत्तर दिया, 'शिव प्रत्येक दिन तुम्हारा परीक्षण करने आते रहे हैं। किंतु मुझे नहीं लगता कि वे आज के बाद से यहां आएंगे।'

गणेश दुखी मन से मुस्कुराया और अपने होंठ काटने लगा। सती ने उसके सिर पर थपकी दी, 'सही समय आने पर सबकुछ ठीक हो जाएगा।'

'काश मैं मंदार पर्वत पर होने वाली घटना का वर्णन कर पाता कि वहां क्या हुआ था। काश मैं बता पाता कि वह क्यों हुआ था। मैं नहीं जानता कि वे मुझे क्षमा करेंगे या नहीं, किंतु कम से कम वे समझेंगे अवश्य।'

'काली ने मुझे थोड़ा-बहुत बताया है। मैं कुछ-कुछ समझ पा रही हूं। किंतु बृहस्पति जी! वे एक महान व्यक्ति थे। जब उनकी मृत्यु हुई तो जगत ने कुछ खो दिया। यहां तक कि मैं भी पूरी तरह से नहीं समझ पाई हूं। और शिव उनको अपने भाई के समान प्रेम करते थे। हम

उनसे इसे समझने की आशा भी कैसे कर सकते हैं?'

गणेश ने सती को दुख भरी आंखों से देखा।

'परंतु तुमने कार्तिक के जीवन की रक्षा की है,' सती ने कहा,'तुमने मेरी रक्षा की है। मैं जानती हूं कि यह शिव के लिए बहुत बड़ी बात है। उन्हें समय दो। वे अवश्य संभल जाएंगे।'

गणेश मौन बना रहा, स्पष्ट रूप से संशयी।

— ⅄ⓌƱ⇡⊛ —

दूसरे दिन आयुर्वती की अनुमति से अथिथिग्व के भव्य महल के उद्यान में थोड़ी देर टहलने के लिए गणेश आयुरालय के कक्ष से बाहर निकला। काली के कंधे का सहारा लेकर गणेश धीरे-धीरे टहल रहा था। उसके दूसरे हाथ में एक डंडा था जिस पर उसने अपना लगभग सारा का सारा वजन डाल रखा था। वह अकेले ही टहलना चाहता था, किंतु काली ने उसकी नहीं सुनी। जब वे उद्यान में पहुंचे तो उन्होंने लोहे के टकराने की ध्वनि सुनी।

गणेश ने अपनी आंखें सिकोड़ीं, 'कोई अभ्यास कर रहा है। बहुत ही कठिन अभ्यास कर रहा है।'

काली मुस्कुराई। वह जानती थी कि गणेश को एक योद्धा को अभ्यास करते देखना बहुत ही भाता है, 'चलो, चलें।'

नागा रानी ने गणेश की सहायता करके उसे उद्यान के मध्य भाग में पहुंचा दिया। इस बीच गणेश उस अभ्यास की आ रही ध्वनि के आधार पर उसकी गुणवत्ता पर टिप्पणी कर रहा था। 'बहुत ही तेज गति। ये इस्पात की तलवारें हैं, जो अभ्यास के लिए नहीं होती हैं। सधे हुए योद्धा ही इससे द्वंद्वयुद्ध कर सकते हैं।'

काली गणेश को बाड़े वाले प्रवेशद्वार की ओर ले गई।

जैसे ही वे उस प्रांगण में प्रविष्ट हुए तो गणेश हिचककर रुक गया। काली ने उस पर अपनी पकड़ मजबूत बना ली, 'चिंता मत करो। वह संकट में नहीं है।'

कुछ दूरी पर कार्तिक पर्वतेश्वर के साथ एक भयंकर द्वंद्वयुद्ध में भिड़ा हुआ था। वह तीन वर्ष का बालक जो भले ही सात वर्ष का दिखता था, विशालकाय पर्वतेश्वर के सामने अत्यंत ही छोटा लग रहा था। मेलूहा के सेनापति अपनी तलवार बहुत ही तेज और कड़ाई से लहरा रहे थे। किंतु कार्तिक उससे बचने के लिए अपने छोटे आकार का उपयोग बहुत ही प्रभावी और ध्वंसात्मक रूप में कर रहा था। वह नीचे झुका ताकि पर्वतेश्वर को अपनी तलवार के साथ नीचे झुकने पर विवश होना पड़े। वह एक ऐसी कुशल रणनीति थी जो अत्यधिक दक्ष तलवारधारी की समझ से भी परे थी। कोई भी व्यक्ति बौने से संघर्ष करने में प्रशिक्षित नहीं किया जाता। कार्तिक में तीव्र गति और सटीकता से तलवार को भोंकने और लहराने की क्षमता थी। उसने अपनी तलवार इस प्रकार से लहराई जो किसी भी वयस्क व्यक्ति के लिए रोकना असंभव था। कुछ ही पलों में कार्तिक तीन घातक प्रहार करने से रुका था, जो मेलूहा के सेनापति के निचले धड़ पर लग सकते थे।

गणेश विस्मय से मुंह बाये खड़ा था।

'जब से तुम घायल हुए हो, वह प्रतिदिन अभ्यास कर रहा है,' काली ने कहा।

गणेश इस बात पर भी आश्चर्यचकित था कि कार्तिक ऐसी कला का प्रदर्शन कर रहा था जो मुट्ठी भर योद्धा ही कर पाते हैं, 'कार्तिक एक साथ दो तलवारों का उपयोग कर रहा है।'

'हां,' काली मुस्कुराई, 'वह ढाल का उपयोग नहीं करता। वह अपने बाएं हाथ से भी प्रहार करता है। वह बालक कहता है कि आक्रमण ही सबसे अच्छी सुरक्षा होती है!'

गणेश ने सती का तेज स्वर सुना, 'रुकें!'

वह अपनी माता को देखने के लिए मुड़ा जो कोने में एक ऊंचे स्थान पर खड़ी हुई थी।

'आपको बाधा पहुंचाने के लिए क्षमा करें, पित्रतुल्य,' सती ने पर्वतेश्वर से कहा, 'किंतु, संभवतया कार्तिक अपने दादा से मिलने का इच्छुक हो।'

पर्वतेश्वर ने गणेश की ओर देखा। मेलूहा के सेनापति ने सती के बड़े पुत्र को स्वीकार नहीं किया था, उसने अपना सिर तक नहीं हिलाया और केवल पीछे हट गया।

कार्तिक गणेश को अपनी ओर धीरे-धीरे आता देख मुस्कुराया। कार्तिक में आए इस परिवर्तन को देख गणेश हैरान था। उसकी आंखों में किसी नन्हे वालक सी निर्दोपता अव नहीं रही। उनमें दृढ़ता थी। विशुद्ध, विना मिलावट वाली लौह सी दृढ़ता।

'तुम वहुत ही अच्छी लड़ाई करते हो, भाई,' गणेश ने कहा,'मुझे नहीं पता था।'

कार्तिक ने अपने भाई को कसकर गले लगा लिया। उस आलिंगन से गणेश के घाव पीड़ा देने लगे, किंतु उसने ना तो सिसकारी भरी और ना ही पीछे हटा।

वालक पीछे हटा, 'आप अव कभी भी अकेले युद्ध नहीं करोगे दादा। कभी नहीं।'

गणेश मुस्कुराया और उसने अपने नन्हे भाई को एक वार फिर अपने गले लगा लिया। उसकी आंखें नम थीं।

नागा ने देखा कि सती और काली चुप थे। उसने पर्वतेश्वर को देखने के लिए दृष्टि घुमाई जो द्वार की ओर थे। पर्वतेश्वर ने अपनी मुट्ठी को छाती पर मारा और नीचे की ओर झुका। उसने मेलूहा के सैनिक नमस्ते को पूरा किया। गणेश उस दिशा में मुड़ा जिधर पर्वतेश्वर देख रहे थे।

द्वार पर शिव खड़े थे। उन्होंने अपनी वांहें छाती पर मोड़ रखी थीं। उनका मुख भावहीन था। उनके वाल हवा में लहरा रहे थे और उनके वस्त्र हवा से फड़फड़ा रहे थे। वे गणेश को एकटक देख रहे थे।

गणेश अभी भी कार्तिक को आलिंगन किए हुए था। उसने झुककर नीलकंठ के सम्मान में नमस्ते किया। जव वह सीधा हुआ तो शिव वहां नहीं थे।

'वह इतना बुरा व्यक्ति नहीं भी हो सकता है, शिव,' वीरभद्र ने गांजा के धुएं को अंदर लेते हुए कहा।

शिव ने भावहीन मुख से देखा। नंदी ने वीरभद्र को आकस्मिक भय से देखा।

किंतु वीरभद्र हठ करता रहा, 'हमें उसके वारे में कुछ भी नहीं पता है, शिव। मैंने परशुराम से वात की है। वह गणेश ही था जिसने उसे अन्याय के विरुद्ध युद्ध करने में हर प्रकार से सहायता की थी। ऐसा हुआ था कि जव व्रंगाओं ने उस पर आक्रमण किया तो परशुराम वहुत ही गंभीर रूप से घायल हो गया। गणेश ही था जिसने उस घायल व्राह्मण को मधुमती के तट पर वचाया था। परशुराम की कहानी सुनने के वाद गणेश ने भी सौगंध ली थी कि उससे जो संभव हो पाएगा वह उसकी सहायता में करेगा।'

शिव ने विना कुछ कहे वीरभद्र से चिलम ली और एक गहरा कश लिया।

'आप जानते हैं कि कृत्तिका ने क्या कहा। कार्तिक की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की लगभग वलि देकर गणेश ने इस तरह से युद्ध किया था जैसे उसे कार्तिक की रक्षा करने के लिए ही वनाया गया हो। कृत्तिका को चरित्र की अच्छी पहचान है। वह कहती है कि गणेश का हृदय खरा सोना है।'

धुआं छोड़ते हुए शिव चुप्पी साधे रहा।

'मैंने रानी काली से सुना है,' वीरभद्र ने कहना जारी रखा, 'कि वह गणेश ही था, जिसने उस नागा औपधि की व्यवस्था की थी जिसने जन्म के समय कार्तिक की जान वचाई।'

शिव ने उसकी ओर आश्चर्य में देखा। उसने अपनी आंखें संकुचित कीं, 'वह एक विचित्र आदमी है। मुझे नहीं पता कि मैं उसे क्या समझूं। उसने मेरे पुत्र की जान वचाई है। दो वार, यदि मैं तुम्हारा विश्वास करूं। उसने मेरी पत्नी की भी इच्छावड़ में रक्षा की थी। इन सबके लिए मुझे उससे लगाव होना चाहिए। किंतु जब मैं उसे देखता हूं तो मेरे कानों में बृहस्पति की गुहार गूंजती है। और उसके बाद मैं बस उसका सिर काट देना चाहता हूं।'

वीरभद्र ने शिव को अप्रसन्नता से देखा।

नीलकंठ ने अपना सिर हिलाया, 'किंतु मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूं जिनसे मैं निश्चित रूप से उत्तर पाना चाहता हूं।'

वीरभद्र ने अपने मित्र की ओर देखा। वह उनकी सोच को पढ़ सकता था, 'महाराज से?'

'हां,' शिव ने कहा, 'उनकी सहमति के विना काली और गणेश को त्यागा नहीं गया होगा।'

नंदी ने अपने महाराज का पक्ष लिया, 'किंतु प्रभु, सम्राट दक्ष के पास कोई विकल्प नहीं था। वह एक कानून है। एक नागा शिशु मेलूहा में नहीं रह सकता।'

'तो फिर क्या ऐसा नहीं है कि नागा की मां को भी समाज छोड़ना पड़ता है? और क्या किसी मां को उसके बच्चे के बारे में सच नहीं बताना चाहिए?' शिव ने पूछा, 'विधियों का विशिष्ट रूप से चयन नहीं किया जा सकता।'

नंदी मूक वना रहा।

'सम्राट का सती के प्रति जो प्रेम है, उस पर मुझे कोई संदेह नहीं,' शिव ने कहा, 'किंतु क्या उन्हें कभी इस बात का आभास हुआ कि पुत्र को दूर रखकर उन्होंने सती को कितना कष्ट पहुंचाया?'

वीरभद्र ने सहमति में सिर हिलाया। 'उन्होंने यह तथ्य उससे पूरे जीवन छुपाकर रखा। उन्होंने उसकी जुड़वा बहन के सच को भी छुपाकर रखा। मैं सदैव ही सोचता था कि उन्होंने जिस तरह कार्तिक के जन्म के समय उसके शरीर का परीक्षण किया था, वह बहुत विचित्र था। अव उसका अर्थ मुझे समझ में आ रहा है। जिस प्रकार से उन्होंने वह कार्य किया था उससे स्पष्ट पता चलता है कि उन्होंने एक अन्य नागा के जन्म की आशा की थी।'

'ह ऽ म,' वीरभद्र ने कहा।

'मुझे एक और घृणास्पद अनुभूति हो रही है कि कहानी यहीं समाप्त नहीं होती।'

'आपके कहने का क्या अर्थ है?'

'मेरा संदेह है कि चंदनध्वज की मृत्यु प्राकृतिक नहीं थी।'

'उनका पहला पति?'

'हां। यह मान लेना वहुत ही सरल है कि वे उसी दिन डूब मरे जिस दिन गणेश का जन्म हुआ।'

'प्रभु!' नंदी ने हैरानी से कहा, 'किंतु यह सच नहीं हो सकता। यह तो एक अपराध है। कोई भी सूर्यवंशी शासक इतना नीचे नहीं गिर सकता।'

'मुझे पक्के तौर पर नहीं पता है, नंदी,' शिव ने कहा, 'मुझे ऐसी अनुभूति हो रही है, बस। याद रखो कि कोई भी अच्छा या बुरा नहीं है। वे या तो शक्तिशाली होते हैं या फिर दुर्वल। शक्तिशाली व्यक्ति अपनी नैतिकताओं पर टिके रहते हैं, चाहे कितनी ही परीक्षा हो या संकट आएं। दुर्वल व्यक्ति अधिकतर समय इस बात का अनुभव भी नहीं करते कि वे कितना नीचे गिर चुके हैं।'

नंदी चुप रहा।

वीरभद्र ने शिव की ओर देखा, 'यदि जो आप सोच रहे हैं, वह सच निकले तो मुझे कोई आश्चर्य नहीं होगा। संभव है कि महाराज ने सोचा कि वे सती के लिए अच्छा कर रहे हैं।'

अध्याय 21

मयका का रहस्य

इस बात को तीन महीने हो चुके थे जब गणेश ने कार्तिक की रक्षा की। यद्यपि वह अभी भी लंगड़ाकर चल रहा था, फिर भी वह जानता था कि पंचवटी लौटने का समय आ गया है। लगभग एक महीने से वह पूर्णतया सचेत था। जब वह सोकर उठता तो उसे अपनी मां की पीड़ा याद आती। शिव एवं सती के मध्य आई यह दरार उसके लिए असह्य थी। जहां तक उसका अपना प्रश्न था, केवल एक ही मार्ग शेष था कि वह चला जाए।

'कल हमें निकल जाना चाहिए, मौसी,' गणेश ने कहा।

'तुमने अपनी मां को बता दिया है?' काली ने पूछा।

'मैं उनके लिए एक पत्र लिखकर रख दूंगा।'

काली ने अपनी आंखें संकुचित कीं।

'वे मुझे जाने नहीं देंगीं, चाहे वह कितना भी आवश्यक क्यों ना हो।'

काली ने एक गहरी श्वास भरी, 'तो इस प्रकार तुम उसे ऐसे ही भूल जाओगे?'

गणेश दुखी होकर मुस्कुराया, 'मुझे पिछले कुछ महीनों में ही उनका इतना लाड़ मिल चुका है कि वह मेरे जीवन भर के लिए पर्याप्त होगा। मैं अपनी यादों पर जीवित रह सकता हूं। किंतु वे नीलकंठ के बिना नहीं रह सकतीं।'

— ⅄ⓄƱ✦⊛ —

चिंतित शिव अथिथिग्व का स्वागत करने के लिए उठ खड़ा हुआ। इससे पूर्व काशी नरेश ने ब्रंगाओं की बस्ती में कभी भी कदम नहीं रखा था। वे सदैव ही नीलकंठ के लिए उस बस्ती के बाहर प्रतीक्षा करते थे।

'क्या बात है, महाराज?'

'प्रभु, मैंने अभी-अभी यह संदेश प्राप्त किया है कि सम्राट दक्ष काशी पधारने वाले हैं।'

शिव ने त्योरी चढ़ाई, 'ऐसी क्या बात हुई, मैं नहीं समझ पा रहा। यदि आपने आज संदेश पाया है तो मुझे पक्का विश्वास है कि सम्राट दो या तीन महीने से पहले यहां नहीं पहुंच सकते।'

'नहीं, प्रभु। वे आज ही पहुंच रहे हैं। कुछ ही घंटों में। मैंने उनके अग्रणी दल से यह संदेश प्राप्त किया है।'

शिव ने अपनी भौंह को ऊपर चढ़ाया। वह इतना आश्चर्यचकित हुआ कि उसके पास अभिव्यक्त करने के लिए शब्द नहीं बचे थे।

'प्रभु,' अथिथिग्व ने कहा, 'मैं आपसे यह कहने की प्रार्थना करना चाहता था कि आप शेरासन कक्ष में पधार कर अपने उचित स्थान को ग्रहण करें ताकि हम सम्राट के आने पर उनका स्वागत कर सकें।'

'मैं आऊंगा,' शिव ने कहा, 'किंतु कृपया सुनिश्चित करें कि वहां केवल आप ही हों। मैं आपके किसी और सभासद के साथ उनका स्वागत नहीं करना चाहता।'

यह अपारंपरिक था। अथिथिग्व ने त्योरी चढ़ाई, किंतु वे शिव की असाधारण मांग पर प्रश्न नहीं उठा सके। वे उस आदेश का पालन करने के लिए वहां से निकल पड़े।

'नंदी, पर्वतेश्वर और भगीरथ को भी संदेश दे दिया गया होगा,' शिव ने कहा, 'कृपया उन्हें मेरी ओर से यह संदेश भिजवा दें कि वे

राजसभा में तत्काल ना जाएं। हम लोग महाराज का औपचारिक स्वागत कुछ समय बाद करेंगे।'

'जैसी प्रभु की आज्ञा।' नंदी ने कहा और वहां से निकल गया।

वीरभद्र ने शिव से फुसफुसाकर कहा, 'आप सोचते हैं कि वे जानते हैं?'

'नहीं। मैं उनके बारे में अगर कुछ जानता हूं तो वह यह कि यदि उन्हें पता होता कि काली और गणेश यहां हैं तो वे यहां नहीं आते। वे यहां शीघ्रता में आए हैं, बिना किसी शिष्टाचार संबंधी बातों का ध्यान रखे। यह कार्य एक पिता का है, किसी सम्राट का नहीं। वे संभवतया सती और कार्तिक से मिलने को आतुर हैं।'

'आप क्या करना चाहते हैं? इसे जाने देंगे या सच को जानकर रहेंगे?'

'मैं उसे यूं ही नहीं जाने दूंगा। यद्यपि उसकी बात पर विश्वास करना अब मेरे लिए कठिन है। मैं सच जानना चाहता हूं।'

वीरभद्र ने सहमति में सिर हिलाया।

'मैं सती के लिए यह आशा करता हूं,' शिव ने कहा, 'कि मेरा संदेह गलत सिद्ध हो। काश, वे कुछ ना जानते हों। और जो भी हुआ वह मयका के प्रशासकों ने कानून का पालन करते हुए किया था।'

'किंतु आपको डर है कि आप सही हैं?' वीरभद्र ने पूछा।

'हां।'

'और उस दिन वास्तव में क्या हुआ था, उसके बारे में जानने के लिए आप अब क्या करना चाहेंगे?'

'उनका सामना करवाना होगा। अचानक ही उनसे पूछना होगा। ऐसा करने के लिए यह उचित अवसर है।'

वीरभद्र ने त्योरी चढ़ा ली।

'मैं काली और गणेश को अचानक ही उनके सामने उपस्थित करवाने वाला हूं,' शिव ने कहा, 'उनका चेहरा स्वयं ही सबकुछ बता देगा।'

— ⁂ —

'महाराज यहां क्या कर रहे हैं?' पर्वतेश्वर ने पूछा, 'किसी ने भी उनके यहां आगमन के बारे में मुझे इससे पहले नहीं बताया। काशी ऐसा कैसे कर सकता है? यह शिष्टाचार का उल्लंघन है।'

'कोई भी इस बात को नहीं जानता था, सेनापति जी,' नंदी ने कहा, 'यहां तक कि राजा अथिथिग्व को यह समाचार अभी-अभी ही प्राप्त हुआ है। मेलूहा ने इससे पहले कोई संदेश नहीं भेजा था।'

पर्वतेश्वर हक्का-बक्का रह गया। मेलूहा की कूटनीति की प्रक्रिया में ऐसी गलती उसने आज तक कभी नहीं सुनी थी।

भगीरथ ने अपना कंधा उचकाकर कहा, 'सभी राजा एक जैसे ही होते हैं।'

आचार-व्यवहार एवं शिष्टाचार के अभाव के बारे में अपने शासक के संबंध में इस प्रकार के व्यंग्य को पर्वतेश्वर ने अनसुना कर दिया। उसने नंदी से कहा, 'प्रभु नीलकंठ हमें शेरासन कक्ष में ना आने के लिए क्यों कह रहे हैं?'

'मैं नहीं बता सकता, प्रभु,' नंदी ने कहा, 'मैं मात्र उनके आदेश का पालन कर रहा हूं।'

पर्वतेश्वर ने सिर हिलाया, 'ठीक है। हम लोग यहीं रुकेंगे, जब तक कि प्रभु हमें नहीं बुलाते।'

— ⁂ —

'शिव को काली से मिलने के अनेक कारण हो सकते हैं। किंतु गणेश से क्यों? क्या हो रहा है?' सती ने अपनी त्योरी चढ़ाकर पूछा।

वीरभद्र पूरी तरह से भ्रमित हो गया था। काली के कक्ष में ना केवल गणेश उपस्थित था बल्कि सती भी वहीं थी। दक्ष के काशी में उपस्थित होने की स्थिति में उसे काली और गणेश को शेरासन कक्ष में शीघ्रातिशीघ्र उपस्थित कराना था। इससे पहले कि दक्ष अपनी नागा पुत्री और नागा नाती की उपस्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त कर लें। समय महत्वपूर्ण था। यदि उनकी अचानक उपस्थिति से कोई प्रभाव पड़ना था तो इसे तत्काल होना आवश्यक था। वीरभद्र के पास कोई विकल्प नहीं था और शिव द्वारा उन्हें बुलाए जाने की घोषणा उसे करनी पड़ी।

'मैं मात्र आदेश का पालन कर रहा हूं, देवी।'

'आदेश का पालन करने का अर्थ यह नहीं कि आप कुछ नहीं जानते हैं कि क्या हो रहा है।'

'वे उन्हें कुछ दिखाना चाहते हैं।'

'भद्र,' सती ने कहा, 'मेरे पति आपके सबसे अच्छे मित्र हैं। आप मेरी सबसे अच्छी मित्र के पति हैं। मैं आपको जानती हूं। मैं जानती हूं कि आप इससे अधिक जानते हैं। मैं अपने पुत्र को तब तक नहीं जाने दूंगी, जब तक कि आप मुझे सही कारण नहीं बताते।'

वीरभद्र ने सती की इस हठ पर अपना सिर हिलाया। उनकी अस्थायी दूरी के बावजूद वह देख सकता था कि किस वस्तु ने शिव को सती की ओर खींचा था, 'देवी, आपके पिता यहां है।'

सती आश्चर्यचकित थी। अंशतः अपने पिता की अघोषित उपस्थिति के कारण और उससे भी अधिक शिव द्वारा काली और गणेश को दक्ष से मिलाने के लिए बुलावा भेजने के कारण।

शिव के दिल में कहीं ना कहीं यह भाव अवश्य है कि मेरी बहन और मेरे पुत्र के साथ अन्याय हुआ है।

'क्या तुम जाना चाहती हो?' सती ने काली से पूछा।

नागा रानी ने अपनी आंखें संकुचित कीं। उसका हाथ उसकी तलवार की मूंठ पर था, 'हां! जंगली अश्व भी मुझे जाने से नहीं रोक सकते।'

सती अपने पुत्र की ओर मुड़ी। वह इस प्रकार का टकराव नहीं चाहता था। वह नहीं चाहता था कि सच उजागर हो। जो उसकी मां को और अधिक चोट पहुंचाने वाला था। उसने अपना सिर हिलाया। वह नहीं जाना चाहता था।

काली ने आश्चर्य से कहा, 'क्यों? तुम किस बात से डर रहे हो?'

'मैं यह नहीं चाहता, मौसी,' गणेश ने उत्तर दिया।

'किंतु मैं चाहती हूं!' सती ने कहा, 'तुम्हारी उपस्थिति नब्बे वर्षों से मुझसे छुपाकर रखी गई थी।'

'किंतु वे नियम थे, मां,' गणेश ने कहा।

'नहीं, नियम यह है कि एक नागा बालक मेलूहा में नहीं रह सकता है। किसी मां से सच छुपाना नियम का हिस्सा नहीं है। यदि मैं जानती तो मैं भी मेलूहा को छोड़ चुकी होती।'

'यदि नियम तोड़े भी गए थे, तो वे अतीत बन चुके हैं। कृपा कर मां इसे भूल जाएं।'

'नहीं, मैं नहीं भूलूंगी। मैं भूल नहीं सकती। मैं जानना चाहती हूं कि वे कितना जानते थे। और यदि वे जानते थे तो उन्होंने झूठ क्यों कहा? अपने नाम की रक्षा के लिए? ताकि कोई उन्हें नागाओं के जनक के रूप में दोषी ना बता सके? ताकि वे शासक बने रहें?'

'मां, इस प्रकार हमारे हाथ कुछ नहीं आएगा,' गणेश ने कहा।

काली हंसने लगी। गणेश तिलमिलाते हुए उनकी ओर मुड़ा।

'जब तुम पूरे भारतवर्ष में सती का सामना करने के लिए मारे-मारे फिर रहे थे, तब मैंने तुमसे यही कहा था,' काली ने कहा,'और तुमने क्या कहा था। तुम उत्तर चाहते थे। तुम यह जानना चाहते थे कि तुम्हारी मां के साथ तुम्हारा क्या संबंध था और जब तक तुम्हें इसका उत्तर नहीं मिल जाता तुम्हें शांति नहीं मिल पाएगी। तभी तुम्हें पूर्णता प्राप्त होगी। तो फिर तुम्हारी मां अपने पिता से वैसी ही आशा क्यों नहीं कर सकती?'

'किंतु यह पूर्णता नहीं है, मौसी,' गणेश ने कहा, 'यह मात्र टकराव और पीड़ा है।'

'पूर्णता मात्र पूर्णता ही है, मेरे बच्चे,' काली ने कहा, 'पूर्णता कभी प्रसन्नता देती है और कभी पीड़ा। तुम्हारी मां को ऐसा करने का अधिकार है।' यह कहते हुए काली सती की ओर मुड़ी, 'क्या तुम निश्चित हो कि तुम यह करना चाहती हो, दीदी?'

'मुझे उत्तर चाहिए,' सती ने कहा।

वीरभद्र ने थूक निगल लिया, 'देवी, शिव ने केवल रानी काली एवं गणेश के लिए ही कहा है। आपके लिए नहीं।'

'मैं भी चल रही हूं, भद्र,' सती ने कहा, 'और आप भी इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि मुझे अवश्य जाना चाहिए।'

वीरभद्र ने नीचे की ओर देखा। सती का कहना उचित था। उन्हें वहां रहने का अधिकार था।

'मां...' गणेश फुसफुसाया।

'गणेश, मैं जा रही हूं,' सती ने दृढ़ता से कहा, 'तुम चाहो तो आ सकते हो। विकल्प तुम्हारा है। किंतु तुम मुझे रोक नहीं सकते।' लोकाधीश ने एक गहरी श्वास ली। अपने अंगवस्त्रम को अपने कंधे पर खींचकर ठीक किया और कहा, 'हे वीर वीरभद्र, हमें मार्ग दिखाएं।'

'महाराज, आपको यहां अचानक देखना बहुत ही सुखद आश्चर्य है,' अथिथिग्व ने भारत के सम्राट के सम्मान में झुकते हुए कहा।

दक्ष ने सिर हिलाया, जैसे ही वे राजसभा के उपकक्ष में प्रविष्ट हुए, 'यह मेरा साम्राज्य है, अथिथिग्व। मेरे विचार से कभी-कभी मुझे भी लोगों को हैरान करने का अवसर मिलना चाहिए।'

अथिथिग्व मुस्कुराए। दक्ष के साथ उनकी पत्नी वीरिनी भी थीं। उनके पीछे प्रसिद्ध अनिष्टनेमी योद्धा मायाश्रेनिक और विद्युन्माली तत्परता से चल रहे थे। स्वद्वीप से पर्वतेश्वर की अनुपस्थिति के कारण मायाश्रेनिक को अस्थायी तौर पर मेलूहा का सेनापति पदस्थ कर दिया गया था।

जब दक्ष मुख्य शेरासन कक्ष में पहुंचे तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि वहां सामान्यतया उपस्थित रहने वाले सभा के सदस्य एवं अन्य अधिकारी अनुपस्थित थे। वहां मात्र शिव एवं नंदी थे। नंदी ने तत्काल ही अपनी मुट्ठी को सीने से लगाया और सम्राट के सम्मान में नीचे झुका। दक्ष नंदी पर मित्रतापूर्ण ढंग से मुस्कुराया।

शिव ने नमस्ते की मुद्रा में अपने हाथ जोड़े किंतु वह अपने शेरासन पर बैठा रहा, 'काशी में आपका स्वागत है, महाराज।'

दक्ष की मुस्कुराहट अदृश्य हो गई। वह समस्त भारत का सम्राट था। वह सम्मान का पात्र था। यहां तक कि यदि शिव नीलकंठ भी थे तो भी शिष्टाचार की मांग थी कि उसे सम्राट के सम्मान में उठना चाहिए था। इससे पूर्व शिव ने भी सदैव ऐसा ही किया था। यह अपमानजनक था।

'आप कैसे हैं दामाद जी?' दक्ष ने अपने क्रोध को काबू में रखने का प्रयास करते हुए कहा।

'मैं ठीक हूं, महाराज। आप मेरी बगल में आकर क्यों नहीं बैठते?'

दक्ष बैठ गया। अथिथिग्व और वीरिनी भी बैठ गए।

अथिथिग्व की ओर मुड़कर दक्ष ने कहा, 'ऐसे शोरगुल वाले नगर में ऐसा प्रतीत होता है कि आपकी राजसभा बहुत ही शांत रहती है, अथिथिग्व।'

अथिथिग्व मुस्कुराया, 'नहीं, महाराज, यह तो बस...'

'मुझे बीच में ही टोकने के लिए क्षमा करें, महाराज,' दक्ष की ओर मुड़ने के पहले शिव ने अथिथिग्व से कहा, 'मैंने सोचा कि अपने बच्चों के साथ आपकी भेंट यदि निजी हो तो अच्छा रहेगा।'

वीरिनी तत्काल ही बोल पड़ी, 'वे कहां हैं, प्रभु नीलकंठ?'

ठीक उसी समय वीरभद्र ने प्रवेश किया। सती उसके पीछे थी।

'मेरी बच्ची!' शिव की ओर से किए गए अपमान को भूलते हुए मुस्कुराते हुए दक्ष ने कहा, 'तुम मेरे नाती को अपने साथ क्यों नहीं लाई?'

'मैं लाई हूं,' सती ने कहा।

गणेश ने कक्ष में प्रवेश किया। उसके पीछे काली थी।

शिव दक्ष के मुख को लगातार घूर रहा था। मेलूहा के सम्राट की आंखें पहचान की मुद्रा में अचानक ही बड़ी हो गईं। उनके जबड़े हैरानी में खुल गए।

वे जानते हैं!

उसके बाद दक्ष ने बड़ी मुश्किल से स्वयं को संभाला।

वे भयभीत हैं। वे कुछ छुपा रहे हैं।

शिव ने वीरिनी के भावों को भी देखा। उनके मुख पर अत्यंत दुख था। उनकी भौंहे जुड़ी हुई थीं किंतु उनके होंठ थोड़े टेढ़े हो मुस्कुराने की कगार पर थे। उनकी आंखें नम थीं।

वे भी जानती हैं। और वे उनसे प्रेम करती हैं।

दक्ष अथिथिग्व की ओर मुड़ा और उस पर क्रोध से बिगड़ पड़ा,'आपने आतंकियों के साथ मित्रता करने की हिम्मत कैसे की, काशी नरेश?'

'वे आतंकी नहीं हैं,' सती ने कहा, 'आतंकी निर्दोषों की हत्या करते हैं। काली और गणेश ने ऐसा कभी नहीं किया।'

'क्या अब सती काशी नरेश के लिए बोलने लगी है?'

'आप उनसे बात मत करें, पिताजी,' सती ने कहा, 'मुझसे बात करें।'

'किसलिए?' दक्ष ने काली और गणेश की ओर संकेत करते हुए कहा, 'तुम्हें उनसे क्या लेना-देना है?'

'सबकुछ! उनका स्थान मेरे साथ है। उन्हें सदैव से ही मेरे साथ होना चाहिए था।'

'क्या? अधम नागाओं का तो एकमात्र स्थान है। नर्मदा के दक्षिण में! उन्हें सप्त सिंधु में आने की अनुमति नहीं है!'

'मेरी बहन और मेरा पुत्र अधम नहीं हैं। वे मेरे रक्त हैं! आपके रक्तअंश हैं!'

दक्ष उठ खड़ा हुआ और सती के निकअ गया, 'बहन! पुत्र! यह क्या बकवास है! ये दुष्ट जो कहते हैं उन बकवासों पर विश्वास मत करो। निस्संदेह वे मुझसे घृणा करते हैं। वे मुझे बदनाम करने के लिए कुछ भी कह सकते हैं। मैं उनका सबसे बड़ा शत्रु हूं! मैं मेलूहा का शासक हूं! उन्हें नष्ट करने के लिए सौगंध लिए हुए!'

काली ने अपनी तलवार पकड़ ली, 'मैं अभी इसी वक्त तुम्हें अग्नि परीक्षा की चुनौती देने की इच्छा रखती हूं, ऐ घृणास्पद बकरे!'

'तुम्हें कुछ शर्म भी है या नहीं,' दक्ष काली पर चिल्लाया, 'एक पिता और पुत्री के मध्य संबंध बिगाड़ने के बजाय जाकर अपने पिछले जन्म के कर्मों का पश्चाताप करो! तुमने इसे मेरे बारे में क्या-क्या झूठी बातें कही हैं?'

'उन्होंने मुझे एक शब्द भी नहीं बताया है, पिताजी,' सती ने कहा, 'किंतु उनका अस्तित्व में होना आपके बारे में बहुत कुछ बता रहा है।'

'वह मैं नहीं था। तुम्हारी मां के कारण ही वे अस्तित्व में हैं। उसके पूर्व जन्म के पापों ने यह परिणाम दिया है। उसके आने से पहले हमारे परिवार में कभी भी नागाओं का अस्तित्व नहीं रहा था।'

सती का चेहरा उतर गया। वह पहली बार देख रही थी कि उसके पिता कितना नीचे गिर सकते थे।

वीरिनी दक्ष को घूर रही थी। उसकी आंखों में क्रोध साफ झलक रहा था।

'यह पूर्व जीवन के संबंध में नहीं है, पिताजी,' सती ने कहा,'यह इस जीवन के संबंध में है। आप जानते थे। इसके बाद भी आपने मुझसे नहीं कहा।'

'मैं तुम्हारा पिता हूं। मैंने जीवन भर तुम्हारे ऊपर प्यार लुटाया है। मैंने तुम्हारे लिए संपूर्ण जग से लड़ाई की है। तुम मुझ पर विश्वास करोगी या फिर कुछ विकृत पशुओं पर?'

'वे विकृत पशु नहीं हैं! वे मेरा परिवार हैं!'

'तुम इन लोगों को अपना परिवार बनाना चाहती हो? वे लोग जिन्होंने तुमसे झूठ बोला है? जिन्होंने तुम्हें अपने पिता के विरुद्ध कर दिया है?'

'उन्होंने मुझसे कभी झूठ नहीं कहा है!' सती चिल्लाई, 'झूठ आपने कहा है।'

'नहीं, मैंने कुछ भी झूठ नहीं कहा है!'

'आपने कहा था कि मेरा बच्चा मृत पैदा हुआ था।'

दक्ष ने एक गहरी श्वास ली। उसने छत की ओर देखा जैसे स्वयं पर नियंत्रण करने के लिए संघर्ष कर रहा हो और उसके बाद सती की ओर देखा, 'तुम समझती क्यों नहीं हो? तुम्हारे अच्छे के लिए ही मैंने तुमसे झूठ कहा था! क्या तुम जानती हो कि यदि तुम्हें एक नागा की माता घोषित कर दिया गया होता तो तुम्हारा जीवन कैसा हो गया होता?'

'मैं अपने पुत्र के साथ होती!'

'क्या बकवास है? तुमने क्या किया होता? पंचवटी में अपना जीवन बिताया होता?'

'हां!'

'तुम मेरी पुत्री हो!' दक्ष चिल्लाया, 'मैंने तुम्हें सदैव ही सबसे अधिक प्रेम किया है। मैं तुम्हें पंचवटी में दुख झेलने के लिए कभी नहीं छोड़ता।'

'विकल्प चुनने का अवसर आपका नहीं था।'

पूरी तरह से क्रुद्ध दक्ष शिव की ओर मुड़ा, 'आप ही इसे कुछ समझाएं, प्रभु नीलकंठ!'

शिव की आंखें संकुचित थीं। वह जानना चाहता था कि उस धोखे का जाल कितना लंबा-चौड़ा फैला हुआ था, 'क्या आपने चंदनध्वज की हत्या करवाई थी, महाराज?'

दक्ष श्वेत पड़ गया। उसके मुख पर भय की लकीरें खिंच आईं। उसने तीव्रता से सती को देखा और फिर शिव की ओर घूमा।

हे प्रभु! इन्होंने यह भी किया है!

सती का सिर चकरा रहा था। वह स्तब्ध थी। काली और गणेश को बिलकुल आश्चर्य नहीं हुआ।

दक्ष ने तत्काल ही अपना नियंत्रण पा लिया। उसने अपनी उंगली शिव की ओर उठाई। उसका शरीर कांप रहा था, 'यह सब आपका किया-धरा है। तो यह आपका बुना हुआ जाल है!'

शिव शांत बना रहा।

'आपने मेरी पुत्री को मेरे विरुद्ध कर दिया,' दक्ष चिल्लाया,'महर्षि भृगु ने सच ही कहा था। दुष्ट वासुदेव आपको नियंत्रित करते हैं।'

शिव दक्ष को एकटक ऐसे देख रहा था जैसे उन्हें पहली बार देख रहा हो।

दक्ष उबल रहा था, 'आप हैं कौन? एक बर्बर भूमि के एक बेवकूफ आदिवासी। मैंने आपको नीलकंठ बनाया। मैंने आपको शक्ति प्रदान

की। मैंने यह किया ताकि आप चंद्रवंशियों को मेलूहा के नियंत्रण में लाने में सफल होंगे। ताकि मैं भारत में शांति की स्थापना कर पाऊंगा। और आपने मेरी ही दी हुई शक्ति को मेरे ही विरुद्ध उपयोग करने का दुस्साहस किया?'

शिव अब भी निष्क्रिय बना रहा ताकि दक्ष और विष उगल सके।

'मैंने आपको बनाया। और मैं आपको नष्ट भी कर सकता हूं!' दक्ष ने अपनी कटार निकाली और सामने की ओर उछला। नंदी शिव के सामने उछलकर खड़ा हो गया। दक्ष का प्रहार नंदी की ढाल पर लगकर बेकार चला गया। उधर नंदी ने अपनी तलवार मात्र इसलिए नहीं निकाली क्योंकि उसका मेलूहा का सैनिक प्रशिक्षण अपने सम्राट पर तलवार निकालने से मना करता था। हालांकि काली और गणेश के लिए ऐसा कुछ बंधन नहीं था। उन्होंने तत्काल ही अपनी तलवारें दक्ष पर तान दीं। विद्युन्माली ने जैसे ही अपनी तलवार निकाली तो गणेश अपनी तलवार निकालकर शिव के सामने आ गया। उधर मायाश्रेनिक हैरानी से बिना कुछ किए खड़ा रह गया। वह एक निष्ठावान मेलूहावासी था जो अपनी जान देकर भी मेलूहा के राजा की रक्षा करता, किंतु वह हतप्रभ था। वह हृदय की गहराई से शिव का भक्त था। वह अपनी तलवार नीलकंठ के विरुद्ध कैसे निकाल सकता था?

'शांत हो जाएं,' शिव ने अपना हाथ उठाकर कहा।

विद्युन्माली ने अभी तक अपनी तलवार युद्ध की मुद्रा में निकाल रखी थी। दक्ष का चाकू नंदी की ढाल से टकराकर नीचे गिर चुका था।

शिव ने एक बार पुनः कहा, 'नंदी, गणेश, काली पीछे हट जाओ। अभी!'

जैसे ही शिव के योद्धाओं ने अपनी तलवारें नीची कर लीं तो विद्युन्माली ने भी अपनी तलवार म्यान में रख ली।

'महाराज,' शिव ने दक्ष को संबोधित किया।

दक्ष की आंखें आंसुओं से भीगी हुई सती पर टिकी हुई थीं जिसने अपनी तलवार दक्ष के गले से कुछ इंच की दूरी पर ही साधी हुई थी। उसके मुख पर स्पष्ट झलक रहा था कि उसके साथ धोखा हुआ। सती एकमात्र ऐसी थी जिसे दक्ष ने सचमुच ही अपने प्राणों से अधिक प्रेम किया था।

'सती...' शिव फुसफुसाया, 'कृपया। नीचे कर लो। वे इस योग्य नहीं हैं।'

सती की तलवार और निकट चली गई। शिव धीमे से आगे बढ़ा, 'सती...'

सती के हाथ कांप रहे थे। उसका क्रोध उसे उन्मादित कर रहा था। दो।'

शिव ने उसके कंधे को धीमे से स्पर्श किया, 'सती, नीचे रख शिव के स्पर्श ने सती को उस संकट से वापस खींच लिया।

उसने अपनी तलवार को थोड़ा नीचे कर दिया। उसकी आंखें संकुचित थीं। उसकी श्वास भारी थी। उसका शरीर तना हुआ था। दक्ष लगातार सती को घूर रहा था।

'मुझे शर्म आती है कि आपका रक्त मेरी धमनियों में बहता है,' सती ने कहा।

दक्ष के आंखों से आंसू बह निकले।

'निकल जाएं,' सती ने दांत पीसते हुए कहा। दक्ष जड़वत रहा।

'चले जाएं यहां से!' सती चीख पड़ी।

सती के उस तीखे स्वर से वीरिनी को झटका सा लगा। उसके मुख पर पीड़ा एवं क्रोध का मिला-जुला भाव उभरा। वह दक्ष के निकट गई, 'चलिए।'

दक्ष को जैसे लकवा मार गया हो। वह इस प्रकार की अनायास घटना पर पूरी तरह से हैरान था।

'चलिए भी,' वीरिनी ने अपने पति की बांह को पकड़कर खींचते हुए और ऊंचे स्वर में कहा, 'मायाश्रेनिक, विद्युन्माली, चलो चलें।'

भारत की रानी अपने पति को लगभग खींचकर उस कक्ष के बाहर ले गई।

सती पूरी तरह से टूटकर विखर चुकी थी। उसने अपनी तलवार गिरा दी। आंसुओं का वेग थम नहीं रहा था। गणेश उसकी ओर दौड़ा। किंतु उसके गिरने से पहले शिव ने उसे थाम लिया था।

सती विलख-विलखकर रो रही थी। तब शिव ने उसे अपनी बांहों में उठा लिया।

अध्याय 22

एक सिक्का, दो पहलू

'तो फिर तुम क्या सोच रहे हो?' काली ने पूछा।

गणेश और काली नागा रानी के आवास में थे। उस नाटक के बाद शिव सती को उठाकर अथिथिग्व के महल के अपने आवास में चला गया था। दक्ष, वीरिनी और उनके अनुगामी दल तत्काल ही मेलूहा की राजधानी देवगिरि के लिए रवाना हो चुके थे।

'यह अप्रत्याशित था,' चिंतामग्न गणेश ने हल्की मुस्कान के साथ कहा।

काली ने अपनी आंखें ऊपर कीं, 'कभी-कभी तुम्हारा आत्मसंयम चिढ़ पैदा करने वाला होता है।'

गणेश मुस्कुराया। वह वास्तव में एक चौड़ी मुस्कान थी जो उसके एक कान से दूसरी कान तक फैली हुई थी। उसका बाहर निकला हुआ दांत और बाहर निकल आया।

'तुम्हारा यही चेहरा मैं अक्सर देखना चाहती हूं,' काली ने कहा, 'वास्तव में तुम इसमें बहुत प्यारे लगते हो।'

गणेश पुनः गंभीर हो गया। उसने भोजपत्र का एक चिट्ठा उठाया। पंचवटी से एक संदेश था, 'यह नहीं होता तो मैं हंस रहा होता, मौसी।'

'अब क्या?' काली ने त्योरी चढ़ाकर पूछा।

'यह असफलता है।'

'फिर से?'

'हां, फिर से।'

'लेकिन मैंने तो सोचा था...'

'हमने गलत सोचा था, मौसी।'

काली ने बुरा-भला कहा। गणेश ने अपनी मौसी को घूरकर देखा। वह उनकी झुंझलाहट को महसूस कर सकता था। अंतिम समाधान बहुत निकट था। यह सफलता उनकी विजय को पूर्ण कर देती। किंतु अब इसकी पूरी संभावना थी कि उन्होंने अब तक जो कुछ भी किया था वह नष्ट हो जाएगा।

'क्या हम फिर से प्रयत्न करें?' काली ने पूछा।

'मेरे विचार से हमें अंततः सच को स्वीकार करना ही होगा, मौसी। यह मार्ग कहीं नहीं जाता। हमारे पास कोई विकल्प नहीं है। समय आ गया है कि हम रहस्य को उजागर कर दें।'

'हां,' काली ने कहा, 'नीलकंठ को यह जानना चाहिए।'

'नीलकंठ?' गणेश ने आश्चर्य से पूछा। इतने कम अंतराल में कितना कुछ बदल गया था।

काली ने अपनी भौंहों को ऊंचा किया।

'आपने उनका नाम नहीं लिया। आपने नीलकंठ कहा। आप अब भी उस पौराणिक गाथा में विश्वास करती हैं?'

काली मुस्कुराई, 'मैं पौराणिक गाथाओं में विश्वास नहीं करती। ना कभी मैंने विश्वास किया और ना कभी करूंगी। लेकिन मैं उनमें विश्वास करती हूं।'

मेरा जीवन कितना भिन्न होता यदि भाग्य ने मुझे शिव जैसा जीवनसाथी प्रदान किया होता? संभव है कि दीदी की तरह मेरे जीवन का भी सारा विष निकल गया होता। संभव है कि मैं भी सुख और शांति प्राप्त कर पाती।

'हमें उन्हें रहस्य दिखाना होगा,' काली की सोच के बीच में अनधिकार प्रवेश करते हुए गणेश ने कहा।

'दिखाना होगा?!'

'मुझे नहीं लगता कि ऐसा यहां संभव है, है ना? उन्हें स्वयं ही चलकर देखना चाहिए।'

'तुम उन्हें पंचवटी ले जाना चाहते हो?'

'क्यों नहीं? गणेश ने पूछा, 'क्या आप उन पर विश्वास नहीं करतीं?'

'निस्संदेह, मैं उन पर विश्वास करती हूं। मैं उन पर आंख मूंदकर विश्वास करती हूं, लेकिन वे अकेले नहीं आएंगे। कुछ अन्य लोग भी उनके साथ होंगे। यदि हम उन लोगों को साथ में ले चलते हैं तो वे जान जाएंगे कि पंचवटी कैसे पहुंचा जा सकता है। यह हमारी सुरक्षा के लिए घातक हो सकता है।'

'मेरे विचार से पर्वतेश्वर और भगीरथ जैसे व्यक्ति विश्वास करने योग्य हैं। मैं नहीं समझता कि वे कभी भी नीलकंठ के विरुद्ध जाएंगे। वे उनके लिए अपने प्राण तक त्याग देंगे।'

'मैं इतना समझती हूं,' काली ने कहा, 'कि किसी व्यक्ति को अपने विश्वास की सीमा बहुत फैलानी नहीं चाहिए। और जो ना ही बिना बात स्वयं ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए।'

गणेश ने अपनी त्योरी चढ़ाई, 'यदि आप उनके सभी अनुयायियों पर संदेह करती हैं तो परशुराम के बारे में आपका क्या विचार है? वह पहले से ही मार्ग जानता है। आप नीलकंठ में उसकी भक्ति के बारे में भी जानती हैं।'

'तुम्हें याद है, मैंने कहा था कि परशुराम को पंचवटी मत लाओ। लेकिन तुमने मेरी एक ना मानी।'

'तो फिर क्या करें, मौसी?'

'हम लोग उन्हें ब्रंगाओं की ओर से ले चलेंगे। वे पंचवटी पहुंचने का मार्ग जान पाएंगे, किंतु वे मात्र चंद्रकेतु के अधिकार क्षेत्र से ही। वे अपने साम्राज्य से सीधे हम तक कभी भी नहीं पहुंच पाएंगे। यदि वे प्रयत्न करेंगे तो दंडक का वन उन्हें नष्ट कर देगा! हम ब्रंगावालों पर इस बात के लिए विश्वास कर सकते हैं कि वे अपने राज्य से बिना हमारी अनुमति के किसी को गुजरने नहीं देंगे। यहां तक कि परशुराम को भी कोई दूसरा मार्ग नहीं पता।'

गणेश ने सहमति में सिर हिलाया, 'यह बहुत ही उत्तम विचार है।'

'प्रभु को धन्यवाद कि मैंने अतिशीघ्रता में ऐसा कोई काम नहीं किया जिसके लिए मुझे बाद में खेद करना पड़ता,' सती ने कहा।

शिव अपने कक्ष में खिड़की के समीप एक लंबी कुर्सी पर बैठा हुआ था। सती उसकी गोद में थी। उसका सिर शिव की मांसल छाती पर झुका हुआ था। उसकी आंखें सूजकर लाल हो चुकी थीं। काशी के महल की उस ऊंचाई से पवित्र मार्ग क्षेत्र और विश्वनाथ मंदिर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहे थे। उससे दूर महाकाय गंगा प्रवाहित हो रही थी।

'तुम्हारा क्रोध न्यायोचित था, प्रिये।'

सती ने धीमे-धीमे श्वास लेते हुए अपने पति की ओर देखा,'क्या आप क्रोधित नहीं हैं? उन्होंने आपकी हत्या करने का प्रयत्न किया था।'

शिव ने अपनी पत्नी की आंखों में आंखें डालते हुए अपने हाथ से उसका मुख सहलाया, 'मुझे तुम्हारे साथ किए गए अन्याय पर क्रोध है ना कि मेरे साथ किए गए व्यवहार पर।'

'किंतु आपके ऊपर तलवार तान देने की विद्युन्माली की हिम्मत कैसे हुई?' सती फुसफुसाई, 'भगवान का शुक्र था कि गणेश...'

सती रुक गई क्योंकि उसे भय हुआ कि ऐसे में गणेश का नाम लेना इस क्षण के आनंद को नष्ट कर देगा।

शिव ने उसे हल्के से दवाया, 'वह तुम्हारा पुत्र है।'

सती चुप रही। उसका शरीर अकड़ा हुआ था। वह शिव की उस पीड़ा का अनुभव कर रही थी जो उसे बृहस्पति की मृत्यु के कारण हुई थी।

शिव ने सती के मुख को अपने दोनों हाथों से थामा और सीधा उसकी आंखों में झांका, 'मैं चाहे जितना प्रयत्न कर लूं, तुम्हारी आत्मा के किसी भी हिस्से से घृणा नहीं कर सकता।'

सती ने एक गहरी श्वास छोड़ी। आंसुओं की नई धार वह निकली। उसने शिव को कसकर जकड़ लिया।

— ⅄ⓄႱ↟⊗ —

'सम्राट ने चंदनध्वज की हत्या करवाई थी?' स्तब्ध पर्वतेश्वर ने पूछा।

'जी हां, सेनापति,' वीरभद्र ने कहा।

पर्वतेश्वर सदमे से सुन्न पड़ गया था। उसने आनंदमयी और भगीरथ की ओर देखा। उसके वाद वीरभद्र की ओर देखा, 'महाराज अभी कहां हैं?'

'वे मेलूहा के लिए रवाना हो चुके हैं, श्रीमान,' वीरभद्र ने कहा। पर्वतेश्वर ने अपना सिर पकड़ लिया। उसके सम्राट ने उसकी मातृभूमि मेलूहा का अनादर किया था। वह उस पीड़ा के बारे कल्पना भी नहीं कर सकता था जो इस रहस्योद्घाटन ने उस स्त्री को हुई होगी जिसे वह सदैव ही अपनी पुत्री के समान मानता था, 'सती कहां है?'

'वे शिव के साथ हैं, श्रीमान।'

आनंदमयी ने पर्वतेश्वर की ओर मुस्कुराते हुए देखा। इस घटिया प्रसंग से कम से कम कुछ तो अच्छा हुआ था।

मेलूहा का राजसी जलयान गंगा में ऊपरी धारा की दिशा में चल पड़ा था। सूर्यवंशी नौसेना शिष्टाचार के अनुसार चार जलयान घेरा बनाकर चल रहे थे। दक्ष के अनुगामियों का दल अपने घर की ओर चल पड़ा था। अब वे काशी से एक दिन की दूरी पर थे।

मायाश्रेनिक नेतृत्व नौका में था और एक स्थिर गति रख रहा था। काशी की घटना के कारण वह अब तक हिला हुआ था। उसने आशा की थी कि उसके सम्राट और नीलकंठ के मध्य का यह मनमुटाव शीघ्र समाप्त हो जाएगा। वह इच्छा कर रहा था कि अपने बुरे भाग्य के कारण उसे अपने देश के प्रति स्वामिभक्ति और ईश्वर के प्रति आस्था के मध्य चयन ना करना पड़े।

विद्युन्माली दक्ष के जलयान का सुरक्षा प्रभारी था। नीलकंठ के अनुयायियों द्वारा सम्राट पर हो सकने वाले किसी भी प्रकार के आक्रमण से सुरक्षा प्रदान करना उसका कर्तव्य था। हालांकि यह दुर्लभ था, फिर भी वह सभी प्रकार की सावधानियां बरत रहा था।

जलयान के मध्य में वीरिनी राजसी कक्ष की एक खिड़की से गंगा के जल का जलयान पर हिलोरे मारना देख रही थी। उसे आभास था कि अब उसने अपनी सभी संतानें खो दी हैं। उसने क्रोध में अपने पति की ओर देखा।

दक्ष शय्या पर लेटे हुए थे। उनकी आंखें उजाड़ थीं। उनके मुख पर सबकुछ खो जाने वाला भाव था। यह पहली बार नहीं था जब उन्होंने ऐसी भयावह परिस्थितियों का सामना किया हो और पूर्णतया पराजित हुए हों।

वीरिनी ने अपना सिर हिलाया और पुनः बाहर की ओर देखने लगी।

काश इन्होंने मेरी बात मानी होती।

वीरिनी को वह घटना उसी तरह से याद थी जैसे कि वह कल की बात हो। वह हर दिन सोचती कि यदि वैसा नहीं हुआ होता तो उसका जीवन कैसा होता।

यह घटना एक सौ साल पहले की थी। सती मयका के गुरुकुल से लौटी ही थी। वह एक सोलह साल की हठी, आदर्शवादी लड़की थी। अपने चरित्र के अनुसार वह एक अप्रवासी महिला की जान वचाने के लिए जंगली कुत्तों के बीच कूद पड़ी थी। पर्वतेश्वर और दक्ष उसको

बचाने के लिए दौड़ पड़े। हालांकि वे उन कुत्तों को भगाने में सफल हो गए थे, लेकिन दक्ष गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

वीरिनी दक्ष के साथ आयुरालय गई थी जहां वैद्य उनका उपचार कर सकते थे। सबसे चिंता वाली चोट उनके बाएं पांव पर लगी थी, जहां एक कुत्ते ने उनकी मुख्य नस को काटते हुए कुछ मांस नोंचकर निकाल डाला था। रक्त की अत्यधिक हानि ने दक्ष को अचेत कर दिया था।

कुछ घंटों के बाद जब उन्होंने अपनी आंखें खोलीं तो उनके मन में जो सबसे पहला विचार आया था वह अपनी पुत्री के बारे में था,'सती?'

'वह पर्वतेश्वर के साथ है,' वीरिनी अपने पति के निकट गई और उनका हाथ पकड़कर कहा, 'उसके बारे में चिंता ना करें।'

'मैं उस पर चिल्लाया था। उसे दुख पहुंचाने की मेरी मंशा नहीं थी।'

'मैं जानती हूं। वह मात्र अपना कर्तव्य निभा रही थी। एक महिला की रक्षा करने का प्रयास करके वह एक उचित कार्य कर रही थी। मैं उसे यह बता दूंगी...'

'नहीं। नहीं। मैं अभी भी यही सोचता हूं कि उसे उस महिला के लिए अपने जीवन को संकट में नहीं डालना चाहिए था। मैं उस पर चिल्लाना नहीं चाहता था, बस इतना ही कहना था मुझे।'

वीरिनी की आंखें संकुचित हो और छोटी हो गईं। उनके पति किसी भी सूर्यवंशी से कम नहीं हो सकते। वह कुछ बोलने ही वाली थी, तभी द्वार खुला और ब्रह्मनायक ने अंदर प्रवेश किया।

दक्ष के पिता और मेलूहा के शासक ब्रह्मनायक एक लंबे कद के अत्यधिक प्रभावशाली व्यक्ति थे। लंबे काले घने बाल, संवरी हुई दाढ़ी, लगभग रोएंरहित शरीर, संयमी मुकुट और मितव्ययी श्वेत वस्त्र उस व्यक्ति के अदम्य उत्साह को फीका नहीं कर पा रहे थे। वे मात्र सम्मानित ही नहीं थे बल्कि मेलूहा में उनका आतंक भी था। अपने साम्राज्य के सम्मान एवं आदर को लेकर जो उनकी अपेक्षाएं थीं, उस स्तर पर उनका पुत्र खरा नहीं उतर रहा था। दक्ष में साहस एवं चरित्र का अभाव उनके क्रोध और निराशा का स्रोत था।

वीरिनी तत्काल ही उठ गई और धीमे से एक ओर हो गई। ब्रह्मनायक वीरिनी से तभी बोलते थे जब कोई आदेश देना होता था। ब्रह्मनायक के पीछे वह दयालु वैद्य खड़ा था जिसने दक्ष के क्षतविक्षत कर दिए गए पैर का उपचार किया था।

ब्रह्मनायक ने अपने पुत्र के पैर को देखने के लिए चादर उठाई। नीम के पत्तों की पट्टी पैर के चारों ओर बंधी हुई थी।

वैद्य मिलनसारिता से मुस्कुराया, 'महाराज, आपके पुत्र एक या दो सप्ताह में अपने पैरों पर खड़े हो जाएंगे। मैंने बहुत ही सावधानी बरती है। चोट का निशान भी हल्का रहेगा।'

दक्ष ने पल भर के लिए अपने पिता की ओर देखा। उसके बाद उसका सीना फूल उठा। वह फुसफुसाया, 'नहीं वैद्य जी, चोट के निशान क्षत्रियों का गौरव होते हैं।'

ब्रह्मनायक ने अपना नथुना फुलाया, 'एक क्षत्रिय होने के बारे में तुम क्यों जानोगे?'

दक्ष चुप कर गया। वीरिनी गुस्से से खौल रही थी।

'तुमने कुछ कुत्तों को यह करने दिया?' ब्रह्मनायक ने तिरस्कारपूर्ण ढंग से पूछा, 'मैं मेलूहा में हंसी का पात्र बन गया हूं। संभवतया पूरे विश्व में। मेरा पुत्र स्वयं एक कुत्ता भी नहीं मार सकता।'

दक्ष अपने पिता को एकटक घूरे जा रहा था।

इस प्रकार के झगड़े को आगे बढ़ने से रोकने के लिए और अपने रोगी की मानसिक स्थिति की रक्षा के लिए वैद्य बचाव को आया, 'महाराज, मुझे आपसे कुछ चर्चा करनी है। क्या हम बाहर जाकर बातचीत कर सकते हैं?'

ब्रह्मनायक ने सहमति में सिर हिलाया, 'मेरी बात अभी पूरी नहीं हुई है,' बाहर निकलने से पहले उन्होंने दक्ष की ओर मुड़ते हुए कहा था।

अत्यधिक नाराज वीरिनी अपने पति के पास गई, जो रो रहे थे, 'आप कब तक यह सहन करते रहेंगे?'

दक्ष अचानक ही अत्यधिक क्रोध से भर गया, 'वे मेरे पिता हैं! उनके बारे में आदर से बात करो।' 'आपके बारे में उनको कोई चिंता नहीं

है, दक्ष,' वीरिनी ने कहा, 'वे मात्र अपनी विरासत के बारे में चिंतित रहते हैं। आपको तो राजा बनने का भी लोभ नहीं है। तो फिर हम यहां क्यों हैं?'

'मेरा कर्तव्य। मुझे उनके साथ रहना है। मैं उनका पुत्र हूं।'

'वे ऐसा नहीं सोचते। आप एक ऐसे व्यक्ति हैं जो उनकी विरासत को आगे ले जाने के माध्यम हैं। बस इतना ही।'

दक्ष चुप हो गया।

'उन्होंने आपकी एक पुत्री को छोड़ देने पर विवश किया। अब आप और कितना त्याग करेंगे?'

'वह मेरी पुत्री नहीं है।'

'वह आपकी पुत्री है! काली भी उसी प्रकार आपकी रक्त और मांस का अंश है, जिस प्रकार सती।'

'मैं दुबारा इस पर चर्चा नहीं करना चाहता।'

'आपने इस पर कई बार सोचा है। बस एक बार इस पर अमल करने की हिम्मत करें।'

'हम पंचवटी में क्या करेंगे?'

'इससे कोई अंतर नहीं पड़ता है। अंतर केवल इससे पड़ता है कि हम क्या होंगे।'

दक्ष ने अपना सिर हिलाया, 'और तुम क्या सोचती हो कि हम क्या होंगे?'

'हम प्रसन्न होंगे।'

'किंतु मैं सती को अकेला नहीं छोड़ सकता।'

'आपको उसे अकेला छोड़ने को कौन कह रहा है? बस मैं केवल इतना चाहती हूं कि हमारा परिवार एक साथ हो जाए।'

'क्या?! सती क्यों पंचवटी में रहे? वह नागा नहीं है। तुम्हारे और मेरे पूर्वजन्म के पाप हैं जिनका हमें प्रायश्चित्त करना है। वे पाप जिनके लिए हमें दंड दिया गया है। वह क्यों दंड झेले?'

'वास्तविक दंड तो यह है कि वह अपनी बहन से अलग है। वास्तविक दंड तो यह है कि उसके पिता को प्रतिदिन अपमानित किया जाता है।'

दक्ष चुप रहा। वह कांप रहा था।

'दक्ष, मुझ पर विश्वास करें,' वीरिनी ने कहा, 'हम पंचवटी में सुखी रहेंगे। यदि कोई दूसरा स्थान होता जहां हम काली और सती के साथ सुखी रह सकते तो मैंने वह स्थान चुना होता। किंतु ऐसा कोई अन्य स्थान नहीं है।'

दक्ष ने गहरी श्वास ली, 'किंतु कैसे...'

'वह आप मुझ पर छोड़ दें। मैं सारे प्रबंध कर दूंगी। आप केवल हां कहें। आपके पिता कल करछप जा रहे हैं। आप इतनी बुरी तरह से घायल भी नहीं हैं कि यात्रा ना कर सकें। इससे पहले कि वे ये जान पाएं कि आप यहां से जा चुके हैं, हम पंचवटी में होंगे।'

दक्ष ने वीरिनी को एकटक देखा। 'किंतु...'

'विश्वास करें। कृपया मुझ पर विश्वास करें। यह हम सब की अच्छाई के लिए है। मैं जानती हूं कि आप मुझसे प्रेम करते हैं। मैं जानती हूं कि आप अपनी पुत्रियों से प्रेम करते हैं। मैं जानती हूं कि आप इसके अलावा किसी अन्य वस्तु की परवाह नहीं करते। बस मुझ पर विश्वास करें।'

दक्ष ने सहमति में सिर हिलाया।

वीरिनी मुस्कुराई। झुककर अपने पति के निकट गई और उन्हें चूम लिया, 'मैं सारे प्रबंध कर लूंगी।'

प्रसन्न होती हुई वीरिनी मुड़ी और कक्ष से बाहर निकल गई। उसे बहुत सारे काम करने थे।

जैसे ही वह बाहर निकली तो उसने बाहर सती और पर्वतेश्वर को बैठे हुए देखा। उसने सती के सिर पर थपकी दी, 'जाओ मेरी बच्ची, जाकर अपने पिता से कहो कि तुम उनसे कितना प्यार करती हो। उन्हें तुम्हारी आवश्यकता है। मैं शीघ्र ही वापस आती हूं।'

जब वीरिनी तेजी से जा रही थी तो उसने देखा कि ब्रह्मनायक उसके पति के कक्ष में वापस जा रहे थे।

डॉल्फिन के चिल्लाने से मेलूहा की रानी पुनः वर्तमान में आ पहुंची। एक सदी पुरानी याद ने भी उसकी आंखों में आंसू ला दिए थे। उसने अपने पति की ओर मुड़कर देखा और सिर हिलाया। उसे कभी भी यह समझ में नहीं आया कि उस दिन अंततः हुआ क्या था। ब्रह्मनायक ने क्या कहा था? किंतु जब अगले दिन वह भागने की योजना के साथ दक्ष के कक्ष में गई तो उन्होंने मेलूहा छोड़ने से मना कर दिया था। उन्होंने निर्णय ले लिया था कि उन्हें सम्राट बनना था।

आपके बेकार के अहं और पिता के अनुमोदन की आवश्यकता ने हमारा जीवन नष्ट कर दिया!

— ⅄ⓄƱ⇞⊛ —

'रहस्य?' परशुराम के साथ हुए वार्तालाप को याद करते हुए शिव ने पूछा।

परशुराम, पर्वतेश्वर, वीरभद्र एवं नंदी के साथ शिव बैठा हुआ था। काली ने अभी-अभी कक्ष में प्रवेश किया था। गणेश, जो अब भी शिव के साथ अपने संबंधों को लेकर असमंजस में था, पीछे की ओर एक किनारे पर शांत खड़ा था। शिव ने सती के बड़े पुत्र के प्रवेश को मात्र सिर हिलाकर, अनुमोदित किया था, बस।

'जी हां, मेरे विचार से आपको यह जानने की आवश्यकता है,' काली ने कहा, 'यह भारतवर्ष की आवश्यकता है कि जो रहस्य नागा लोग अब तक छुपाए हुए थे, वह नीलकंठ को जानना चाहिए। उसके बाद आप यह निर्णय कर सकते हैं कि जो कुछ भी हमने किया, वह सही है या गलत। निर्णय करें कि हमें क्या करना चाहिए।'

'तुम मुझे यहीं क्यों नहीं बता सकतीं?'

'आपको मुझ पर विश्वास करना होगा। मैं नहीं बता सकती।' शिव ने काली की आंखों में झांका। उनमें कोई कपट नहीं था। उसने अनुभव किया कि वह काली पर विश्वास कर सकता था,'पंचवटी पहुंचने में कितने दिन लगेंगे?'

'एक वर्ष से कुछ ही अधिक दिन,' काली ने उत्तर दिया।

'एक वर्ष?!'

'जी हां, प्रभु नीलकंठ। हमें ब्रंगा राज्य तक मधुमती नदी में धारा के साथ नौका से जाना पड़ेगा। उसके बाद दंडकारण्य में पैदल चलना पड़ेगा। इस यात्रा में समय लगेगा।'

'कोई सीधा रास्ता नहीं है?'

काली मुस्कुराई किंतु उसने कुछ कहने से मना कर दिया। वह दंडक वन के मार्ग के बारे में नहीं बताना चाहती थी। उसके नगर का वह प्राथमिक सुरक्षा घेरा था।

'मैं तुम पर विश्वास कर रहा हूं। किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि तुम मुझ पर विश्वास नहीं कर रहीं।'

'मैं आप पर पूर्ण रूप से विश्वास करती हूं, प्रभु नीलकंठ।'

शिव काली की अवस्था को समझते हुए मुस्कुराया। वह उस पर विश्वास कर सकती थी लेकिन उन सब पर नहीं जो उसके साथ थे, 'ठीक है। पंचवटी चलते हैं। संभवतया यह वह मार्ग है जो मेरे कर्तव्य पर चलने की ओर जाता है।'

शिव पर्वतेश्वर की ओर मुड़ा, 'क्या आप प्रबंध कर सकते हैं, सेनापति?'

'प्रबंध हो जाएगा, प्रभु,' पर्वतेश्वर ने कहा।

काली ने शिव की ओर सम्मान में अपना सिर झुकाया और अपना दूसरा हाथ गणेश के लिए फैलाया।

'और काली...' शिव ने कहा।

काली तत्काल ही उसी स्थल पर घूम गई।

'मुझे शिव कहलाना पसंद है, नीलकंठ नहीं। तुम मेरी पत्नी की बहन हो। तुम मेरा परिवार हो।'

काली मुस्कुराई और उसने अपना सिर झुकाया, 'जैसी आपकी आज्ञा... शिव।'

— ⅄ⓄⅧ⅄⊕ —

शिव और सती विश्वनाथ मंदिर में थे। प्रभु रुद्र का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए वे एक विशेष पूजा करने वहां आए हुए थे। पूजा समाप्त करने के बाद वे मंदिर के एक स्तंभ से सटकर बैठे हुए देवी मोहिनी की प्रतिमा को निहार रहे थे जो प्रभु रुद्र की प्रतिमा के पीछे लगाई गई थी।

शिव ने अपनी पत्नी का हाथ थामा और उसे हल्के से चूम लिया। वह मुस्कुराई और उसने अपना सिर शिव के कंधे पर रख दिया।

'अत्यंत ही पहेलीनुमा देवी,' शिव ने कहा।

सती ने अपने पति की ओर देखा, 'देवी मोहिनी?'

'हां। विष्णु के रूप में उन्हें सर्वत्र क्यों नहीं स्वीकारा गया? सात विष्णु के बाद संख्या क्यों बंद हो गई?'

'हो सकता है कि भविष्य में और भी विष्णु हों। किंतु सभी लोग इनका विष्णु के रूप में सम्मान नहीं करते।'

'क्या तुम करती हो?'

'एक समय मैं नहीं करती थी। किंतु अब, मैं इनकी महानता को समझती हूं।'

शिव ने अपनी त्योरी चढ़ा ली।

'उन्हें समझना सरल नहीं है,' सती ने कहा, 'उन्होंने बहुत से काम किए ज़िन्हें अनुचित समझा जा सकता है। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता यदि उन्होंने वे काम असुरों के विरुद्ध किए थे। वे तब भी अनुचित ही थे। सूर्यवंशी जो पूर्णतः प्रभु राम का अनुसरण करते हैं, उनके लिए इन्हें समझना कठिन है।'

'तो फिर अब क्या बदल गया है?'

'मैं उनके बारे में और अधिक जान गई हूं। इस बारे में कि उन्होंने क्या किया था और क्यों किया था। यद्यपि मैं अभी भी उनके कुछ कृत्यों की प्रशंसा नहीं करती, किंतु संभवतया अब मैं उनके कृत्यों को कहीं बेहतर समझती हूं।'

'एक बार एक वासुदेव ने मुझे बताया था कि उनका यह मानना है कि बिना देवी की सहायता के प्रभु रुद्र अपने लक्ष्य में सफल नहीं हो पाते।'

सती ने शिव की ओर देखा, 'वे सच हो सकते हैं। संभव है कि एक छोटा सा पाप बड़ी अच्छाई में सहायक बना हो।'

शिव ने सती को गहरी दृष्टि से देखा। वह समझ गया था कि वह क्या कहना चाह रही है।

'जीवन में दयाहीनता के बावजूद यदि कोई व्यक्ति अच्छा बना रहता है, यदि वह दूसरों की सहायता करता रहता है, तो हमें समझने का प्रयत्न करना चाहिए कि उसने वह एक पाप क्यों किया। हो सकता है कि हम उसे क्षमा ना कर पाएं। फिर भी हम उन्हें समझ तो सकते ही हैं।'

शिव जानता था कि सती गणेश के बारे में बात कर रही थी,'क्या तुम जानती हो कि जो उसने किया वह क्यों किया?'

सती ने एक गहरी श्वास ली, 'नहीं।'

सती ने अपनी दृष्टि देवी मोहिनी की प्रतिमा की ओर की।

सती ने शिव के मुख को अपनी ओर किया, 'बिना सबकुछ जाने हुए, कि कोई घटना क्यों घटी, किसी घटना को समझना कठिन होता है।'

शिव ने अपना मुख दूसरी ओर घुमा लिया। उसने अपनी आंखें बंद कीं और एक गहरी श्वास ली, 'उसने तुम्हारी जान बचाई। उसने कार्तिक की जान बचाई। इसके लिए मुझे उससे लगाव होना चाहिए। उसने इतना कुछ किया है कि मैं अब यह सोचने पर मजबूर हूं कि वह एक अच्छा व्यक्ति है।'

सती चुपचाप शिव की बातें सुनती रही।

'किंतु...' शिव ने एक बार पुनः लंबी श्वास ली, 'किंतु यह मेरे लिए सरल नहीं है। सती... मैं ऐसा नहीं...'

सती ने दुख भरी श्वास छोड़ी। *संभवतया पंचवटी जाने से सबकुछ स्पष्ट हो जाए।*

— ⅄ⓄႮ⇡⊛ —

'प्रभु, आप क्या कह रहे हैं? मैं यह कैसे कर सकता हूं?' भौचक्के दिलीप ने पूछा।

दिलीप अयोध्या के अपने महल के निजी कक्ष में महर्षि भृगु के चरणों में बैठा हुआ था। प्रधानमंत्री सियामंतक भृगु के अयोध्या में गोपनीय ढंग से आने की पूर्ण व्यवस्था करने में अब तक विशेषज्ञ बन चुका था। महर्षि की औषधियां अपना जादू बिखेर रही थीं। दिन-प्रतिदिन दिलीप और अधिक स्वस्थ होते जा रहे थे।

'क्या आप सहायता करने से मना कर रहे हैं, महाराज?' महर्षि का स्वर दुर्भावनापूर्ण था। उनकी आंखें संकुचित होकर छोटी हो गई थीं।

'नहीं, मुनिवर। निस्संदेह नहीं। किंतु यह असंभव है।'

'मैं आपको मार्ग दिखाऊंगा।'

'किंतु मैं केवल अपने आप यह कैसे कर सकता हूं?'

'आपके पास मित्र होंगे। मैं इसकी प्रतिभूति देता हूं।'

'किंतु एक हमला इस प्रकार का? यदि किसी को पता चल जाता है तो फिर क्या होगा? मेरे अपने लोग ही मेरे विरुद्ध हो जाएंगे।'

'किसी को कुछ भी पता नहीं चलेगा।'

दिलीप परेशान दिखा। *मैंने स्वयं को किस मुसीबत में डाल लिया है?*

'क्यों? इसकी आवश्यकता क्यों है, महर्षि जी?'

'भारत की अच्छाई के लिए।'

दिलीप शांत बने रहे। उनके मुख पर चिंता की रेखाएं थीं।

भृगु जानते थे कि दिलीप स्वयं में ही इतना आसक्त है कि वे किसी बड़े कारण की चिंता नहीं करेंगे। अतः उन्होंने इसे बहुत ही व्यक्तिगत बनाने का निर्णय लिया, 'यदि आप अपने शरीर को रोगों द्वारा नष्ट किए जाने से बचाना चाहते हैं तो आपको ऐसा करने की आवश्यकता है, महाराज।'

दिलीप ने भृगु को एकटक देखा। धमकी स्पष्ट और प्रकट थी। उसने अपना सिर झुकाया, 'बताएं कि कैसे करना होगा, महर्षि?'

— ⅄ⓄႮ⇡⊛ —

नागा रानी के शिव से अनुरोध करने के दो महीने के भीतर ही पर्वतेश्वर ने पंचवटी की यात्रा करने का सारा प्रबंध कर लिया था।

शिव के अनुगामियों की संख्या तब से बहुत अधिक बढ़ गई थी जब वह उस नगर में आया था जहां दैवीय प्रकाश चमकता है। शिव के साथ इस यात्रा में उसका पूरा परिवार था क्योंकि महादेव ने सती और कार्तिक को वहां छोड़ देने से मना कर दिया था। काली और गणेश को तो वहां होना ही था। नीलकंठ की ठाट-बाट में वीरभद्र और नंदी को रहना ही था। और वीरभद्र ने इस बार अपनी पत्नी कृत्तिका को अपने साथ ले चलने की हठ कर की। इसलिए नहीं कि वे एक-दूसरे से मिल नहीं सकेंगे बल्कि इसलिए भी कि वह जानता था कि इतने लंबे समय तक कार्तिक से दूरी को वह सहन नहीं कर पाएगी। आयुर्वती का चयन चिकित्सक के रूप में स्वाभाविक था। शिव स्वयं भगीरथ और परशुराम की उपस्थिति भी चाहते थे। और उनका सेनापति और सुरक्षा प्रभारी पर्वतेश्वर, आनंदमयी के बिना नहीं रह सकता था।

पर्वतेश्वर ने उनके साथ यात्रा करने के लिए दो दलों का प्रबंध किया था। इस प्रकार सूर्यवंशी एवं चंद्रवंशी दोनों के दो हजार सैनिक नौ जहाजों में नीलकंठ और उनके निकट सहयोगियों को ले जाने वाले जलयान के साथ-साथ चल रहे थे। गणेश का विश्वासी ब्रंगा अनुगामी विश्वद्युम्न अपने दल के साथ चंद्रवंशी दल में शामिल कर लिया गया था।

वे धीरे-धीरे चल रहे थे ताकि सभी जलयान एक साथ चल सकें। काशी से चले दो महीने बीत चुके थे और अब वे वैशाली के निकट आ पहुंचे थे।

वासुदेव के मुखिया गोपाल से अपने वार्तालाप को याद करते हुए शिव वीरभद्र, नंदी और परशुराम की ओर मुड़ा। नंदी के अलावा सभी जहाज की छत पर बैठकर चिलम पीते हुए नदी को ध्यान से देख रहे थे।

'प्रकट रूप से प्रभु मनु ने कहा था कि अच्छाई और बुराई एक ही सिक्के के दो पहलू हैं,' शिव ने उस क्षण की चुप्पी को तोड़ते हुए परशुराम से चिलम लिया।

परशुराम ने अपनी त्योरी चढ़ाई, 'सुना तो मैंने भी है, लेकिन मैं कभी भी इसका अर्थ नहीं समझ पाया।'

शिव ने गांजे का एक गहरा कश लिया, धुआं बाहर निकाला और वीरभद्र को चिलम दे दी, 'भद्र, तुम इससे क्या समझते हो?'

'सच कहूं तो आपके वासुदेव मित्र जो अधिकतर बातें बताते हैं वे बकवास हैं!'

शिव ठहाका मारकर हंस पड़ा। उसके अन्य मित्र भी हंस पड़े।

'मैं बिलकुल वैसा ही नहीं कह सकता, वीर वीरभद्र।'

शिव पीछे की ओर मुड़ा तो गणेश को देख वह विस्मित रह गया। शिव चुप हो गया। मसखरी का वातावरण सहसा भंग हो गया। परशुराम ने तत्काल ही गणेश के सम्मान में अपना सिर झुकाया, किंतु कुछ कहा नहीं क्योंकि वह नीलकंठ को अप्रसन्न नहीं करना चाहता था।

वीरभद्र जिसकी दृष्टि में लोकाधीश का सम्मान धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था और जो उसे निष्ठावान व्यक्ति समझने लगा था, उसने पूछ लिया, 'तो फिर गणेश, आप इसका क्या अर्थ समझते हैं?'

'मैं सोचता हूं कि यह एक संकेत हैं,' वीरभद्र पर मुस्कुराते हुए गणेश ने कहा।

'संकेत?' शिव ने कौतूहल से पूछा।

'संभवतया यह नीलकंठ के लिए एक संकेत है कि वे किसकी खोज करें?'

'ठीक है, बोलते रहो।'

'अच्छाई और बुराई एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और इस प्रकार नीलकंठ को सिक्के के एक पहलू की खोज करनी है, है ना?'

शिव ने अपनी त्योरी चढ़ा ली।

'क्या सिक्के के एक पहलू को खोजना संभव है?' गणेश ने पूछा।

शिव ने अपनी ललाट को थपकी दी, 'निस्संदेह, इसके बजाय पूरे सिक्के की खोज करनी है।'

गणेश ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया।

शिव ने गणेश को गहरी दृष्टि से देखा। नीलकंठ के मन में एक विचार उत्पन्न हो रहा था।

अच्छाई की खोज। और आपको उस खोज में बुराई भी मिल जाएगी। जितनी बड़ी अच्छाई उतनी ही बड़ी बुराई भी।

वीरभद्र ने चिलम गणेश को देने के लिए हाथ बढ़ाया और पूछा,'क्या आप लेना चाहेंगे?'

गणेश ने अपने जीवन में कभी भी चिलम नहीं पी थी। उसने अपने पिता की ओर देखा, किंतु वह उनकी रहस्यात्मक आंखों की गहराई में कुछ भी पढ़ नहीं पाया, 'हां, मैं कोशिश करना चाहूंगा।'

वह बैठ गया और उसने वीरभद्र से चिलम ले ली।

'अपने मुंह के पास इसे इस प्रकार रखें,' अपने हाथों से चिलम को पकड़ने का प्रदर्शन करते हुए वीरभद्र ने कहा, 'और मुंह से कश खींच लें।'

गणेश ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था और फिर वह खांसते-खांसत गिर पड़ा।

सभी लोग ठहाका मारकर हंस पड़े, सिवाय शिव के जो भावहीन उसे अभी भी घूर रहा था।

वीरभद्र ने हाथ आगे बढ़ाकर गणेश की पीठ को थपकी दी और चिलम उसके हाथ से ले ली, 'गणेश, लगता है आपको इस बुराई ने कभी छुआ नहीं।'

'नहीं। लेकिन पक्का है कि मैं इसे पसंद करने लगूंगा,' थोड़ा शर्माते हुए गणेश ने क्षण भर के लिए शिव की ओर देखते हुए कहा और उसने पुनः चिलम लेने के लिए अपना हाथ बढ़ा दिया।

वीरभद्र ने चिलम को उसकी पहुंच से दूर करते हुए कहा, 'नहीं गणेश, आपको निर्दोष ही रहना चाहिए।'

— ⅄◎Ʊ↑⊗ —

जहाजों का बेड़ा ब्रंगाओं के द्वार पर था। पर्वतेश्वर, आनंदमयी और भगीरथ नेतृत्व जहाज में द्वार से अंदर जाने वाले कार्यों के निरीक्षण हेतु चले गए थे।

'मैंने इसे पहले भी देखा है, मुझे पता है,' आनंदमयी ने द्वारों को घूरते हुए कहा, 'किंतु मैं अभी भी उनके अतिसुंदर चातुर्य पर आश्चर्यचकित हूं!'

पर्वतेश्वर मुस्कुराया और उसने अपनी बांहों से आनंदमयी को घेर लिया और लगभग उसी समय आनंदमयी की झुंझलाहट को बढ़ाते हुए अपने काम पर लग गया, 'उत्तंक, दूसरा जहाज पर्याप्त रूप से ऊंचा नहीं है। ब्रंगाओं को बताओ कि वे और अधिक पानी उसमें भर दें।'

पर्वतेश्वर ने देखा भी नहीं कि इस मध्य आनंदमयी ने अपनी भौंहें ऊपर उठाई और अपना सिर हल्के से हिलाया। उसके बाद वह मुड़ी और उसने अपने पति के चेहरे को चूम लिया। पर्वतेश्वर मुस्कुरा उठा।

'बस, बस प्रेम पंछियों,' भगीरथ ने कहा, ' थोड़ा धैर्य से।'

आनंदमयी खिलखिला कर हंस पड़ी और उसने अपने भाई की कमर पर एक चपत लगा दी।

पर्वतेश्वर मुस्कुराया और उसके बाद वह द्वारों से प्रवेश करने की गतिविधि का निरीक्षण करने लगा।

'यह प्रवेश ठीक तरह से हो जाएगा, सेनापति,' भगीरथ ने कहा, 'निश्चिंत रहें। हम जानते हैं कि ब्रंगा लोग क्या कर रहे हैं।

यहां कोई विस्मय करने वाली वस्तु नहीं है।'

पर्वतेश्वर ने अपनी त्योरी चढ़ाकर भगीरथ की ओर देखा। अयोध्या के राजकुमार ने जो 'सेनापति' शब्द का उपयोग किया था, उस पर वह विस्मित था। वह आसानी से इस बात को समझ सकता था कि उसका साला कुछ कहना चाहता था लेकिन वह सतर्क था,'खुलकर बोलो

भगीरथ। तुम कहना क्या चाहते हो?'

'हम इस मार्ग को जानते हैं,' भगीरथ ने कहा, 'हम जानते हैं कि ब्रंगा लोग क्या कर रहे हैं। यहां कोई भी विपत्ति अचानक आने वाली नहीं। लेकिन हम ये नहीं जानते कि नागा लोग हमें कहां ले जाने वाले हैं। केवल परमपिता परमेश्वर ही जानें कि उन मार्गों पर कैसी-कैसी विस्मयकारी वस्तुएं छुपी हुई हैं। क्या उन पर इस प्रकार अंधा विश्वास करना बुद्धिमानी है?'

'हम लोग नागाओं पर विश्वास नहीं कर रहे हैं, भगीरथ,' आनंदमयी ने बीच में ही टोक दिया, 'हमलोग नीलकंठ पर विश्वास कर रहे हैं।'

पर्वतेश्वर चुप रहा।

'मैं यह नहीं कह रहा कि हमें महादेव पर विश्वास नहीं करना चाहिए,' भगीरथ ने कहा, 'हम वह कैसे कर सकते हैं? लेकिन हम नागाओं के बारे में कितना जानते हैं? हम उस भयंकर दंडक वन में नागाओं के मार्गदर्शन में जा रहे हैं। क्या एकमात्र मैं ही हूं जो चिंता कर रहा हूं?'

'सुनो,' आनंदमयी ने चिड़चिड़ाकर कहा, 'प्रभु नीलकंठ रानी काली पर विश्वास करते हैं। जिसका सीधा सा अर्थ है कि मैं उन पर विश्वास करती हूं। और उसी प्रकार तुमको भी करना चाहिए।' भगीरथ ने अपना सिर हिलाया, 'आप क्या कहते हैं, पर्वतेश्वर?'

'प्रभु, मेरे प्रभु हैं। यदि वे आदेश देते हैं तो मैं अग्नि की दीवारों पर चढ़ जाऊंगा,' पर्वतेश्वर ने कहा और वह बाहर नदी के किनारे की ओर देखने लगा जहां संकलनकर्ता यंत्रों को खोल दिया गया था। इसके कारण जहाज को अत्यधिक बल के साथ खींचा जा रहा था। मेलूहा का सेनापति भगीरथ की ओर मुड़ा, 'परंतु मैं कैसे भूल सकता हूं कि मेलूहा के सबसे महान वैज्ञानिक बृहस्पति की हत्या गणेश ने की है? और यह भी नहीं भूल सकता कि उसने साम्राज्य के हृदय मंदार शिखर को नष्ट किया है। इन सबके बावजूद मैं उस पर कैसे विश्वास कर सकता हूं?'

आनंदमयी ने पर्वतेश्वर की ओर और उसके बाद अपने भाई की ओर असहजता से देखा।

— ⁂ —

'नहीं, कृत्तिका,' आयुर्वती ने कहा, 'मैं यह नहीं कर सकती।'

राजसी जहाज में मेलूहा की चिकित्सक के कक्ष में कृत्तिका और आयुर्वती थे। उनके जहाज के किनारों में कुंडियों को लगाया जा रहा था ताकि उसे ब्रंगा के द्वार पर आगे की ओर खींचा जा सके। जहाज पर उपस्थित सभी लोग जहाज की छत पर थे ताकि वे ब्रंगाओं की अभियांत्रिकी की इस शानदार प्रक्रिया को अपनी आंखों से देख सकें। वीरभद्र की जानकारी के बिना ही कृत्तिका इस समय का सदुपयोग आयुर्वती से बातें करने में कर रही थी।

'आयुर्वजी जी, कृपया, मेरी बात सुनिए। आप जानती हैं कि मुझे इसकी आवश्यकता है।'

'नहीं, तुम्हें इसकी आवश्यकता नहीं है। और मुझे पक्का विश्वास है कि यदि तुम्हारे पति को यह पता होता वे भी इसके लिए नहीं कहते।'

'उन्हें जानने की आवश्यकता नहीं है।'

'कृत्तिका, मैं कोई भी ऐसा काम नहीं करने वाली, जिससे तुम्हारी जान को संकट हो। क्या यह स्पष्ट है?'

आयुर्वती कार्तिक के लिए कोई औषधि तैयार करने लगी। उसे पर्वतेश्वर के साथ अभ्यास करते समय चोट लग गई थी।

कृत्तिका ने अवसर देखा। आयुर्वती की मेज पर एक थैली रखी हुई थी। वह जानती थी कि यह वही औषधि थी जिसकी उसे लालसा थी। उसने धीमे से उसे उठाकर अपने अंगवस्त्रम में छुपा लिया।

'आपको परेशान करने के लिए मुझे क्षमा करें,' कृत्तिका ने कहा।

आयुर्वती पीछे की ओर मुड़ी, 'मुझे क्षमा करना यदि मैं तुमसे असभ्य रूप से पेश आई, कृत्तिका। परंतु यह तुम्हारी अपनी भलाई के लिए ही है।'

'कृपा कर मेरे पति को ना बताएं।'

'निस्संदेह नहीं,' आयुर्वती ने कहा, 'परंतु तुम्हें वीरभद्र से स्वयं कहना चाहिए। है ना?'

कृत्तिका ने सहमति में सिर हिलाया और कक्ष से बाहर निकलने ही वाली थी कि आयुर्वती ने उसे पुकारा। उसके अंगवस्त्रम की ओर संकेत करते हुए वह बोली, 'कृपया, उसे यहीं रख दो।'

लज्जित हुई कृत्तिका ने अपने अंगवस्त्रम से उस थैली को निकाला और मेज पर रख दिया। उसने आयुर्वती की ओर देखा। उसकी आंखों में आंसू थे और वे निवेदन कर रहे थे।

आयुर्वती ने कृत्तिका के कंधे को धीमे से दबाया, 'क्या तुमने नीलकंठ से कुछ भी नहीं सीखा है? तुम एक संपूर्ण स्त्री हो चाहे जैसी भी हो। तुम्हारा पति तुमको इसलिए प्रेम नहीं करता है कि तुम उसे कुछ दो बल्कि इसलिए करता है कि तुम वह हो जो हो।'

कृत्तिका ने बुदबुदाकर एक विनम्र क्षमाप्रार्थना की और कक्ष से बाहर भाग गई।

अध्याय 23

सभी रहस्यों का रहस्य

काफिले ने व्रंगा के द्वारों को पार किया और नदी की सबसे पश्चिमी उपधारा मधुमती पर आगे बढ़ गया। कुछ सप्ताहों बाद उन्होंने उस स्थान को पार किया जहां शिव ने परशुराम से युद्ध किया था।

'यह वह स्थल है जहां हमने परशुराम से युद्ध किया था,' पूर्व दस्यु की पीठ पर थपकी मारते हुए शिव ने कहा।

परशुराम ने शिव की ओर देखा और उसके बाद सती की ओर देखा, 'वास्तव में, यह वह स्थल है जहां प्रभु ने मेरी रक्षा की थी।'

सती परशुराम को देखकर मुस्कुरा दी। वह जानती थी कि ऐसे में कैसा लगता है। शिव द्वारा बचाया जाना। उसने अपने पति की ओर प्रेम से देखा। एक ऐसे व्यक्ति को जो अपने आस-पास के व्यक्तियों के जीवन से विष को निकाल सकने की क्षमता रखता था। जबकि वह स्वयं अपनी यादों के विष का वमन नहीं कर पाया था और आज भी उन यादों के दानवों से पीड़ित थे। उसने चाहे जितने प्रयत्न किए, वह उनके अतीत को भुलवा पाने में सफल नहीं हो पाई थी। संभवतया यही उसका भाग्य था।

सती का चिंतनचक्र परशुराम ने तोड़ दिया, 'यह वह स्थल है, जहां हमें मुड़ना है, प्रभु।'

सती ने उस ओर देखा जिस ओर उस निष्कासित वासुदेव ने संकेत किया था। वहां कुछ भी नहीं था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि नदी सुंदरी वृक्षों के झुरमुट का घाघरा पहने हुए आगे बढ़ती हुई पूर्वी समुद्र की ओर चली गई थी।

'कहां?' शिव ने पूछा।

'उन *सुंदरी* वृक्षों को देखें, प्रभु,' परशुराम ने अपने कटे हुए बाएं हाथ से झुरमुट की ओर संकेत करते हुए कहा, 'वे इस क्षेत्र को अपना नाम देते हैं। *सुंदरवन।'*

'सुंदर वन?' सती ने पूछा।

'जी हां, देवी,' परशुराम ने कहा, 'वे एक अति सुंदर रहस्य को भी छुपाकर रखते हैं।'

काली के आदेश पर नेतृत्व जहाज उस झुरमुट की ओर मुड़ गया जिसकी ओर परशुराम ने संकेत किया था। अपने जहाज से दूरी होने पर भी सती देख पा रही थी कि पर्वतेश्वर भी जहाज की छत पर थे और काली की ओर देखते हुए नागा रानी से विवाद कर रहे थे।

काली ने उन्हें अनसुना कर दिया। और उधर जहाज उस ओर आगे बढ़ने लगा जिस ओर जाना घातक लग रहा था।

'वे क्या कर रहे हैं?' घबराहट में सती ने पूछा, 'वे भूमि से टकराकर अटक जाएंगे।'

उनको उस समय हैरानी हुई जब नेतृत्व करने वाला जहाज उन पेड़ों को धक्का देता हुआ आगे की ओर बढ़ गया।

'पवित्र झील के नाम पर यह क्या है?' विस्मित शिव फुसफुसाया,'जड़विहीन वृक्ष।'

'जड़विहीन नहीं, प्रभु,' परशुराम ने कहा, 'उनमें जड़ हैं, किंतु वे भूमि में लगे हुए नहीं हैं। जड़ दलदल में तैरते रहते हैं।'

'परंतु ऐसे वृक्ष जीवित कैसे रह सकते हैं?' सती ने पूछा।

'यह कुछ ऐसा है कि जो मैं भी नहीं समझ पाया हूं,' परशुराम ने कहा, 'संभवतया यह नागाओं का जादू है।'

राजसी जहाज के पीछे अन्य जहाज भी सुंदरी वृक्षों के तैरते

झुरमुट में सरलता से प्रवेश कर गए और उसके बाद वे एक झील में प्रविष्ट हुए जहां मधुमती का जल विनम्र तरंगों वाला हो गया था।

शिव ने चारों ओर आश्चर्य से देखा। वह क्षेत्र अत्यंत हरा-भरा था और पक्षियों के उग्र कलरव से जीवंत था। वहां के पेड़-पौधे अत्यधिक सघन थे, जिसके कारण उस झील पर पत्तियों की छतरी सी बन गई थी। वह झील इतनी विशाल थी कि वहां दस बड़े-बड़े जहाज आराम से समा सकते थे। उस समय दूसरा प्रहर लगभग समाप्त होने वाला था और सूरज अपनी तीव्रता पर था। जबकि उस छायादार झील में भ्रमवश लोगों को शाम होने का अंदेशा हो सकता था।

परशुराम ने शिव की ओर देखा, 'इस तैरते झुरमुट के बारे में बहुत ही कम लोगों को पता है। मैं उन कुछ लोगों के बारे में जानता हूं, जिन्होंने इसे ढूंढ़ने के प्रयास किए और उनके जहाज भूमि से टकराकर नष्ट हो गए।'

किनारों पर लगे लंबे खंभों में बांधकर दस जहाजों को खड़ा कर दिया गया। उन्हें एक-दूसरे से तैरते हुए ही बांधकर घने सुंदरी वृक्षों के झुरमुट के पीछे छुपा दिया गया।

आगे का मार्ग पैदल तय करना था। दो हजार सैनिकों को दंडकारण्य के बीच से होकर जाना था। उन सब को नेतृत्व जहाज के आस-पास जमा होने के लिए कहा गया।

काली मुख्य मस्तूल पर चढ़ गई ताकि सभी लोग उसे देख सकें, 'आप सभी सुनें!'

सभी लोग शांत हो गए। काली का स्वर तत्काल ही अनुपालन की मांग कर रहा था।

'आप सभी लोगों ने दंडकारण्य के बारे में अफवाहें सुनी होंगीं। आपने सुना होगा कि दंडक वन विश्व में सबसे बड़ा है। यह पूर्वी समुद्र से लेकर पश्चिमी समुद्र तक फैला हुआ है। यह इतना सघन है कि सूरज की रौशनी यहां प्रवेश नहीं कर सकती। यह विकराल पशुओं से भरा पड़ा है जो भटके राही को नष्ट कर देते हैं। यह वन विषयुक्त वृक्षों से भी भरा पड़ा है और जो लोग मूर्खतावश कुछ खा लेते हैं या उन्हें छूते हैं तो वे भी समाप्त हो जाते हैं।'

सैनिकों ने चिंता से काली की ओर देखा।

'ये सभी अफवाहें सही हैं, अत्यधिक भयंकर रूप से।'

सैनिकों को पता था कि दंडक वन नर्मदा के दक्षिण में था। इसकी सीमा प्रभु मनु ने निर्धारित की थी। ऐसी सीमा जिसे कभी भी पार नहीं करना था। वे ना केवल प्रभु मनु के आदेशों का उल्लंघन कर रहे थे, बल्कि भयानक दंडकारण्य में प्रवेश भी कर रहे थे। इन शापित वनों में कोई अति साहसिक बनकर अपने भाग्य को आजमाने की सोच भी नहीं रहा था। काली के शब्दों ने उनके दृढ़ विश्वास को मात्र पक्का ही किया था।

'मेरे अलावा केवल गणेश और विश्वद्युम्न ही इन मृत्यु समान मार्गों के बारे में जानते हैं। यदि आप जीवित रहना चाहते हैं तो हमारे आदेशों का पालन करें और वही करें जो हम कहें। यदि ऐसा आप नहीं करेंगे तो मैं वचन देती हूं कि आप पंचवटी जीवित नहीं पहुंच पाएंगे।'

सैनिकों ने जोशीले ढंग से सिर हिलाकर सहमति प्रकट की।

'दिन के बचे हुए समय में आप जहाजों पर विश्राम कर सकते हैं। भोजन करें और एक नींद ले लें। सूर्योदय के साथ ही हम रवाना हो जाएंगे। आज कोई भी सुंदरबन में अकेले इधर-उधर विचरण नहीं करेगा। हो सकता है कि वे जान जाएंगे कि इन वनों में सुंदरता कम और क्रूरता अधिक है।'

काली मस्तूल से नीचे उतरी तो उसने देखा कि शिव और सती नीचे खड़े थे।

'दंडक वन यहां से कितनी दूर है?' सती ने पूछा।

काली ने आस-पास देखा और उसके बाद सती की ओर देखा,'हम लोग एक बहुत बड़े काफिले में यात्रा कर रहे हैं। सामान्यतया यह दूरी एक महीने में तय हो जाती है। लेकिन मुझे लगता है कि हमें दो से तीन महीने लग जाएंगे। हालांकि इसमें कोई बुराई नहीं। मैं मृत्यु की अपेक्षा धीरे चलना पसंद करूंगी।'

'तुम्हें शब्दों को घुमाना बहुत आता है, बहन।'

कुटिलता से काली मुस्कुराई।

'क्या पंचवटी दंडक वन के मध्य में है?' शिव ने पूछा।

'नहीं, शिव। वह पश्चिम की ओर अधिक है।'

'तो फिर, बहुत अधिक दूर है।'

'इसी कारण मैंने कहा था कि बहुत अधिक समय लगेगा। जब हम दंडकारण्य पहुंचेंगे तब उसके बाद पंचवटी पहुंचने में और छह महीने लग जाएंगे।'

'हुं ऽ म,' शिव ने कहा, 'जहाज से हमें पर्याप्त मात्रा में खाने का सामान लेकर चलना चाहिए।'

'इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, शिव,' काली ने कहा,'अतिरिक्त भार हमें धीमा कर देगा। ये वन आवश्यक भोजन से परिपूर्ण हैं। हमें मात्र सावधान रहना है कि हम वह नहीं खाएं जो हमें नहीं खाना चाहिए।'

'परंतु भोजन ही एकमात्र समस्या नहीं है। हम लोग नौ महीने वनों में बिताएंगे। कई अन्य संकट भी आ सकते हैं।'

काली की आंखें चमकी उठीं, 'नहीं आएंगे यदि आप मेरे साथ हैं।'

— ⅄⓪Ʊ⇞⊛ —

मुख्य जहाज की छत पर रात का भोजन परोसा गया। शिव ने नागाओं की सामुदायिक भोज की प्रथा का सम्मान करने का निर्णय लिया जिसमें अनेक लोग एक अत्यधिक विशाल पत्तल में मिलकर खाना खाते हैं। यह पत्तल केले के पत्तों को एक साथ जोड़कर बनाए जाते हैं।

शिव, सती, काली, गणेश, कार्तिक, पर्वतेश्वर, आनंदमयी, भगीरथ, आयुर्वती, परशुराम, नंदी, वीरभद्र और कृत्तिका उस विशालकाय पत्तल के चारों ओर बैठ गए। पर्वतेश्वर को यह प्रथा अजीब और अस्वास्थ्यकर प्रतीत हुई, किंतु सदैव की तरह उसने शिव के आदेश का पालन किया।

'इस प्रथा के पीछे कारण क्या है, महारानी?' भगीरथ ने काली से पूछा।

'हम नागा लोग भोजन की देवी अन्नपूर्णा में आस्था रखते हैं जो हम सब की माता है। क्या वह हमें जीवित नहीं रखती है? यह प्रथा संयुक्त रूप से उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आयोजित की जाती है। जब हम यात्रा कर रहे होते हैं तो इसी प्रकार अपना भोजन करते हैं। अब हम सब भाई-बहन हैं। हम लोग इस यात्रा में एक जैसे भाग्य वाले बन चुके हैं।'

'यह बात तो सच है,' भगीरथ ने कहा और साथ में यह भी सोच रहा था कि सामुदायिक भोज विष करण से बचने का एक बहुत ही अच्छा तरीका है।

'क्या सचमुच ही दंडक भयानक है, महारानी?' पर्वतेश्वर ने पूछा, 'या फिर ये अफवाहें अनुशासन सुनिश्चित करने के लिए हैं।'

'एक वन बहुत अधिक देख-रेख करने वाली किसी दयालु माता की तरह का हो सकता है, यदि हम उसके नियमों का पालन करें। लेकिन यदि हम रास्ते से भटक जाते हैं तो वह एक दानव की तरह हो सकता है जो आपको तत्काल ही परास्त कर देगा। हां, अफवाहें अवश्य ही अनुशासित करने का माध्यम बनती हैं। नौ महीने का समय एक ही मार्ग पर चलने के लिए बहुत लंबा होता है। अतः आवश्यक है कि हम इससे भटकें नहीं। लेकिन विश्वास करें, जो भटक जाएंगे उन्हें इस बात का पता अवश्य चल जाएगा कि ये अफवाहें पक्के तथ्यों पर आधारित हैं।'

'ठीक है,' शिव ने कहा, 'बहुत चर्चा हो गई। अब हमें भोजन करना चाहिए।'

और इन सब के मध्य आयुर्वती कृत्तिका और वीरभद्र को देख रही थी। कौर लेने के बीच-बीच में वीरभद्र कार्तिक की ओर संकेत कर रहा था और कुछ फुसफुसा रहा था। वे दोनों ही कार्तिक को प्रेम भरे भाव से ऐसे देख रहे थे जैसे वह उन्हीं का पुत्र हो।

आयुर्वती के मुख पर एक दुखभरी मुस्कान थी।

— ⅄⓪Ʊ⇞⊛ —

'सेनापति,' वीरभद्र ने कहा।

पर्वतेश्वर सच में झुंझलाया हुआ था। दो सैनिक तैरती हुई गोदी में नेतृत्व जहाज के पास थे और सौ आदमी उनके साथ थे। सबसे आगे

काली और गणेश थे। कोई मार्ग दिखाई नहीं पड़ रहा था। हर दिशा को सघन झाड़ियों ने पूरी तरह ढका हुआ था।

वीरभद्र को देखकर पर्वतेश्वर थोड़ा शांत हो गया, 'क्या प्रभु आ रहे हैं?'

'नहीं सेनापति, केवल मैं।'

पर्वतेश्वर ने सिर हिलाया, 'ठीक है,' उसके बाद वह काली की ओर मुड़ा, 'महारानी, मैं आशा करता हूं कि आप मेरे आदमियों से पंचवटी तक झाड़ियों को काटते हुए मार्ग बनाकर चलने की आशा नहीं कर रहीं?'

'यदि मैं ऐसी आशा करती भी हूं तो मुझे विश्वास है कि आपके सूर्यवंशी सैनिक यह काम बहुत सरलता से कर लेंगे।'

पर्वतेश्वर की आंखें झुंझलाहट में संकुचित हो गईं, 'देवी, मैं अपने धैर्य की अंतिम सीमा पर हूं। आप या तो सीधे-सीधे उत्तर दें या फिर मैं अपने आदमियों के साथ जहाज से रवाना हो जाऊंगा।'

'मुझे नहीं पता कि आपका विश्वास जीतने के लिए मुझे क्या करना चाहिए, सेनापति। क्या अभी तक की यात्रा में मैंने ऐसा कोई काम किया है जिससे आपके लोगों को कोई कष्ट पहुंचा हो?' काली ने पश्चिमी दिशा में संकेत करते हुए कहा, 'आपके सैनिकों को मात्र इतना ही करना है कि इस दिशा में सौ मीटर तक झाड़ियों को साफ कर दें।'

'बस इतना ही?'

'हां इतना ही।'

पर्वतेश्वर ने सिर हिलाया। सैनिकों ने तत्काल ही अपनी तलवारें निकालीं और एक पंक्ति की बनावट में आ गए। वीरभद्र भी उनमें शामिल हो गया। वे आगे की ओर धीमे से बढ़ने लगे। वे उन सभी झाड़ियों को काटकर साफ करते जा रहे थे जो अवेधनीय थीं। गणेश और विश्वद्युम्न उस पंक्ति के दोनों छोरों पर थे। वे बाहर की ओर देखते हुए अपनी तलवारें निकाले हुए थे। उनकी मुद्राओं से स्पष्ट था कि वे उन सैनिकों की रक्षा किसी अनजान संकट से कर रहे थे।

कुछ देर के बाद वीरभद्र और सैनिक तब आश्चर्यचकित रह गए जब वे उस सघन झाड़ियों से निकलकर एक रास्ते पर आ गए। वह इतना चौड़ा था कि दस अश्व एक साथ चल सकते थे।

'अरे, प्रभु राम के नाम पर यह कहां से निकल आया?' आश्चर्यचकित पर्वतेश्वर ने पूछा।

'यह मार्ग स्वर्ग की ओर जाता है,' काली ने कहा, 'लेकिन वहां पहुंचने से पहले यह नर्क से होकर गुजरता है।'

पर्वतेश्वर नागा रानी की ओर मुड़ा।

काली मुस्कुराई, 'मैंने आपसे पहले ही कहा था। मुझ पर विश्वास करें।'

वीरभद्र थोड़ा बढ़कर गया और आगे जाने वाले सड़क मार्ग को विस्मय से देखा। वह एकदम ही सीधा सपाट सामने दूर तक जाता दिख रहा था। वह पत्थरोंभरा एक मार्ग था जिसे बहुत हद तक समतल कर दिया गया था। उस सड़क मार्ग के समानांतर दोनों ओर वृक्षों के साथ-साथ बाड़े अनवरत लगे हुए थे जिन पर लताएं लिपटी हुई थीं।

'क्या ये विषाक्त हैं?' पर्वतेश्वर ने उन जुड़वा बाड़ों की ओर संकेत करते हुए पूछा।

'अंदर वाला जो सड़क मार्ग के ठीक बाद है वह नागवल्ली लताओं से बने हुए हैं,' काली ने कहा, 'यदि आप चाहें तो इनकी पत्तियों को खा भी सकते हैं। लेकिन जो बाड़ा बाहर जंगल की ओर लगा हुआ है, वह बहुत विषाक्त है। यदि उनके कांटें भी आपको चुभ जाएं तो आपको अपने ईश्वर से प्रार्थना करने तक का समय नहीं मिल पाएगा।'

पर्वतेश्वर ने अपनी भौंहों को ऊंचा किया। *इन लोगों ने इन्हें कैसे बनाया होगा?*

वीरभद्र काली की ओर मुड़ा, 'महारानी जी, क्या यह बस इतना ही है? क्या हमें बस इतना ही करना है? इस सड़क मार्ग को खोजना है और आगे बढ़ते जाना है? और हम लोग नागाओं के नगर पहुंच जाएंगे?'

काली ने उपहास में मुस्कुराते हुए कहा, 'यदि जीवन इतना ही सरल होता तो क्या था!'

— ⅄⊕Ư⇡⊛ —

प्रथम प्रहर बस समाप्त होने ही वाला था। सूरज क्षितिज पर टिमटिमा रहा था। कुछ ही मिनटों में वह अपनी कीर्ति के अनुसार प्रकाश फैलाते और गर्मी प्रदान करते हुए चमकने वाला था। हालांकि उस सघन सुंदरबन में सूरज अपने अग्निमय स्वरूप की छायामात्र ही था। शिव के काफिले के चलने के लिए मार्ग दिखाने के लिए उसकी कुछ किरणें ही उन सघन पत्तियों से छनकर धरती तक आने में सफल हो पा रही थीं।

नागाओं की सड़क तक सफाई किए हुए स्थान पर एक सौ आदमियों का एक दल छोड़ दिया गया था। उन्हें स्पष्ट आदेश दे दिया गया था। जंगल की ओर से आने वाले किसी भी पशु या किसी अन्य संकट का तत्काल ही समाधान कर देना था।

पैदल सिपाही उस सफाई किए क्षेत्र से होते हुए जव नागा मार्ग में प्रविष्ट हुए तो उनकी आंखें विस्मित थीं। उस जंगल में जो उन लोगों ने सबसे अंतिम आशा की थी, वह थी एक आरामदायक और सुरक्षित रास्ते की। जुलूस के दोनों किनारों पर घुड़सवार दल थे, जो मशालें लेकर मार्ग को प्रकाशित कर रहे थे।

काले अश्व पर सवार विश्वद्युम्न के साथ पर्वतेश्वर, भगीरथ और आनंदमयी भी आगे-आगे चल रहे थे। नीलकंठ का परिवार काली, आयुर्वती, कृत्तिका और नंदी के साथ मध्य में चल रहा था। वीरभद्र और परशुराम के साथ गणेश सफाई किए हुए क्षेत्र में खड़ा था। वह तव तक प्रतीक्षा करेगा जव तक कि सभी सैनिक वहां से निकल नहीं जाते। उसके वाद उसे एक कार्य करना था।

'क्या हमें सचमुच ही पीछे की ओर पहरा देने की आवश्यकता है, गणेश?' वीरभद्र ने पूछा, 'तैरते हुए सुंदरी के झुरमुट को ढूंढ़ पाना लगभग असंभव है।'

'हम लोग नागा हैं। सभी हमसे घृणा करते हैं। हम कभी भी असावधान नहीं रह सकते।'

'ये अंतिम सैनिक हैं। अव क्या करना है?'

'कृपा कर मेरा पहरा करें,' गणेश ने कहा।

गणेश अपने हाथ में वीजों का एक थैला लिए हुए उस सफाई किए हुए हिस्से में गया। वीरभद्र और परशुराम उसके दोनों ओर अपने हथियार निकालकर उसके साथ बढ़ गए। वे दोनों ही दोनों ओर से उसकी सुरक्षा कर रहे थे।

वहां वे कुछ ही देर थे कि एक जंगली सूअर चहलकदमी करता हुआ उनकी ओर आया। वीरभद्र ने आज तक जितने सूअर देखे थे, उनमें से वह सवसे वड़ा था। वह लगभग दो मीटर लंवा और एक मीटर ऊंचा था। वह सूअर कुछ दूरी पर रुक गया। अपने सामने के खुरों को आगे-पीछे करता हुआ, अपने नथुने से हुंकार की धीमी ध्वनि के साथ वह मनुष्यों को देख रहा था। परशुराम गणेश की ओर मुड़ा। वह सूअर आक्रमण करने के लिए तैयार हो रहा था। नागा अपना काम करता जा रहा था। वह बीज बिखेरता जा रहा था और उसी मध्य उसने धीमे से परशुराम को अपना सिर हिलाया। परशुराम आगे की ओर उछला और उसने अपनी कुल्हाड़ी को हवा में लहराया, जिसकी धार से उस सूअर का सिर एक ही वार में धड़ से अलग हो गया।

वीरभद्र परशुराम की ओर उसकी सहायता के लिए धीरे-धीरे बढ़ रहा था कि तभी गणेश ने तेजी से उसे रोकते हुए कहा, 'आप दूसरी ओर अपनी आंखों को केंद्रित करे रहिए, वीरभद्र। परशुराम इसे संभालने में सक्षम हैं।'

परशुराम ने इस बीच उस पशु के शरीर को जगह-जगह से काट दिया था। उसके बाद उसने उस जंगली सूअर के कटे हुए भागों वाले शव को सड़क पर खींच लिया।

जव परशुराम वापस आया तो उसने वीरभद्र से इसका वर्णन किया, 'यह शव मांसाहारी पशुओं को ही आकर्षित करेगा।'

इस बीच गणेश ने बीजों को इधर-उधर छितराने का कार्य समाप्त कर लिया था। वह मुड़ा और सड़क की ओर चल पड़ा। उसके पीछे वीरभद्र और परशुराम थे।

जैसे ही वे सड़क पर पहुंचे तो वीरभद्र बोल पड़ा, 'वह एक विशालकाय जंगली सूअर था।'

'वास्तव में वह वहुत ही छोटा था क्योंकि वह अभी युवा ही था,' गणेश ने कहा, 'उसके समूह में दूसरे बहुत बड़े होंगे। जब हम सड़क की सुरक्षा करते हैं तो इन्हें वहुत निकट नहीं आने देते। इस क्षेत्र में सूअरों का आक्रमण घातक सिद्ध हो सकता है।'

वीरभद्र मुड़ा तो उसने देखा कि एक सौ ब्रंगा सैनिक उनके अश्वों को थामे हुए प्रतीक्षा कर रहे थे। वह गणेश की ओर मुड़ा, 'अब क्या करना है?'

'अब हम प्रतीक्षा करते हैं,' अपनी तलवार निकालते हुए गणेश ने कहा। उसका स्वर शांत था, 'हमें इस प्रवेशद्वार को कल प्रातः तक सुरक्षित रखना है। जो कोई भी इसमें प्रवेश करने का प्रयास करता है, उन्हें नष्ट कर देना है।'

'केवल कल तक ही? तब तक क्या ये झाड़ियां पूरी तरह से उग जाएंगीं?'

'बिलकुल सही, ऐसा ही होगा।'

— ⅄ⓄⅡ⅍⊛ —

एक शेर की तीव्र गुर्राहट को सुनकर वीरभद्र उठ बैठा। कोई पशु, संभवतया एक हिरन उस विशालकाय बिल्ली की पकड़ में आ चुका था। उसने अपने आस-पास देखा। जंगल जगने लगा था। सूरज का उदय अभी-अभी हुआ था। पचास सैनिक उसके सामने सो रहे थे। उनके आगे की ओर नागा सड़क थी जिस पर शिव के अनुगामियों के दल ने कल ही अपनी यात्रा प्रारंभ कर दी थी।

वीरभद्र ने अपने अंगवस्त्रम को शरीर पर लपेट लिया और हथेलियों पर फूंक मारी। बहुत ठंड थी। उसने देखा कि उसके पास ही परशुराम खर्राटे लेता हुआ, अपना मुंह आधा खोले हुए गहरी निद्रा में डूबा हुआ था।

वीरभद्र अपनी कोहनी के बल उठा और पीछे मुड़ा। अन्य पचास सैनिक पहरे पर खड़े हुए थे। उनकी तलवारें बाहर निकली हुई थीं। उन्होंने अपने अन्य साथियों से पहरे का भार आधी रात में लिया था।

'गणेश?'

'मैं यहां हूं, वीरभद्र,' गणेश ने कहा।

वीरभद्र आगे बढ़ा तो पहरेदारों ने हटकर बीच में जगह बनाई जिससे लोकाधीश दिखने लगा। वीरभद्र स्तब्ध था।

'पवित्र झील की सौगंध,' वीरभद्र ने कहा, 'ये झाड़ियां तो फिर से उतनी ही बड़ी हो गई हैं। यह तो लगभग ऐसा ही है कि जैसे ये कभी काटी ही नहीं गई थीं।'

'अब सड़क मार्ग पूरी तरह से सुरक्षित है। अब हम यहां से आगे बढ़ सकते हैं। आधा दिन यदि हम तेजी से चलें तो शेष लोगों तक पहुंच जाएंगे।'

'तो फिर हम किस चीज की प्रतीक्षा कर रहे हैं?'

— ⅄ⓄⅡ⅍⊛ —

'तुम्हें पूछना चाहिए,' वीरभद्र ने कृत्तिका से कहा।

सुंदरवन में चलते हुए बिना किसी घटना के एक महीने का समय बीत चुका था। इतना विशालकाय काफिला होने के बावजूद उन्होंने अच्छी प्रगति कर ली थी। कृत्तिका काफिले के मध्य से निकलकर अपने पति के साथ रहने के उद्देश्य से काफिले के पीछे की ओर चली गई थी। वह गणेश के साथ वार्तालाप का आनंद ले रही थी और धीरे-धीरे अपनी राजकुमारी के बड़े पुत्र से उसे लगाव होने लगा था।

गणेश जिसका अश्व वीरभद्र और कृत्तिका के अश्वों के साथ-साथ चल रहा था, तत्काल ही बोला, 'क्या पूछना है, मुझसे?'

'ऐसा है,' कृत्तिका ने कहा, 'वीरभद्र मुझे बताते हैं कि आप उस समय अधिक आश्चर्यचकित नहीं हुए थे जब आपने सुना था कि संभवतया सम्राट दक्ष ने श्री चंदनध्वज को मारा था।'

परशुराम ने अपने अश्व को थोड़ा धीमा किया ताकि वह उनके साथ हो जाए। वह उत्सुक था।

'क्या आप जानते थे?' कृत्तिका ने पूछा।

'हां।'

कृत्तिका गणेश के चेहरे पर गुस्सा और घृणा के भाव ढूंढ़ रही थी। लेकिन वहां ऐसा कुछ भी नहीं था। 'क्या आप प्रतिशोध का अनुभव नहीं करते? क्या आपको नहीं लगता कि यह एक अन्याय था?'

'मैं प्रतिशोध या अन्याय का अनुभव नहीं करता, कृत्तिका जी,' गणेश ने कहा, 'ब्रह्मांड की अच्छाई के लिए न्याय का अस्तित्व होता है, ताकि संतुलन बना रहे। मनुष्यों में घृणा की ज्वाला उत्पन्न करने के लिए यह अस्तित्व में नहीं होता। इसके अलावा, मेरे पास मेलूहा के सम्राट को न्याय के कटघरे में खड़ा करने की शक्ति नहीं है। ब्रह्मांड को यह शक्ति है। वह न्याय करेगा तब जब उचित समय होगा। इस जीवन में या अगले जीवन में।'

परशुराम ने बीच में ही टोका, 'किंतु क्या प्रतिशोध आपको अच्छा अनुभव नहीं कराएगा?'

'आपने प्रतिशोध ले लिया, आपने लिया ना?' गणेश ने परशुराम से पूछा, 'क्या आप पहले से अच्छा अनुभव करते हैं?'

परशुराम ने एक गहरी श्वास ली। वह अच्छा महसूस नहीं करता था।

'तो इस प्रकार आप दक्ष के साथ कुछ भी करना नहीं चाहते?'

वीरभद्र ने पूछा।

गणेश ने अपनी आंखें संकुचित कीं, 'मैं इसकी कोई परवाह नहीं करता।'

वीरभद्र मुस्कुराया। परशुराम ने वीरभद्र की प्रतिक्रिया पर अपनी त्योरी चढ़ा ली।

'क्या?' परशुराम ने पूछा।

'कुछ अधिक नहीं,' वीरभद्र ने कहा, 'बस इतना ही कि अंततः मैं आज उस बात को समझ गया जो एक दिन शिव ने मुझसे कहा था। उन्होंने कहा था कि प्रेम का विपरीत घृणा नहीं होता है। घृणा मात्र उतना ही है कि जब प्रेम बुरा हो जाता है। प्रेम का विपरीत वास्तव में उदासीनता है–जब आप इस बात की कोई परवाह नहीं करते कि उस व्यक्ति के साथ क्या होता है और क्या नहीं होता।'

— ⁂ —

'भोजन बहुत स्वादिष्ट है,' शिव ने मुस्कुराते हुए कहा।

सुंदरी वृक्षों के झुरमुट से निकलकर चलते हुए शिव और उसके साथियों को दो महीने बीत चुके थे। वे लोग अभी-अभी भयानक दंडक वन में प्रविष्ट हुए थे। सड़क मार्ग समाप्त हो चुका था और एक बहुत बड़े खुले क्षेत्र में परिवर्तित हो चुका था। इस क्षेत्र में शिव के दल के अलावा और अधिक संख्या में लोग समा सकते थे। जैसाकि नागाओं की प्रथा थी, समूहों में लोग विशालकाय पत्तलों पर सामूहिक रात्रि भोजन कर रहे थे।

काली मुस्कुराई, 'वन में वे सभी कुछ हैं, जिनकी हमें आवश्यकता है।'

सती ने गणेश की पीठ पर थपकी मारी। वह शेष परिवारों से अलग सवारी कर रहा था, अतः सती सामूहिक रात्रि भोज का आनंद ले रही थी जहां वह अपने बड़े पुत्र के साथ बातचीत कर सकती थी,'क्या भोजन ठीक-ठाक है?'

'बहुत अच्छा है, मां,' गणेश मुस्कुराया।

गणेश कार्तिक की ओर मुड़ा और उसने एक आम उसकी ओर खिसका दिया। कार्तिक, जो इन दिनों बहुत ही कम मुस्कुरा रहा था, उसने अपने बड़े भाई की ओर लगाव से देखा, 'धन्यवाद, दादा।'

भगीरथ ने काली की ओर देखा। वह स्वयं को अब और अधिक रोक नहीं पा रहा था, 'महारानी जी, ये पांच मार्ग इस खुले क्षेत्र से बाहर की ओर क्यों निकल रहे हैं?'

'मैं सोच ही रही थी कि अभी तक आपने यह प्रश्न पूछने से स्वयं को कैसे रोका हुआ था!'

सभी लोग काली की ओर मुड़ गए।

'बहुत ही सरल। इनमें चार मार्ग आपको दंडक वन के और अधिक सघन वन की ओर ले जाते हैं। इतने सघन कि आप विनाश को पहुंच जाते हैं।'

'कौन सा सही मार्ग है?' भगीरथ ने पूछा।

'मैं आपको कल प्रातः बताऊंगी, जब हम यहां से प्रस्थान करेंगे।'

'ऐसे खुले क्षेत्र और कितने हैं, काली?' शिव ने पूछा।

काली के होंठ एक बड़ी मुस्कान में खिंच गए, 'पंचवटी के रास्ते में ऐसे पांच खुले क्षेत्र हैं, शिव।'

'प्रभु राम दया करें,' पर्वतेश्वर ने कहा, 'इसका अर्थ है कि तीन सहस्र अवसरों में मात्र एक अवसर है जब हम पंचवटी के लिए सही मार्ग का चयन कर सकते हैं!'

'हां,' काली मुस्कुराई।

आनंदमयी खीज भरी हंसी हंस रही थी, 'ऐसा है कि हमें यह आशा करनी चाहिए कि आप सही मार्ग को ना भूली हों, महारानी।'

काली मुस्कुराई, 'विश्वास करें, मैं नहीं भूली हूं।'

— ⁂ —

काली ने शिव, सती और नंदी को थोड़ा आगे सवारी करते हुए देखा। शिव ने अभी-अभी ही कुछ ऐसा कहा था कि सती और नंदी खिलखिला कर हंस पड़े थे। उसके बाद नीलकंठ नंदी की ओर मुड़े और उसकी ओर अर्थपूर्ण ढंग से अपनी पलकें झपकाईं।

काली आयुर्वती की ओर मुड़ी, 'उनमें यही कुशलता है।'

वे पंचवटी की ओर जाने वाले उस काफिले के बीच चल रहे थे। मधुमती नदी के पास से उनकी यात्रा को आरंभ हुए तीन महीने बीत चुके थे। दंडक जैसे सघन वन में होते हुए भी उनकी यह यात्रा आश्चर्यजनक रूप से शांतिपूर्ण रही थी, यद्यपि थकाऊ अवश्य रही। ऐसे वार्तालाप से ही ऊब कम की जा सकती थी।

'कौन सी कुशलता?' आयुर्वती ने पूछा।

'लोगों के दुख हरके उनमें सुख-शांति लाने की कुशलता,' काली ने कहा।

'हां, वह तो है,' आयुर्वती ने कहा, 'किंतु वह उनकी कई कुशलताओं में से मात्र एक है। *ऊं नमः शिवाय।*'

काली विस्मित थी। मेलूहा की वैद्य ने पुराने मंत्र को भ्रष्ट कर दिया था। *ऊं* और *नमः* शब्द केवल देवों के लिए ही उपयोग किए जाते थे, किसी भी जीवित मनुष्य के लिए कभी नहीं।

नागा रानी ने आगे जाते हुए शिव को देखने के लिए अपना चेहरा घुमाया और मुस्कुराई। कभी-कभी एक सामान्य आस्था गहन शांति प्रदान कर देती है।

काली ने आयुर्वती की कही हुई पंक्ति को दोहराया, *'ऊं नमः शिवाय।'*

समस्त ब्रह्मांड प्रभु शिव के समक्ष सिर झुकाता है। मैं प्रभु शिव के सामने सिर झुकाती हूं।

आयुर्वती कार्तिक की ओर मुड़ी जो थोड़ा पीछे सवारी कर रहा था। वह बालक चार वर्ष की आयु से कुछ महीने अधिक का था लेकिन वह नौ वर्ष का प्रतीत हो रहा था। उसे देख मन विचलित हो रहा था। उसकी बांहों और मुख पर चोट के निशान थे। उसके पीठ के ऊपर दो तलवारें एक-दूसरे को आर-पार करती हुई टंगी हुई थीं। ढाल का कहीं अता-पता नहीं था। उसकी आंखें बाड़ों पर टिकी हुई थीं, जो आने वाले संकट की खोज कर रही थीं।

लगभग अपनी जान पर खेलते हुए जिस दिन उसके भाई ने अकेले ही शेरों से उसकी जान बचाई थी, उसी दिन से कार्तिक पूरी तरह से अंतर्मुखी हो चुका था। अपने माता-पिता, कृत्तिका और गणेश के अलावा वह किसी अन्य से ना के बराबर बातें करता था। वह कभी

मुस्कुराता तक नहीं था। वह सदैव शिकारी दलों के साथ वनों में जाता था। कई बार उसने अकेले ही पशुओं का शिकार किया था। विस्मित सैनिकों ने आयुर्वती को कार्तिक के कारनामों का वर्णन दिया था कि वह कैसे शिकार करते समय शांत, कठिन और क्रूर बन जाता था।

आयुर्वती ने एक आह भरी।

जब से उन्होंने काशी को छोड़ा था, तब से पिछले कुछ महीनों में काली का आयुर्वती के साथ बहुत अच्छा संबंध हो चुका था, वह फुसफुसाई, 'मेरे विचार से आपको प्रसन्न होना चाहिए क्योंकि उसने अपने जीवन से उचित सीख ली है।'

'वह अभी बालक है,' आयुर्वती ने कहा, 'अभी उसे बड़े होने में बहुत साल लगने वाले हैं।'

'उसे कब बड़ा होना है, यह निर्णय लेने वाले हम कौन होते हैं,' काली ने कहा, 'यह चयन उसका अपना है। एक दिन वह हम सब को गौरवांवित करेगा।'

— ⚲⦾⊍⇡⊛ —

मधुमती के तट से चले हुए आठ महीने बीत चुके थे। काफिला नागाओं की राजधानी पंचवटी से केवल एक दिन की दूरी पर था। वे एक सड़क के किनारे शिविर लगाए हुए थे, जो एक विशालकाय नदी के निकट था। यह नदी उतनी ही बड़ी थी जितनी प्रारंभ में सरस्वती हुआ करती थी।

भगीरथ ने सोचा था कि यह महान नदी वही पौराणिक नर्मदा नदी होगी। वह सीमा जिसके बारे में प्रभु मनु ने कहा था कि उसे कभी भी पार नहीं करना है। वे इस समय उस नदी के उत्तरी किनारे पर थे।

'यह अवश्य ही नर्मदा होगी,' भगीरथ ने विश्वद्युम्न से कहा,'मेरा अनुमान है कि हम इसे कल पार करेंगे। प्रभु मनु हम पर दया करें।'

पर्वतेश्वर बोल पड़ा, 'हां यही होगी। नर्मदा दक्षिणी क्षेत्र में एकमात्र ऐसी नदी है जो सरस्वती के समान विशालकाय है।'

विश्वद्युम्न मुस्कुराया। वे लोग पहले से ही नर्मदा से बहुत दूर दक्षिण में आ चुके थे, 'महोदय, कभी-कभी हमारा मन हमें भुलावे में डाल देता है। ध्यान से देखें, हमें इस नदी को पार करने की कोई आवश्यकता नहीं है।'

आनंदमयी की आंखें आश्चर्य में बड़ी-बड़ी हो गईं, 'महान भगवान रुद्र के नाम पर! यह नदी तो पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है!'
विश्वद्युम्न ने सहमति प्रकट की, 'जी हां, ऐसा ही है, राजकुमारी जी।'

यह नर्मदा नहीं हो सकती। उस नदी के बारे में तो हमें पता है कि वह पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है।

'प्रभु राम दया करें!' भगीरथ चिल्ला पड़ा, 'ऐसी बड़ी नदी का अस्तित्व हमसे कैसे छुपा रह सकता है?'

'यह समस्त भूमि ही गोपनीय है, राजकुमार,' विश्वद्युम्न ने कहा, 'यह गोदावरी है। और आप देख सकते हैं कि जब यह पूर्वी समुद्र तक पहुंचती है तो कितनी बड़ी हो जाती है।'

पर्वतेश्वर ने विस्मय में घूरकर देखा। उसने अपने हाथ जोड़े और बहते हुए पानी को झुककर नमस्ते किया।

'गोदावरी एकमात्र ऐसी नहीं,' विश्वद्युम्न ने कहा, 'मैंने अफवाहें सुनी हैं कि सुदूर दक्षिण में ऐसी कई अन्य दैत्याकार नदियां हैं।' भगीरथ ने विश्वद्युम्न की ओर यह सोचते हुए देखा कि अगले

दिन ना जाने और कितनी चीजें होंगी जो उन्हें आश्चर्य में डाल देंगी।

— ⚲⦾⊍⇡⊛ —

'गणेश,' नंदी ने कहा।

'हां, दलपति नंदी,' गणेश ने पूछा।

नंदी काफिले के पिछले भाग की ओर चला गया था। उसे काली का संदेश गणेश तक पहुंचाना था, 'नागाओं की सीमाओं की चौकी

काफिले के साथ मानकीय व्यवहार ही करेगी। उन्हें इस वात से कुछ भी लेना-देना नहीं है कि काफिले में रानी और लोकाधीश भी यात्रा कर रहे हैं।'

जव भी कभी उसके लोगों के कल्याण की वात आती थी तो रानी काली सदैव ही सावधान रहती थी। इसका परोक्ष रूप में यह अर्थ था कि उस काफिले की निगरानी नागाओं की राजधानी तक होने वाली थी ताकि किसी भी प्रकार के संभावित संकट को प्रभावहीन किया जा सके।

गणेश ने सहमति प्रकट की, 'धन्यवाद, दलपति।'

नंदी ने नागाओं की उस चौकी को देखा जिसे उन्होंने अभी-अभी पार किया था, 'ये सौ आदमी क्या सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं, गणेश? ये लोग यहां एकांत में नगर से एक दिन की दूरी पर हैं। इस चौकी में कोई दुर्ग भी नहीं है। अव तक नागाओं की विस्तृत सुरक्षा व्यवस्था को देखकर, ऐसी व्यवस्थाएं जो प्रवीणता की चरम पर हैं, इस चौकी का ध्येय समझ में नहीं आ रहा है।'

गणेश मुस्कुराया। अपनी सुरक्षा के विवरणों के वारे में वह सामान्यतया किसी भी ऐसे व्यक्ति से वातें नहीं करता जो नागा नहीं था, परंतु यह नंदी था, शिव की परछाईं। उस पर संदेह करने का अर्थ शिव पर संदेह करना था, 'ये मार्ग पर बहुत अधिक सुरक्षा प्रदान नहीं करते। परंतु यदि कोई ऐसा आक्रमण होता है तो ये पूर्वचेतावनी का कार्य करते हैं। तव इनकी भूमिका पंचवटी के मार्ग में नगर तक जाल विछाने की होती है जोकि ऐसा पीछे हटते हुए करते हैं।'

नंदी ने त्योरी चढ़ा ली। *एक सीमांत चौकी केवल जाल विछाने के लिए!*

'परंतु यह उनका प्राथमिक कार्य नहीं है,' गणेश ने अपनी उंगली से संकेत करते हुए कहना जारी रखा, 'उनकी सवसे प्रमुख भूमिका नदी की ओर से किसी भी प्रकार के आक्रमण से हमें बचाना है।'

नंदी ने गोदावरी की ओर देखा। निस्संदेह! यह अवश्य ही कहीं जाकर पूर्वी समुद्र में मिलती होगी। एक ऐसा प्रवेशद्वार जिसका लाभ उठाया जा सकता था। नागाओं ने सच में अच्छी योजना बना रखी थी।

— ⅄@Ʊ↟⊛ —

पूर्णचंद्रमा की मद्धिम प्रकाश ने दंडक वन के पशुओं को झूठी सुरक्षा का आश्वासन दे दिया था। छन-छनकर आ रही चांदनी में वे सुस्त पड़ गए थे। शिव के शिविर में शांति छाई हुई थी। सभी लोग सो रहे थे। अधिकतर लोग देर रात तक जगे हुए थे। वे लोग सुंदरवन एवं दंडक के संकटपूर्ण वनों से आश्चर्यजनक रूप से बिना किसी घटना के इतनी लंबी यात्रा पर वाद-विवाद कर रहे थे। पंचवटी मात्र एक दिन की दूरी पर था।

अचानक शंख ध्वनि के कर्णभेदी स्वर ने रात्रि की शांति को भंग कर दिया। वास्तव में एक नहीं अनेक शंखों की ध्वनियां आने लगी थीं।

उस विशाल शिविर के मध्य में काली तत्काल ही उठ खड़ी हुई। उसी के साथ शिव, सती और कार्तिक भी।

'यह क्या बकवास है?' इस कोलाहल पर शिव चिल्लाया।

काली नदी की ओर देख रही थी। वह स्तब्ध थी। ऐसा इससे पहले कभी नहीं हुआ था। वह शिव की ओर मुड़ी, उसने दांत पीसते हुए कहा, 'आपके लोगों ने हमें धोखा दिया है!'

सारा शिविर जग चुका था और शंख के शैल लगातार चेतावनी दे रहे थे।

गणेश जो इन शंखों की गर्जना के सबसे निकट नदी के समीप शिविर में था, वह सीधा उस ओर भागता जा रहा था। नंदी, वीरभद्र और परशुराम उसके पीछे थे।

'यह क्या हो रहा है?' वीरभद्र अत्यधिक बल लगाकर चीखा ताकि उस कोलाहल में उसकी आवाज सुनाई दे सके।

'शत्रुओं के जहाज गोदावरी में हमारी ओर चले आ रहे हैं,' गणेश चिल्लाया, 'उन्होंने हमारी चेतावनी व्यवस्था को भंग कर दिया है।'

'अव क्या करें?' नंदी चिल्लाया।

'सीमांत चौकी पर चलना है! हमारे पास गुप्त नौकाएं हैं!'

नंदी पीछे मुड़ा और उसने तीन सौ सैनिकों तक आदेश पहुंचा दिया। उन्होंने संकट को सामने देख अपने मोर्चे संभाल लिए थे। वे सैनिक उन चार व्यक्तियों का चुपचाप अनुसरण कर रहे थे। वे तेजी से सीमांत चौकी पर पहुंचे जहां पहले से ही सौ नागा सैनिक गुप्त नौकाओं को पानी के अंदर ढकेल रहे थे।

इस बीच विश्वद्युम्न, जो शत्रुओं के संकट से सबसे दूर किनारे पर था, उसने पहले तो इस अविश्वास से स्वयं को नियंत्रित किया और उसके बाद वह इस प्रकार की आपात स्थिति में अपनायी जाने वाली मानकीय प्रक्रिया की कार्यवाही करने लगा। एक लाल ज्वाला जलाई गई ताकि दूर पंचवटी को सावधान किया जा सके।

इस बीच भगीरथ विश्वद्युम्न के पास भागकर गया, 'नदी पर तुम्हारी क्या सुरक्षा व्यवस्था है?'

विश्वद्युम्न ने भगीरथ को जलती हुई आंखों से देखा। उसने उत्तर देने से इंकार कर दिया। उसे पक्का विश्वास था कि नागाओं के साथ कपट किया गया था।

भगीरथ ने अपना सिर हिलाया और पर्वतेश्वर की ओर भागा जो पहले से ही अपने सैनिकों को एकत्र करके उन्हें नदी के साथ-साथ सुरक्षात्मक बनावट में नियुक्त कर रहा था।

'कोई सूचना?' पर्वतेश्वर ने पूछा।

'वह नहीं बोलेगा, सेनापति,' भगीरथ चीखा, 'मेरा भय सच हो चुका है। इन लोगों ने हमें धोखा दिया है। हम सीधे इनकी जाल में फंस चुके हैं!'

अपने पांच सौ सैनिकों को युद्ध की बनावट में देखते हुए पर्वतेश्वर ने अपनी मुट्ठी भींच ली, 'नदी की ओर से जो कोई भी आता है तो उसे नष्ट कर दो।'

और उसके बाद आकाश चमक उठा। भगीरथ ने ऊपर की ओर देखा, 'प्रभु राम दया करें।'

भयंकर ज्वलंत बाणों की बारिश आकाश से उनकी ओर आती दिखाई दीं। स्पष्ट रूप से वे कुछ दूरी से छोड़े गए थे। उन्हीं युद्धपोतों से जो गोदावरी में तेजी से उनकी ओर बढ़ते चले आ रहे थे।

'ढालें ऊपर!' पर्वतेश्वर जोर से चिल्लाया।

बीच में शिव और काली ने भी वैसे ही आदेश दिए। सैनिकों ने स्वयं को ढालों के नीचे छुपा लिया। वे बाणों के इस ज्वलंत संहार के रुकने की प्रतीक्षा कर रहे थे। किंतु अनेक बाणों ने वस्त्रों को अग्नि के हवाले करते हुए और शरीरों को भेदते हुए अपने लक्ष्य प्राप्त कर लिए थे। उन बाणों ने अत्यधिक लोगों को घायल कर दिया था और कुछ दुर्भाग्यशालियों को मृत्यु के द्वार तक पहुंचा दिया था।

कोई अवकाश नहीं था। बाणों की बारिश लगातार होती जा रही थी।

एक बाण आयुर्वती के पांव में जा लगा। अपनी ढाल को निकट लाते हुए, अपने पैर को खींचते हुए वह पीड़ा से चीख पड़ी।

अचानक और आक्रमण की उग्रता ने शिव के शिविर के अधिकतर लोगों को ढाल के पीछे दुबक जाने को विवश कर दिया था। किंतु वास्तविक युद्ध गोदावरी में ही शिविर के स्थल के पास नदी के तट पर हो रहा था।

'जल्दी से!' गणेश चीखा। यदि बाणों की मूसलाधार बारिश इसी तरह कुछ देर और चलती रही तो पूरा का पूरा शिविर ध्वस्त हो जाएगा। उसे तेजी से अपना काम करना था।

सूर्यवंशी, चंद्रवंशी और नागा सभी सैनिक गोदावरी नदी में तेजी से आते हुए उन पांच बड़े जहाजों की ओर अपनी सौ छोटी नौकाओं को धक्का देते हुए ले जा रहे थे। उन छोटी नौकाओं में चकमक पत्थर के साथ सूखी हुई ज्वलनशील लकड़ियां थीं जो एक मोटे कपड़े से ढकी हुई थीं। जब वे एक निश्चित दूरी पर होंगी तो उन गुप्त नौकाओं को जला दिया जाएगा और उन्हें उन जहाजों से टकरा दिया जाएगा। ऐसे बड़े और लकड़ी के बने हुए जहाजों को नष्ट करने के लिए आग सबसे अच्छा तरीका था।

वे जहाज नदी में आगे बढ़ते चले आ रहे थे और उनकी छतों से ज्वलंत बाण लगातार छोड़े जा रहे थे। उन जहाजों की उन्मादित गति के कारण गणेश के सैनिकों को शत्रुओं के युद्धपोतों के पास पहुंचने के लिए बहुत दूर तक तैरने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

वे गुप्त नौकाएं अपने स्थान पर पहुंच चुकी थीं। उन्हें इस बनावट में लगा गया था कि वे टक्कर मारने के लिए तैयार थीं।

'उनमें आग लगा दो!' गणेश चीखा।

सैनिकों ने तुरंत ही प्रत्येक नौका से कपड़ा हटा दिया और चकमक पत्थरों को एक-दूसरे से रगड़ा। इससे पहले कि हत्यारे कुछ प्रतिक्रिया कर पाते नौकाओं में तत्काल ही आग धधकने लगी थी। गणेश के सिपाहियों ने उन नौकाओं को जहाजों से धकेलकर टकरा दिया।

'उन्हें जहाजों से सटाए रखो!' नंदी चीखा, 'जहाजों में आग पकड़ना आवश्यक है!'

जहाज के पहरेदारों ने अपने धनुष नदी के हमलावरों की ओर मोड़ लिया। बाणों की अग्निवृष्टि नदी में होन लगी। अनेक अपंग हुए, बहुतेरे मृत्यु के घाट उतारे गए और वीर सैनिकों पर भी आक्रमण होने लगा। गुप्त नौकाओं की आग में गणेश के सैनिक भी झुलसते जा रहे थे, परंतु वे परिश्रम से तैरते हुए नौकाओं को उन शत्रुओं के जहाजों की ओर धक्का देते रहे।

कुछ ही क्षणों में पांचों जहाज आग की लपटों में घिर गए थे।

परंतु तब तक वे बहुत हानि पहुंचा चुके थे।

'नदी के किनारे वापस चलो!' गणेश चीखा।

वह जानता था कि उसे गोदावरी नदी के तट पर सैनिकों को एक पंक्ति की बनावट में तैयार रखना था। जैसे-जैसे आग की लपटें बढ़ती जाएंगी तो हत्यारे पानी में या जीवन रक्षक नौकाओं में कूद पड़ेंगे और नदी के तट पर पहुंचकर पुनः युद्ध आरंभ करेंगे।

गणेश के सैनिक नदी के तट पर अभी पहुंचने ही वाले थे कि उन्होंने कर्णभेदी विस्फोट सुना। उन्होंने मुड़कर देखा तो स्तब्ध रह गए। शत्रुओं का सबसे पहला जहाज विस्फोट में उड़ गया था। उसके कुछ ही क्षणों के अंदर अन्य जहाज भी विशालकाय विस्फोटों के साथ भस्म हो गए।

गणेश परशुराम की ओर मुड़ा। वह पूरी तरह से स्तब्ध था, *'दैवी अस्त्र!'*

परशुराम ने सहमति में सिर हिलाया। वह भी हैरान था। मात्र *दैवी अस्त्रों* से ही ऐसा विस्फोट संभव हो सकता था। लेकिन ऐसे अस्त्रों पर कौन अपने हाथ डाल सकता था? और वह भी इतनी भारी मात्रा में?

गणेश ने बिखरे हुए सैनिकों को एकत्र कर व्यूह रचना की और उन्हें गिना। जिन चार सौ सैनिकों के साथ उसने हमला किया था उनमें से कोई सौ सैनिक खेत रहे थे। उनमें अधिकतर नागा सैनिक थे क्योंकि वे ही ऐसे युद्ध-कौशल में प्रशिक्षित थे। लोकाधीश ने गुस्से में अपने दांत पीसे और काली और शिव की खोज में शिविर की ओर चल पड़ा।

— ⚹ —

'आपने हमें जाल में फंसा दिया!' पर्वतेश्वर ने चीखकर कहा। बाणों की उस अग्निवृष्टि में उसके बीस सैनिक शहीद हो गए थे।

शिविर के मध्य में मरने वालों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक थी। लगभग पचास सैनिक मारे जा चुके थे। निस्संदेह सबसे अधिक मरने वालों की संख्या नदी के किनारे थी जो शत्रुओं के युद्धपोतों के निकट थे। एक सौ सैनिक जिन्होंने युद्धपोतों पर हमले किए थे, उन्हें शामिल कर कुल तीन सौ सैनिक वहां मारे जा चुके थे। आयुर्वती अपनी जंघा में घुसे बाण के साथ ही चिकित्सकों के दल के साथ भागकर सैनिकों की जीवन-रक्षा में जुटी हुई थी।

'बकवास!' काली चिल्लाई, 'आपने हमें धोखा दिया है! आज तक किसी ने भी गोदावरी की ओर से कभी हम पर हमला नहीं किया था। कभी नहीं!'

'शांत रहो!' शिव जोर से बोला। वह वीरभद्र, परशुराम, नंदी और गणेश की ओर मुड़ा जो अभी-अभी वहां पहुंचे थे, 'ये विस्फोट कैसे थे, परशुराम?'

'दैवी अस्त्र थे, प्रभु,' परशुराम ने कहा, 'शत्रुओं के पांच जहाज उन्हें लेकर चल रहे थे। आग ने उनमें विस्फोट कर दिया।'

शिव ने गहरी श्वास ली और दूर शून्य में देखा।

'प्रभु,' भगीरथ ने कहा, 'हमें वापस लौट चलना चाहिए। पंचवटी के मार्ग में और भी ऐसे घातक आक्रमण हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। यहां मात्र दो नागा हैं। सोचें कि पचास हजार क्या कर सकते हैं!'

काली गुस्से से फट पड़ी, 'यह आप लोगों की करनी है! पंचवटी पर आज तक कभी भी हमला नहीं हुआ। आपने अपने दस्तों को यहां पहुंचाया है। यह तो सौभाग्य की बात थी कि गणेश ने मुंहतोड़ उत्तर दिया और आपके दस्तों को समाप्त कर दिया। वरना, हम सभी लोग मारे जाते।'

सती ने काली को धीमे से स्पर्श किया। वह यह बताना चाहती थी कि गणेश के साथ सूर्यवंशी एवं चंद्रवंशी सैनिक भी युद्ध करते हुए मारे गए थे।

'बहुत हो गया!' शिव चिल्लाया, 'क्या आप लोगों में से किसी को यह भान है कि क्या हुआ है?'

नीलकंठ नंदी और कार्तिक की ओर मुड़ा, 'एक सौ सैनिकों के साथ नदी के तट पर जाओ। देखो कि उन शत्रुओं के जहाजों में कोई जीवित है या नहीं। मैं जानना चाहता हूं कि वे कौन लोग थे।' नंदी और कार्तिक तत्काल ही वहां से रवाना हो गए।

शिव ने क्रोध की ज्वाला से खौलते हुए अपने आस-पास के लोगों को देखा, 'हम सब के साथ धोखा किया गया है। जो लोग भी हम पर बाणों की वर्षा कर रहे थे, वे अपने लक्ष्य का चयन नहीं कर रहे थे। वे हम सब को मृत देखना चाहते थे।'

'परंतु वे गोदावरी तक कैसे आ गए?' काली ने पूछा।

शिव ने उसकी ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखा, 'लानत है, यह मुझे कैसे पता होना चाहिए? हमारे अधिकतर लोग तो इसे नर्मदा नदी ही समझ रहे थे!'

'ये नागा लोग ही हो सकते हैं, प्रभु,' भगीरथ ने कहा, 'इन पर विश्वास नहीं किया जा सकता है।'

'क्या आपको पक्का विश्वास है!' शिव ने व्यंग्यात्मक रूप में कहा, 'नागाओं ने अपनी ही रानी को मारने के लिए यह जाल बिछाया था। और उसके बाद गणेश ने अपने ही लोगों के विरुद्ध प्रति-आक्रमण किया और उन्हें दैवी अस्त्रों से उड़ा दिया। यदि उसके पास दैवी अस्त्र थे और हम पर उपयोग करना चाहता था तो फिर उसने हम पर उन अस्त्रों का उपयोग क्यों नहीं किया?'

सब के सब मूक हो गए।

'मेरे विचार से वे अस्त्र पंचवटी को नष्ट करने के लिए थे। उनकी योजना थी कि वे हमारा नरसंहार सरलता से करने के बाद नागाओं की राजधानी को भी नष्ट कर देंगे। उन्होंने यह आशा नहीं की थी कि नागा अत्यधिक सतर्क होंगे और उनके पास अत्यंत ही प्रभावी सुरक्षा व्यवस्था होगी--जिसमें ये गुप्त नौकाएं भी शामिल थीं, जिनके कारण आज हम बच पाए।'

नीलकंठ जो कह रहे थे, अब उसका अर्थ सब को समझ में आ रहा था। यही उचित प्रतीत भी हो रहा था। गणेश ने भूमिदेवी को मूक धन्यवाद दिया। ऐसी ही आपात स्थितियों से निपटने के लिए नागा राज्यसभा ने गणेश के प्रस्ताव को मान गोदावरी की सीमांत चौकियों को अस्त्र-शस्त्र से लैस करना स्वीकार किया था।

'कोई हम सब को मृत देखना चाहता है,' शिव ने कहा, 'कोई ऐसा जो पर्याप्त रूप से शक्तिशाली है क्योंकि वह इतनी भारी मात्रा में दैवी अस्त्रों का शस्त्रागार प्राप्त कर सकता है। ऐसा कोई जिसे सुदूर दक्षिण में इतनी विशालकाय नदी के अस्तित्व का पता है और उसके पास समुद्र से आते इस मार्ग को जानने की क्षमता है। कोई ऐसा संसाधनयुक्त व्यक्ति जो हम पर आक्रमण करने के लिए युद्धपोतों के एक बेड़े की व्यवस्था कर सकता है। उसके पास पर्याप्त सैनिक हैं। प्रश्न तो यह है कि वह व्यक्ति कौन है?'

— ⅄ⓄƱϟ⊛ —

क्षितिज पर सूरज धीरे-धीरे उग आया था। उस थके हुए शिविर पर प्रकाश और लालिमा फैल गई। पंचवटी से एक राहत दल भोजन एवं औषधियां लेकर पहुंचा। अंततः आयुर्वती ढीली पड़ ही गई थी और वह विश्राम करने के लिए एक तंबू में चली गई। अधिकतर घायलों की देखभाल हो चुकी थी। फिर अन्य किसी सैनिक की मृत्यु नहीं हुई। यहां तक कि जो लोग घातक रूप से घायल थे, उन्हें भी बचा लिया गया था।

कार्तिक और नंदी रात भर की खोज के बाद अपने दल सहित शिविर में वापस आए। वे सीधे शिव के पास गए। कार्तिक ने पहले कहा, 'कोई भी जीवित नहीं बचा है, बाबा।'

'प्रभु, हमने नदी के दोनों किनारों का परीक्षण कर लिया है,' नंदी ने आगे बताया, 'हमने जहाज के मलबे की भी जांच कर ली है। यहां तक कि हमने नदी में पांच किलोमीटर आगे तक जाकर देख लिया। कहीं कोई जीवित व्यक्ति उस ओर ना भाग निकला हो। परंतु हमें

कोई जीवित व्यक्ति नहीं मिला।'

शिव ने मन ही मन कोसा। उसे संदेह था कि यह आक्रमण किसने करवाया होगा, परंतु वह निश्चित तौर पर ऐसा नहीं कह सकता था। उसने पर्वतेश्वर और भगीरथ को बुलाया, 'आप दोनों ही अपने देश के जहाजों को पहचान सकते हैं। मैं चाहता हूं कि आप दोनों जहाजों के मलवों का ध्यान से परीक्षण करें। मैं जानना चाहता हूं कि उनमें से कोई भी जहाज मेलूहा या स्वद्वीप का तो नहीं।'

'प्रभु,' पर्वतेश्वर ने जोर से कहा, 'यह नहीं हो सकता...'

'पर्वतेश्वर, कृपया आप मेरे लिए यह काम करें,' शिव ने उसे बीच में ही टोक दिया, 'मैं एक निष्पक्ष उत्तर चाहता हूं। वे जहाज वास्तव में कहां से आए थे?'

पर्वतेश्वर ने नीलकंठ को सैनिक नमस्ते किया, 'आपकी जैसी आज्ञा, प्रभु।'

मेलूहा का सेनापति भगीरथ के साथ वहां से निकल पड़ा।

— ⅄⓪ሀ⇞⊛ —

'क्या आपको लगता है कि यह आक्रमण मात्र एक संयोग था? यह आपके रहस्य जानने से ठीक एक दिन पहले क्यों हुआ?'

शिव और सती शिविर के पास, नदी के तट पर, एक एकांत स्थल पर बैठे हुए थे। वह प्रथम प्रहर का अंतिम घंटा था। अंत्येष्टि कर्म कर दिया गया था। यद्यपि घायल लोग यात्रा करने की स्थिति में नहीं थे, किंतु आम सहमति यही थी कि सुरक्षा की दृष्टि से पंचवटी पहुंचना अनिवार्य था। नागाओं का नगर सड़क मार्ग के पास बने किसी शिविर से अधिक सुरक्षित होगा। नागाओं ने पहिएदार गाड़ियों की व्यवस्था कर रखी थी ताकि घायलों को उनमें लादकर काफिले के साथ ले जाया जा सके। काफिला एक घंटे में रवाना होने के लिए तैयार था।

'मैं नहीं कह सकता,' शिव ने कहा।

सती चुप रही। उसकी दृष्टि दूर कहीं टिकी हुई थी।

'क्या तुम सोचती हो... कि तुम्हारे पिता हो सकते...'

सती ने एक गहरी श्वास भरी, 'हाल में जो कुछ भी मैंने उनके बारे में जाना है, वे कुछ भी कर सकते हैं।'

शिव ने अपना हाथ बढ़ाया और सती को थाम लिया।

'परंतु मैं नहीं सोचती कि वे इतने बड़े आक्रमण का आदेश अकेले दे सकते हैं,' सती ने कहना जारी रखा, 'उनमें इतनी क्षमता नहीं है। यह कठपुतली का खेल किसने रचा? और वह ऐसा क्यों कर रहा है?'

शिव ने सहमति प्रकट की, 'यही रहस्य है, परंतु इससे पहले हमें यह बड़ा रहस्य जानना है। मेलूहा, स्वद्वीप और पंचवटी में जो कुछ भी हो रहा है, उसका इस रहस्य से गहरा संबंध है।'

— ⅄⓪ሀ⇞⊛ —

रक्तरंजित और थका हुआ काफिला जब गोदावरी नदी के तट से नागाओं की राजधानी पंचवटी के लिए रवाना हुआ तो सूरज सिर चढ़ चुका था। *पंचवटी अर्थात पांच बरगद के पेड़ों की भूमि।*

वे मात्र पांच साधारण वट वृक्ष नहीं थे। उनकी पौराणिक कथा एक हजार साल पहले प्रारंभ हुई थी। अपने अयोध्या से निर्वासन के दौरान सातवें विष्णु, राम ने अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ इन वृक्षों के नीचे विश्राम किया था। उन्होंने इन वृक्षों के समीप ही अपनी झोपड़ी का निर्माण किया था। यही वह दुर्भाग्यशाली स्थान था, जहां से राक्षसों के राजा रावण ने सीता का अपहरण किया था। इसी के कारण राम से उसका युद्ध हुआ। उस युद्ध में रावण की सुनहरी और अत्यधिक संपन्न लंका का विनाश हुआ था।

गोदावरी के उत्तरी-पूर्वी तट पर पंचवटी नगर बसा हुआ था। वह नदी पश्चिमी घाट के पर्वतों से बहती हुई पूर्वी समुद्र में मिलती थी। पंचवटी के पश्चिम में वह नदी विचित्र ढंग से नब्बे अंश के कोण से अचानक मुड़कर कोई एक किलोमीटर दक्षिण की ओर बहकर पुनः पूर्व की ओर मुड़ समुद्र तक की अपनी यात्रा पूरी करती है। गोदावरी के इस घुमाव ने नागाओं को नहर बनाने और दंडक वन के उस क्षेत्र को

साफ करके नागरिकों को खेती के अवसर प्रदान किए थे।

सूर्यवंशियों को उस समय आश्चर्य हुआ जब उन्होंने देखा कि पंचवटी मेलूहा के नगरों की तरह ऊंची वेदिका पर बसाया गया था। पत्थरों की ताकतवर दीवार चारों ओर ऊंची उठाई गई थी, जिनमें नियमित अंतराल पर आक्रमणकारियों से सुरक्षा के लिए बुर्ज बने हुए थे। दीवारों से लगे हुए क्षेत्र को नागा लोग खेती के लिए उपयोग करते थे। अतिथि गृहों की एक बस्ती बनी हुई थी जो ब्रंगा भ्रमणकारियों के लिए बनाई गई थी। एक दूसरी दीवार इन्हें घेरे हुए थी। इस दूसरी दीवार के बाद भी वनों को साफ कर बनाया गया मैदानी क्षेत्र फैला था, ताकि शत्रुओं को आसानी से देखा जा सके। पंचवटी की स्थापना भूमिदेवी द्वारा की गई थी। उस गैर-नागा रहस्यात्मक महिला ने नागाओं की वर्तमान जीवनशैली की स्थापना की थी। कोई भी भूमिदेवी के पूर्ववृत्त को नहीं जानता था। और उसने सख्ती से आदेश देकर किसी भी स्वरूप में अपना चित्र बनाने से मना किया था। अतः वर्तमान नागा सभ्यता की संस्थापिका की एकमात्र स्मृति उनके कानून एवं उनके वक्तव्य ही थे। पंचवटी नगर उनकी जीवनशैली की प्रतीक थी, जो सूर्यवंशी एवं चंद्रवंशी जीवनशैलियों के सबसे उत्तम तरीकों का मिश्रण थी। उनकी अभिलाषा नगर द्वार पर उद्घोषित की गई थी। *'सत्यम सुंदरम्' अर्थात सच ही सुंदर है।*

शिव के काफिले को बाहरी द्वार से प्रवेश की अनुमति दी गई और उन्हें ब्रंगा के अतिथि गृहों में ठहराया गया। काफिले के सभी सदस्यों को एक आरामदायक कक्ष प्रदान किया गया।

'आप थोड़ा विश्राम क्यों नहीं कर लेते, शिव,' काली ने कहा,'मैं रहस्य का उद्घाटन करूंगी।'

'मैं पंचवटी अभी ही जाना चाहता हूं,' शिव ने कहा।

'क्या आप अभी ही जाना चाहते हैं? क्या आप थके हुए नहीं हैं?'

'निस्संदेह मैं थका हुआ हूं, परंतु मुझे उस रहस्य को तुरंत जानने की आवश्यकता है।'

'तो ठीक है।'

— ⚹ —

शिव के बाकी साथी अतिथि गृह में रुक गए। शिव और सती, काली और गणेश के साथ पंचवटी की ओर चल दिए।

जिस प्रकार के नगर की उन्होंने आशा की थी, वैसा वहां कुछ भी नहीं था। इसे एक निश्चित तरीके से जालनुमा आकार में बनाया गया था, जो बहुत कुछ मेलूहा के नगरों के समान था। परंतु ऐसा प्रतीत होता था कि नागाओं ने मेलूहा के न्याय एवं समानता के आदर्श को तार्किक निष्कर्ष की ओर ले जाने में सफलता प्राप्त कर ली थी। रानी के आवास समेत प्रत्येक आवास एक ही आकार-प्रकार के बने हुए थे। पचास हजार नागा लोग जो वहां रहते थे, उनमें से कोई भी अधिक धनी या निर्धन नहीं था।

'सभी लोग पंचवटी में एक ही तरह से जीवन जीते हैं?' सती ने गणेश से पूछा।

'बिल्कुल नहीं, मां। यहां प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के बारे में निर्णय लेने का अधिकार है। लेकिन राज्य उन्हें आवास जैसी आधारभूत और प्राथमिक सुविधाएं प्रदान करता है। और उनमें पूरी तरह एक समानता है।'

नीलकंठ को वहां से गुजरते हुए देखने के लिए सभी निवासी अपने घरों से बाहर निकलकर पंक्तिबद्ध होकर खड़े थे। उन्होंने नीलकंठ के काफिले पर रहस्यात्मक हमले के बारे में सुन रखा था। लोग भूमिदेवी को धन्यवाद दे रहे थे कि उनकी रानी और लोकाधीश को कुछ नहीं हुआ।

शिव यह देखकर आश्चर्यचकित था कि बहुत से लोगों को कोई भी विकृति नहीं थी। उसने बहुत से लोगों को नागाओं के शिशुओं को गोद में उठाए देखा।

'ये गैर-नागा लोग पंचवटी में क्या कर रहे हैं?' शिव ने पूछा।

'ये लोग नागा बच्चों के माता-पिता हैं,' काली ने बताया।

'और वे यहां रहते हैं?'

'कुछ माता-पिता अपने नागा बच्चों को छोड़ देते हैं,' काली ने कहा, 'और कुछ लोग अपने बच्चों के साथ बहुत अधिक लगाव रखते हैं। उनकी ममता में इतनी ताकत है कि वे सामाजिक पक्षपातों को नकार देते हैं। हम ऐसे लोगों को पंचवटी में शरण देते हैं।'

'जिन नागा बच्चों के माता-पिता उन्हें त्याग देते हैं, उनकी देखभाल कौन करता है?' आनंदमयी ने पूछा।

'संतान रहित नागा लोग,' काली ने कहा, 'नागाओं की प्राकृतिक संतान नहीं हो सकती। इसी कारण वे मेलूहा और स्वद्वीपद्वारा त्यागे गए बच्चों को गोद ले लेते हैं और उन्हें अपनी संतान की तरह पालते-पोसते हैं--जो एक नवजात शिशु का जन्माधिकार है।'

नगर के मध्य में वे चुपचाप चल रहे थे। यही वह स्थल था जो वट वृक्षों के चारों ओर ऐसे भवनों में परिवर्तित किया जा चुका था, जो सार्वजनिक थे। ये भवन पंचवटी के निवासियों के उपयोग के लिए बने थे। ये स्वद्वीप शैली में भव्य रूप से निर्मित थे। वहां एक विद्यालय था, प्रभु रुद्र और देवी मोहिनी को समर्पित एक मंदिर था, एक सार्वजनिक स्नानघर और कला प्रदर्शन हेतु एक प्रेक्षागृह भी था, जहां वे पचास हजार नागरिक नियमित रूप से एक-दूसरे से मिला करते थे। संगीत, नृत्य और नाटक मनोरंजन के साधन थे ना कि ज्ञान अर्जित करने के।

'वह रहस्य कहां है?' व्याकुल होते हुए शिव ने पूछा।

'यहां है, प्रभु नीलकंठ,' गणेश ने विद्यालय की ओर संकेत करते हुए कहा।

शिव ने अपनी त्योरी चढ़ा ली। रहस्य एक विद्यालय में? उसने आशा की थी कि वह रहस्य नगर के मध्य स्थापित आध्यात्मिक केंद्र प्रभु रुद्र के मंदिर में होगा। वह उस भवन में अंदर चला गया। बाकी सभी लोग उसके पीछे-पीछे अंदर गए।

वह विद्यालय एक पारंपरिक शैली में निर्मित किया गया था। स्तंभावली युक्त गलियारा एक आंगन के चारों ओर बना हुआ था और उस गलियारे में द्वार बने थे जो कक्षाओं की ओर जाते थे। दूर किनारे पर एक खुला हुआ विशाल कक्ष था। वह पुस्तकालय था। पुस्तकालय के साथ ही लगा हुआ एक और गलियारा था जो मुख्य भवन से बाहर एक खेल के मैदान में खुलता था। उस मैदान के दूसरी ओर अन्य सुविधाएं मौजूद थीं जैसे सभाकक्ष और अभ्यास करने के लिए प्रयोगशालाएं आदि।

'कृपया शांति बनाए रखें,' काली ने कहा, 'कक्षाएं अभी भी चल रही हैं। हम केवल एक कक्षा में बाधा डालेंगे सभी में नहीं।'

'हम किसी भी कक्षा में बाधा नहीं डालेंगे,' शिव ने पुस्तकालय की ओर कदम बढ़ाते हुए कहा, जहां वह नागाओं के रहस्य की आशा कर रहा था। संभवतया वह एक पुस्तक थी?

'प्रभु नीलकंठ,' गणेश कहा, जिसे सुनकर शिव का बढ़ा हुआ कदम वहीं का वहीं रुक गया।

शिव रुक गया। गणेश ने एक कक्षा के प्रवेशद्वार पर लगे पर्दे की ओर संकेत किया। शिव ने अपनी त्योरी चढ़ा ली। आश्चर्यजनक रूप से एक जाना-पहचाना स्वर दर्शन की व्याख्या कर रहा था। पर्दे के पीछे वह स्वर पूर्णतः स्पष्ट था।

'आजकल का नया दर्शन प्रत्येक वस्तु की कामना को दोष देता है। कामना हर प्रकार के दुख एवं विनाश का मूल है, ठीक है?'

'जी हां, गुरुजी,' शिष्यों ने कहा।

'इसकी व्याख्या करो,' अध्यापक ने कहा।

'क्योंकि कामना आसक्ति उत्पन्न करती है। आसक्ति जो इस विश्व के प्रति होती है। और जब आपको वह प्राप्त नहीं होता है, जो आप चाहते हैं या फिर वह प्राप्त होता है, जो आप नहीं चाहते तो दुख का अनुभव होता है। यह क्रोध को जन्म देता है। और जिसके परिणामस्वरूप हिंसा और युद्ध उत्पन्न होते हैं। इन सब का परिणाम अंततः विनाश होता है।'

'इस प्रकार यदि आप विनाश और दुख से दूर रहना चाहते हैं, तो आपको अपनी इच्छा पर नियंत्रण करना होगा, है ना?' अध्यापक ने पूछा, 'इस विश्व की माया का त्याग कर दो?'

पर्दे के दूसरी ओर से शिव ने मन ही मन में कहा। *हां।*

'परंतु दर्शन का हमारा सबसे प्रमुख स्रोत ऋग्वेद कहता है कि,' अध्यापक ने कहना जारी रखा, 'प्रारंभ में सिवाय अंधकार और आदिकालीन प्रलय के और कुछ भी नहीं था। उसके बाद इन अंधकारों से इच्छा का जन्म हुआ। यह इच्छा एक मौलिक बीज था, जो रचना का एक अंकुर था। और यहीं से हम सभी लोग जानते हैं कि मनष्यों के प्रभु प्रजापति ने ब्रह्मांड और उसमें समस्त वस्तु की रचना की। इस प्रकार कामना रचना का भी मूल है।'

शिव पर्दे के उस ओर वाले स्वर से मंत्रमुग्ध था। *अति सुंदर* बिंदु।

'तो फिर यह कामना या इच्छा रचना एवं विनाश दोनों का ही स्रोत कैसे हो सकता है?'

शिष्य पूरी तरह से शांत थे। उन्हें उत्तर नहीं मिल पा रहा था।

'इसके बारे में दूसरे प्रकार से सोचो। क्या उस वस्तु का विनाश संभव है जिसकी रचना नहीं की गई है?'

'नहीं, गुरुजी।'

'दूसरी ओर, क्या यह सोचना उचित है कि कोई भी वस्तु या प्राणी जिसकी रचना हुई है उसका कभी ना कभी विनाश होना ही है?'

'जी हां, गुरुजी।'

'यही कामना का उद्देश्य है। यह रचना एवं विनाश के लिए है। यह एक यात्रा का आरंभ है और यही उसका अंत भी। बिना कामना के कुछ नहीं।'

शिव मुस्कुराया। *इस कक्षा में अवश्य कोई वासुदेव पंडित है!* नीलकंठ काली की ओर मुड़े, 'हमें पुस्तकालय की ओर चलना चाहिए। मैं रहस्य को पढ़ना चाहता हूं। मैं पंडितजी से बाद में मिल लूंगा।'

काली ने शिव को रोक लिया, 'रहस्य कोई वस्तु नहीं है। वह एक मनुष्य है।'

शिव विस्मित रह गया। आश्चर्य में उसकी आंखें चौड़ी हो गईं।

गणेश ने उस कक्षा के पर्दे वाले द्वार की ओर संकेत किया,'और वे वहां आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

शिव ने गणेश को एकटक देखा। वह गतिहीन हो चुका था। लोकाधीश ने धीरे से पर्दे को अंदर की ओर किया, 'गुरुजी, बीच में विघ्न डालने के लिए क्षमा करें। प्रभु नीलकंठ यहां आए हैं।'

उसके बाद गणेश एक ओर हट गया।

शिव ने कक्षा के अंदर प्रवेश किया और उसने जो वहां देखा, उसे देखकर वह स्तब्ध रह गया।

अरे, यह क्या है!

वह गणेश की ओर मुड़ा। पूर्णतः किंकर्तव्यविमूढ़। लोकाधीश धीमे से मुस्कुराया। नीलकंठ पुनः अध्यापक की ओर मुड़ गए।

'मैं आपकी प्रतीक्षा कर रहा था, मित्र,' अध्यापक ने कहा। वह मुस्कुरा रहा था और उसकी आंखें नम थीं, 'मैंने आपसे कहा था कि मैं आपके लिए कहीं भी चला जाऊंगा। यहां तक कि *पाताल लोक* भी यदि वह आपके लिए सहायक होगा।'

शिव ने इस पंक्ति को अपने मन में बार-बार कई बार दोहराया था। उसने कभी यह संदर्भ नहीं समझा था कि *दानवों की भूमि* का अर्थ क्या था। अब उसे सबकुछ समझ में आ रहा था।

दाढ़ी काट दी गई थी और उसके स्थान पर पतली मूंछ रख ली गई थी। चौड़े कंधे और बेलनाकार छाती जो पहले वसा की परत के नीचे छुपे हुए थे, वे अब व्यायाम द्वारा सुडौल हो चुके थे। ब्राह्मणों का प्रतीक जनेऊ उनकी नव विकसित छोटी-छोटी मांसपेशियों पर सुशोभित था। सिर के बाल पहले की तरह ही मुंडित थे। उनकी चोटी अब अधिक लंबी और संवरी हुई थी। उन गहरी आंखों में वही पुरानी शांति थी जिसने पहले शिव को अपनी ओर आकर्षित किया था। वह उसका खोया हुआ मित्र था, उसका यार था, उसका भाई था।

'बृहस्पति!'

...क्रमशः